

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

काल्पिक धा गाथा

सरस्वती का ज्ञान



वस्सी जूलूसि

अनुवाद: शुभिता पीतल





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

वैस्टलैंड पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड

किष्किंधा गाथा

सरस्वती का ज्ञान

& Hindi

Novels English



<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

किष्किंधा गाथा
सरस्वती का ज्ञान & Hindi



वम्सी जूलूरि

अनुवाद

शुचिता मीतल



<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

Westland Publications Private Limited

61, II Floor, Silverline Building, Alapakkam Main Road, Maduravoyal,
Chennai 600095

93, I Floor, Sham Lal Road, Daryaganj, New Delhi 110002

First published in *English* as *Saraswati's Intelligence* in 2016 by
Westland Publications

Private Limited

First published in *Hindi* as *Saraswati ka Gyan* in 2018 by Westland
Publications Private

Limited, in association with Yatra Books

Copyright © Vamsee Juluri 2016

Chapter icon of Anjaneya © Parameshwar Raju

All rights reserved

Vamsee Juluri asserts the moral right to be identified as the author of
this work.

ISBN: 9788193655672

Typesetting by PrePsol Enterprises Pvt. Ltd. Faridabad, Haryana

This book is sold subject to the condition that it shall not by way of
trade or otherwise, be lent, resold, hired out, circulated, and no
reproduction in any form, in whole or in part (except for brief
quotations in critical articles or reviews) may be made without written
permission of the publishers.

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

उन सबको जो हमसे पहले यहां रहे हैं,

और उनके अच्छे कर्मों को समर्पित जो हमें आज भी जिलाए हुए हैं।

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

अनुक्रम

- [किञ्चिंधा गाथा](#)
- [त्वम् अस्मिन् कार्यानि योगे...](#)
- [1. कंगार](#)
- [2. चिंता का विषय](#)
- [3. रक्त](#)
- [4. रात्रि](#)
- [5. सुग्रीव का होश में आना](#)
- [6. किञ्चिंधानगर में उत्तरा अंधेरा](#)
- [7. नरक राजा](#)
- [8. पर्वत पर अग्नि](#)
- [9. मैं निष्कासित करता हूँ](#)
- [10. अप्रत्याशित पुनर्मिलन](#)
- [11. विश वामित्र का रहस्य](#)
- [12. बहिष्कृत](#)
- [13. पुराने और नए राजा](#)
- [14. गणेशों का देश](#)
- [15. झरना](#)
- [16. प्राणी](#)
- [17. बालक](#)
- [18. वशिष्ठ का भंवर](#)
- [19. परिवर्तन काल](#)
- [20. धर्म पर चर्चा](#)
- [21. राजकुमारी वैष्णवी](#)
- [22. युद्ध का उद्घोष](#)
- [23. जामवंत](#)
- [24. सेनाओं का जमावड़ा](#)
- [25. एकजुट बहनें](#)
- [26. सरस्वती का ज्ञान](#)
- [27. जीवन का चिह्न](#)
- [28. युद्ध आरंभ](#)
- [29. केवल एक हनुमान](#)
- [30. सींगधारी दैत्य](#)
- [31. वाली का प्रतिशोध](#)
- [32. दशानन](#)
- [33. आदिकालीन समाधान](#)
- [34. कामधेनु](#)
- [35. सूर्य के मंत्र](#)

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

36. सुवर्चला

आभार

लेखक के बारे में

Novels English & Hindi

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

किञ्चिंधा गाथा

Novels English & Hindi

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>



Hindi

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

त्वम् अस्मिन कार्यानियोगे प्रमाणम्, हरिसत्तम!

Novels English & Hindi

1

कगार



हनुमान ने पहाड़ी के कगार को देखा तो यकायक ठिठक गए। ये ज्ञिज्ञक अस्वाभाविक थी, हाल ही में उभरी थी, मगर कुछ समय से ऐसा उनके साथ अक्सर हो रहा था। धीमे से उन्होंने सांस छोड़ी। एक आवाज निकली जो उन्हें उम्मीद थी नहीं निकलेगी, वह आवाज जो वे हाल ही में निकालने लगे थे, या शायद हाल ही में इसकी ओर उनका ध्यान गया था। हार मानने की दबी, उलझी सी आवाज। ऐसा लगता था जैसे किसी अधर्चबे पत्ते के अंश उनके गले में अटक गए हों। वे जानते थे यह किसी स्मृति से जुड़ी थी।

उन्होंने हाथों से अपना चेहरा ढांप लिया और पसीना पोंछा। किष्किंधा की झुलसाती धूप उनके ऊपर छाए पत्तों के चंदोवे में से जगह तलाशकर उनकी त्वचा को भीतर तक भेद रही थी। पसीना, सांस, गर्मी, आग की लहर, और ऊर्जा की एक तरंग उनके पेट से होती टांगों में दौड़ गई। धीरे से, आगे न झुकने की सावधानी बरतते हुए, मगर अभी पीछे न हटने के संकल्प के साथ सतर्कता से अपने विचारों को थामते हुए उन्होंने फिर से अपनी आंखें खोलीं।

घुमड़ों ने इस झन्नाटे से उन्हें जकड़ा जैसे कभी उनके शब्द चुभे थे।

वे पीछे हट गए।

वे कुदान नहीं लगा पाए।

उस कुदान को तो वे लगा लिया करते थे।

मगर अब इस विचार मात्र से ही उनके गले में खिचखिचाहट, डर, शर्मिदगी उभर उठती थी।

उन्हें आभास हुआ कि उनकी पूँछ में ऐंठन सी हुई, और अनायास वह उनके पीछे स्थित पत्थर से टकराई थी। इस आवाज ने उन्हें चौंका दिया। क्षणांश के अनियंत्रण ने उन्हें वह अशिष्ट शब्द याद दिला दिया जो दूसरे बच्चे पूँछ के लिए बोलते थे, वे इसे 'दुम' कहते थे, मानो यह कोई शर्मनाक चीज़ हो।

हनुमान ने एक बार फिर घाटी पर विचार किया। उन्होंने अपने पिता और माता, किष्किंधा के महान राजा-रानी, की कल्पना करने की कोशिश की जिनके अंदर लेषमात्र भी भय नहीं था। मगर नहीं कर पाए। केवल उनकी आवाज कल्पना में उभरी। शक्तिशाली साम्राज्ञी की आवाज जो उनके पिता की माता के समान थीं,

जिन्होंने हनुमान को जीवन प्रदान किया था, जिनके शब्द अभी भी राज्य पर शासन करते थे। वे अभी भी उन बातों को सुन सकते थे जो उन्होंने कहीं थीं।

मैं नहीं हूं। किंतु मैं नहीं हूं।

माता।

पिता।

और फिर वे।

सब उनसे एक ही बात कहते थे। यह मत करो, हनुमान। वह मत करो, हनुमान।

बालक आहृत होंगे, हनुमान।

ऋषि परेशान हो जाएंगे, हनुमान।

परम धर्म अपाचार, हनुमान।

और फिर उनके, शक्तिशाली साम्राज्ञी ऋक्षराज के शब्द, माता के समकक्ष वरिष्ठजन जिन्होंने उन्हें गोद में लिया था, और फिर कभी नहीं मुस्कुराई थीं; उनकी तिरस्कार भरी घोषणा: तुम निरर्थक हो, हनुमान, तुम जो भी करते हो, वह निरर्थक है।

और फिर जिस तरह वे उनके चचेरे भाई वाली को देखकर मुस्कुराई थीं, वाली, सभी बालकों का नायक; वाली जो लगभग हनुमान के पिता महान कैसरी के बराबर लंबा था।

उनके पीछे स्थित पेड़ फिर से हिले। हनुमान अपनी तंद्रा से बाहर निकले, लगभग मुस्कुराते हुए। वाली आ गया था, हर चीज़ का विजेता, इस प्रतियोगिता का भी शीघ्रंभावी विजेता।

वाली को निकलने देने के लिए हनुमान एक ओर हट गए।

हनुमान की ओर नज़र डाले बिना वाली आत्मविश्वास से निकला, और हर्षनाद करते और सीने पर धूंसा मारते हुए उसने पहाड़ी से कुदान लगा दी।

“जय माता सरस्वती,” हनुमान ने हौले से कहा, और निश्चित ही वाली गरिमा के साथ सुदूर छोर पर स्थित चट्टानी क्षेत्र पर उतर गया था। हनुमान को न तो पछतावा महसूस हो रहा था और न ही ईर्ष्या, बस अजीब सी उलझन थी। ऐसा कैसे हो सकता था? मैं भी ऐसे कुदान लगाया करता था, और अब, ऊँचाई को देखने के साथ ही मुझे...

“चलो, हनुमान,” सुग्रीव हमेशा की तरह अपनी स्नेहभरी मुस्कान के साथ हाँफते हुए पीछे से आया, “अब मत रुको!”

हनुमान मुस्कुराए। प्रतियोगिता अभी समाप्त नहीं हुई थी। भले ही यह ऐसी प्रतियोगिता हो जो वे जीत न सकते हों। सुग्रीव अक्सर याद दिलाता था कि भले ही हनुमान अब कुदान न लगा सकते हों या न लगाना चाहते हों, मगर वे अभी भी तेज़ी से मैदान पार कर सकते हैं।

सुग्रीव ने अपने पसीने से भीगे हाथों से हनुमान का सिर सहलाया और एक पेड़ की लंबी शाखा पर लटककर घाटी में छलांग लगा दी। उसे इसमें ही मज़ा आता था। वाली सीधे पार छलांग लगा लेता था, मगर सुग्रीव को खुद को चालित करने के लिए झूलती शाखा की लय-ताल भाती थी।

जब तक साम्राज्ञी के साथ परेशानी शुरू नहीं हुई थी, तब तक निस्संदेह

हनुमान आसानी से दोनों काम कर लेते थे।

वे पत्तों को रौंदती सुग्रीव की आकृति के पेड़-पौधों में गुम हो जाने का इंतज़ार करते रहे, और फिर अचानक ही अपने दुख से उबरकर वे पहाड़ी से नीचे जाती सुरक्षित, मगर घुमावदार राह की ओर बढ़ गए।

यह हमेशा की तरह ही होना था। वे सुरक्षित, सपाट भूमि पर आगे बढ़ते, जबकि उनके चरे भाई हमेशा उन तरीकों को अपनाते हुए उनसे आगे निकल जाते जिनमें किञ्चिंधावासी माहिर थे—पेड़ों से और घाटी के पार कुदान और छलांगों। मगर सुग्रीव का एक बार विजयी होना उन्हें निश्चय ही अच्छा लगता। वह वाली के समान ही प्रतिभाशाली और उतना ही बलिष्ठ और चुस्त था, मगर हमेशा दूसरे स्थान पर रह जाता था। हनुमान चुस्ती से शाखाओं और पत्थरों को पकड़ते नीचे उतर रहे थे। वे अभी भी तीसरे स्थान पर आ सकते थे, वह स्थान जिस पर वे पिछले कुछ महीनों में वे दो बार रहे थे। वे बेहतर होते जा रहे थे, अन्य बालक अभी भी बहुत पीछे थे, शायद क्रष्णमुख पर्वत के शिखर के लिए कोई और रास्ता तलाश रहे थे।

हनुमान ने ढलान पर कोई एक तिहाई रास्ता तय किया होगा कि उन्हें सुग्रीव की चीख सुनाई दी।

“जय माता सरस्वती!” सुग्रीव ने छलांग लगाई तो यह हुंकारा किसी बाज़ की तरह आसमान के पार तैर गया।

मगर फिर, यह पर्याप्त नहीं था।

हनुमान अविश्वास से देखते रह गए जबकि सुग्रीव उस चट्टानी क्षेत्र से कुछ दूर रह गया था जिस पर कुछ पल पहले वाली कुद चुका था, और पहले कभी न भोगे भय के समान, जैसे दुर्निया समाप्त होने वाली हो, वह चकरघिन्नी खाते हुए सीधे नीचे जा गिरा, उसकी पूँछ शिथिल पड़ गई थी। और फिर सब कुछ एक लाल धब्बे में बदल गया।

चिंता का विषय



महान् राजा केसरी देख रहे थे कि उनके मित्र महर्षि विश्वामित्र विचलित हैं, हालांकि वे मुस्कुरा रहे थे और सबके साथ, सबसे अधिक उनकी साम्राज्ञी के साथ हँस रहे थे जिन्हें आगंतुकों और पाषाणनगरी किष्किंधा के निवासियों द्वारा इस प्रकार की भद्रता से प्रसन्न किया जाना पसंद था।

“आपकी अनुकंपा से, हे रानी मां, केवल आपकी अनुकंपा से वे आनंदित और उल्लसित हैं,” विश्वामित्र ने ऋक्षराज द्वारा उनके हिरण्यों और गिलहरियों के बारे में पूछे जाने पर बताया था। मगर जिस तरह से उन्होंने यह कहा था उसमें एक तीव्रता थी, उनके स्वर में एक संकेत था जो कहता था, “अगर मैं बताऊं तो भी आप नहीं समझेंगी,” मगर यह छिपा हुआ था, जैसा होना चाहिए था ताकि साम्राज्ञी कुपित न हो जाएं।

यह कारगर भी रहा। इस बात से संतुष्टि कि उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान किया गया है, ऋक्षराज अपनी सेविकाओं को निर्देश देने में लग गई कि वे उनके पैर किस तरह दबाएं। महर्षि और केसरी अब एक ओर हटकर उन महत्वपूर्ण मसलों पर बात कर सकते थे जिन पर बात करना आमतौर पर उन्हें पसंद था। विश्वामित्र जानते थे कि ऋक्षराज के प्रति केसरी का सम्मान वास्तविक है। अगर आज सामंजस्य है तो केवल उस शांति के कारण जो अपनी युवावस्था में ऋक्षराज ने उनके लिए अर्जित की थी जब उन्होंने देवी सरस्वती की संतानों के अंतिम निर्मम भक्षकों के विरुद्ध सेना का विजयी नेतृत्व किया था, और वह संधि स्थापित की जिससे वर्तमान का सुस्थिर परम धर्म अस्तित्व में आया। मगर फिर भी उनमें कुछ ऐसी बात थी जो उनसे व्यवहार करते हुए चतुरता की मांग करती थी।

केसरी जल्दी से विश्वामित्र को बाहर, उस पहाड़ी के नीचे एक पगड़ंडी पर ले गए जहां आवास था, यह एक शांत स्थान था जहां केवल एक अकेली गोलाकार चट्टान इस तरह खड़ी थी कि आसमान में हमेशा ऊपर चढ़ते सूरज का पाषाणिक रूपक लगती थी।

ऊपर चढ़ते हुए विश्वामित्र तीनों राजकुमारों के द्वितीय संस्कार के महत्व के बारे में बोलते रहे। वाली ने बहुत अच्छा किया था! सुग्रीव ने भी! हनुमान निस्संदेह अभी बालक ही हैं और किसी दिन हमें उनका संस्कार भी करना होगा।

केसरी मौन चलते रहे। उन्हें ऐसा लग रहा था कि विश्वामित्र किसी निष्कर्ष के तौर पर यह नहीं कह रहे थे, और संभवतः केवल यह सुनिश्चित कर रहे थे कि साम्राज्ञी संतुष्ट रहें कि उनके पुत्र हनुमान से श्रेष्ठ हैं।

जब वे चट्टान के ऊपर पहुंच गए, तो केसरी ने एक बार फिर अर्थपूर्ण ढंग से विश्वामित्र की आँखों में देखा। उन्होंने कभी उनमें भय नहीं देखा था। विश्वामित्र ने विषय बदलने के लिए मौन का सहारा नहीं लिया। एक बार फिर उन्होंने ज़ोरदार आवाज़ में उत्साह के साथ लड़कों के, भावी द्वितीय संस्कार, नारियलों, आमों और देवी सरस्वती के बारे में कहना शुरू किया।

“ऋषि,” केसरी ने विनम्रता से टोकते हुए उन्हें वह बात याद दिलाई जिसका उन्होंने पहले हल्का सा ज़िक्र किया था, “मछलियां?”

“अरे, बैंगनी वाली नन्ही मछलियां तो नदी के मोड़ के पार तक तैरना सीख गई हैं, आप देखिएगा...” वे उसी उत्साहित और उल्लसित स्वर में कहते रहे।

“वह क्या बात थी जो आपने मछलियों में देखी थी?” केसरी ने टोका, अब वे थोड़ा सा चिंतित हो रहे थे; रक्षक का सहजबोध। ज़रूर कोई गंभीर बात होगी, हालांकि विश्वामित्र के साथ सब कुछ ऐसा लगता था मानो उसी तरह हो रहा हो जैसे वे चाहते थे, एक प्रहसन, एक नाटक की भाँति।

गरिमामयी सफेद दाढ़ी के नीचे विश्वामित्र का गुलाबी चेहरा सिकुड़ गया, और केसरी ने उसी चिंताग्रस्त भाव को फिर से उभरते देखा। यह एक रहस्योद्घाटन था, एक झलक कि अपनी इंद्रियों को जीतने और ऋषि बनने से पहले विश्वामित्र एक सामान्य किष्किंधावासी रहे होंगे। भय की एक क्षणिक झलक। यह उस तरीके में छिपा था जिससे उनका मुंह सिकुड़ता था, और उनकी सफेद दाढ़ी पीछे तक जाती प्रतीत होती थी।

“ओह वह,” विश्वामित्र ने कहा, और फिर अपनी भावनाओं पर उनका नियंत्रण वापस आ गया, एक बार फिर प्रसन्नता के भाव में। “तो मैं कूदा, केसरी, मैं कूदा, मैं कूदा, मैं कूदा!”

वे अचानक चट्टान पर खड़े हो गए और उन्होंने अपने कार्य का पुनः प्रदर्शन किया और वे दोनों हँस पड़े। ये मज़ेदार था। किष्किंधा के सबसे बुद्धिमान और सबसे सम्मानीय व्यक्ति, कितने विनोदप्रिय और चुस्त थे, वह भी इस उम्र में!

अब नाटकीय ढंग से अपनी पूँछ उठाकर विश्वामित्र ने अपने आसपास देखा, “और बड़े? वे कहां छिपे हैं?” वे हँसे, हनुमान और उनके भाइयों के बारे में पूछते हुए एक बुजुर्ग का स्लेह स्पष्ट झलक रहा था।

“ऋषिमुख, मुझे विश्वास है,” केसरी ने उत्तर दिया, “हालांकि डांट खाने के बाद वे उत्तरी ओरी पर नहीं जाएंगे।”

“हनुमान छोटा है, मित्र,” विश्वामित्र ने कहा, “मगर मुझे विश्वास है कि द्वितीय संस्कार में वह अच्छा प्रदर्शन करेगा।”

केसरी मुस्कुराए। उनके पुत्र में कुछ ऐसा था जिसे दूसरे लोगों ने नहीं देखा था, मगर विश्वामित्र भाँप गए थे। कुछ समय से हनुमान का चित्त ठिकाने पर नहीं था, वह अंधेरी पहाड़ियों और दरारों में अकेले भटकता रहता था, केवल तभी खुश होता था जब सुग्रीव उसका मन बहलाता था। अंजना का कहना था कि इसकी वजह यह है कि वह उनके मायके के पहाड़ों के केले ज्यादा नहीं खा पा रहा था। केसरी सहमत

थे। वे इसी तरह के मुखिया, और पति थे, हमेशा सौहार्दपूर्ण। हनुमान का व्यवहार असामान्य नहीं था। जब बच्चे द्वितीय संस्कार की आयु में पहुंचते हैं, जब वे देवी सरस्वती के प्रति स्वयं को समर्पित करते हैं और अपने सामने पड़े वयस्क जीवन के लिए तैयार होते हैं तो कभी-कभी ऐसा होता है।

बालकों का कोई चिह्न पाने के लिए केसरी ने अपने नीचे फैले पथरीले मैदान पर नज़र डाली। नदी के पास बच्चों के कुछ झुंड थे। हवा के झोंकों के बीच नदी की ओर से किसी गाने के स्वर उठ रहे थे जहाँ कुछ लड़कियां एक पंक्ति में बैठी हुई अपने द्वितीय संस्कार का अभ्यास कर रही थीं।

केसरी की आंखें नदी के प्रवाह के साथ-साथ सुदूर नारियल के पेड़ों और चट्टानों के पार देखने लगीं जहाँ वह कृष्णमुख पर्वत में गुम हो रही थी। अपराह्न की धूप में उसकी चोटी किसी रत्न की तरह चमक रही थी। एक पल को केसरी को लगा मानो वे बहुत दूर हों। किञ्चिंधा की शांति बेहद गहरी, बेहद पूर्णता प्रदान करने वाली थी। उनके राज्य के किसी बच्चे ने संघर्ष नहीं जाना था; न ही उन्होंने केले के किसी पेड़ को लेकर कभी-कभार हुए विवाद के अलावा किसी अन्य परेशानी के बारे में सुना था। हवा का एक झोंका नदी की ओर कहीं से फलों-फूलों की मीठी गंध ले आया था। मुस्कुराते हुए और उस क्षणिक चिंता को भूलते हुए जो उन्हें तब महसूस होने लगी थी जब विश्वामित्र ने अपनी अस्पष्ट सी “मैं कूदा” कहानी सुनाई थी, उन्होंने अपनी दृष्टि को उस गंध की दिशा में घुमाया, एक अनजानी सी उत्सुकता के साथ कि पहाड़ पर कौन नई फ़सल ला रहा है।

“मैं कूदा, मेरे मित्र,” अचानक और तीव्र स्वर में विश्वामित्र ने कहा, ऐसे स्वर में जो कह रहा था कि वास्तविकता अब बहुत स्याह रूप में सामने आएगी, “क्योंकि नदी में प्रातःकालीन प्रार्थना के दौरान मेरे पैरों में जो वस्तु लिपटी थी उसे वहां होना ही नहीं चाहिए था।”

केसरी ने अपने पीछे अपनी पूँछ को तीव्रता से उठते और सख्त पड़ते महसूस किया, एक लंबे अरसे से उन्होंने ऐसा महसूस नहीं किया था। लगा आग का एक गर्म शोला उनके सिरे से उठा और उनकी आंखों के मध्य तक आ गया। उन्हें अपने कान लाल होते महसूस हुए। एक राजा और आत्मनियंत्रित व्यक्ति होते हुए भी वे बहुत विचलित हो उठे थे। उन्होंने अपने कानों पर हाथ रखे और फिर जल्दी से आसपास देखा यह सुनिश्चित करने के लिए कि किसी ने उनकी इस प्रतिक्रिया को देखा तो नहीं।

उन्होंने विश्वामित्र की पिंडली को देखा जहाँ उन्होंने कहा था ऐसा हुआ था। यह उनकी कल्पना थी या अब वह स्थान कुछ काला और धब्बेदार सा था? नहीं, जो भी हो, जैसा विश्वामित्र ने कहा था, यह भारी था, और उस तरह नहीं हिल रहा था जैसे किसी मछली को हिलना चाहिए।

वह बस पानी में तैर रहा था, और लहर के साथ बार-बार उनकी टांगों से टकराया था।

गहन ज्ञान और प्रबल शक्तियों से अपने मस्तिष्क और इंद्रियों पर दृढ़ नियंत्रण रखने वाले ऋषि विश्वामित्र को जब अहसास हुआ कि यह क्या है तो वे किसी भयभीत बालक की भाँति यकायक ही नदी से बाहर कूद पड़े थे।



हनुमान अभी भी लाल धब्बा देख रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे सूरज फट गया हो, और उसका एक अंश नीचे जा पड़ा हो, महान किञ्चिंधा के क्षितिज पर हो रहे अनंत सूर्यास्त की तरह। उनके कानों में आती आवाज मद्दम पड़ने लगी थी, मगर फिर भी गिरते हुए सुग्रीव की चीखों की याद उनकी स्मृति में बनी रही। एक पल को हनुमान विचलित हुए, और फिर उनके विचार भटक गए। शाखाओं में मची हलचल से उड़े पंछी ज़ोरों से कोलाहल कर रहे थे। दूर नीचे कहीं, वनस्पति के आवरण के नीचे, हनुमान को कुछ हरकत सी दिखी, प्रकृति में कुछ बहुत बुरा, कुछ ऐसा जिसे वहाँ नहीं होना चाहिए था। उन्हें अपनी आंखों के बीच एक पीड़ा सी उठती महसूस हो रही थी। उन्हें पिता द्वारा उनका हाथ थामना और देवी के नामों को जपना याद आ गया, उन्होंने गहरी सांस ली और उस भावना को दूर कर दिया।

“सुग्रीव!” उन्होंने पुकारा, हालांकि उनकी आवाज अब घाटी की खामोशी में तीव्रता से गूंजती लग रही थी। कोई उत्तर नहीं आया, बस उन पेड़-पौधों के बीच से उठता पंछियों का कोलाहल था जहाँ सुग्रीव गिरा था।

हनुमान तेजी से पहाड़ से उतरे और चट्टानी क्षेत्र और नदी की धाराओं से होते हुए भागे। पानी में भी लाल धब्बे के संकेत से दिख रहे थे। उन्होंने फिर से सुग्रीव का नाम पुकारा, उसे आश्वासन देते हुए कि वे आ रहे हैं, और फिर किसी तरह उस जंगल की ओर चढ़ाई पर चढ़े जहाँ सुग्रीव गिरा था।

एक पल को उनकी आंखों के आगे से लालिमा जैसे ग़ायब हो गई थी, मानो यह कोई भ्रम रहा हो।

फिर हनुमान ने अपने मित्र को देखा, इस हाल में उन्होंने कभी किसी को नहीं देखा था।

लालिमा किसी बवंडर की तरह लौट आई थी।

“माता!” हनुमान के मुंह से निकला और वे रक्त में लथपथ अपने मित्र को धरती से उठाने दौड़ पड़े। वह शिथिल और निष्क्रिय पड़ा था। उन्हें अलग सी गंध आई। हनुमान खांसे और फिर सुग्रीव के पास झुके। वह सांस ले रहा था, और उसके होंठों से हल्की सी कराहट निकल रही थी। मगर आंखें बंद ही थीं।

हनुमान ने धीरे से उसका नाम पुकारा, मगर सुग्रीव ने कोई उत्तर न दिया।

हनुमान ने हाथ बढ़ाया और उसके रक्त में भीगे चेहरे को छुआ। उन्होंने झटके से हाथ वापस खींच लिया, मानो आग को छू लिया हो। फिर धीरे से उन्होंने हथेली से सुग्रीव के गाल को छुआ, और फिर बहुत नर्मी से उसके सिर को उठाया।

गहरा घाव था, और उलझे हुए बालों से रक्त की एक पतली धार बह रही थी।

उनके पिता क्या कहा करते थे? क्या किया जाना चाहिए? क्या यह जल को प्रदूषित कर देगा? क्या सब लोग उन्हें इसी की चेतावनी देते थे? मगर उन्होंने तो यह नहीं किया। और सुग्रीव... पीड़ा में...

मानो उनके सवालों का जवाब देते हुए ऊपर से आवाजें आने लगी थीं।

“अपाचार!” क्रोध और भय से भरी आवाजें हनुमान पर बरस रही थीं।

हनुमान ने ऊपर देखा, सुग्रीव का सिर अभी भी उनकी हथेली पर था। एक-एक करके सारे लड़के पहाड़ी के कगार पर उनके ऊपर जमा हो गए थे। उनके चेहरे क्रोध से या ऐसे ही किसी असामान्य भाव से भरे थे जिसे हनुमान समझ नहीं पाए थे।

दो भिन्न विचार उनके मस्तिष्क में दौड़ गए। अपाचार! रक्तपात से बचो! मगर अपने मित्र और भाई को अपनी नियति के सहारे छोड़ देना विचित्र, अकल्पनीय संभावना मालूम देती थी, सिर्फ़ इसलिए कि उसने खुद को घायल कर लिया था। इसके विपरीत यह तो कर्तव्य था, धर्म का साथ देने का मां सरस्वती का तरीका था। इसे घर ले चलो! उठाओ इसे!

हनुमान झुके, उन्होंने अपनी बांहें सुग्रीव के बदन के नीचे सरकाई, और उसे उठा लिया। “चिंता न करो, सुग्रीव,” उन्होंने एकदम विरक्त और शांत स्वर में कहा, “मैं तुम्हें रानी माँ के पास घर ले जाऊँगा और तुम ठीक हो जाओगे।”

“अपाचार!” चोटी पर खड़े लड़के फिर चिल्लाएं, मानो अब हनुमान हनुमान न रहे हों। हनुमान को उनके चेहरों के भाव दिख रहे थे, जिस तरह उन्होंने अपने हाथों से अपने मुंह ढांप रखे थे, उस उत्तेजक भाव को जिससे वे अपने गालों को पीट रहे थे, दायां हाथ बाएं गाल को, और बायां हाथ दाएं गाल को। उन्होंने पहाड़ी की दीवार की तलहटी की ओर एक क्रदम बढ़ाया, इस उम्मीद में कि कोई तो उनकी मदद करने के लिए नीचे दौड़ा आएगा।

मगर वे तो और भी ज्यादा डर गए। वे पेड़ों के शिखर पर चढ़ गए और ज़ोर-ज़ोर से शाखाओं को हिलाने लगे। पंछी तुरंत उड़ गए, पलटकर वापस भी नहीं आए।

सुग्रीव हल्के से कराहे। उसकी पसलियों से गर्म, चिपचिपा तरल निकलकर हनुमान के पेट पर फैल गया। नदी से बाहर निकले पत्थरों पर आगे बढ़ते हुए हनुमान उसे दिलासा देते रहे। किञ्चिंधा की गर्मी में रक्त और पसीने की गंध के झाँके उठ रहे थे।

हनुमान को अपने ऊपर पेड़ों पर लड़के दिख रहे थे जो नज़दीक न आने की विनती करते हुए उन्हें हाथ से इशारे कर रहे थे। वे उनकी व्याकुलता समझ सकते थे; वह सतर्क तरीका जिसमें उन्होंने खेलना, बचपन में भी, और रक्तपात रोकने की प्रवृत्ति सीखी थी। रक्त की एक-एक बूंद में एक सौ आठ पत्तों की धूप होती है, और स्वयं मां सरस्वती जन्म से पहले वाली रात शिशु के शरीर में एक-एक बूंद डालती हैं, वही एक समय होता है जब रक्त को देखना घृणित नहीं माना जाता था। मगर फिर भी, यह सुग्रीव था। यह पीड़ा में था। किसी को तो इसकी मदद के लिए कुछ करना था...

अचानक, ऊपर स्थित पेड़ों में हो रहा शोर थम गया।

हनुमान इस खामोशी को पहचानते थे। उन्होंने घाटी के दूसरी तरफ के पहाड़ के शिखर की ओर निगाह उठाई और वाली को देखा। अच्छा हुआ। तुम्हारा भाई आ गया है, सुग्रीव, वह तुम्हारा ध्यान रखेगा, उसे हमेशा पता होता है कि क्या करना चाहिए।

हनुमान राहत से मुस्कुराए। “भाई वाली—” उन्होंने कहना शुरू किया।

मगर वाली ने हाथ उठाकर उन्हें चुप कर दिया। उसने ऊपर और ठीक सामने घाटी के पार अपने अनुयायियों को देखा। हनुमान समझ नहीं पा रहे थे कि वह क्या करने वाला है। उनके विचार यहाँ-वहाँ भटक रहे थे। शायद उन्हें नदी के साथ-साथ विश्वामित्र के आश्रम जाना चाहिए; यह बेहतर हो सकता है। वाली कुछ लड़कों को मदद करने के लिए कह सकता है, और चार लोग मिलकर बहुत जल्दी सुग्रीव को विश्वामित्र के पास पहुंचा सकते हैं।

वाली चूस्ती से उनके सिरों के ऊपर से कूदा और उस तरफ पहुंच गया जहाँ सब खड़े थे। वे सम्मानपूर्वक कुछ क्रदम पीछे हट गए। हनुमान भी पीछे हटे ताकि उसे देख सकें। नदी का ठंडा पानी उनके टखनों से लिपट रहा था। पानी में रक्त के गिरने को लेकर वे पल भर को हिचकिचाए, मगर अब सब कुछ भिन्न था, सब कुछ एक ऐसी जगह पर था जहाँ उनके किशोर जीवन में तो कम से कम कोई नहीं रहा था।

धीरे-धीरे एक अनुभूति उठने लगी, एक चिढ़ की, गले में फंसे तरल गोले की तरह। उनका पेट जैसे अंदर ही अंदर सिकुड़ गया था। निश्चय ही, वाली ऐसा नहीं करेगा अपने... यह सुग्रीव है! हमारा सुग्रीव!

हनुमान ने देखा वाली ने अपने युवा अनुयायियों को सुनने का आदेश देने के लिए अपने हाथों को सिर के ऊपर उठाया है। उसकी पूँछ पहाड़ी पर इधर-उधर लहराई, और फिर आदेशात्मक उठी हुई स्थिति में ठहर गई।

उसके शब्द तेज, स्पष्ट और दयाहीन थे: “परम धर्म। अपाचार!” वह चिल्लाया।

परम धर्म का उल्लंघन!

धूल का बादल और पंछियों और किञ्जिंधावासियों की आवाजों का शोर फिर से उठ पड़ा। हर कोई, उनके सारे मित्र, उनके सारे भाई-बंधु पागलपन भरी घबराहट में किञ्जिंधानगर की दिशा के जंगल में भाग खड़े हुए।

हनुमान वाली की पीठ को तकते रहे। अपनी पूँछ में एक और ऐंठन लिए वाली भी चला गया।

अब बस वे और सुग्रीव, और मां सरस्वती के प्रति उनका पूर्ण समर्पण रह गया था।

4

रात्रि



विश्वामित्र के जाने के बाद भी केसरी देर तक चुपचाप चट्टान पर बैठे रहे। दीप्तिमान सूर्य अस्त हो रहा था। शाम के पंछियों का कलरव उन्हें आश्वस्त कर रहा था कि सब कुछ ठीक है।

फैलते अंधकार में भी, उनके नीचे स्थित पर्वत और चट्टानें जीवंत और प्रफुल्लित लग रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो कुछ भी उनकी दुनिया को नुक्सान नहीं पहुंचा सकता था, हज़ार बरस में भी नहीं। उनकी जीवनदायिनी नदी झिलमिला रही थी, और फिर खामोशी से अंधकार में गुम हो रही थी।

रात का कीट-गान और बीच-बीच में रात के पंछियों का कलरव शुरू हो गया था। इसका मतलब था कि केसरी आराम कर सकते थे। अब अन्य राजा और मुखिया अपने संसारों का ध्यान रखने वाले थे। परम धर्म का शायद ही कभी उल्लंघन होता था और इसे सुरक्षित रखने के लिए किसी मुखिया को ज़्यादा कुछ नहीं करना होता था। अधिकांश संघर्ष, अगर होते भी थे तो, किसी हानिकारक कृत्य की अपेक्षा समझ से काम लेने के आग्रह और प्रेरक भावनाओं के प्रदर्शन से सुलझ जाते थे। वस्तुतः किञ्चिंधा में रक्त देखना बहुत दुर्लभ था, और इसीलिए कृषि की बातें इतना विचलित कर देने वाली थीं। लगभग एक जीवनकाल से गोधूलि शांतिपूर्ण चली आ रही थी। लेकिन केसरी को अपने बचपन का भयावह समय याद था: लाल आकाश, पलायन करते गांव के गांव, शिकारियों के हृथे पड़ जाने वालों की भय और पीड़ा भरी चीजें।

विश्वामित्र ने क्या देखा हो सकता था? कोई सड़ा हुआ फल? उसे तो किञ्चिंधा का कोई बालक तक पहचान लेता, विश्वामित्र की तो बात ही छोड़ें, हालांकि कृषि भी कभी-कभी किञ्चिंधा के बच्चों जैसे हो जाते थे। कोई नाग-कवचम? सांपों की छोड़ी केंचुली भी कभी-कभी वैसी दिख सकती है जैसा उन्होंने वर्णन किया था। मगर विश्वामित्र ने उसे भी दरकिनार कर दिया था। उन्होंने जो शब्द कहे थे, वे विलक्षण, चौंका देने वाले थे। जैसे प्राणों को निर्ममता से उससे निकाल दिया गया हो, उन्होंने कहा था। दुखम्, उन्होंने कहा था।

केसरी की दृष्टि चट्टान के किनारे की ओर चली गई। विश्वामित्र उस पर झुके थे और कहने के बाद उन्होंने कुछ थूका था। उन्होंने जो देखा था, उसे याद करके उनका

बदन अभी भी कांप रहा था। उन्होंने हिंसा का परिणाम देखा था, और यह अभी भी उनको विचलित कर देता था।

किसी कारण केसरी को ऋक्षराज का ध्यान हो आया। उनकी चाची, उनके बेटों की चाची अम्मा, अनेक नामों और रूपों वाली मातृशक्ति, और कैसे कभी-कभी वे ऐसी बातें कह और कर बैठती थीं जो दुख की वजह बनती थीं। ऐसे समय में जब दुखी होने के बहुत ज्यादा कारण नहीं थे, यह विचित्र ही लगता था कि दुख का अस्तित्व है। पिछली बार जब इस तरह का दुख आया था, उसे अब बहुत लंबा अरसा हो चुका है, उन दिनों में जब ऋक्षराज युवा और खूंख्वार थीं, और किसी राजा की भाँति लड़ी थीं जिससे उनका यह नाम पड़ा था। मगर जिन लड़ाइयों के बारे में उन्होंने सुना था, वे भी उस प्रकार के दुख के सामने फीकी प्रतीत होती थीं जिसका वर्णन विश्वामित्र अभी कर रहे थे। किञ्चिंधा में किसी ने अंग-भंग नहीं किया था, अगर यह वास्तव में यही था तो—

“महाराज!” अंधेरे में से किसी ने पुकारा। केसरी पलटे और चट्टान से फिसलते हुए नीचे आ गए, जैसे वे हनुमान के बचपन में उनके साथ करना पसंद करते थे।

उस अप्रिय बातचीत और याद को पीछे छोड़ देना ही अच्छा है। वे इस बारे में पूछेंगे, भूलेंगे नहीं; मगर ऐसा वे बाद में, आत्मविश्वास के साथ, मां सरस्वती में पूर्ण आस्था के साथ करेंगे।

जब वे अपनी रानी के पास पहुंचे तो उनके चेहरे पर मुस्कान वापस आ चुकी थी।

*

“वे बात करना चाहते हैं,” उन्होंने कहा।

केसरी की मुस्कान थोड़ी फीकी पड़ गई। उन्हें तो अंजना के साथ नदी किनारे टहलने और हनुमान के लौटने की प्रतीक्षा करने की चाह थी। वे और अधिक सभाओं की आशा नहीं कर रहे थे, वह भी दिन की समाप्ति पर।

अंजना उन्हें उस गुफा से आगे जहां वे आगंतुकों से मिलना पसंद करते थे, पीछे पहाड़ी के मोड़ पर बने एक और कक्ष में ले चलीं। केसरी जानते थे वहां कौन होगा। ऐसा पहले भी हो चुका था। नदी के सुदूर किनारे से आए अंजना के संबंधी। उन्हें महसूस होता था कि इस कक्ष में वे ऋक्षराज के कानों से पर्याप्त दूर रहेंगे।

“महाराज, हमें शीघ्र ही इस पर ध्यान देना चाहिए,” अंजना की चाची अम्मा ने तीखे स्वर में कहा। “अब इसे लेकर और झिझकने की ज़रूरत नहीं है कि ऋक्षराज क्या सोचेंगी या और कोई क्या सोचेगा। यहां और किसी से भी ज्यादा वे जानती होंगी कि किञ्चिंधा के लिए क्या अच्छा है। अंततः उनके कारण ही हमने राजा का अनुकरण करने की अपनी परंपरा को बदलकर रानी का अनुकरण किया और फिर वापस आए, जैसा कि देश-काल ने हमसे मांग की थी। हम किञ्चिंधावासी हैं। हम देवी सरस्वती का अनुकरण करते हैं, न कि किसी निष्प्राण विधान या चलताऊ प्रचलन का कि किसी अधिनायक को कैसा दिखना या सुनाई देना चाहिए।”

ये तीखे और स्पष्ट शब्द थे। केसरी भारी मन से बैठ गए। हमेशा की तरह, इस तरह के समय में, वे सोच रहे थे कि महत्वपूर्ण सभाओं में वही एकमात्र पुरुष क्योंकर

होते हैं। माना, देवी सरस्वती के निर्देशों का पालन करने और प्रजा पर शासन करने में इनमें से कोई भी बात मायने नहीं रखती थी, मगर कुछ अवसर होते थे जब उन्हें लगता कि सभा में किसी भाई का होना अच्छा रहता। जब वे अपने भाई-बंधुओं के साथ किसी दावत पर जाते और अपने और उनके जीवन और जीवनशैली में भारी अंतर देखते, तब कम से कम उन्हें ऐसा तो नहीं लगता जैसे सारी दुनिया का बोझ उनके कंधों पर ही है। कभी-कभी उनका मन करता कि काश वे यह सब छोड़ सकते, अपने मधुमक्खी के छत्तों से शहद पीते, सब कुछ अंजना के सक्षम हाथों में सौंप देते और हनुमान और उसके मित्रों के साथ खेलते। कभी-कभी दूसरे लोग ज़िम्मेदारी भरे फैसले ज्यादा अच्छे लेते हैं, खासकर जब वे आपके अपने परिवार से संबंधित हों। उदाहरण के लिए, द्वितीय संस्कार के बाद हनुमान की शिक्षा पर वे स्वयं निर्णय नहीं ले सकते थे। हनुमान के बड़े भाई-बंधु पहले ही यहां-वहां के गुरुकुलों में जा चुके थे, जिन्हें विश्वामित्र के अनेक शिष्य चला रहे थे, और वे दर्शनशास्त्र, खगोलविद्या, पोषण, सौंदर्यशास्त्र और प्राकृतिक अर्थव्यवस्था का अध्ययन कर रहे थे। मगर मुखिया के लिए कोई पाठ्यक्रम नहीं था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोई मुखिया बनना ही नहीं चाहता, मगर फिर भी यह करना तो था ही।

“केसरी!” उनकी चाची अम्मा सास चिल्लाई। वे फिर से तक रहे थे और लंबी, खड़ी ढलान की ओर झुके हुए थे।

उन्होंने अचानक अपनी पूँछ वापस खींची और सतर्क हो गए। “हां, दादी, हां।”

केसरी के विपरीत, अंजना चुस्त और यथार्थवादी थीं और अपने पति को भी अच्छी तरह जानती थीं। “हां क्या? आपने सुना भी है?” उन्होंने कुछ गंभीरता, और कुछ लेह से पूछा।

“हां। हनुमान। वह अच्छा लड़का है,” वे बड़बड़ाए।

“वह तो है, किंतु आप इच्छुक हैं?”

“इच्छुक?”

“आपको वह कहना होगा जो सबके मन में है, केसरी। आने वाले वर्षों में सब लोग आपके पुत्र को ही किष्किंधा का राजा देखना चाहेंगे। उसकी स्मृति असाधारण है, और वह अभी ही मां सरस्वती के सारे नामों का उच्चारण कर लेता है, यद्यपि अभी औपचारिक रूप से उसका द्वितीय संस्कार नहीं हुआ है। वह शक्तिशाली है, मगर फिर भी अन्य सभी की अपेक्षा दयालु है। वह उत्कृष्ट मुखिया बनेगा।”

“वैसा नहीं जैसे वह—” एक और चाची अम्मा बोलीं जो अब तक केवल हामी भर रही थीं, मगर फिर बीच में ही रुक गईं।

“मगर वाली भी अच्छा है,” केसरी ने गंभीरता से कहा। “और वह मुखिया बनना भी चाहता है। हनुमान तो बस बंडर बनकर ही खुश है। वह हमेशा वाली का अच्छा भाई और सहयोगी रहेगा।”

“वह सर्वोत्तम है,” किसी अन्य ने चिल्लाकर, अपने होठ चटकारते हुए कहा।

केसरी प्रसन्न हुए, स्वाभाविक था, मगर वे इसे गंभीरता से नहीं ले सकते थे; वास्तव में नेतृत्व के इस काम में ऐसी बहुत सी बातें थीं जिन्हें वे गंभीरता से नहीं ले सकते थे। विश्वामित्र के शब्द अभी भी उनके मन को मथ रहे थे, लेकिन उन्होंने एक सांस ली और तय किया कि वे देवी सरस्वती से उनका कल्याण करने का दायित्व नहीं ले सकते। वे मुस्कुराएँ और नेतृत्व के इस अनपेक्षित मसले पर आए जिसमें उन्हें

धकेल दिया गया था।

“माता,” उन्होंने प्रसन्न और दृढ़ विश्वास से भरे स्वर में अपने पुत्र की समर्थक को संबोधित किया, “देवी सरस्वती की अनुकंपा से, हमें बहुत लंबे समय से किसी बड़े संकट का सामना नहीं करना पड़ा है। खेलते समय बच्चों को थोड़ी-बहुत खरोंचे भले ही लगी हों, मगर उन्हें भी—तुरंत उपचार और धैर्यपूर्ण क्षमा से—कभी हमारे परम धर्म का उल्लंघन नहीं करने दिया गया। नारियलों और आमों को—अह, मैं मानता हूं कि आम हमेशा हमारे अंदर अशोभनीय प्रवृत्ति उत्पन्न करते हैं—लेकर हुए सीमा विवाद भी कभी इतने निम्न स्तर तक नहीं उतरे कि किसी की बुद्धि स्थायी रूप से भ्रष्ट हुई हो।”

सबने सिर हिलाया और अनुमोदन में आवाज़ें निकालीं। वे समझ नहीं पाए कि ये कभी-कभार फलदार पेड़ों को लेकर होने वाले झगड़ों को उनके द्वारा कुशलतापूर्वक सुलझाने के लिए थीं, या आम के स्वादिष्ट फल के लिए।

वास्तव में उनका ऐसा इरादा तो नहीं था, मगर जो भी हो, जब सब लोग आमों की उत्तमता और इस विषय पर चर्चा में लग गए कि इस मौसम में किसके पेड़ों पर अच्छे फल आए हैं, तो सभा अनौपचारिक रूप से समाप्त हो गई। केसरी ने मन ही मन देवी सरस्वती को धन्यवाद दिया कि उन्होंने किञ्चिंधावासियों को जितनी जल्दी उत्तेजित होने वाला बनाया है उतनी ही आसानी से शांत होने वाला, और जितना बुद्धिमान उतनी सी सरलता से बहक जाने वाला बनाया है।

सभा ठीक उसी तरह समाप्त हुई जैसी कि केसरी को उम्मीद थी, बिना किसी प्रतिबद्धता या योजना के। कभी-कभी, विशेषकर इस तरह की बातों में यही अच्छा था कि स्थितियों को उनके हाल पर छोड़ दिया जाए। इन दिनों हनुमान को तो घाटी के पार कुदान लगाने में भी रुचि नहीं रही थी, वे कहाँ बैठकर दायित्व और नेतृत्व की बात करते...

केवल अंजना ही इस वार्तालाप और इसके आशय पर मनन करती रहीं। संभवतः उनके मन में यह भावना थी कि हनुमान को अब तक लौट आना चाहिए था, और कहीं कुछ सही नहीं था। संभवतः यही वह दक्षता थी कि उन्होंने रानी माँ की छाया में केसरी के गुफा महल में अपना यथोचित स्थान पाया था।

जल्दी ही उन्हें एक अतिरिक्त बड़ा नारियल तोड़ना होगा ताकि उनके प्रिय पुत्र पर मंडरा रही बुरी शक्तियां दूर हो जाएं, और फिर उसे किञ्चिंधानगर से दूर जा रही चींटियों की सेना को खिलाना होगा। इस सारी प्रशंसा से नज़र लग सकती है। क्रृक्षराज पहले भी एक बार एक बालसुलभ खेल के लिए हनुमान को बुरी तरह डांट चुकी थीं।

अंजना लोगों में अधिक से अधिक अच्छाई देखती थीं, और क्रृक्षराज तक में भी अधिकाधिक निष्कपटता से केवल अच्छाई देखती थीं, वे जानती थीं कि वे लोगों पर, यहाँ तक कि केसरी पर भी क्या प्रभाव डाल सकती हैं, और वे जानती थीं कि यह हमेशा भले के लिए नहीं होता है। जब क्रृक्षराज कुछ ऐसी बात उठाती थीं जो केसरी को उत्तेजित कर देती थीं तो उनकी पूँछ कभी संतुलित नहीं रह पाती थी।

जो भी हो, अंजना ने सोचा, अगर क्रृक्षराज हनुमान के प्रति जनसमर्थन के बारे में जान भी गई तो भी कोई अंतर नहीं पड़ेगा। केसरी स्पष्ट रूप से वाली के पक्ष में बोल चुके थे, और उसके जन्म के साथ ही सबने मान लिया था कि यही होगा। और

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

हनुमान इतना छोटा था कि वह कभी शासक बनने जैसी बातों के बारे में सोच भी नहीं सकता था। और उसे इस नई स्थिति से भी उबरना था कि पहले की भाँति पहाड़ियों को कूदकर पार करने की बजाय वह दौड़कर उनसे उतरता था।

अब केसरी बस विचारमग्न बैठे हुए थे। चलने का समय हो गया था। अंजना ने हंसते हुए उनका आलिंगन किया, और संसार को उस स्थिति में रखने के लिए मूक भाव से देवी को धन्यवाद दिया जिसमें उसे होना चाहिए था।

“लगता है बच्चे लौट रहे हैं, देखो,” केसरी ने कहा, वे प्रसन्न थे कि अत्यधिक दायित्वों से भरा यह दिन समाप्त हो रहा है। हनुमान के साथ रहना भला लगेगा, यद्यपि अब वह उतनी बातें नहीं करता है जितनी बचपन में किया करता था। वह विश्वामित्र की कहानियां सुनकर प्रसन्न होगा।

अंजना ने उन्हें छोड़ दिया। वे दूर नदी के पास एक समूह की स्थाह आकृतियां देख रही थीं। मगर आज जिस तरह वे चल रहे थे, वह कुछ भिन्न सा था। वे मित्र और भाई-बंधु जैसे नहीं दिख रहे थे। वे उद्देश्यपूर्ण और तेज़ थे, लगभग ऐसे जैसे कि वे अभियान पर जा रहे हों।

वाली सबसे आगे था।

और सुग्रीव और हनुमान उसके पीछे नहीं थे।

सुग्रीव का होश में आना



अंततः जब सुग्रीव को होश आया तब लगभग अंधेरा हो चुका था। हनुमान ने एक नारियल तोड़ा और उसके पानी से सुग्रीव के चेहरे को नहला दिया। जीवनदायी फल की चिरपरिचित गंध ने रक्त की गंध को कम कर दिया जिसने शाम से उन्हें परेशान कर रखा था।

हनुमान ने राहत महसूस की। “जय माता सरस्वती,” उन्होंने कहा, और धीरे से सुग्रीव को बैठने में मदद की।

“वाली?” सुग्रीव ने धीरे से पूछा। “मेरा भाई कहाँ है?”

एक पल को, हनुमान सोच में पड़ गए कि क्या कहें। स्पष्ट था कि वाली वापस नहीं आया था। “वाली मदद लाने गया है, सुग्रीव, यद्यपि बहुत देर हो चुकी है,” हनुमान ने अंततः कहा।

सुग्रीव कराह उठे थे। यह लगभग हारा हुआ सा सुनाई दिया। मगर यह समझा जा सकता था। सुग्रीव पीड़ा में थे। और वह गर्म, नम गंध कुछ फीकी सी तो हो गई थी मगर अभी भी दुर्गंधयुक्त थी।

हनुमान का मन चाह रहा था कि उनके पिता जल्दी से यहाँ आ जाते, और उनकी माँ, और सबसे बढ़कर ऋक्षराज। गांव में सबसे अधिक, संभवतः विश्वामित्र को छोड़कर, उन्हें ही पवित्र औषधीय पत्तियों की जानकारी है। विश्वामित्र! काश विश्वामित्र आ जाते, काश वह ऐसे पेड़ से गिरता जिस पर उचित पत्तियां उगती हैं।

हनुमान देवी सरस्वती से प्रार्थना करने लगे कि वही उन्हें बताएं वे क्या करें। वे कुछ महत्वपूर्ण जान गए थे जिस पर उन्होंने पहले कभी ठीक से सोचा नहीं था। सुग्रीव के घाव, और उनकी लाचारी ने उन्हें वह समझा दिया था जो उनके बड़े-बुजुर्ग केवल शब्दों से उन्हें नहीं सिखा सकते थे। वे सब कितने कोमल थे, कितनी आसानी से टूट सकते थे। वे अब कितने अकेले और संवेदनशील थे, एक विशाल चट्टानी पर्वत पर बस वे दोनों थे, सुग्रीव जिस स्थिति में थे उसमें वे चलकर घर भी नहीं पहुंच सकते थे। केवल देवी, और उनके क्रियाकलाप को दिशानिर्देशित करने के लिए देवी के द्वारा दिया ज्ञान ही उन्हें सुरक्षित रख सकता था।

“तुम चल सकते हो, सुग्रीव?” हनुमान ने पूछा। “अगर हम पहाड़ के शिखर तक पहुंच जाएं, तो कम से कम वे नदी से हमें देख तो सकेंगे।”

उत्तर में सुग्रीव कराहे, मगर फिर भी उन्होंने धीरे से हिलने की चेष्टा की। हनुमान ने अपनी बांह अपने भाई के कंधे के गिर्द डाली और उसे अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद की। धीरे से, पीड़ा के साथ, हर क्रदम पर लड़खड़ाते, यथासंभव प्रार्थना बुदबुदाते हुए सुग्रीव आगे बढ़े।

*

वे उस स्थान के पास थे जहां दिन में उन्होंने अपनी दौड़ शुरू की थी। मगर अब सूरज लगभग अस्त हो चुका था।

“हम लगभग वहां पहुंच गए हैं, सुग्रीव,” हनुमान ने उत्साह बढ़ाते हुए कहा। “यहां से घर का रास्ता आधा रह गया है। मुझे विश्वास है अब किसी भी पल हम अपने परिजनों को हमें लेने के लिए आते हुए देखेंगे।” ये शब्द कहते हुए उन्हें अजीब सा महसूस हुआ, मगर यही अपेक्षित लगता था। ऐसा कब हुआ था कि उन्हें अपने माता-पिता की आवश्यकता पड़ी हो और वे न आए हों?

सुग्रीव ने गहरी सांस ली। “आशा है तुम मुझे क्षमा कर दोगे, हनुमंत, मेरे प्यारे नन्हे भाई।”

हनुमान चकित थे। “तुम क्या कह रहे हो, सुग्रीव?”

“मैं अब कई दुखों का आरंभ होने जा रहा हूं। तुम्हारे लिए, केसरी चाचा जी के लिए, और अंजना चाची के लिए,” सुग्रीव ने कहा। फिर उनकी आवाज़ टूट गई। “अंजना चाची, जिनके नारियल और गुड़ के लड्डुओं के लिए हम आसमान सी ऊँची छलांग लगाया करते थे।”

हनुमान को आभास हुआ कि सुग्रीव रो रहे हैं। उनकी बात समझ में नहीं आ रही थी। अब वे किशोर थे और लगभग वयस्कों के समान ही लंबे थे। चट्टान के अगले सिरे पर जहां उनकी मां मिठाइयां रखती थीं, वहां से मिठाइयां उठाने के लिए उन्हें अब कूदना नहीं पड़ता था। सदमे और पीड़ा ने सुग्रीव का मतिभ्रम कर दिया लगता था।

“देखो, उम्मीद मत खोओ। वहां तुम हमारे घरों के ऊपरी भाग देख सकते हो, और उन पेड़ों के शिखर जिन पर तुम्हारे मनपसंद नारियल लगे हैं। जब हम घर पहुंचेंगे तब तुम निश्चय ही मेरी मां की बनाई मिठाइयां खा सकोगे।”

सुग्रीव ने सुबकना बंद कर दिया। ऐसे स्वर में जो अचानक विश्वास से भरा लग रहा था, मगर अभी भी उदास था, उन्होंने हनुमान से ठहरने और उन्हें बैठने देने के लिए कहा।

अंधेरे में, सुग्रीव की आंखें गहन दुख से जगमगाती मालूम दे रही थीं। अनभिज्ञता की वह अनजानी सी भावना फिर से लौट आई जो तब से हनुमान के अंदर पैठ गई थी जब वाली और अन्य लड़के उन पर चिल्लाए थे। कुछ हो रहा था, यद्यपि उन्हें ठीक से पता नहीं था कि वह क्या था और उसका क्या तात्पर्य था। मगर कुछ बुरा था।

“हम घर नहीं जा रहे हैं, हनुमान,” सुग्रीव ने शांत स्वर में कहा। “हम नहीं जा सकते। हमने परम धर्म का उल्लंघन किया है। हम अब जटायु का आहार बनने के अलावा और किसी योग्य नहीं हैं। मगर यह भी ऐसा सम्मान है जो आपको एक लंबे

जीवन में अपने अच्छे कर्मों द्वारा अर्जित करना पड़ता है। और यहां हम हैं, अपने नाम पर कुछ भी अर्जित किए बिना, जटायुओं के आने तक भटकने के लिए शापित। और तुम... तुमने तो अभी अपना द्वितीय संस्कार तक नहीं देखा है..." सुग्रीव का स्वर फिर से टूटने लगा।

हनुमान समझ रहे थे, मगर फिर भी नहीं समझे थे।

उन्हें घर जाने से क्या चीज़ रोक सकती थी? हनुमान ने कभी नहीं देखा था कि किसी के लिए अपने घर या अपनी मां के पास लौटना वर्जित हुआ हो।

उन्होंने स्त्रेह से सुग्रीव के कंधे को छुआ। "अभी से हताश न हो। हम तो एक-दूसरे के साथ हैं ना? मैं तुम्हें अपनी पीठ पर उठाकर नदी पार करवा सकता हूँ। अभी इतना अंधेरा नहीं हुआ है कि हम इसे पार न कर सकें।"

मगर सुग्रीव ने दृढ़ता से सिर हिलाया। ऐसा प्रतीत होता था कि अब वह हताशा से दृढ़ता की स्थिति में पहुँच गया है। "नहीं, हनुमान। अगर हम किञ्चिंधानगर गए तो वह कलंकित हो जाएगा। अभी यहां प्रतीक्षा करते हैं। रात में आगे बढ़ने से बेहतर यही होगा।"

हनुमान सहमत हो गए, और विश्राम करने के लिए उपयुक्त स्थान तलाशने लगे।

"और शायद, शायद तुम ठीक कहते हो, हनुमान," सुग्रीव ने कहना जारी रखा, विश्राम की प्रत्याशा में वह अब थोड़ा उल्लसित था, "शायद सुबह होने पर हमारे बड़े-बुजुर्ग हमें ढूँढ़ने आएं, और शायद वे कहें कि यह वास्तव में अर्धम् का कृत्य नहीं था, शायद परम धर्म का उल्लंघन यह न हो। शायद वाली उन्हें विश्वास दिला सके कि यह केवल एक दुर्घटना थी।"

हनुमान ने कुछ राहत और प्रसन्नता से सांस छोड़ी। वे प्रसन्न थे कि उनका मित्र हताशा से उबर रहा है। उन्होंने अपने हाथ जोड़े और आकाश में लालिमा की हल्की किरण की ओर मुड़े। अपने माता-पिता से दूर वे पहली बार संध्यावंदन कर रहे थे। वे सुग्रीव के पास सिमटकर लेट गए और जब रात के पंछियों और कीड़े-मकोड़ों का रात्रि गान शुरू हुआ तो अर्ध निद्रा में डूबने लगे थे। कुछ पल तो वे उस संवाद को समझने की कोशिश करते रहे जहां से बीती रात उन्होंने उसे छोड़ा था; किञ्चिंधानगर के नन्हे प्राणियों के स्वर जो वन्य भूमि में रहते थे। कुछ प्राणियों को तो वे उनके स्वर से ही पहचान गए थे; उन्होंने उन्हें देखा भी था, घोंघा, झींगुर, शलभ। वे सोच रहे थे कि क्या कोई ऋष्यमुख में आज उनके साथ हुई विचित्र दुर्घटना की भी बात कर रहा होगा। उन्होंने उस दिशा में कान लगाने की कोशिश की मगर कुछ नहीं समझ पाए। कभी-कभी ऐसा लगता था मानो प्राणियों के बीच सार्थक संवाद चल रहा हो, तो कभी ऐसा नहीं था, सब जैसे अपना-अपना राग अलाप रहे थे। नन्हे प्राणियों की भाषा विशेषकर ऐसी थी। वे तभी कुछ सुसंगत से लगते थे जब आप सुन न रहे हों, मगर ध्यान देने पर कुछ भी समझ पाना मुश्किल होता था।

धीरे-धीरे हनुमान नींद में डूब गए। वे कुछ कल्पना, कुछ सपना देख रहे थे कि उनके माता-पिता ने उनकी बांहें पकड़ी हैं और भोजन से पहले उनके हाथ धुलवा रहे हैं। सुग्रीव हंसते और चिल्लाते, "आत-पात-टकटक-शुक," यह बच्चों का आम जुमला था, जिसका अर्थ था कि खेल का, या नाटक करने का समय अब खत्म हो

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

गया। वह भी सुदूर बचपन की याद थी। अब तो बरसों से किसी ने वह खेल नहीं खेला था, मगर फिर भी यह सब खेल जैसा लगता था—एक विचित्र सा खेल!

किष्किंधानगर में उतरा अंधेरा



केसरी वरिष्ठजनों के समूह से निकले और धीमे-धीमे अपनी चट्टान पर चढ़ गए। अपने हनुमान के बिना यह कठोर, और इस गर्म रात में भी लगभग ठंडी महसूस हुई। उन्हें शाम की प्रार्थना के बाद कभी-कभी यहां बैठना और तारों को निकलते देखना अच्छा लगता था। वे सोच रहे थे कि क्या उनका नन्हा हनुमान भी तारों को देख रहा होगा या गहरी नींद में सो चुका होगा। ऋष्यमुख पर्वत की ओर देखते हुए वे कल्पना करने लगे कि हनुमान कहां होगा और आशीर्वाद देने के लिए उन्होंने अपना हाथ उठा दिया।

“यह वैसा नहीं है जैसा प्रतीत होता है, केसरी,” अंजना ने उनके पीछे आते हुए शांत भाव से कहा।

“वे मेरे पुत्र के बारे में इस तरह की बातें कैसे कह सकती हैं?” वे क्रोध से भूतभुनाए।

“अगर वे नहीं कहतीं तो कोई और कहता। ऋक्षराज तो तभी से हनुमान के दोष ढूँढ़ने में लगी हैं जब से वरिष्ठों ने उसे वाली से श्रेष्ठ कहना शुरू किया है।”

“मगर वह अभी भी बच्चा है। एक उत्कृष्ट बच्चा, अंजना। तुमने उसे पेड़ से केला तोड़ते देखा है, कितना सर्क, कितना सटीक, और कितना भला होता है वह? क्या उसने कभी आवश्यकता से एक भी पत्ता अधिक तोड़ा है? क्या कोई बच्चा जिसने अपने दम पर खड़े हो पाने से पहले ही अपनी हर भाव-भंगिमा को माप लिया था, इतना लापरवाह हो सकता है कि अपने ही चचेरे भाई को आहत करे, जिसे वह अपने बड़े भाई की तरह देखता है?”

अंजना चुप थीं। इस तरह के अवसरों पर केसरी सोचते थे कि देवी सरस्वती उनकी पत्नी की जिह्वा पर विराजमान हैं। अंत में उन्होंने स्पष्टता, और आत्मविश्वास के साथ कहा। “इसीलिए आपको हमारे हनुमंत के लिए भय नहीं करना चाहिए। वरिष्ठजनों ने जो भी कहा या जो वे कल कहेंगे, उसे लेकर आपको बुरा नहीं मानना चाहिए। देवी चाहती हैं कि ऐसा हो, और चाहती हैं कि अब वह कुछ करे।”

“मगर उसका द्वितीय संस्कार? काश हमने इतनी देर न की होती। अगर वह गुरुकुल में होता तो ऐसा कुछ भी न हुआ होता। अब मैं नहीं जानता वह क्या करेगा।

या मुझे क्या..." उन्होंने बात अधूरी छोड़ दी।

अंजना उनके दुख में साथ दे सकती थीं। मगर देवी अभी भी उनके शब्दों में बसी थीं, या केसरी का ऐसा मानना था। वे सही राह देखने में उनकी मदद कर सकती थीं।

"अब देवी ही उसे उचित काम करने का ज्ञान देंगी," अंजना ने जैसे केसरी के विचारों को पढ़ते हुए कहा। "और कोई रास्ता नहीं है। अगर हनुमान को संस्कार और हमारे बालकों के उपयुक्त सामान्य परंपराओं के बिना, किसी अन्य रूप में देवी की अनुकंपा को पाना है, तो यही होगा। और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अपाचार और महा-अपाचार की इन सारी बातों से विश्वामित्र को सरलता से प्रभावित नहीं किया जा सकेगा। उनके लिए कोई 'पाप' और 'महापाप' नहीं है। वे अभी भी हमारे गुरु हैं। और वे आपको जानते हैं, वे हनुमान को जानते हैं, और सबसे बढ़कर वे देवी के हृदय को जानते हैं।"

कुछ घंटे पहले के उस भयानक पल के बाद जब वाली अतिरंजित गंभीरता के साथ चलता घर आया था, केसरी अब पहली बार कुछ मुस्कुराए थे। पहली बात जो केसरी के मन में उठी थी, वह यह थी कि उस पर रक्त का एक धब्बा तक नहीं था, यद्यपि उसने कहा था कि उसके भाई और हनुमान ने पूर्ण उल्लंघन किया था। क्या उसने मदद नहीं की? केसरी ने सोचा था। उसकी माँ चाहती हैं कि वह नेतृत्व करे, और वह भी मुखिया बनने का इच्छुक है। मगर फिर भी वह यहां अकेला आया है, उस पर इस पछतावे या चिंता का कोई चिह्न तक नहीं है कि कोई साथी पीड़ा में है। उसे परवाह है तो बस किसी नियम की जिसका अभिप्राय कभी किसी निर्दोष को दंड देना नहीं, केवल उन्हें हानि से बचाना था। फिर केसरी ने अपने विचारों को लगाम दी। उनका भतीजा भी छोटा था। राजा के रूप में उन्हें सहनशील और क्षमाशील होना चाहिए।

उन्होंने अंजना, कृष्णराज, वरिष्ठजनों को बुलाया था, और उन सबने फिर से सारी कहानी सुनी, सीधे वाली के मुंह से। कोई नहीं समझ पा रहा था कि क्या कहे। जिन वरिष्ठजनों ने केसरी से हनुमान का अभिषेक करने की विनती की थी, वे अन्य लोगों से अधिक विचलित प्रतीत हुए। कृष्णराज भावहीन थीं और उन्होंने एक बार भी केसरी को नहीं देखा। जो भी कहना था, वह सुबह को प्रार्थना के बाद कहा जाना था। बहुत वर्षों से उन्होंने किसी को देशनिकाला नहीं दिया था। केसरी को तो वे शब्द भी याद नहीं थे जो एक राजा के तौर पर उन्हें बोलने होते। अब, यह एक संभावना थी।

"विश्वामित्र के पास अवश्य कोई उपाय होगा," केसरी ने अचानक अंजना से कहा। "उस सबके बावजूद जो ये मूर्ख कह रहे हैं, वे जानते होंगे कि मेरे हनुमान को घर वापस कैसे लाएं।"

"आप क्या कहेंगे? 'हे गुरु, मेरे पुत्र को अपवाद बना दें?' क्या ऐसा करना एक न्यायप्रिय राजा के योग्य होगा?" अंजना ने उन्हें याद दिलाया।

केसरी खड़े हो गए। "फिर पूछना ही क्यों," उन्होंने क्रोध से कहा। "मैं उन्हें पर्वत से नीचे फेंक दूँगा। मैं उन्हें पर्वत के कंटीले हिस्से से नीचे फेंक दूँगा। मैं वन में अपने पुत्र के साथ अपाचार में जियूँगा। और अगर मैंने दुबारा कभी उन्हें देखा तो उन्हें धून दूँगा, फिर और अधिक अपाचार करूँगा!"

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

आंखों में अंजना उनके साथ सहमत प्रतीत हो रही थीं, मगर फिर उन्होंने देवी और आदि विधान के प्रति किसी भी अवमानना को दूर करने के लिए अपने गालों पर हाथ मारे। वे जानती थीं कि केसरी का ऐसा कोई आशय नहीं था। यह मात्र परीक्षा थी। वही होनी चाहिए। और कुछ नहीं।

केसरी चट्टान से उसी तरह उतरे जैसे बचपन में उनकी पीठ पर सवार हनुमान को अच्छा लगता था। उनके कंधे तनावपूर्ण थे और पूँछ सख्त थी, मानो वे अभी जाकर अपनी धमकी पर अमल करने वाले हों।

सुरक्षा के लिए अंजना ने पूछा, “आप कहां जा रहे हैं?”

ऐसे सुर में जिससे उनका क्रोध तो झलक रहा था, मगर फुसफुसाहट में जो पुष्टि करता था कि वे विवेकपूर्ण भी हैं, उन्होंने कहा, “विश्वामित्र। संदेश। भेजूंगा। अभी।”

Novels English

नरक राजा



अचानक हनुमान की आंख खुल गई। वे सपना देख रहे थे। मगर सपने में वे जिस ऊष्मा को अपनी माँ के साथ जोड़ रहे थे, वह अब भिन्न महसूस हुई। उनके ऊपर मंडरा रही सांस गर्म और बदबूदार थी। उन्हें बीती दोपहर और सुग्रीव से फृट रही गंध याद हो आई, मगर यह तो और भी बुरी थी। ऐसा मालूम हो रहा था जैसे उसमें अनेक भिन्न प्रकार के अपाचारों का अंश हो। उन्होंने सुग्रीव पर हाथ फिराया, मगर वह तो सूखा सा ही लग रहा था। उसके घाव भली प्रकार भर रहे थे।

वह गंध सुग्रीव से नहीं आ रही थी। कोई और चीज़ उनके बहुत निकट आ चुकी थी।

पलक झपकते हनुमान उठ खड़े हुए। अंधेरे में उनके आसपास मौजूद आकृतियां और छायाएं आकार लेने लगी थीं। ठंडी हवा भी चलने लगी थी। जो भी उनके नज़दीक मौजूद था, हवा ने उसकी गंध को दूर कर दिया प्रतीत हो रहा था।

यह दिन भी अजीब रहा था। हनुमान असमंजस में थे कि सूर्योदय कब होगा, उन्होंने उस तारामंडल को ढूँढा जिसे उनके पिता हर रात दिखाया करते थे। वह क्षितिज पर काफ़ी नीचे था। इसका मतलब अब बहुत देर नहीं लगेगी।

वे फिर सोने लेट गए।

इस बार जब जटायु आई तो कोई चेतावनी नहीं दी; झटपट, सपने से भी ज्यादा दबे पांव वह रात मैं नीचे उतरी और सुग्रीव को अपने पंजों में दबा ले गई।

“हनुमान!” सुग्रीव ने घबराकर पुकारा। जटायु के पंजों ने उसे पसलियों के पास कसकर पकड़ा तो उसके घावों में शूल से चुभ गए।

हनुमान झटके से उछलकर खड़े हो गए। उन्होंने देखा कि जटायु अपने पंखों की हर फटकार के साथ ऊँची और ऊँची उठती जा रही है, वे उसका पीछा करने लगे। भागते हुए उन्होंने अपने सिर पर कुछ गीला सा महसूस किया। सुग्रीव के घाव! वे फिर से खुल गए थे।

“मेरा हाथ पकड़ो! मुझे यहां से नीचे खींचो!” सुग्रीव हताश भाव से चिल्लाया। उसका केवल एक हाथ मुक्त था और लाचारी से झूल रहा था।

हनुमान कुदान लगाने के लिए उकड़ू होकर बैठे। मगर वे जानते थे कि यह कारगर न होगा। पंछी बहुत ऊँचाई पर थी, और उन्होंने तो कई ऋतुओं से एक

शाखा पकड़ने तक के लिए कुदान नहीं लगाई थी। उन्होंने कोई मार्ग तलाशने के लिए जल्दी से चट्टानों को परखा। और वहां एक झूलती हुई चट्टान दिखाई थी। यह कुदान मुश्किल थी, तिरछी, एक कोण पर, लेकिन अगर देवी सरस्वती के हंस ने अपने पंखों की पर्याप्त शक्ति से उन्हें अनुग्रहीत कर दिया तो वे शायद उस तक पहुंच जाएं।

एक पल भी हिचकिचाएं बिना हनुमान चट्टान पर पहुंचे और चोटी से कूद पड़े।

उन्होंने यह नहीं सोचा कि अगर वे सफल नहीं हुए तो क्या हो सकता है। और जब तक उन्हें अहसास होता कि यह वास्तव में कितना असुरक्षित है, हनुमान के हाथों ने उस विशाल पंछी की गरदन को कसकर पकड़ लिया था।

*

हनुमान जब ऊपर से जटायु से टकराए, तो वह सिहर उठी। पंछी ने अपना सिर उठाया तो हनुमान ने अपनी बांहों को उसकी गरदन के गिर्द डाल दिया। उनकी बांहों के नीचे मांसपेशियां तन गईं और उसने एक भयंकर, शक्तिशाली कूक निकाली जैसे पत्थरों को एक साथ पीसा जा रहा हो। हनुमान समझ गए— यद्यपि उन्होंने पहले कभी किसी जटायु को नहीं देखा था, उसकी भाषा सुनना तो दूर की बात थी। वह उनसे पूछ रही थी कि वे कौन या क्या हैं, और यह भयरहित नहीं था।

“मैं हनुमान हूं, केसरी और अंजना का पुत्र,” हनुमान ने उस पर अपनी पकड़ कसते हुए कहा। “तुमने मेरे मित्र और बंधु सुग्रीव को क्यों पकड़ा है?”

तब जटायु ने स्वयं को सीधा किया। जब उसने पीछे देखने की कोशिश की तो हनुमान को उसकी आंखों की बाहरी रेखा दिखी। उसे जैसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे।

“हम किञ्चिंधानगर के राजकुमार हनुमान और सुग्रीव हैं। तुम हमें कहां ले जा रही हो?” हनुमान ने फिर से पूछा।

जटायु ने अनेक उलझी सी आवाजें निकालीं। हनुमान को ऐसा लगा जैसे वह मक्खियों के बारे में कुछ कह रही हो, मगर वे निश्चियपूर्वक नहीं कह सकते थे। जब अपने द्वितीय संस्कार के बाद वे विश्वामित्र के पास जाएंगे, जब मां सरस्वती उन्हें औपचारिक रूप से शिक्षा प्रारंभ करने का आशीर्वाद देंगी तब वे ये सब कुछ सीखेंगे। जटायु यही कह रही है, परम धर्म के बारे में कुछ...

“परम धर्म!” हनुमान चिल्लाए। “परम धर्म!” यह समझा जा सकता था। विश्वामित्र कहते थे कि यह ऐसी चीज़ थी जिसे किञ्चिंधा का हर जीवित प्राणी जानता था। सारी ऋतुओं में बिना विश्राम घूमते हुए, जो भी वंश उन्हें मिला उसके मुखिया से बात करते हुए उन्होंने स्वयं यह शब्द उन्हें सिखाया था। इसी तरह से विश्वामित्र ने अपना नाम पाया था, विश्व का मित्र।

अब जटायु ने एक और ध्वनि निकाली। यह कुछ ऐसा सा सुनाई दिया जैसे किसी फल की गुठली को वर्षा में भीगी चट्टान पर उछाल दिया गया हो। यह आशापूर्ण सुनाई दी थी। मगर थोड़ा पश्चाताप भरी भी थी। यह जो भी था, हनुमान जानते थे कि जटायु भी परम धर्म कह रही है। वह उन्हें कोई हानि नहीं पहुंचाने वाली थी।

मगर वह उतरी नहीं। उनके नीचे कहीं नदी चांदी की तरह चमक रही थी।

“सुग्रीव, तुम ठीक तो हो?” हनुमान चिल्लाए।

प्रत्युत्तर में सुग्रीव ज़ोर से कराहा। वह साहस बनाए हुए था। या, जटायु ने उसे इस तरह पकड़ रखा था, इतना कसकर कि वह गिरे नहीं, मगर इतना ज़ोर से भी नहीं कि उसे और अधिक चोट आ जाए। वह ऐसे किसी पंछी जैसी नहीं थी जिसे हनुमान ने पहले कभी देखा हो। ऐसा भी नहीं लग रहा था कि जटायु धर्म का उल्लंघन कर रही हो। क्या यह सब इसी तरह से होना था?

क्या ऐसा ही हुआ था जब, बहुत पहले, एक वरिष्ठ दादी एक शाम को सुदूर पहाड़ की चोटी पर महाप्रयाण के लिए चली गई थीं, और फिर कभी नहीं देखी गईं?

क्या यह जटायुओं को ही करना था?

*

जटायु की पीठ पर लगते हवा के थपेड़ों के बीच, हनुमान यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि वे किस दिशा में बढ़ रहे हैं।

अब वे घनी बदलियों के बीच से जा रहे थे और इससे तारों को देख पाना मुश्किल हो गया था। अभी भी क्षितिज पर कहीं भी उनकी मंज़िल के कोई आसार नहीं दिख रहे थे।

हवा और पंखों की फ़ड़फ़ड़ाहट के बीच जब-तब सुग्रीव का स्वर गूंज उठता। “हनुमान! तुम अभी भी हो न?”

हम्म, हनुमान कहते, और फिर से, हम्म। जिस तरह, उन्हें अहसास हुआ, उनके पिता कहते थे जब लोग अपनी समस्याएं लेकर, सलाह मांगने उनके पास आते थे, या जब उन्हें अनेक मसलों पर सोचना होता था। इससे ऐसा लगता था जैसे वे बेपरवाह हों, मगर यह आश्वस्त भरा भी हो सकता था, वे जानते थे।

यह आश्वस्त ही महत्वपूर्ण थी। यद्यपि जटायु अविवेकपूर्ण प्रतीत नहीं हो रही थी, मगर फिर भी उसमें कुछ अरुचिकर बात थी। हालांकि हवा उसकी गंध को हनुमान से दूर ले जा रही थी, मगर वे जानते थे कि ये गंध कहाँ से आई थी; उन्हें अहसास हुआ कि जटायुओं के बारे में बच्चे कभी-कभार जो कहानियां एक-दूसरे को सुनाते थे, वे शायद सच थीं। बड़े लोग अगर उनकी बातें सुन लेते तो हमेशा डपटकर चुप कर देते थे। मगर इससे उन्हें और अधिक हँसी आती थी।

इन प्राणियों के बारे में हनुमान ने जो भी कहानियां सुनी थीं, उनमें एक सतत कथानक था।

जटायु प्राण खींच लेते हैं।

*

“हनुमान, देखो। नीचे,” अचानक सुग्रीव ने पुकारा।

हनुमान झुके और उन्होंने जटायु के पंख और शरीर के बीच की जगह से नीचे देखा। पंखों के उठने और गिरने के साथ उन्होंने उनके नीचे नहीं आकृतियों का एक पूरा झुंड देखा, जो बादलों भरे आसमान के काले-सफेद नमूनों के बीच से जा रहे थे।

“ये छह—नहीं सात हैं,” सुग्रीव ने विश्वासपूर्वक कहा, मानो इस समय अपनी मदद के लिए उन्हें इस प्रकार की सटीकता ही चाहिए हो।

“आठ, इसको भी मिलाकर,” हनुमान ने कहा। “और ये सभी आठों दिशाओं से आते प्रतीत हो रहे हैं।”

जटायु जमा होने और उस दिशा की ओर बढ़ने लगे जहां धुंध से निकलता एक पर्वत शिखर जैसा दिख रहा था। जब वे उतरे, तो हनुमान ने सुग्रीव से कहा, “नीचे उन्हें चार शिखर, और पांच टीले घेरे हुए हैं।”

“चार झीलें,” सुग्रीव ने जोड़ा। “मगर मैं दिशाएं नहीं बता सकता।”

जटायु ने फिर किसी तरह का शोर किया, मानो वो सुन रही हो। हनुमान सोच में पड़ गए कि क्या वह अपनी भाषा में उन्हें उस जगह का नाम बता रही है। यह सुनियोजित दिखता था, जहां पर्वतों के बीच के सपाट स्थानों पर पगड़ंडियाँ थीं और पंक्तियों में पेड़ लगाए गए थे। दूसरे जटायु एक बड़े से घेरे में नीचे उतरने लगे थे। उनमें से कुछ उतरने से पहले घेरे के बीच में अपने पंजों से कुछ गिराते प्रतीत हुए।

हनुमान सोच रहे थे कि क्या वे नारियल हैं। मगर वे नर्म लगे। और शिथिल भी।

जटायु ने अपने पंख खोले और उतरने के लिए तैरती हुई नीचे आई।

*

जैसे ही वे धरती के निकट पहुंचे, हनुमान फिसलकर पंछी की पीठ से उतरे और लुढ़कते हुए सुग्रीव की ओर चले गए। उसी पल जटायु ने भी सुग्रीव को छोड़ा था। वह हनुमान पर लगभग आ गिरा था, और दोनों साथ में लुढ़कते हुए एक हल्की सी ढलान की ओर गए और रुक गए।

“हनुमान!” सुग्रीव ने कसकर इतनी राहत के साथ अपने चर्चेरे भाई को लिपटा लिया कि किसी को लगता जैसे वे किसी बुरे सपने के बाद वापस अपने घर किञ्चिंधानगर आ गए हों।

“पता नहीं हम हैं कहां,” हनुमान ने कहा, उन्हें यह देखकर शांति मिली कि इस सैर से सुग्रीव की स्थिति बिगड़ी नहीं थी। उन्होंने बहुत नर्म से सुग्रीव की पसलियों के घाव को अपनी हथेली से दबाकर उनकी पीड़ा कम करने का प्रयास किया।

उनके पास से उड़कर पंछियों के घेरे की परिधि में एक खाली जगह की ओर जाते हुए जटायु ने जैसे फिर से वही ध्वनि निकाली थी।

सुग्रीव के मन में जो आशा थी, वह भी हनुमान का नाम लेते हुए अचानक लुप्त हो गई। “मां सरस्वती!” भय से वह धीमे से फुसफुसाया। “यह स्थान... यह तो...”

वही गंध जो हनुमान ने सबसे पहले जटायु के पास से आती महसूस की थी, अब हवा में फिर से आ गई थी, मगर पहले से कहीं अधिक तीव्र।

अचानक उनके सबसे पास वाली चट्टान से एक तीखा स्वर उभरा। “नक्क में स्वागत है।”

हनुमान और सुग्रीव तूरंत धूम गए। पर्वत से एक बड़ी सी चट्टान टूटी और महासंकट की तरह उनकी और गिरने लगी। अंतिम पल में मगर उस चट्टान ने अपने डैने खोले और गति धीमी कर ली।

जटायुओं का राजा विशालकाय था, उस जटायु से भी बड़ा जिसकी लंबी-चौड़ी पीठ पर हनुमान ने सवारी की थी।

वह नीचे उतरा और चट्टानों के एक ढेर पर उसने अपना आसन जमाया जो हनुमान को आभास हुआ शायद उसका सिंहासन था। उसकी गरदन और सिर उनसे ऊपर निकल रहे थे। बादल छंट रहे थे, और तारे फिर से दिखने लगे थे।

पल भर के लिए हनुमान के मन में अपने माता-पिता और नदी तक की उनकी सुबह की टहल का विचार कौंधा जहां वे सूर्य की उपासना करते हैं। एक ही दिन में कितना कुछ बदल गया था। यह दुनिया कितनी अधिक और कितनी आसानी से बदल सकती है।

अब जटायुओं के राजा के रूप में नियति उन्हें तक रही थी, उसकी विशाल, तीखी क्रृष्णमुख पर्वत की चट्टान जितनी बड़ी चोंच उनके सिरों के ऊपर मंडरा रही थी।

वह चोंच, सुग्रीव को अहसास हुआ, आसानी से उन्हें अपने वज्जन से ही कुचल सकती थी; उनकी अंतङ्गियां निकालन के लिए उसे तो खोलने की भी ज़रूरत नहीं थी। “नरकराज,” उसने लगभग अविश्वास के साथ कहा।

*

नरकराज की आंखें हनुमान की आंखों से बिंधी हुई थीं। वह शांति से देखता रहा और फिर उसने ताड़ के पेड़ के उस विशाल पत्ते की तरह अपना सिर उठाया जो किसी भारी बोझ से मुक्त हुआ हो। “इन्हें यहां कौन लाया है?”

उनके पीछे से एक स्वर उठा।

“तुम? अनुभवी संग्राहक?” नरकराज ने प्रशंसा की।

जटायु फिर से कुछ चीख़ी।

“समझा,” नरकराज ने उत्तर दिया। अब धीरे-धीरे उसका सिर फिर से हनुमान की तरफ घूमा। “हमारे साथ केसरी और अंजना का पुत्र है। अंततः!”

“सर्वत्र शांति व्याप्त हो, हे नरकराज,” सुग्रीव ने यह याद करते हुए कि वह अभी भी हनुमान का बड़ा भाई है और उसे उनका ध्यान रखना है, हताशा से भरकर कहा। “हनुमान को तो यहां होना ही नहीं चाहिए था। परम धर्म का उल्लंघन मैंने किया था, भले ही अपनी चूक से। वह अभागा मैं हूं।”

नरकराज ने अपना एक डैना थोड़ा सा उठाया। सुग्रीव को लगा मानो वह अपने जन्म से लेकर अब तक के पापों की सूची पेश कर रहा हो जिसके लिए अब उसे जवाब देना होगा। ऐसा लगता था मानो अपनी बातूनी दादी-नानियों से उसने जो भी अजीबोगरीब कहानियां सुनी थीं, वे सब सच होने जा रही हों।

“ये तुम्हारी सत्यनिष्ठा है, क्रक्षराज पुत्र, और, निश्चय ही तुम अब यहां हो,” नरकराज ने कहा। “और तुम्हारे स्वर से ऐसा प्रतीत होता है कि तुम जानते हो कि यहां नर्क में हमें क्या दुर्भाग्यपूर्ण कर्तव्य निभाना होता है।”

सुग्रीव ने दुखी होकर सिर झुका लिया।

हनुमान शांत रहे। सुग्रीव की बढ़ती आशंका के बावजूद, हनुमान का मानना था कि ऐसा कोई भी प्राणी जिसे पता है कि उनके माता-पिता कौन हैं, उन्हें हानि

नहीं पहुंचा सकता। मगर फिर भी वे सुनिश्चित नहीं थे। सुग्रीव की चोट ने उनके सामने ऐसे विचित्र परिणाम लाकर रख दिए थे जिनकी उन्होंने कभी कल्पना तक नहीं की थी। “आप हमें घर कब जाने देंगे, राजन?” उन्होंने स्पष्ट स्वर में पूछा।

उनके पीछे जमा सभा में फुसफुसाहटें और पंखों के फड़फड़ाने की आवाजें गूंज उठीं।

“यह छोटा है। और मासूम है,” नरकराज ने दृढ़ स्वर में ऐलान किया। उनके पंछी शांत हो गए। “अब, सुनी, बाल हनुमंत। यह नर्क है। यह इस पृथ्वी का सबसे धूणित स्थान है। और हम, सुखी राजकुमार, देवी की बनाई संपूर्ण सृष्टि के सबसे धूणित प्राणी हैं। हम उन जीवों के अवशेषों को खाते हैं जो जीवितों के इस संसार को छोड़ चुके हैं।”

सुग्रीव ने रक्षात्मक ढंग से हनुमान के कंधे पर अपना हाथ रख दिया, हालांकि हनुमान बिना किसी निर्णय के इस सबको सुनते प्रतीत हो रहे थे।

“हम रात में धूमते हैं, चुस्ती और खामोशी से, और अपनी भेंट ले लेते हैं। जब सूरज निकलता है, तो किसी किञ्चिंधावासी को पता भी नहीं चलता कि हमारा अस्तित्व है क्योंकि हम यहां लौट आते हैं। हम तुम्हारे हाथ-पैर साफ रखते हैं, बाल राजकुमार, और अपना परम धर्म बनाए रखने में भी तुम्हारी सहायता करते हैं।”

हनुमान समझ नहीं पाए कि नरकराज दुखी हैं या केवल सचाई बयान कर रहे हैं। “क्या इसीलिए आप हमें यहां लाए हैं? परम धर्म अपाचार के लिए?”

नरकराज ने धीमे से उत्तर दिया, “वास्तव में मुझे पता नहीं है, मेरे विलक्षण राजकुमारों, कि देवी ने तुम लोगों के लिए क्या नियत किया है। काली मां ने, जिनकी लंबी जिह्वा से हम सबके जीवन का उद्भव हुआ है, तुम्हें हमें सौंपा हैं और फिर वे ही तुम्हें हमसे दूर रख रही हैं। जिस रात तुम्हारा जन्म हुआ था, हम तब भी तुम्हारे लिए आए थे, हनुमान, क्योंकि जन्म के समय तुम्हारी सांस नहीं चल रही थी। हम जानते थे। हमारे भविष्यवक्ता ने हमें बताया था कि तुम्हारी मां तुम्हारे जन्म की रात को ही तुम्हें हमें सौंपने आएंगी, कि वे दुख और विलाप करती पर्वत पर आएंगी, आह, हम उसका स्वाद भी जानते हैं, बालकुमार, इसलिए हमने प्रतीक्षा की, ऊपर चक्कर काटते रहे कि वे अपना शोक पूरा कर लें और तुम्हें वहां हमारे लिए छोड़ जाएं। मगर फिर भी तुम्हें हमारे साथ नहीं आना था। काली मां ने सांस न होने पर भी तुम्हें जीवन प्रदान किया, और फिर तुम्हारी सांस भी आ गई। तुम जीवित रहे। और अब तुम वापस हमारे पास आए हो, और तुममें जीवन की कोई कमी नहीं है।”

“हम आपके लिए क्या कर सकते हैं, राजन?” हनुमान ने पूछा। अपने जन्म की यह कहानी उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी थी।

“उत्तम जनों की तरह कहा जो कि तुम्हारे माता-पिता की संतान के योग्य है,” नरकराज ने प्रशंसा की। “ऐसा अक्सर नहीं होता है कि परम धर्म अपाचार के लिए यहां लाए जाने वाले प्राणी अपने पैरों पर खड़े भी हो सकें। यह जानते ही कि वे कहां हैं, उनकी शक्ति नहीं तो साहस तो साथ छोड़ ही जाता है। मगर तुम, बाल हनुमान, या तो यह नहीं जानते कि तुम्हें हमारी भूखी चोंचों का आहार बनना है, या तुम जानते हो और तुमने उस नियति को देवी की भेंट मानकर स्वीकार कर लिया है, जैसा स्थितिप्रबन्ध, महाप्रयाण पर निकलने वाले अडिग प्रबुद्ध प्राणी करते हैं।”

“नरकराज,” सुग्रीव ने अब कुछ विषाद के साथ कहना शुरू किया। “मैं अकेला ही असफल हुआ था। हनुमान तो केवल मेरी सहायता करने के लिए रुक गया था। इसने कोई अपाचार नहीं किया है। इसके सामने पूरा और लंबा जीवन पड़ा है, भले ही अब इसका घर इसकी पहुंच से हमेशा के लिए दूर हो गया हो। क्या मैं विनम्रतापूर्वक आपसे कह सकता हूं कि इसे छोड़ दें?”

“तुम्हारी दुखद स्थिति का क्या कारण था, विचारशील राजकुमार?” अब नरकराज गंभीर और उत्सुक लगे, भले ही थोड़ा सा उलझन में पड़ गए थे कि कोई इतना दुस्साहसी भी हो सकता है कि इस तरह का निवेदन करे।

“मेरे भाई ने हमें प्रतियोगिता के लिए ललकारा था। ऋष्यमुख चोटी पर। और मैं गिर गया।”

“यह तो सबसे दुखद तरीका है,” नरकराज ने उदारता से कहा। “अधिकांश अपाचारों के लिए हम थोड़े से खेद के साथ आते हैं। मगर यह, बालकों के खेल जो अभी बालपन से ठीक से निकले भी नहीं होते, हमारे लिए भी सच में पीड़ादायी हैं।”

“आपका कर्तव्य पीड़ादायी क्यों है?” अचानक हनुमान ने पूछा। “और अगर यह पीड़ादायी है तो आप यह करते ही क्यों हैं?”

“एक लंबे समय से यहां किसी ने मुझसे यह सवाल नहीं पूछा है, बाल हनुमान। मगर जब मैं छोटा था, तो मैंने अपने पिता से और उन ज्ञानियों से यह पूछा था जिन्होंने हमारे किञ्चिंथा को वह बनाने के लिए काम किया था जो कि आज यह है।”

“उन्होंने क्या कहा?”

“उन्होंने कहा कि हम स्वयं देवी द्वारा चुने गए प्राणी हैं। हमें ऐसी क्षुधा और स्वाद प्रदान किए गए हैं जो किसी अन्य प्राणी में नहीं हैं ताकि हम इस संसार को हताशा से दूर रख सकें। हम अपना कर्तव्य करते हैं ताकि व्यवस्था बनी रहे। ताकि जीवितों का संसार मृतकों के संसार के भय के बिना चलता रहे।”

“भय क्या है?” हनुमान ने पूछा।

पर्वत पर अग्नि



मानो हनुमान के प्रश्न का उत्तर देने के लिए ही पर्वतों के बीच कहीं से एक दर्द भरी चीख़ गूंज उठी। इसी के साथ यहां-वहां से चीख़ों की एक शृंखला चल निकली; कुछ कमज़ोर और दबी-कुचली सी थीं; तो कुछ में असहनीय ऊर्जा भरी थी। सारी चीखें केवल एक ही व्यक्ति को संबोधित कर रही थीं।

“मां। यहां सब मां को ही पुकारते हैं,” नरकराज ने दुखी भाव से कहा। “हे बालकुमारों, मैं उन सब प्रजातियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं में ‘मां’ शब्द को जानता हूं जो कभी भी किञ्चिंधा में रही हैं। हर जीवन का अंत यही है, उस व्यक्ति का नाम और स्मृति जिससे उसका आरंभ हुआ था। मैं भी कामना करता हूं कि मुझे ये चीखें न सुननी पड़तीं। मगर, कभी-कभी वे भी यहां आते हैं जिन्होंने अभी तक अपने प्राणों को त्याग नहीं होता, वे पीड़ा के लिए तैयार नहीं होते। वे समझते हैं कि उनकी आत्माओं ने उनके शरीर को जीत लिया है, मगर...”

वह तेज़ी से एक पंछी की तरफ मुड़ा जो घेरे से थोड़ा पीछे उनके पास दाहिनी ओर बैठा था। “जाकर देखो इसे। उनसे कहो झटपट करें। हमारे आगंतुकों की परम-धर्म-पूर्ण-शांति में ये स्मृतियां बाधक नहीं बननी चाहिए।”

पंछी तुरंत उड़ चला। मगर नरकराज ने अपना बरसना जारी रखा जिसे सुनकर लग रहा था मानो वह स्वयं को शांत करने की कोशिश कर रहा हो और साथ ही चुहल भी कर रहा हो। “ठीक है, किञ्चिंधानगर के मेरे बालकुमारों, मैं जानता हूं तुम लोग सोच रहे होगे कि अगर वे मृत्यु के लिए तैयार नहीं हैं तो मैं उन्हें मुक्त क्यों नहीं कर देता, लेकिन क्या हम इस बात का जोखिम ले सकते हैं कि वे अपने परिवारों में वापस जाएं और सबको नर्क की कहानियां सुनाएं? जानते हो अगर सब बातें करने लगेंगे तो क्या होगा? वे कहेंगे कि हम बूढ़े बंदरों की कपोल-कल्पना हैं। हम किञ्चिंधा के बच्चों की हँसी का पात्र बन जाएंगे। फिर वे उत्सुक होंगे, और यहां आना शुरू कर देंगे, मुट्ठी भर मूँगफलियां और दर्जनों रिश्तेदारों को लेकर, और जब हम भोजन करेंगे तो वे तमाशा देखेंगे। हम क्या हैं? धर्म के रक्षक या नौटंकीबाज़? चलो! चलो!”

सभा प्रत्यक्षतः अब विसर्जित हो रही थी। घेरे में मौजूद पंछियों ने डैने फड़फड़ाना, बहस करना और विभिन्न दिशाओं में जाना शुरू कर दिया था। “जाओ!

जाओ!” नरकराज ने अपने अनुयायियों को प्रोत्साहित किया। “लगता है तुम्हारे बच्चों और दादा-दादियों ने तुम्हारे बिना ही खाना शुरू कर दिया है। जीवितलोक के हमारे अतिथियों की सेवा का दायित्व मुझ पर छोड़ दो, आजकल ये कुछ अधिक ही आ रहे हैं, दुख की बात है कि हम इनका और अधिक आतिथ्य नहीं कर सकते...”

यह जो भी ध्वनि है, अवश्य ही हंसी रही होगी, हनुमान ने सोचा।

“सुनो, स्वयं देवी की ज्ञानपीठ महान किञ्चिंधानगर के बालकुमारों, अब प्रसन्न या दुखी होने का समय नहीं रहा है, बल्कि कुछ करने का है।” नरकराज दयालु प्रतीत हुआ। “इससे पहले कि सूरज निकले, और रात वह न छिपा सके जिसे अभी जीवितों की दुनिया के सामने उजागर करने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है, तुम लोगों को यहाँ से चले जाना होगा।”

अब हनुमान और सुग्रीव ने सिर झुकाया और नरकराज को प्रणाम किया।

“तुम लोग बहुत तेजी से उस नीले प्रकाश की दिशा में बढ़ना जो वहाँ ऊपर उत्तर में उस गुफा से निकल रहा है। फिर मुड़ना और उस एकाकी पेड़ को तलाशना जो किसी बूढ़े पहरेदार की तरह उस द्वार को छोड़कर जाने को तैयार नहीं है जिसकी वह चौकसी कर रहा है। उसके ठीक बाद वह पगड़ंडी है जिसे हम जटायु एकपथ कहते हैं। यह उन लोगों के लिए है जो हमें हमारा आहार देने के लिए अपनी इच्छा से चलकर यहाँ आते हैं, वे जो मां के साथ एकाकार हैं और जिन्हें अब कोई भय या फीड़ा नहीं सताती, और जिन्हें अब कोई मोह-माया नहीं रही होती। स्थितप्रज्ञ, और वे जो समझते हैं कि वे स्थितप्रज्ञ हैं, जैसा निस्संदेह तुमने सुना होगा। मगर कभी-कभी, अक्सर नहीं, किंतु कभी-कभी बिना पंखों वाला व्यक्ति भी उस मार्ग से जा सकता है।”

हनुमान और सुग्रीव समझ रहे थे कि नरकराज उन्हें क्या उपहार दे रहा है, मगर वे उस उदारता के पीछे छिपे कारण तक नहीं पहुंच पाए। कृतज्ञतापूर्ण मुस्कुराहट लिए वे मुड़े और चलने लगे। मगर स्पष्ट था कि नरकराज की बात पूरी नहीं हुई थी; यह ऐसे ही था जैसे उसके अपने भतीजे गुरुकुल जा रहे हों और उसे हर छोटी से छोटी बात समझानी थी।

“रास्ते में तुम्हें जो नीला प्रकाश दिखे उससे आशीर्वाद लेना; वे स्वयं हमारी देवी हैं। मगर मुड़कर पीछे मत देखना, राजकुमारों, जब तक कि तुम दूसरी तरफ पहाड़ी की तलहटी तक, और हमारे आवास की गंध से बहुत दूर न पहुंच जाओ। सूरज की पहली किरण के साथ हमारी देवी लाल हो जाती हैं, और कोई जीवित प्राणी उस प्रकाश को सहन नहीं कर सकता। जाओ, अब जाओ, जल्दी करो, और अगर तुम भाग्यशाली हुए तो उनसे मिल सकोगे जिन्हें आज तुम्हें अपने घर से इतनी दूर पाना था। ऐसा प्रतिदिन नहीं होता है कि दो आगंतुक अलग-अलग आएं और अपने पैरों पर चलकर यहाँ से जाएं, मगर स्थितियां अब वैसी नहीं हैं जैसी हुआ करती थीं।”

हनुमान सोच में पड़ गए कि इस टिप्पणी का क्या तात्पर्य हो सकता है, और वे पूछ भी बैठते मगर तब तक सुग्रीव दोनों की ओर से कह चुका था। “फिर भेंट होने तक, महान राजा!” सुग्रीव ने कहा मानो किसी उदार संबंधी से भेंट करने के बाद जा रहा हो। फिर अचानक उसे उस बात का निहितार्थ समझ आया जो वह कह रहा था, और वह अपना सिर और पूँछ नीचे करके बिना कोई और जटिलता उत्पन्न किए

झटपट वहां से निकल पड़ा।

“शायद हम मिलेगे, सुग्रीव,” हनुमान ने नर्मी से कहा मानो वास्तव में इसमें कुछ बुरा न हो।

*

जब हनुमान और सुग्रीव उस एकाकी पेड़ के पास से निकले जिसके बारे में नरकराज ने बताया था, तो उन्हें धरती और चट्टानों के ऊपर धूंध की तरह तैरता नीला प्रकाश दिखने लगा। यह भोर का प्रकाश नहीं था, यद्यपि किसी भी समय दिन का प्रकाश फूटने वाला था। यह नीला था, टूटते तारे की तरह। मगर फिर भी यह आसमान से नहीं पर्वत के अंदर से, उसके बीच की एक दरार से फूट रहा था।

“यह काली देवी की गुफा होगी,” सुग्रीव ने कहा।

हनुमान रुके और उन्होंने झुककर गुफा की ओर प्रणाम किया। वे खड़े हुए तो जाना कि सुग्रीव कुछ आगे निकल चुका है और उतावली से उन्हें आने का इशारा कर रहा है।

“देखो,” हनुमान के निकट आने पर उसने नीचे की तरफ इशारा करते हुए कहा। “खड़ी पगड़ंडी है और रास्ते में कोई पेड़ भी नहीं है कि पकड़ लें। हमें बहुत सावधान रहना होगा।”

“मगर शीघ्रता करनी होगी,” हनुमान ने अब अगुआई करते हुए कहा। “प्रकाश बदलने लगा है, सुग्रीव।”

यह सच था। पगड़ंडी पर कुछ क्रदम चलने के बाद ही उन्होंने देखा कि नीला अर्ध-प्रकाश अब कुछ और होने लगा है। एक भिन्न प्रकार की गंध अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने लगी थी।

“और तेज़,” हनुमान ने बल देते हुए कहा। एक गहरी सांस लेकर और देवी सरस्वती से प्रार्थना करके, हर पग के साथ उनके अनेक नामों में से एक को उच्चारते, और बिना यह सोचे कि वे किसके ऊपर दौड़ रहे हैं, उन्होंने अब भागना शुरू कर दिया था। उनके पैरों तले जो कुछ भी था, वह कठोर, ऊबड़-खाबड़, इतने सारे घुमावों भरा था कि महज पत्थर नहीं हो सकता था।

बहुत दूर, क्षितिज पर एक लाल पट्टी दिखने लगी थी। अब किसी भी पल सूर्योदय हो सकता था।

“सुग्रीव, देखो,” हनुमान चिल्लाए, “बस थोड़ा सा और, फिर हम तलहटी में पहुंच जाएंगे।”

अब इतनी रोशनी हो गई थी कि उनके नीचे की धरती के साथ ही उनके ऊपर छाई चट्टानों की बनावट भी दिखने लगी थी। वे काली, निर्मल, चमकीली, तैलीय थीं, मानो समय के साथ पानी की कोई लहर जम गई हो। नीचे की सतह पत्थरों और विचित्र प्रकार की शाखाओं की थी और वह भी आश्वर्यजनक रूप से जानी-पहचानी सी लगी, मानो हनुमान अंधेरे में उनका आकार देख चुके हों। उन्हें देखकर हनुमान को कुछ याद हो आया, कुछ बहुत स्पष्ट सा, मगर फिर भी वे बता नहीं पाए।

मगर अभी तो और भी कुछ शेष था।

“सुग्रीव,” अचानक हनुमान ने कहा, “तुम्हें कोई गंध आई?”

“क्या?” सुग्रीव ने हाँफते हुए पूछा।

“आगा!”

सुग्रीव देखने के लिए पलटा। उनके ऊपर, उस चट्टान के एक हिस्से से जहां काली देवी की गुफा रही होगी, शोले और धुआं निकल रहा था। उसके नीचे पर्वत की सतह किसी गंभीर, स्याह बुज़ुर्ग के चेहरे सी दिख रही थी। गर्म राख और धूल इसके हर ओर मंडरा रही थी। अचानक, सुग्रीव के सिर में हल्का सा दर्द उभरने लगा। उसने अपना सिर घुमा लिया और फिर से तेज़ी पकड़ने की कोशिश की। उसकी आंखों में एक लाल चमक बैठ गई थी। उसने आंखें बंद कीं और फिर से खोलीं, मगर वह अभी भी थी। उसे देखना नहीं चाहिए था। उस दृश्य में कुछ अशुभ और विषादपूर्ण था।

अचानक, जैसे ही दूर क्षितिज पर सूरज दिखाई दिया, उनके पैरों तले धरती थरथरा उठी। सुग्रीव गिर गया, वह फिर से उसी हिस्से पर गिरा था जहां शरीर के निचले बाएं हिस्से में उसे चोट आई थी।

“हनुमान!” उसने पुकारा।

हनुमान लड़खड़ाए, मगर उन्होंने अपना संतुलन वापस पा लिया था। सुग्रीव को उठने में सहायता करने के लिए वे पलटे।

“इसका मुंह है! इसका लाल मुंह है और ये हमें खा जाएगी!” हनुमान ने सुग्रीव को उठाया तो वह चीख उठा।

उनके चारों ओर धीमी गड़गड़ाहट गूंज रही थी। पहाड़ के एक ओर से किसी नदी की तरह पूरे वेग से आग फूट पड़ी थी।

*

“चलो!” हनुमान ने सुग्रीव को अब अपने आगे रखते हुए कहा। उन्हें पेड़ तक पहुंचना था, किसी भी पेड़ तक। मगर इस तरह की जगह पर क्या उग सकता था?

“हनुमान,” एक बार फिर हनुमान से पीछे रह गए सुग्रीव ने पुकारा। “आग के तो जैसे पैर निकल आए हैं।”

सपाट धरती अब पहुंच के अंदर थी, मगर अब यह भी प्रतिकूल लग रहा था। उन्हें मैदान में आगे बढ़ते जाना होगा। उनके आसपास पेड़ तो हैं, मगर ये बहुत उपयोगी नहीं हैं, हनुमान ने सोचा, और आगे बढ़ते रहे।

अचानक, सुग्रीव ने पुकारा, “हनुमान, पीछे आओ, मुझे एक पेड़ मिला है।”

पीड़ा भरे अहसास के साथ हनुमान पलटे तो पाया कि सुग्रीव उन सूखे ठूंठों में से एक पर चढ़ रहा है जिन्हें उन्होंने अनदेखा कर दिया था। उसके पीछे लपलपाती आग क्रूरतापूर्वक, किसी अनेक मुंहों वाले जानवर की तरह बढ़ती आ रही थी, और रास्ते में अगर कहीं कोई प्रतिरोध मिलता तो वह क्रोध में तड़तड़ाते हुए अपना फन उठा लेती थी।

“नहीं!” हनुमान चिल्लाए। “कूदो!”

सुग्रीव हिचकिचाया। ऊपर सुरक्षित लग रहा था।

“सुग्रीव, आग कुछ ही पल में तुम तक पहुंच जाएगी। अगर पेड़ नहीं गिरा तो भी रात होने तक तुम यहीं फंसे रहोगे, और फिर जटायु आकर तुम्हें दुबारा ले

जाएंगे।”

सुग्रीव जितनी लंबी और जितनी दूर तक की कुदान लगा सकता था, उसने लगा दी। चट्टान गर्म हो चुकी थी। हनुमान ने उसका हाथ पकड़ा और उसे आगे खींच लिया।

झटपट वे फिर दौड़ चले, उस विशाल, मायावी मैदान के पार, पास से निकलते हर पेड़ को देखकर उनका हौसला बढ़ता और फिर पस्त हो जाता।

“देवी सरस्वती, हमें मार्ग दिखाएं,” हनुमान ने मन ही मन कहा।

लगभग प्रत्युत्तर में सुग्रीव ने घोषणा की, “हनुमान, मुझे लगता है हमारे सामने से भी आग आ रही है, वहां, थोड़ा बाईं तरफ। शायद हमें दाहिनी ओर मुड़ जाना चाहिए।”

“वहां?”

“हां, मैंने पेड़ से क्षितिज पर सफेद धुआं उठते देखा था।”

हनुमान दाहिनी ओर मुड़ गए। फिर अचानक, वे वापस बाईं ओर पलट गए। “सुग्रीव, हमें वहां जाना चाहिए।”

*

हनुमान का अंदेशा सही था। क्षितिज पर उठता धुआं आग नहीं, भाप थी। उनके सामने एक वेगवान, विशाल नदी बह रही थी। चट्टानों पर यहां-वहां पानी के छोटे-छोटे कुंड बन गए थे जिनसे भाप उठ रही थी।

“कूदो!” हनुमान चीखे और नदी में कूद गए।

पानी की धारा तेज़ थी और कुछ पल को उसने उन्हें घुमा दिया। हनुमान ने पकड़ने के लिए जल्दी ही एक पत्थर तलाश लिया, और फिर सुग्रीव को पकड़ लिया। धीरे-धीरे, तैरते, हाथ-पांव मारते, चलते, गिरते-पड़ते वे दूसरे किनारे पर पहुंच गए।

“मां सरस्वती!” सुग्रीव ने राहत पाते हुए कहा, और जल्दी ही सो गया।

हनुमान ने स्वयं को संभाला, मन ही मन सूर्य की प्रार्थना की जिसने उन्हें जीवन प्रदान किया था, और नदी की प्रार्थना की जिसने उस दिन उनकी जीवन रक्षा की थी। दिन के प्रकाश में पिछली रात की यादें अब किसी सपने जैसी लग रही थीं। फिर भी यह सब हुआ तो था। उन्हें और उनके भाई को किञ्चिंधा के सबसे भयानक स्थान पर ले जाया गया था। उन्होंने भयंकरतम बातें सुनी और देखी थीं।

मगर मां सरस्वती अभी भी यहां उनके साथ थीं। वे चाहती थीं कि वे इस सबसे कुछ सीखें।

किंतु क्या? और इस तरह से क्यों?

हनुमान ने नदी में ऊपर-नीचे दृष्टि घुमाई। पहली बार उन्हें अहसास हुआ कि बाल सूर्य के साथ उस दिन की उनके लिए क्या महत्ता थी। वे खो गए थे, अकेले थे, किञ्चिंधा की इस विशाल भूमि में कहीं दिशाहीन भटक रहे थे।

नर्क का पर्वत अब धुंधलाता जा रहा था। एक महीन सफेद धुंध ने उसे अनिष्टसूचक ढंग से ढक रखा था। यहां-वहां ज़मीन से धुएं का गुबार उठता था, और फिर गुम हो जाता था।

जटायु जब उन्हें नर्क में लेकर गई थी तो वह किस तरफ से आई थी? अगर वे नदी के साथ चलें, तो कौन सी दिशा उन्हें घर की ओर, और कौन सी दिशा उससे दूर ले जाएगी?

थके-हारे हनुमान नदी के गीले पथरीले किनारे पर सो गए जिसने उन्हें जीवन का एक और दिन प्रदान किया था।

*

जब हनुमान की आंख खुली तो उन्होंने एक जोड़ी आंखों को अपनी आंखों में झांकते पाया। वे आंखें सुग्रीव की नहीं थीं।

वे चौंककर उठ बैठे। उनके उत्सुक, स्पष्ट रूप से भौंचक्के आगंतुक ने अजीब सी आवाज़ निकाली और एक चट्टान के पीछे गायब हो गया। हनुमान को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। वह पहचाना सा लगा, अपनी मां के पक्ष के किसी लंबे अरसे से खोए संबंधी की तरह, मगर यह थोड़ा छोटा भी था मानो बहुत समय से किसी छोटी सी दरार में या ऐसी ही संकरी और छोटी जगह में रहता आया हो।

उसे देखकर ऐसा नहीं लगा कि वह उन्हें कोई हानि पहुंचा सकता हो, मगर हनुमान को यह पक्का करना था।

“सुग्रीव, उठो,” उन्होंने धीरे से उसे हिलाया।

सुग्रीव हल्की सी कराहट के साथ उठा।

“देखो,” हनुमान ने उस जीव की ओर इशारा किया।

वह अब अपनी पिछली टांगों पर खड़ा हो गया था, और लगभग उतनी ही ऊँचाई का था जितनी किञ्चिंधा के किसी बैठे हुए बच्चे की होती है। उसकी सामने की टांगों मनोहर ढंग से प्रणाम की मुद्रा में जुड़ी लग रही थीं। उसकी लंबी भौंहें गीली थीं और पीछे को संवरी थीं।

“जय माता सरस्वती!” हनुमान ने अपने हाथों को जोड़कर प्रणाम करते हुए कहा।

उस प्राणी ने कुछ “अरर, करर, टरर, आ,” जैसा कहा जो कि, अनुमानतः देवी के लिए उसका नाम था।

“रुको, मैं जानता हूं,” सुग्रीव ने सोदैश्य खड़े होते हुए कहा, “यह नदी के जीव उत्तरों की भाषा है। एक बार हमारे नारियल दुर्ग को लैकर वाली और मेरी इनसे बहस हो गई थी। ये हमसे पूछ रहा है कि हम कौन हैं और कहां से आए हैं।”

फिर सुग्रीव उत्तर से बात करने लग गया। ऐसा मालूम देता था जैसे उस प्राणी के पास ढेरों सवाल हैं, और फिर जब सुग्रीव ने उनकी भाषा में प्रत्यक्षतः ‘नर्क’ शब्द बोला तो एक बार वह भयभीत होकर किकियाया भी था। उसने घबराते हुए उन्हें ऊपर से नीचे तक देखा, शायद प्रशंसा के साथ।

फिर वह उठा, उसने उद्देश्यपूर्वक अपनी पूँछ फटकारी, और नदी के किनारे-किनारे कहीं चला गया।

“क्या हम घर के आसपास कहीं हैं?” हनुमान ने सुग्रीव से पूछा।

“वह कहता तो है। किंतु मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता,” सुग्रीव ने उत्तर दिया। “उत्तर प्रजाति बहुत मददगार होती है, और वे सारे सवालों के जवाब देने की

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

कोशिश करते हैं।”

“किंतु?”

“किंतु और किसी से भी अधिक उनका एक ही पसंदीदा उत्तर होता है।”

“वह क्या?”

प्रभाव पैदा करने के लिए सुग्रीव ठहरा। दिन चढ़े की धूप में वह बड़ा दिख रहा था, उस नौजवान से कहीं अधिक बड़ा जो बस एक दिन पहले उस दुर्भाग्यपूर्ण प्रतियोगिता में देवी सरस्वती का नाम लेकर, घाटी के पार जाने के लिए साहसपूर्वक कूद गया था। “वे कहते हैं, ‘उत्तर’!”

अब सुग्रीव हंसने लगा। “मैंने उससे पूछा, ‘हम कहां हैं’, उसने कहा, ‘उत्तरा’ मैंने उससे पूछा, ‘तुम्हारा क्या नाम है’, उसने कहा, ‘उत्तरा’ और मैंने उससे पूछा, ‘किष्किंधानगर कहां हैं?’ और उसने कहा, ‘उत्तर’।”

हनुमान हंसने लगे। अब सूरज चढ़ गया था और यह कह पाना मुश्किल था कि क्या कहां है। लेकिन अगर उन्हें ठीक से याद था तो संभवतया इस समय वे किष्किंधानगर के सुदूर उत्तर में थे।

“जो भी हो,” सुग्रीव ने आगे कहा, “हमारे मित्र ने हमसे प्रतीक्षा करने को कहा है। वह अपने मुखिया से हमारे लिए निर्देश, और आशा है, एक डंडे पर टांगकर कुछ स्वादिष्ट उत्तर भी लेकर वापस आएगा।”

“मुझे उम्मीद है तुम्हारा तात्पर्य केलों से है, भाई,” हनुमान ने बहुत गंभीर भाव से कहा।

“और क्या?” सुग्रीव हंस पड़ा।

मैं निष्कासित करता हूं



सुबह की प्रार्थना समाप्त हुई तो घाटी में एक असामान्य सा मौन पसर गया। केसरी ने शांत स्वर में ऐलान किया कि इसके शीघ्र बाद एक पूर्णसभा होगी। रात में धीमे, और कभी-कभी चिंताग्रस्त स्वरों में बातें होती रही थीं, मगर अधिकतर किष्किंधावासियों के दांत किटकिटाने की दुखी, निराश ध्वनि ही थी जिसे वे तब निकालते थे जब वे उस विचित्र चीज़ के बारे में बात करना चाहते थे जो उनके जीवन पर शासन करती थी जिसे वे नियति कहते थे।

मगर उस लंबी रात में जिसमें केसरी और अंजना ने विश्राम नहीं किया था, उनमें से किसी ने भी वह ध्वनि नहीं निकाली, एक बार भी नहीं। केसरी ने विश्वामित्र को संदेश भेजकर उनसे आने को कहा। फिर वे अपने दायित्वों पर विचार करते हुए चुपचाप बैठ गए। अब वे तैयार थे।

किष्किंधावासी महावट वृक्ष के पास जमा हो गए। उनका विश्वास था कि सारे बड़े निर्णय स्मृतियों की तरह उसकी जड़ों में जमा हो जाते हैं। कहा जाता था कि फुसफुसाहटें तक वादे बन जाती हैं क्योंकि वृक्ष ध्वनियों को पृथ्वी के गर्भ में ले जाते हैं, और सारा किष्किंधा उन वादों का साक्षी बन जाता है।

अतीत में, हरेक वंशावली के गुरु बरगद के इन पेड़ों में आने वाली हवा को सुनकर ही देश के अन्य हिस्सों से संदेशों का आदान-प्रदान कर लेते थे। मगर अब यह विश्वसनीय नहीं रह गया था। हर जगह बहुत ज्यादा फ़ालतू बातें और बकवास होती थी।

केसरी खड़े हुए और उन्होंने बोलना शुरू किया। “हमारी पूर्णसभा को आज एक महत्वपूर्ण प्रश्न पर निर्णय लेना है। एक बहुत लंबे और सौभाग्यशाली संकटहीन शासन के बाद हमारी देवी ने हमारी परीक्षा लेने का निर्णय लिया है। कल परम धर्म का उल्लंघन हुआ था।”

सबने चुंचु की ध्वनि निकाली।

“इसलिए आज हमें किष्किंधा के दो प्रिय पुत्रों से संवाद बंद करने की कार्रवाई करनी होगी। दो भाई, सुग्रीव और हनुमान वापस नहीं आए हैं। अब हमें उनसे अपने संबंध तोड़ने की औपचारिक कार्रवाई करनी होगी।”

केसरी का इरादा प्रभाव पैदा करने के लिए रुकने का नहीं था, क्योंकि वे पहले

ही बिना दुख या देरी किए अपना कर्तव्य पूरा करने का संकल्प ले चुके थे। किंतु कुछ हो गया। यह पूर्णसभा थी, और किसी को भी बोलने को लेकर नियम या शिष्टाचार निभाने की आवश्यकता नहीं थी।

“यह वाली ने किया था! यह वाली ने किया था!” छोटे बच्चों का एक समूह अनापेक्षित रूप से खड़ा होकर चिल्लाने लगा।

शरीरों और स्वरों की लहरें बाएं से दाएं, यहां से वहां उठने लगीं। कुछ ही पलों में, केसरी को लगा कि सभा बिना कोई स्पष्ट बिंदु रखते हुए उपद्रवी ढंग से बहस करने लगी है। उन्होंने स्पष्टता के लिए अंजना को देखा। वे भी दोनों हाथ जोड़े, सतर पीठ लिए, किसी विशेष दिशा में देखे बिना, मगर स्पष्ट रूप से सब कुछ देखते हुए भावहीन बैठी थीं। क्रोध स्पष्ट रूप से लड़कों के पक्ष में था— भीड़ वाली के विरुद्ध थी—किंतु केसरी ने इस विचार को अपने मन में जगह नहीं बनाने दी। यहां यह जवान लड़का था, बमुशिक्ल पूर्ण वयस्क, और उसने एक बच्चे की बचकानी भूल को धर्म के भारी उल्लंघन के रूप में प्रस्तुत करने की धृष्टता की थी। यह उचित नहीं लगता था। मगर यह तय करना उनका काम नहीं था। विश्वामित्र कहां थे?

“बच्चो! बच्चो! कृपया शांत हो जाएं!” एक बुजुर्ग चिल्लाई। फिर वे शीघ्रता से घेरे में घूमीं, हर कूदते लड़के-लड़की को अपने हाथों, पैरों और पूँछ से थपथपाया, और व्यवस्था बनाई। अंततः जब सब शांत हो गए, तो वे बोलीं। “केसरी, आप हमेशा से हमारे राजा के रूप में अपने कर्तव्यों को लेकर सुस्पष्ट रहे हैं। किंतु आपको उन दायित्वों को भी तोलना चाहिए जो हमारे मांओं, चाचियों, पिताओं और चाचाओं के रूप में हैं। हमने हनुमान को द्वितीय संस्कार पूरा करते नहीं देखा है। जहां तक सुग्रीव की बात है, तो उसने भी अभी जीवन में लगभग कुछ नहीं देखा है।”

अब सबका ध्यान उन पर था।

“और वाली और सुग्रीव दोनों द्वितीय संस्कार के मुहाने पर हैं। मैंने उन दोनों को भोर से पहले के घंटों में दांपत्य नक्षत्रों के उपयुक्त मंत्रोच्चार करते देखा है। वे तैयार हैं।” वे मुड़ीं और उन्होंने अपनी बहन को संबोधित किया। “बताओ इन्हें। बताओ इन्हें, बहन।”

“मेरी बेटियों तारा और रूमा ने भी मंत्र पढ़े हैं। उन्होंने वो इन भाइयों के लिए पढ़े हैं,” उसने कहा।

तारा और रूमा खड़ी हो गईं और उन्होंने आदरपूर्वक सभा को प्रणाम किया। उन्होंने अपने हाथ नीचे नहीं किए। यह इस बात का सूचक था कि इसे स्वीकृति समझा जाए। उन्होंने अपने प्रेम की घोषणा कर दी थी, और अब उनकी प्रार्थना थी कि उल्लंघन को क्षमा किया जाए।

पल भर के लिए केसरी उस नियति की गुरुता को भूल ही गए जो अब उनके जीवनों पर मंडरा रही थी। भरी सभा में अपने प्रेम की उद्घोषणा करती इन दो मनमोहिनी कन्याओं को देखकर वे सोचने लगे थे कि देवी ने अभी उन्हें त्यागा नहीं है। संभवतः, बस संभवतः, धर्म की अवमानना किए बिना इस आघात को हल्का करने का कोई रास्ता हो। शायद विश्वामित्र आ जाएं। जब भी आवश्यकता पड़ी है, वे हमेशा आए हैं। मगर हंस वापस नहीं आया है। कोई संदेश तक नहीं मिला था।

“शुभमस्तु,” केसरी ने व्यवहारकुशल, मगर निष्कपट भाव से कहा।

“शुभमस्तु,” सभी वरिष्ठजनों ने कहा।

इस सुख-समाचार से भटककर, सभा के लोग एक बार फिर आपसी बातचीत में रत हो गए। इसे अनेकों-अनेक बार देख चुकने के बावजूद केसरी को अपनी आंखों और कानों पर विश्वास नहीं हुआ। ये लोग कितनी सरलता से अपनी मुश्किलें भूल जाते हैं। यह कल्पना करना कितना लुभावना था कि वे भी केवल दिखावा करने की जगह वास्तव में चीज़ों को भुला पाते। मगर शायद इसीलिए वे उनके राजा थे, और इन्हें समय से थे: वे हमेशा मुश्किल के आने से पहले उस पर काम कर लेते थे; समय से अन्य मुखियाओं को सूचना भेजना, अन्य सभाओं में व्यक्तिगत उपस्थिति, सारे पेड़ों और उनके फलों का बारीकी से अध्ययन और लेखा-जेखा, नदी की मनोस्थिति, और घिरकर आते बरसाती बादल। दूसरों की अपेक्षा वे पहले ही मुश्किलों को भांप लेते थे, और फिर देवी सरस्वती को अपने अंदेशे बयान कर देते थे। और वे हमेशा सुनिश्चित करती थीं कि विपदाएं उनके पास न भटकें।

एक दुखद अवसर पर वे सुखद शब्द कह चुके थे। उन्हें स्थिति को अनुकूल बनाए रखना था। कम से कम उन्हें भाइयों और बहनों को एक रखना था।

“वाली, मेरे बच्चे,” केसरी ने अचानक पूछा, “क्या तुम कहोगे कि हनुमान और सुग्रीव दोनों के द्वारा समान रूप से अपाचार किया गया था?”

स्वयं को पुकारे जाने से वाली प्रसन्न दिखा, और फिर उसने अपने स्वर को कम उत्साहपूर्ण दिखाने की कोशिश की। आमतौर पर उसे स्वयं को बच्चा बुलाया जाना पसंद नहीं था। “हाँ,” उसने कहा। फिर जोड़ा, “चाचा जी।” उसे उन्हें ‘महाराज’ कहना पसंद नहीं था, हालांकि युवाओं को ऐसा कहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था।

“तुमने कहा कि जब तुम सब वादी के पार छलांग लगा रहे थे तब वे दोनों गिर गए थे।”

“हाँ।”

“उस समय आगे कौन था?”

“मैं ही था,” ऋक्षराज की ओर देखते हुए वाली ने डींग हांकी। वाली ने बोलना शुरू किया तो वे कुछ आगे सरक आई थीं। एक पल को उन्हें उस पर गर्व होता दिखा, और फिर उनका चेहरा गंभीर और भावहीन हो गया।

“मेरा मतलब हनुमान और सुग्रीव के बीच,” केसरी ने स्पष्ट किया। “हनुमान आगे था या सुग्रीव?”

वाली ने इसे बहुत प्रसन्नता से स्वीकार कर लिया। “निस्संदेह हनुमान।” अगर मामला यह होता कि सुग्रीव हनुमान से अधिक तेज़ और शक्तिशाली है तो उसे अत्यंत खुशी होती। मगर वास्तविकता यह नहीं थी। पहली बार, वह यह स्वीकार करके प्रसन्न था कि हनुमान सुग्रीव से आगे था।

“हनुमान आगे था। तो, मैं अपने पुत्र को जानता हूं, और मैं जानता हूं कि वह कभी भी जानते-बूझते परम धर्म की अवज्ञा करने का जाखिम नहीं लेगा,” केसरी ने कहना आरंभ किया। “किंतु मैं यह भी जानता हूं कि कभी-कभी वह जितना समझता है, उससे अधिक फुर्तीला होता है।” केसरी को एक अस्पष्ट सा संदेह खाए जा रहा था। हनुमान ने एक ज़माने से कुदान या छलांग नहीं लगाई थी। वह अचानक ऐसा क्यों करेगा?

“वह बालक है, केसरी,” कोई चिल्लाया। “आप उससे और क्या अपेक्षा करते

हैं? उसने तो अभी द्वितीय संस्कार तक नहीं किया है!”

फिर से बकबक शुरू हो गई। सबके पास हनुमान को लेकर ढेरों कहानियां थीं।

“आपको याद है जब एक बार आपने उसे भगाया था तो कैसे उसने केले के पूरे पेड़ को जड़ समेत उठा लिया था?” एक प्रसन्न बुजुर्ग ने उठकर पूछा, सब हँसने लगे थे।

केसरी को याद था। उन्हें तब और अधिक प्रसन्नता हुई थी जब हनुमान ने उस पेड़ को एक बेहतर स्थान पर सुरक्षित वापस लगा दिया और बाद में कई दिनों तक रोजाना उसे पानी देता रहा था। उन्हें अहसास हुआ कि अंजना उन्हें देख रही हैं, मानो वे भी यही याद कर रही हों। हनुमान कहता था कि अपनी रस्म में वह उस पेड़ के फल को देवी सरस्वती के मंदिर में ले जाएगा।

“चाची! चाची!” अब हनुमान के छोटे चचेरे भाइयों में से एक कूद-फांद करने लगा था। “एक बार जब आप लोग सो रहे थे तो हनुमान ने आपकी और चाचा जी की पूँछें बांध दी थीं और आपको पता भी नहीं चला था!”

संबंधित चाची हाथ उठाकर उसकी ओर लपकी। वह अपनी मां के पीछे दुबक गया। सब लोग फिर खुश हो गए थे।

केसरी भी। उन्हें आशा थी कि वे सावधानी से एक नया विचार प्रस्तुत कर पाएंगे, कुछ ऐसा जो पहले कभी नहीं किया गया था, एक अस्थायी प्रकार का दंड। इसके लिए चतुरता, और शक्ति की आवश्यकता थी, और अंततः विश्वामित्र को यह करना होगा। मगर यह विचार रखा जा सकता है।

“केसरी को बोलने दो,” अचानक ऋक्षराज गुराई। सभा में तुरत-फुरत भय का माहौल लौट आया।

*

केसरी ने धीरे से सांस छोड़ी। उनकी संयमी, शिथिल मनोस्थिति लौट आई थी। अभी के लिए उन्होंने अपने पुत्र के विचारों को परे कर दिया था। उन्होंने देवी का ध्यान किया और बोले। “मेरा विश्वास है कि इस दुष्कृत्य में ऋक्षराज के पुत्र सुग्रीव की अपेक्षा मेरा पुत्र हनुमान अधिक भागीदार है।”

एकबारगी मौन पसर गया।

“ऋक्षराज, आप हमारे लिए माता एवं पिता के तुल्य हैं। पुराने समय में आपने किसी राजा की भाँति ही युद्ध किया था और उसके बाद के शांतिकाल में रानी मां की तरह हमारा पालन-पोषण किया। आपने बहुत लंबे समय से हमारी रक्षा की है और मार्गदर्शन किया है। आप अपने बेटों को बड़ा होते, और भलीभांति बड़ा होते देखने के लिए जीवित रही हैं। अब आपको कोई अभाव नहीं होना चाहिए। आपको इन दोनों बहनों और दोनों भाइयों को यहां साथ देखना चाहिए। आपको अपने पोते-पोतियों को खेलते देखना चाहिए, और एक आंख के अभाव में दूसरी को भी नहीं गंवा देना चाहिए।”

शिष्टापूर्ण स्वीकृति की कुछ आवाजें आईं।

मगर ऋक्षराज निश्चल रहीं, उनके चेहरे पर वही गंभीर भाव थे।

“धर्म के लिए आपके त्याग अंतहीन नहीं होने चाहिए। मेरे विचार में हमारे

लिए यही अच्छा होगा कि विश्वामित्र मुनि से कहें कि सुग्रीव का यथोचित शुद्धीकरण करें और उसे घर ले आएं।”

अब सब लोग पहले से अधिक प्रसन्न दिख रहे थे। पीछे बैठे कुछ बच्चों ने उछलना और चिल्लाना शुरू कर दिया, “हनुमान! हनुमान!”

केसरी ने एक लंबी सांस ली। अगले कुछ शब्द बोलने से पहले उन्होंने अपने मन में अनेकों-अनेक निर्णय कर लिए थे, ऐसे निर्णय जिनसे उन्हें ऐसा महसूस हुआ था मानो उनके पेट में एक अथाह गहरा शून्य फैल गया हो, और अब वे उसमें समा जाएंगे, जहां से न कोई वापसी है, न कोई आशा है, अलावा देवी से एक अंतिम प्रार्थना के कि उन्हें क्षमा कर दें और उनके पुत्र पर कृपादृष्टि बनाए रखें। “जहां तक मेरे पुत्र हनुमान की बात है,” अब उनका स्वर डगमगा गया। “मैं धर्म के नियमों को आज़माने का कोई कारण नहीं देखता।”

अंजना का हाथ बेसाख्ता अपना मुंह ढकने को उठ गया। उनकी आंखें बंद हो गईं, और माथे पर इस तरह बल पड़ गए जैसे अक्सर तब पड़ते थे जब वे प्रार्थना करती थीं। अचानक केसरी का दिल चाहा कि उन्हें थाम लें, ऊपर उठाएं, उन्हें लेकर ऊपर उठें और दूर आकाश में चले जाएं, भारहीन हो जाएं, बादलों की तरह बनें-बिगड़ें और जहां नियति की हवा उन्हें ले जाए, चले जाएं।

“किंतु केसरी...” कृष्णराज अचानक बोलीं।

“इन्हें बताइए, अम्मा जी,” कोई धीरे से बोला, कोई जो इतना छोटा, इतना भोला था कि दुनियादारी नहीं समझता था।

उसकी माँ ने उसे चुप किया।

केसरी ने अपनी बाहें सीने पर बांधीं और हल्का सा सिर झुकाया। प्रत्याशा में उनका मन तेज़ी से दौड़ रहा था। वे अनुमान लगा सकते थे कि सब लोग क्या सोच रहे हैं। अभी भी एक संभावना थी कि उनका पतन, कि वह अथाह शून्य जो उनकी अंतिड़ियों को चीरे दे रहा था, थम जाएगा। संभावना थी कि गांव की सबसे वरिष्ठ सदस्य उनके आदेश को दरकिनार कर देंगी, जैसा उन्होंने पहले भी एक-दो बार किया है। मगर उन्हें नहीं करना चाहिए। मगर उन्हें करना नहीं चाहिए। यह धर्म का मामला था। यह इसी तरह होना चाहिए।

कृपा करके यह न कहें कि हनुमान को भी घर आना चाहिए। कृपा करके यह कह दें। कृपा करके यह न कहें।

केसरी ने अपने मन की उलझन को देवी सरस्वती पर छोड़ दिया। उन्होंने वही किया था जो सही था। अब वे बस प्रार्थना कर सकते थे।

“केसरी... महाराज... आपने उदारतापूर्वक मुझे याद किया, ऐसी स्त्री को जो इतने लंबे समय से इस पृथकी पर है कि कभी-कभी मुझे लगता है कि स्वयं पृथकी देवी से प्रार्थना करती होंगी कि मुझे कहीं और भेज दें। आपने उदारतापूर्वक मेरे पुत्रों, और यहां मौजूद मेरी दोनों भावी पुत्रवधुओं, रूमा और तारा, के बारे में भी सोचा। आप मुझे भी यह सम्मान क्यों नहीं देते?”

अब भीड़ में बेतहाशा फुसफुसाहटें फैल गईं, या कहें कि बातें जितनी फुसफुसाहटों जैसी हो सकती थीं।

“कृपया क्षमा कर दें। मैं जानती हूं कि आप सुग्रीव को क्षमा कर देंगी!” रूमा बोल पड़ी, दूसरों से कुछ अधिक ज़ोर से।

तारा ने उसे चुप किया। वह जानती थी कि वाली की मां क्या कर सकती हैं। उसे अपनी छोटी बहन की रक्षा करनी थी।

मगर इस टिप्पणी ने अब सबके बीच राहत का माहौल बना दिया था। एक-दूसरे का ध्यान रखने का किञ्चिंधावासियों का यह उत्कृष्ट तरीका था। सामान्य रूप से यह छोटे मसलों में होता था, परम धर्म के उल्लंघन में नहीं। मगर जो भी हो, यह एक सुखद समाधान होगा। केसरी ने सुग्रीव को क्षमा किया, और ऋक्षराज हनुमान को क्षमा कर देंगी। सब ठीक रहेगा।

“क्या धर्म के लिए आप मुझे भी अपने बेटे का बलिदान करने का सम्मान नहीं देंगे?” ऋक्षराज ने पूछा।

उनके स्वर के ठंडेपन ने एक भयानक निश्चितता के साथ उस पल के आशावाद को धूल धूसरित कर दिया था।

*

अपने मन में कहीं अंजना जानती थीं। किंतु वे यह कहेंगी नहीं, शायद कभी नहीं, या शायद किसी दिन, अगर केसरी ने इसके लिए बल दिया तो शायद केवल तब कह दें।

ऋक्षराज उन किञ्चिंधावासियों जैसी नहीं थीं जिन्हें वे जानती थीं। वे निर्मम थीं, और उन्हें मात नहीं दी जा सकती थी।

“सुग्रीव को भी निष्कासित किया जाना चाहिए, राजन,” ऋक्षराज ने उस भंगिमा के साथ घोषणा की, जो हाथ को ऊपर और फिर तिरछा ले जाने की तानाशाह राजाओं की भयंकर भंगिमा होती है।

वे एक पुत्र का परित्याग कर देंगी ताकि दूसरे को शासन करते देख सकें।

वे अनेक लोगों को कष्ट पाते देख लेंगी ताकि केवल एक आनंद मना सके।

अभी वे कितनी सरलता से दूसरों के कष्ट दूर कर सकती थीं, मगर फिर भी नहीं करेंगी।

वे स्वयं को इतनी अधिक पीड़ा दे सकती हैं, केवल इसलिए कि दूसरों को भी उसे भोगते देख सकें।

अंजना को सुग्रीव के लिए दुख हुआ, और रूमा के लिए भी। वे देख रही थीं कि अब रूमा ने तारा के कंधे में अपना सिर धंसा लिया है।

ठीक तभी, अंजना ने वन के किनारे हँस को देखा। वह विश्वामित्र के आश्रम से वापस आया था। ऋक्षराज द्वारा अपने श्रोताओं को जीवित खाए जाते, सशक्त स्वर में धर्म, त्याग और राजत्व पर भाषण देते छोड़कर अंजना चुपचाप खिसक लीं।

वे शाखाओं के बीच से निकलीं और ऊपर उठने लगीं जब तक कि हँस ने उन्हें नहीं देख लिया। “क्या वे आ रहे हैं?” उन्होंने आतुरता से पूछा।

हँस ने धीमे से, और अधिकांशतया अस्पष्ट सा कुछ कहा, मगर अंजना के समझने के लिए वह पर्याप्त था।

विश्वामित्र चले गए थे। उनके शिष्यों तक को पता नहीं था कहां गए। गुरुकुल में निराशा, अत्यंत निराशा व्याप्त थी।

10

अप्रत्याशित पुनर्मिलन



उत्तर किसी को साथ लेकर लौटा। दूर से हनुमान को ऐसा दिख रहा था जैसे वह सारे गांव को अपने साथ ला रहा हो। बहुत सारे, कुछ पानी में, और कुछ किनारे पर दौड़ते हुए, हिलते-डुलते सिरों का फडफड़ाता समूह शीघ्रता से उनकी ओर चला आ रहा था।

मगर एक सिर बड़ा, बहुत बड़ा दिख रहा था।

“सुग्रीव, वहां देखो,” हनुमान ने कहा, उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

“तुम्हें लगता है वह उत्तरों का मुखिया है? वह उनसे बहुत बड़ा दिखता है,” सुग्रीव ने व्यावहारिक ढंग से कहा।

“नहीं, नहीं,” हनुमान ने कहा, अब उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान दिख रही थी। “तुम वे सफेद बाल, और दाढ़ी, और वह अजीब सी, सोदेश्य चाल देख रहे हो? वे और कौन हो सकते हैं भला?”

हनुमान ने अभिवादन में हिलाने के लिए हाथ उठाया। फिर ठहर गए, मानो अचानक अनिश्चय में घिर गए हों। उनकी पूँछ ने सुग्रीव के चेहरे को फटकारा, और दूर हटने की बजाय अब सुग्रीव ने भी अनमने ढंग से खड़े होने का निर्णय किया।

“वही हैं!” हनुमान चिल्लाए, और केले के पेड़ पर लपकते भूखे बालक की भाँति उछल पड़े।

वे विश्वामित्र थे।

*

हनुमान और सुग्रीव जब दौड़कर विश्वामित्र से लिपट गए तो उत्तरों का दल पानी में बिखर गया। “बच्चो! मेरे प्यारे बच्चो!” अपनी नर्म हथेलियां उनके सिरों और गालों पर फिराते हुए वे कह उठे। “तुम लोग यहां, अपने घर से इतनी दूर भला कैसे आ गए?”

“देवी सरस्वती की महिमा अपरम्पार है,” हनुमान ने शांत स्वर में कहा। फिर उन्होंने क्रृषि के गर्म और बालों भरे सीने में अपना सिर धंसा लिया।

“माता सरस्वती की जय,” सुग्रीव भी सहमत था, यद्यपि अब वह थोड़ा अधिक

दुखी था। उसने विश्वामित्र के आलिंगन से पीछे हटने और उन्हें अपने घाव दिखाने की चेष्टा की। “अपाचा—” उसने कहना शुरू किया, मगर विश्वामित्र ने उसका सिर पकड़ा और उसे अपने निकट खींच लिया।

“जय माता सरस्वती,” उन्होंने जयकारा लगाया और खुलकर हँस पड़े।

अब तक आपस में इस बहस में लगे उत्तरों को कि विश्वामित्र इन दो नौजवानों को देखकर प्रसन्न हैं या नहीं, अब पूर्ण समर्पण के साथ जश्न मनाने का कारण मिल गया था। “उत्तर!” वे किकियाएं, और फिर से पानी में कद पड़े, उन दूसरे उत्तरों के सिर पर जो बाहर निकलने का प्रयास कर रहे थे। वे घेरों में तैरे और अपनी पूँछों से सतह के जल पर नगाड़े से बजाने लगे।

मगर विश्वामित्र के पास खड़ा उनका मुखिया उन सबको धूरता रहा, अंततः उन्हें संदेश मिल गया। उसकी जलती निगाहों के साथे में एक-एक करके उत्तर पानी से बाहर निकले, ज़ोरों से हिलकर पानी झाड़ने की लालसा को रोकते हुए वे पानी को धीरे-धीरे टपकने देने के लिए खड़े हो गए।

“आज बहुत प्रसन्नता का दिन है,” विश्वामित्र ने उत्तर-राजा की ओर मुड़कर उदारतापूर्वक मुस्कुराते हुए कहा।

*

उत्तरों द्वारा लाए गए आमों के ढेर को छककर खाने के बाद अंततः विश्वामित्र ने स्वयं को हनुमान और सुग्रीव के साथ अकेले पाया। शाम के सूरज की छायाएं धरती पर लंबी होने लगी थीं। आमों के शेष बचे चिपचिपे अंश कुछ मक्खियों को खींच लाए थे, और उन्होंने सुग्रीव के आराम को बहुत मुश्किल बना दिया।

आखिरकार लंबी सांस लेकर वह उठा और स्वयं को साफ़ करने नदी किनारे चला गया।

विश्वामित्र धीरे से हँसे। “स्वच्छता। इसका कोई विकल्प नहीं है, हनुमान।”

हनुमान ने ठीक अनुमान लगाया था कि यह विषय ऐसे ही नहीं उठाया गया है। स्पष्ट रूप से विश्वामित्र ने सुग्रीव की चोटों को देख लिया था, और उन्हें कुछ अनुमान हो गया था कि क्या हुआ होगा।

“अब हमारे घर जाने का क्या मार्ग है, ऋषिवर,” हनुमान ने पूछा। “क्या ऐसा कोई तरीका है कि हमारे परम धर्म अपाचार के पाप धूल सकें? नरकराज तक हमें जाने देने के लिए प्रवृत्त प्रतीत हुए थे। फिर मेरे पिता, दयालु और न्यायप्रिय केसरी, हमें घर में आने देने से इंकार क्यों करेंगे? मगर सुग्रीव का ऐसा ही मानना है।”

“मेरा तात्पर्य भिन्न प्रकार की स्वच्छता से था, बाल हनुमान, किंतु तुमने पूछा ही है तो मैं उत्तर देने का प्रयास करूँगा।” विश्वामित्र की भाँहें अब उनकी आँखों में जुड़ सी गई थीं। उनके ऊपर स्थित छायादार पेड़ की शाखाओं से एक बीज गिरा और उनकी सफेद दाढ़ी में फंस गया। उन्होंने उसे निकाला और सावधानी से अपने पास रख लिया। वे कभी भी असावधान नहीं होते थे।

“परम धर्म ही किञ्चिंधा को शांतिपूर्ण रखता है,” विश्वामित्र ने कहना शुरू किया। “यह देवी सरस्वती का सभ्यता का पहला और सबसे पुराना नियम है। पुराने दिनों में, जब अधिकांश दुनिया आग से भरी हुई थी, कहते हैं तब देवी स्वयं एक नदी

का रूप लेकर अवतरित हुईं, और उन्होंने धीरे-धीरे आग को ठंडा किया, भाप बनाई, जल बनाया, पृथ्वी बनाई, और फिर, हमारे पूर्वज शिव और विष्णु बनाए। फिर उनसे संसार के सारे प्राणी आए। पेड़, मछलियां, सब लोग, हनुमान और सुग्रीव समेत।”

विश्वामित्र ने सुग्रीव को अपने पास बैठने का इशारा किया जो नदी से लौट आया था, और कहना जारी रखा।

“संक्षेप में, देवी अपनी सृष्टि में व्यवस्था लाई। उन्होंने सभी प्राणियों को दिखाया कि कैसे जीना है, क्या खाना है, कितना खाना है, और किस तरह ऐसे जीना है जो उन्हें प्रसन्नता प्रदान करे और—यहीं परम धर्म आता है—किस प्रकार प्रसन्नता को पाया जाए जो कम से कम हानि पहुंचाए।”

“हम किसी को हानि नहीं पहुंचाते हैं, ऋषिवर,” सुग्रीव ने लगभग शिकायत के अंदाज़ में कहा।

“यह सच है, सुग्रीव, और अपनी दुर्घटना में तुमने केवल स्वयं को हानि पहुंचाई है। हमें अभी यह नहीं पता है कि अन्यों के लिए इसके क्या परिणाम होंगे। सामान्यतया यह अच्छा नहीं होता है। मगर तुमने जटायुओं की कृपा प्राप्त की, तो आशा करते हैं कि किञ्चिंधानगर में तुम्हारे परिजन भी तुम पर ऐसा ही अनुग्रह दर्शाएंगे।”

“हमने जो किया अगर वह वास्तव में हानिकारक नहीं है, तो फिर यह दंड क्यों?” हनुमान ने पूछा।

“आरंभ में नियम वस्तुतः यह सुनिश्चित करने के लिए था कि माता सरस्वती की रचनाओं में कोई भी एक-दूसरे के विरुद्ध कार्य न करे। तुम्हें याद रखना होगा कि देवी ने वह देखा है जो हममें से किसी ने नहीं देखा। वे तब भी थीं जब आरंभ में कुछ नहीं था, और शून्य से महाशक्ति निकली थी, तारे, सूरज, चांद, संसार बना। उन्होंने उस शक्ति को वश में किया, किंतु हम स्वयं अस्तित्व की अग्नियों की बात कर रहे हैं। उनकी प्रकृति हमारी समझ से पैर है। समय-समय पर वे देवी के सीने से निकलती हैं और पृथ्वी को झकझोर देती हैं।”

“नर्क का पर्वत, वह यही है?” हनुमान ने पूछा।

“हाँ। वह उन स्थानों में से एक है जहाँ से संसार प्रारंभ हुआ था, और जहाँ संसार अपने अंत की प्रार्थना भी करता है। मगर प्रतिदिन देवी हावी होती हैं; ‘नहीं, अभी नहीं,’ वे अकारण अग्नि से कहती हैं, ‘मेरी संतान अभी भी छोटी हैं, और अपनी प्रार्थनाएं, अपने माता-पिता एवं संबंधियों के नाम सीख रही हैं, जल में अपने चेहरे और मित्रों के बीच हंसी खोज रही हैं।’ प्रतिदिन आग वापस लौट जाती है।”

“आप जो कह रहे हैं, उसे बस एक दिन पहले तक मैं समझ नहीं पाता, गुरुवर,” सुग्रीव मुस्कुराया, “किंतु आज सुबह ही उस अग्नि द्वारा लगभग लील लिए जाने के बाद मैं जानता हूं कि फिर कभी इस धरती पर ज़ोर से पांव न पटकूं कि कहीं मैं किसी को जगा न दूँ।”

“मुझे विश्वास है तुम ऐसा नहीं करोगे, बालकुमार, तुम नहीं करोगे,” विश्वामित्र ने उसे आश्वस्त किया। “बहुत समय पहले कभी-कभी मुझे भी लगता था कि शायद देवी जीत नहीं पाएंगी, कि पृथ्वी के भीतर की अग्नियां उठ खड़ी होंगी, क्योंकि लोग कहते थे कि जब पूर्वी समुद्र का अग्नि पर्वत बोलेगा तो हमारा संपूर्ण

संसार नष्ट हो जाएगा। किंतु हम यहां हैं, क्योंकि देवी विजयी होती हैं, प्रतिदिन, और उन सैकड़ों ऋतुओं से होती आ रही हैं जो हमारे लोक के आरंभ होने के बाद गुज़री हैं।”

विश्वामित्र मौन हो गए। लगा जैसे उनके भाव उनके शब्दों के आशावाद से पीछे छूट रहे थे।

“किंतु...” अंततः उन्होंने कहा, “किंतु दूसरे तरीकों से भी आग प्रकट हो सकती है। यह पृथ्वी के प्राणियों के जीवन में, उनके शब्दों, कार्यों, उनके विचारों और इच्छाओं में प्रकट हो सकती है। कभी-कभी यह स्वयं को देवी सरस्वती की अनुकंपा में, बुद्धि में सीमित पाती है, और यह भली वस्तु बन जाती है। कभी-कभी ऐसा नहीं होता। यह फट पड़ती है। यह सब कुछ लील जाती है। यह अपने मार्ग में आने वाली हर वस्तु को नष्ट कर देती है और अत्यंत दुख पीछे छोड़ जाती है।”

“क्रोध ऐसी ही अग्नि है,” सुग्रीव ने कहा। स्पष्ट था कि उसने यह कहीं कहते सुना था।

“क्रोध क्या है?” हनुमान ने पूछा।

विश्वामित्र ने शांत भाव से उन्हें देखा मानो इस प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक न हो।

“तो यह भय के समान होता होगा,” हनुमान ने निष्कर्ष निकाला, “नरकराज ने यही कहा था।”

“क्रोध और भय अच्छे नहीं होते, बालको। इनसे बचना चाहिए। इन्हें नियंत्रित रखने के उपाय के बिना ये बढ़ते-बढ़ते सब कुछ लील जाते हैं। इसीलिए देवी ने बहुत, बहुत समय पहले ऋषियों को सिखाया था कि सब चीज़ों को व्यवस्था में, धर्म में रखने का एक मार्ग है। वह है यह जानना कि दूसरों पर कितना बल प्रयोग किया जाना चाहिए, और किस उद्देश्य से। वे जानती थीं कि बच्चे खेलेंगे, और कभी-कभी लड़ेंगे भी, और उनके माता-पिता भी ऐसा करेंगे। मगर उन्होंने जो किया, वह उत्कृष्ट था। उन्होंने रक्त बहाना वर्जित कर दिया। बस। उनकी रचनाओं की पवित्रता का कभी उल्लंघन नहीं किया जाएगा। किष्किंधा में असावधानीवश रक्त की एक बूंद भी नहीं बहाई जाएगी।”

“मगर जटायुओं का क्या? वे भयानक चीज़ें...” सुग्रीव ने कहना शुरू किया।

“जटायु तो आवश्यक हैं। मोसलियों की तरह वे ऐसी प्रजाति हैं जो अपने भीतर आग लिए होती हैं। वे भयंकर प्राणी हैं। मगर वे भी धर्म के नियमों का पालन करते हैं। यही देवी सरस्वती को प्रसन्न करता है। अधिकांशतया वे केवल ऐसे ही तत्वों को लेते हैं जो जीवन के आकाश में देवी के सागर में अपने मूल स्थान में लौट जाने के बाद शेष बचते हैं। मगर उनकी उपस्थिति का, और मुझे यह कहना पसंद नहीं है, किंतु उनकी प्रतिष्ठा का बहुत गहरा प्रभाव अन्य प्राणियों द्वारा धर्म के पालन पर पड़ता है।”

“किंतु वे क्यों आते हैं? क्या हमारे राजाओं का शासन ही पर्याप्त नहीं है?” हनुमान ने पूछा।

“बुद्धिमान हनुमान, तुम अपने पिता केसरी के विषय में सोचते हो, और तुम सही कहते हो। धर्म को जीवित रखने में बुद्धिमानों का शासन अन्य किसी भी वस्तु से अधिक कारगर होता है। किंतु धर्म को जीवित रखने के लिए जटायुओं की

आवश्यकता का एक और कारण है।”

“वे हमारे शासक नहीं हैं। किंतु, आप कहते हैं, वे आवश्यक रूप से हमारे उत्पीड़िक भी नहीं हैं। वे सरलता से हमारे जीवन को नष्ट कर सकते हैं, मगर नहीं करते। वे धर्म का पालन करते हैं। मैं समझता हूं, किंतु...”

“स्वच्छता,” विश्वामित्र ने उमगते हुए कहा।

“मेरी धृष्टता को क्षमा करें, क्रृष्णिवर, किंतु जटायु—” सुग्रीव ने कहना आरंभ किया।

“वही नहीं, सुग्रीव, मगर स्वयं किञ्चिंधा की समग्रता। क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि अगर तत्व जगह-जगह, जीवितों के बीच पड़ा रहे, जैसे देवी सरस्वती की व्यवस्था के चिह्न ने उसे छोड़ा था तो क्या होगा? देखो, ऐसा होता है क्योंकि यह तत्व की, ऊर्जा की, प्रत्येक वस्तु की प्रकृति है। जीवन निकल जाता है, केवल तत्व और सङ्ग रह जाते हैं। लेकिन अगर हम हर समय अपने चारों ओर यह देखें तो जीवन असंभव हो जाएगा। लोग आशा खो देंगे। इससे भी बुरा यह कि वायु में विचरण करने वाली जीवन-छायाएं, जिन्हें कोई नहीं देख सकता, वे बल जो एक बीमार व्यक्ति से दूसरे में चले जाते हैं, वे मृतकों के संसार से उठ खड़े होंगे और सभी प्राणियों के जीवन को भी लील जाएंगे।”

“जीवन-छायाएं जिन्हें हम नहीं देख पाते... आपका मतलब जैसे बरसात की क्रृतु में जब हम छींकते हैं, और फिर कुछ दिन हर कोई छींकता रहता है,” सुग्रीव ने अनुमान लगाने का प्रयास किया।

“हां,” विश्वामित्र ने कहा। “देवी सरस्वती की सृष्टि में ऐसी अनेक वस्तुएं हैं जिन्हें हम देख नहीं सकते, मगर वे विशालतम प्राणियों से अधिक शक्तिशाली हो सकती हैं। उनमें से कुछ हमें छींकने पर विवश करती हैं, तो कुछ हम पर कहीं अधिक बुरा प्रभाव डाल सकती हैं।”

“क्या वही कुल कारण हैं, क्रृष्णिवर,” हनुमान ने अब स्पष्ट पूछा, “या और भी कोई कारण हैं जिन पर हमें विचार करना चाहिए?”

आंखों के ऊपर भवें फिर से सिकुड़ गईं। अब विश्वामित्र कुछ भिन्न, एक वृद्ध के खुरदुरे, नम स्वर में बोले। “हम सजीव प्राणियों से रक्त के स्वाद को दूर रखकर शांति बनाए रखते हैं। नरकलोक के प्राणी जो करते हैं, और वहां केवल जटायु ही नहीं हैं जैसा कि तुम कल्पना कर सकते हो, वह ऐसा काम है जो अन्य लोग भी करने का निर्णय ले सकते हैं। हमारे भीतर की अग्नि को जब रक्त का मायावी स्वाद मिलता है तो वह हमें बदल देती है, बालकुमारो। यह देवी से दूर हो जाती है, कभी धीमे-धीमे तो कभी शीघ्रता से। हमारे पास इसे वापस भीतर भैजने की शक्ति नहीं है। एक बार अगर हम रक्त का सेवन कर लेते हैं तो इसके भीतर स्थित अग्नि हमारी इच्छाशक्ति को अपने वश में कर लेती है, हमारे माध्यम से रक्त और रक्त खाता है, और फिर यह भीतर हमें भी चाट जाता है।”

सुग्रीव ने शर्मिंदगी से अपने घाव सहलाए। उसे याद था कि इसकी गंध कैसी थी। उसे याद था कि जटायुओं की गंध कैसी थी।

“क्या ये वे वस्तुएं हैं जो हो सकती हैं, या ये पहले हो चुकी हैं?” हनुमान ने पूछा।

“यह पहले हुआ है, हनुमान, वास्तव में यह हुआ था। देवी के पास यह

सुनिश्चित करने का कोई तरीका नहीं है कि उनकी सृष्टि में केवल हानिरहित, सज्जन जीव ही आएंगे। एक समय था, मेरे पिता से भी बहुत पहले, जब अनेक अग्नि-प्राणी इस दुनिया में विचरण करते थे। उन्हें परम धर्म का कोई ज्ञान नहीं था, उस शीतल जल से उनका कोई संबंध नहीं था जो उनकी अग्नि को वश में कर सकता था। वे जहां भी जाते सारे गांवों को नष्ट कर देते, बर्बरता के चिह्न छोड़ जाते, और कोई उन्हें नहीं रोक सकता था, क्योंकि वे ठोस पत्थर की सी त्वचा से ढके शक्तिशाली, बलिष्ठ भीमकाय प्राणी थे।”

“जटायुओं से भी बड़े?”

“लोग कहते हैं कि जटायु उनकी प्रजाति में अंतिम हैं।”

“दूसरों का क्या हुआ?”

“वे लुप्त होने लगे थे। हम नहीं जानते यह कैसे हुआ। कहते हैं कि देवी स्वयं अनेक रूपों और वेषों में, हर प्रकार की चमत्कारिक शक्तियों के साथ धरती पर अवतरित हुई थीं। किष्किंधा के अधिक सुशील प्राणियों ने अपना अधिकार जताया; जब देवी ने आततायियों के घरों को नष्ट करने के लिए पर्वताकार लहरें भेजीं तो मत्स्य राजा पूरे-पूरे द्वीपों को विनाश के रास्ते से हटा ले गए थे। और तुम लोगों के जन्म से बहुत पहले, शेष बची रक्तचूषक विशाल छिपकली प्रजातियों को ऋक्षराज और उनकी सेना ने परास्त कर दिया था। अंततः व्यवस्था क्रायम हुई। अग्नि को वश में किया गया। यह इतिहास की महानतम विजयों में से एक है। किष्किंधा ने परम धर्म में जीना सीखा।”

अब तक छायाएं अंधकार में विलीन हो गई थीं। वे तीनों अब एक-दूसरे को ठीक से देख भी नहीं पा रहे थे। हवा में एक भयानक सा मौन घूल गया था।

हनुमान ने एक बार फिर गहरी सांस ली और धीरे-धीरे शाम की प्रार्थनाएं उच्चारने लगे।

उन्हें वह सब याद आ रहा था जो उन्होंने नर्क में सुना था, और यह भी कि सुग्रीव किस दयनीय हालत में था। गिरना, घायल हो जाना कितना आसान था। स्वयं उन्हें भी कितनी ही बार चोटें लगी थीं। यह शायद उनका सौभाग्य ही था कि कभी उनका रक्त धरती पर नहीं गिरा था।

इसका क्या मतलब था? वास्तव में रक्त निकलने, चोट लगने, कटने-फटने का क्या मतलब था? क्या किसी समय में देवी के प्राणी आपस में यही किया करते थे? क्या उनके बीच उदारता का कोई नियम नहीं था? क्या जीवित प्राणियों के बीच इस प्रकार की निर्लज्ज विनाशकारिता संभव भी है? अंततः जटायु यहीं तो कर रहे हैं, अभी भी।

किस बात ने जटायुओं को उनके साथ ऐसा करने से रोका होगा? या उनके माता-पिता के साथ?

हनुमान को अचानक लगा जैसे उनकी हथेलियां दुख रही हैं। उन्होंने अपनी मुट्ठियां इतनी कसकर भींच ली थीं कि उनके नाखून उनमें धंसे जा रहे थे।

जटायुओं ने उन्हें हानि नहीं पहुंचाई थी। उन्होंने उनके लोगों को हानि नहीं पहुंचाई थी। उन्होंने धर्म का उल्लंघन नहीं किया था।

इस बात ने उन्हें आश्वस्त किया।

मगर, वे कर सकते थे, और फिर, अगर वे कोशिश करते तो हनुमान उन्हें

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

प्रत्युत्तर देते। वे यह कर सकते थे।

उनके हाथ फिर दुखने लगे थे। अचानक उन्हें समझ में आ गया कि विश्वामित्र क्या कह रहे थे। अग्नि सबके भीतर थी। इसे निकालना तो बहुत आसान है मगर वापस अंदर भेजना नहीं।

अपने क्रोध को शांत करने के लिए उन्होंने धीरे-धीरे सांस ली, और अपनी मां के स्वर में शाम की प्रार्थना याद करने लगे। विश्वामित्र को देखकर वे इतने प्रसन्न हो गए थे कि किष्किंधानगर वापस लौटने की संभावना के बारे में उन्होंने बात ही नहीं की।

संभवतः अब यह कठिन नहीं होगा।

Novels English & Hindi

11

विश्वामित्र का रहस्य



अगली सुबह, हनुमान नदी में खड़े हुए गंभीरता से उत्तरों की प्रार्थना का नेतृत्व कर रहे थे। नदी के प्रवाह में कहीं विश्वामित्र अपनी जटिल पूजा-अर्चना में व्यस्त थे, और ऐसा लग नहीं रहा था कि वे हाल-फ़िलहाल में उस चट्टान से उतरेंगे जहां वे बैठे हुए थे। मगर उत्तर-राजा वह सब कुछ बहुत गंभीरता से ले रहा था जो हनुमान कर रहे थे, और अपनी ओर से हनुमान उन्हें वह सारी गरिमा और लालित्य दर्शनी की कोशिश कर रहे थे जिसे वे किञ्चिंधानगर की परंपरा के साथ जोड़ते थे।

मगर फिर, वे भी तो उत्तर ही थे।

मानो शरारत का संकेत पाकर, अचानक बाल उत्तरों का एक दल हनुमान की पूँछ को पानी में नीचे खींचने के इरादे से उस पर चढ़ बैठा। अपने सम्मानित अतिथि के साथ इस तरह की धृष्टता देखकर उत्तर-राजा भय से जड़ हो गया। उसके दांत चमके, और वह ठहर गया, मानो अनिश्चय में हो कि अपना क्रोध बच्चों पर निकाले, या उनकी मांओं पर, या ऐसे किसी अन्य जीव पर जो उस पल उसके क्रोध को झेल सके।

मगर अभी तो उसे ही भागना पड़ा।

ठहाका लगाते और उत्तरों, पानी, और फेन को किसी उमड़ते सैलाब की तरह, भले ही अनजाने में, उत्तर-राजा के मुंह पर फेंकते हुए हनुमान घूम गए!

“जय माता सरस्वती!” वे चिल्लाए, और अब वे अपनी पूँछ से हर दिशा में लहरें उछाल रहे थे।

“उत्तर! उत्तर!” नदी में ऊपर-नीचे दौड़ते नन्हे जीव चिल्लाए।

हनुमान हंसने लगे और अब वे अपने दोनों हाथों से पानी में छपाके मार रहे थे।

फिर धुंध और बौद्धार के बीच उन्होंने पानी के किनारे सुग्रीव को धीरे से पहलू बदलते और एक पत्थर पर बैठते देखा।

“बच्चे भी। कितने मासूम होते हैं न? हनुमान?” उसने उदास चेहरे और दुख भरी आवाज़ में कहा।

हनुमान पल भर को सोच में पड़ गए कि अपनी पूँछ से सुग्रीव की टांगें पकड़कर उसे पानी में खींच लें और उसे उसकी उदासी से बाहर निकालें। जब वे छोटे थे तब वे इसमें बहुत माहिर थे। याद करके वे मन ही मन मुस्कुरा दिए, मगर

अभी उन्होंने यह हरकत न करने का फैसला किया। सुग्रीव पहले ही बहुत कुछ झेल रहे थे।

हनुमान ने अपने ऊपर चिपके शेष बाल-उत्तरों को नर्मी से पानी में धकेला और टपकते पानी के साथ बाहर निकलकर पत्थर पर आ बैठे। “चलो, मित्र,” उन्होंने सुग्रीव से कहा, “अब प्रार्थना हो गई तो कुछ सुनहरे फल खाते हैं।”

सुग्रीव ने अलसाए भाव से अपने पास रखे आमों में से एक उठाया, उसे तका और फिर हनुमान की ओर बढ़ा दिया।

“देवी की जय हो, यह तो अच्छा दिख रहा है,” हनुमान ने कहा।

सुग्रीव के चेहरे पर क्षीण मुस्कान आई।

हनुमान ने तीन निवालों में आम खा लिया। “चिंता मत करो, सुग्रीव,” उन्होंने शांत स्वर में कहना शुरू किया, “मुझे विश्वास है कि इस समय जब हम बात कर रहे हैं तो ऋषिवर हमारी समस्या का कोई हल निकाल रहे होंगे। देखो, तुम्हारे घाव तो भर भी चुके हैं। एक दिन और, फिर पता भी नहीं लगेगा कि कोई अपाचार हुआ था। हम घर जाएंगे। गांववाले विवेक से काम लेंगे।”

“ओह हनुमान, मैं तुम पर विश्वास करना चाहता हूं। मैं घर जाना चाहता हूं।”

“तुम्हें देखकर तुम्हारे भाई को प्रसन्नता होगी। और तुम्हारी माता को भी,” हनुमान ने कहा।

“रूमा,” सुग्रीव ने धीरे से कहा। “मगर सबसे अधिक इच्छा तो मुझे रूमा से मिलने की है।”

*

विश्वामित्र की चट्टान से एक पंछी उड़ा और नदी के साथ-साथ दक्षिण की ओर बढ़ गया। वे धीरे से उठे, और आशीर्वाद के तौर पर उन्होंने अपना दायां हाथ उसकी ओर उठाया। देवी उदार रही थीं। जिस पंछी को बुलाने में वे सफल रहे थे, वह पंचवाक्षिणी, पांच ध्वनियों में सक्षम था जो अधिकांश दूसरे संदेशवाहक पक्षियों से तीन ध्वनियां अधिक थीं। इस तरह के संवेदनशील मामले में, जबकि इतने युवा निर्देशन के लिए उनका मुंह तक रहे थे, ऐसा संदेशवाहक भेजना सबसे अच्छा था जो मात्र हां या न के संदेशों से परे जा सकता हो।

विश्वामित्र जानते थे कि गांव की राजनीति किस तरह चलती है। ऐसा हो ही नहीं सकता था कि क्रक्षराज मामले को शांत होने और बालकों को वापस आने दें। किसी अन्य स्थिति में, अगर वे वहां होते तो शायद ऐसा हो सकता था। अंततः अपनी इतनी लंबी आयु में विश्वामित्र ने अनेक बार इस तरह के अपाचारों को चतुराई से दबाया था। सुग्रीव और हनुमान के सामने वे इस बात को खुलकर नहीं कहना चाहते थे, ठीक उसी तरह जैसे उन्होंने कभी भी आश्रम के युवा शिष्यों को पता नहीं लगने दिया था। युवाओं के लिए, और भिन्न कारणों से बहुत वृद्धों के लिए भी, यही विश्वास बनाए रखना सर्वश्रेष्ठ था कि परंपरा का उल्लंघन नहीं किया जा सकता। बीच के, और जीवन की परिस्थितियों से जूझने में व्यस्त अन्य सभी लोगों के लिए थोड़ा अधिक लचीला हुआ जा सकता है। अंततः सच तो जल की तरह होता है। यह इसीलिए सज्जा रहता है क्योंकि यह मुड़ सकता है।

मगर फिर कुछ बातें ऐसी भी थीं जिन्हें मोड़ा नहीं जा सकता था। न तोड़ा जा सकता था। परम धर्म ऐसा ही था, अनिवार्यतः। शरीर को अपवित्र नहीं किया जा सकता था, कोई किसी का जीवन नहीं ले सकता था।

मगर फिर भी...

विश्वामित्र को फिर से किसी काले बादल की तरह अपनी भौंह पर रोष उमड़ता महसूस हुआ। किञ्चिंधा में कौन इतना धृष्ट था जिसने इसकी अवहेलना की? और ऐसा कैसे कि महाबुद्धिमान, सभी रहस्यों के साक्षी नर्कराज तक को इसका भान नहीं है?

विश्वामित्र को ठोकर लगी, मगर अपनी तीव्र स्वतः प्रवृत्ति के कारण वे असम्मानजनक ढंग से गिरने से बच गए। उन्होंने सांस छोड़ी, और राहत की लंबी सांस ली। बहुत अरसे से उन्हें इस तरह से ठोकर नहीं लगी थी। वे तुरंत समझ गए कि इसका घर्षण या गुरुत्वाकर्षण से कोई संबंध नहीं है। वे अनिश्चय की स्थिति में थे, और उठते समय वे अपने विचारों से भटक गए थे। उनका एक अंश नदी में नीचे, घर की दिशा में देख रहा था, जो कि, अगर वे इन बद्धों को उस पाषाण-नगरी में वापस ले जाते हैं और इससे उभरने वाली राजनीति और अंधविश्वासों से निवाट हैं तो केवल कुछ ही दिन दूर स्थित है। उनका एक अन्य अंश उस रहस्य से इस प्रकार के भटकाव को वहन नहीं कर सकता था जो दूसरी दिशा में स्थित है, वह दिशा जिस ओर वे ऐसे अनेक प्रश्नों और चिंताओं को लेकर बढ़े जा रहे थे, जिनके उत्तर कहीं नज़र नहीं आ रहे थे।

क्या वे बालकों को वापस ले जाएं?

या इन्हें अपने साथ आगे, उत्तर की ओर, उस अनजाने संकट की ओर ले जाएं जो वहां मंडरा रहा हो सकता है?

नहीं, यह विचार ही अपने आप में बहुत विचित्र सा लगा। पुराने समय में संभवतः केसरी या ऋक्षराज तो चल सकते थे। मगर ये बालक नहीं।

*

विश्वामित्र समीप आए तो हनुमान उठे और उन्होंने श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया।

“आयुष्मान भव,” विश्वामित्र ने अब खुलकर मुस्कुराते हुए कहा, मानो हनुमान को देखने मात्र से ही उनकी आशंकाएं निर्मूल हो गई हों। “और बंधु सुग्रीव कहां है?”

हनुमान ने धीरे से सिर झुकाया, मानो यह विषय सम्मान और असम्मान दोनों पाना चाहता हो। “सुग्रीव? मेरा बंधु? वह भटक रहा है। ऊपर इस ओर, और फिर उस ओर, और फिर इस ओर वापस नीचे।” उन्होंने इशारे से कुछ ऐसी उदासीनता से बताया जो उनके जैसे सजग युवक के प्रतिकूल थी जो शायद ही कभी किसी ओर से उदासीन रहता हो।

“पहेलियां क्यों बुझा रहे हो, हनुमान?” विश्वामित्र ने पूछा, उन्हें हनुमान के स्वर के इस बदले सुर में आनंद आ रहा था। मगर फिर उत्तर स्पष्ट ही था। दूर से सुग्रीव चेहरे पर निराश सा भाव लिए उनकी ओर ही आ रहा था। उसका शरीर तो उनके समीप आ रहा था, मगर उसकी आंखों में इस अहसास की कोई झलक नहीं दिख रही थी। उसे विश्राम चाहिए था, यह तो स्पष्ट था। उसकी बांहों को देखकर

लग रहा था जैसे उनमें जान ही न हो, वे बेजान सी लटकी थीं।

“यह मात्र घर की याद नहीं है,” अंततः विश्वामित्र ने कहा।

“यह उदासी उस लड़की रूमा के लिए है,” हनुमान ने शांत भाव से कहा, कहते हुए उन्होंने सम्मानपूर्वक हाथ से अपना मुंह ढका हुआ था।

विश्वामित्र चकित से दिखे, और अचानक उन्होंने अपनी उंगलियां उठाई जैसे कुछ गिन रहे हों। उन्होंने कुछ नाम बुद्बुदाएँ, जिनमें से कुछ हनुमान पहचान गए कि नक्षत्रों के नाम हैं और कुछ दूर के संबंधियों के। फिर उन्होंने अपने मुंह से अजीब सी आवाज़ निकाली, और इस तरह सिर हिलाया जिसका अर्थ सहमति था, और केवल वैयक्तिक सहमति नहीं बल्कि धर्म के अनुरूप सहमति।

“अच्छा है, अच्छा है,” विश्वामित्र ने कहा। “रूमा और सुग्रीव। तीसरे संस्कार के लिए यह उत्तम मेल होगा। पंछी की प्रतीक्षा करते हैं और देखते हैं क्या रहता है।”

*

दिन गर्म होता गया। अब सुग्रीव अपने पुराने स्वरूप का सिकुड़ा सा रूप दिख रहा था।

“क्या सुग्रीव की तबीयत ठीक नहीं है?” अंततः हनुमान ने विश्वामित्र से पूछ ही लिया।

विश्वामित्र हँस पड़े। “वह उस स्थिति में है जिसे कवि लोग प्रेम कहते हैं।”

हनुमान ने बोलने से पहले सारी बातों पर विचार किया। “मैं इसे, इस प्रेम को नहीं जानना चाहूँगा,” उन्होंने कहा।

विश्वामित्र मुस्कुराना चाहते थे। मगर उन्हें याद था कि कैसे यह एक बालक के बड़े बोल से अधिक हो सकता था, एक इतना छोटा बालक जिसका अभी दूसरा संस्कार तक नहीं हुआ था, जो वयस्कता में आने का चिह्न था। उन्हें याद हो आया कि जब वे बालक थे तो कैसे उन्होंने भी यही बात कही थी, और पूरे विश्वास से कही थी मगर वे अपनी बात पर अटल नहीं रह पाए थे, और अंततः उस असफलता के साथ जी रहे थे, वह आग जो कभी भी पूरी तरह ठंडी नहीं हो सकी थी।

“शीघ्र ही यहां वर्षाएँ शुरू हो जाएंगी,” अचानक विश्वामित्र ने कहा, मानो अपने विचारों से थक गए हों। “उससे पहले ही इस लड़के को इसके घर पहुँचा देना चाहिए।”

“इसे पूरा विश्वास है कि हमें क्षमा नहीं किया जाएगा, कृष्णिवर,” हनुमान ने कहा। “क्या यह सच है कि हमें नदी पार करने नहीं दी जाएगी? कि हमारे सभी संबंधी हमारी ओर से पीठ फेर लेंगे? कि अगर हम प्रवेश करने की कोशिश करेंगे तो स्वयं मेरे पिता को हमें भगा देना होगा?”

विश्वामित्र ने गहरी सांस ली। उन्हें आशा थी कि इस समस्या पर बात करने की जगह उन्हें इसका हल मिल जाता। मगर अपने बालपन और मासूमियत में शायद हनुमान उन बातों को देख सके जिन पर अब तक उनका ध्यान नहीं गया था।

“वस्तुतः यही नियम है, बालक। इस विषय में मैं हमें कोई झूठी आशाएँ नहीं रखने दूँगा,” विश्वामित्र ने धीमे स्वर में कहा। “मगर किष्किंधा के सामने इस बचकाने अटपाटहुतशुत से कि किसी बच्चे की दुर्घटना पर किस तरह धर्म को लागू

किया जाए, कहीं अधिक गंभीर समस्या है।”

इस रोमांचकारी यात्रा शुरू होने के बाद से पहली बार हनुमान को चिंता सी अनुभव हुई। “वह क्या?” उन्होंने पूछा।

विश्वामित्र ने हनुमान को देखा मानो उनमें किसी बालक से अधिक कुछ देख रहे हों, मानो माप रहे हों कि कृष्णों के बीतने के साथ हनुमान क्या हो जाएंगे। “मेरे साथ आओ,” उन्होंने लगभग फुसफुसाते हुए कहा। “और अपने भाई सुग्रीव को अब परेशान मत करो। उसे विश्राम की आवश्यकता है।”

वे हनुमान को नदी के मोड़ और कुछ पेड़ों के पार कांटेदार लताओं के एक छोटे से झुरमुट में ले गए। उन्होंने कुछ पत्थरों को हटाया तो एक लता से बंधे केले के कुछ सूखे पत्तों का ढेर दिखाई दिया। हवा से उनके आसपास की शाखाएं हिलीं और कुछ धूल उठी।

माहौल में एक अजीब, सूखा और उदासीन सा अहसास घर किए था। हनुमान को थकान और प्यास का अनुभव हुआ। पता नहीं क्यों उन्हें नर्क और उस गर्म हवा का ध्यान हो आया जो वहां से भागते समय उनकी पीठें झुलसा रही थी। सुबह उन्हें फिर ज्वालामुखी की हल्की सी आवाज़ आई थी, मगर नदी के कारण उन्होंने सुरक्षित महसूस किया।

“हमें बहुत ख़ामोश रहना होगा क्योंकि उत्तर बहुत अधिक उत्सुक होते हैं,” विश्वामित्र ने बहुत मद्दम स्वर में कहा। “वे इतनी दूर तक आते तो नहीं हैं मगर कुछ पता नहीं है।”

हनुमान विश्वामित्र के हाथों को बहुत सावधानी से उस पुलिंदे को खोलते देखते रहे।

“ये देखो,” उन्होंने कहा।

“सफेद पत्थर?” हनुमान ने पूछा। उन्हें पता था कि रंगीन पत्थर मूल्यवान होते हैं और उनमें विचित्र से गुण होते हैं जिन्हें कृष्ण और कृष्णराज जैसे औषधियों का इस्तेमाल करने वाले बड़े-बुजुर्ग पसंद करते हैं, मगर वह नीरस लगा।

“तुमने इस तरह की वस्तुएं कहीं देखी हैं?” विश्वामित्र ने पूछा, जैसा कि वे दक्षिण के अपने गर्म और सुरक्षित आश्रम से निकलने के बाद से अनेक नस्लों और भाषाओं के लोगों से पूछ चुके थे।

हनुमान ने सावधानी से उन्हें परखा। वे उन पीली आभा लिए नर्म और गोल पत्थरों जैसे नहीं थे जैसे उन्होंने घर के पास नदी में देखे थे। नदी किनारे के वे पत्थर लगभग फल जैसे दिखते थे; निर्मल जल में वे ऐसे ही दिखते थे: चमकीले, भूरे और सजीव।

मगर इनका नहीं, ये ज़रा भी जाने-पहचाने नहीं लगे।

हनुमान के तलवों में हल्की सी पीड़ा जैसे फिर से उठने लगी थी। उन्होंने जल्दी से एक पत्थर उठाया और उसे अपने तलवे पर छूआकर देखा। “नर्क,” उन्होंने निश्चयात्मक ढंग से कहा, “पर्वत पर मेरे पांवों के नीचे यही थे।” उन्होंने विश्वामित्र को पत्थर लौटाने से पहले उसे मिट्टी पर रगड़कर प्रतीकात्मक रूप से अपने पैरों से हुए संपर्क को मिटाया। “क्या इनसे पीड़ा होती है?” उन्होंने पूछा।

विश्वामित्र ने शोकसूचक ध्वनि निकाली। फिर वे झुके और उन्होंने हनुमान के हाथ को अपने हाथ में ले लिया। धीरे से, उन्होंने हनुमान के हाथ को अपनी गर्दन का

पिछला हिस्सा छूते हुए हंसली की ओर आने दिया।

“यह पत्थर, यह किसी की गर्दन है। या उसका अंश है,” हनुमान ने रोमांचित होते हुए पूछा। “मगर इसका स्वामी कहां है? उसने इसे बाहर कैसे निकाला?”

“हनुमान, तुम और तुम्हारा भाई परम धर्म अपाचार की चिंता कर रहे हो? यह है परम धर्म अपाचार!”

“देवी सरस्वती!” हनुमान ने जब कल्पना की कि उसके स्वामी को किस पीड़ा से गुज़रना पड़ा होगा तो उनके मुंह से निकला। उन्हें वे चीखें याद हो आईं जो उन्होंने और सुग्रीव ने नर्क में सुनी थीं, भयंकर, रक्त को जमा देने वाली दर्द भरी चीखें, इतनी जीवंत आवाजें उन्होंने अपने जीवन में कभी नहीं सुनी थीं, न ही उनसे ज्यादा दुख भरी। “क्या ये नर्क से मिली हैं?”

“अगर ऐसा होता, तो आज मैं यहां नहीं होता, हनुमान। मैं भी घर पर होता, तुम्हें दूसरे संस्कार की प्रार्थनाएं सिखा रहा होता। मगर मुझे ये इतनी अधिक संख्या में मिली हैं और उत्तर एक भी नहीं मिला कि कई ऋतुओं से ये पवित्र नदी में बहते क्यों आ रही हैं?”

“कितनी?”

“तेरह बड़ी, और तैंतीस छोटी। और एक बार, बस एक बार, कोई ऐसी जिस पर मांस मौजूद था, और वह रेंगते हुए कीड़ों से भरी थी।”

हनुमान ने प्रायश्चित्स्वरूप चुपचाप अपने गाल थपथपाएं।

“और इससे पहले कि तुम यह पूछो कि क्या इन्हें जटायुओं ने इतनी लापरवाही से फेंका होगा, इस पर एक निगाह डालो,” विश्वामित्र ने कहा, और हनुमान को दिखाने के लिए एक और हड्डी उठाई। “हड्डी में पड़ी इस दरार को देखो।”

“अपाचार,” हनुमान ने धीरे से कहा।

“यह जानबूझकर, बहुत ही दृढ़ इरादे के साथ बनाया गया था,” विश्वामित्र ने अनिष्टसूचक स्वर में कहा। “किस व्यक्ति या वस्तु ने यह किया? धर्म के परे ऐसा कौन प्राणी है जिसने इतने बार किए होंगे? और क्यों?”

हनुमान ने गहरी सांस ली और स्वयं को नियंत्रित किया। उनकी पूँछ अपने आप ही सतर्क हो गई प्रतीत होती थी।

विश्वामित्र ने स्वयं को शांत करने का प्रयास किया। “बात करने के लिए ये क्रूर मसले हैं, पुत्र। मगर जब मैं तुमसे बात करता हूं, तो मुझे लगता है जैसे अपने मित्र केसरी से बात कर रहा हूं।”

“मेरे पिता ऐसा नहीं होने देते, ऋषिवर। वे नहीं होने देते,” हनुमान ने कहा।

विश्वामित्र मुस्कुराए। “अभी इसकी तह में जाना शेष है, हनुमान। वीर केसरी के किञ्चिंधा में अनेक मित्र हैं, जैसा कि निस्संदेह तुमने नरकराज से अपनी भेंट में जाना होगा। धर्म अभी भी शक्तिशाली है। मगर मुझे भय है कि सुदूर उत्तर में, शीत और हिम के उच्च राज्यों में कुछ गडबड हो रही है।”

“वस्तुतः इसकी प्रकृति क्या है?” हनुमान ने पूछा।

“यह बहुत विशाल है, हनुमान, बहुत विशाल। अगर मेरे भय सच साबित हुए तो किञ्चिंधा के सामने अस्तित्व का इस प्रकार का संकट है जिसकी संभवतः किसी ने कल्पना नहीं की होगी।”

12

बहिष्कृत



पंचवाक्षिणी अगले दिन उत्तरों की नदी पर वापस लौटी।

“किञ्चिंधानगर के राजा वाली ने यह संदेश भेजा है,” विश्वामित्र ने पंछी का संदेश हनुमान और सुग्रीव को सुनाया। “राजकुमार सुग्रीव को क्षमा कर दिया गया है। वे लौट जाएं।”

शायद पूरे दिन में पहली बार सुग्रीव सजग दिखाई दिया। “हम घर जा सकते हैं? हमें क्षमा कर दिया गया?” उसने उत्सुकता से पूछा।

हनुमान मौन रहे। वे ध्यान से पंछी को देख रहे थे। वे बता सकते थे कि पंछी ने पाषाणनगरी में उनके पिता या मां में से किसी को नहीं देखा था। किञ्चिंधा के जीव जब संबंधियों की पहचान करते थे तो उनका दिखने का तरीका भिन्न होता था, वे यह समझ लेते थे कि कौन किसकी संतान है, और कौन किसका कितनी दूर का सगासंबंधी है। वे इसमें आनंदित होते थे, और वास्तव में यह दूसरे संस्कार के बाद के उनके अध्ययन में किसी विज्ञान से कम महत्वपूर्ण नहीं था। मगर अभी तो पंचवाक्षिणी की आँखों में पहचान की कोई झलक नहीं थी, मस्तिष्क में संबंधों की जोड़-तोड़ करते हुए उसकी गर्दन में वह विशेष झुकाव नहीं था।

विश्वामित्र समझ गए कि हनुमान क्या करना चाह रहे हैं। पंछी से बातचीत करना आसान नहीं था, चाहे वह कितना भी साफ़ क्यों न बोलती हो। अब शायद वह भी अपने परिवार के पास जाना चाहती थी।

“यह वैसा ही है जैसी मुझे अपेक्षा थी,” उन्होंने कोमल स्वर में, और बिना किसी विशेष प्रसन्नता के हनुमान से कहा।

सुग्रीव को अचानक ही समझ आया कि अकेले वही क्यों खुशी मना रहा है। “ओह,” उसने कहा और अपनी पूँछ नीचे कर ली।

“शायद मेरे माता-पिता अब किञ्चिंधानगर में नहीं हैं,” हनुमान ने अंततः कहा।

“केसरी न्यायप्रिय राजा हैं,” विश्वामित्र ने कहा। “जैसी कि अपेक्षा थी उन्होंने तुम्हारे देशनिकाले की घोषणा की होगी। उसके बाद उनके लिए वहां कुछ और नहीं रहा होगा। उन्होंने वाली को राज्य सौंप दिया, जैसा कि हमेशा से अपेक्षित था, और तुम्हारी माता के साथ चले गए होंगे।”

सुग्रीव ने अपने हाथ जोड़े और अब वह थोड़ा सा चिंतित लगा। अपने भाई, और उससे भी अधिक अपनी मां के लिए वह प्रसन्न था; और वह रूमा और तारा को लगभग मुस्कुराते हुए भी देख पा रहा था जबकि उनके विवाह समारोह में वरिष्ठ परिवारीजन उन पर फूलों की वर्षा कर रहे थे। मगर उसे वह अच्छा नहीं लग रहा था जिसका इस समय हनुमान सामना कर रहे थे। “केसरी चाचा जी बहुत दयालु हैं कि उन्होंने मेरे बड़े भाई को राजा बनाया। मगर मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि हो क्या रहा है।”

“हनुमान, तुम्हारे माता-पिता, अगर मैं उन्हें भलीभांति जानता हूं और मैं जानता हूं,” विश्वामित्र ने लगभग फुसफुसाते हुए कहा, “महाप्रयाण के लिए चले गए होंगे।”

“मगर यह तो बहुत जल्दी है,” सुग्रीव ने विरोध किया।

हनुमान ने धीरे से हाथ जोड़कर प्रणाम किया और अपनी आंखें बंद कर लीं। ये शब्द मानो उन्हें कहीं दूर ले गए थे, ठीक उसी तरह जैसे घाटी में नीचे देखने पर उन्हें दुनिया दिखती है। इसका क्या अर्थ था? यह कहने का क्या अर्थ था कि अब तुम अपने माता-पिता से फिर कभी नहीं मिलोगे? क्या यह संभव था? क्या आप अपने शरीर से अपने अंगों को अलग कर सकते हैं? या अपने अस्तित्व से स्वयं को?

हनुमान के पास कोई उत्तर नहीं था। उन्होंने अपनी आंखें खोलीं और विश्वामित्र की आंखों में देखा, बस एक बार। अब यही उनके पिता थे।

“जय माता सरस्वती,” हनुमान ने धीमे से कहा और पलटकर बहुत वेग से नदी किनारे भागते हुए दूर स्थित पेड़ों के झुरमुट की ओर चले गए जहां वे सबकी दृष्टि से दूर हो सकें।

विश्वामित्र ने लाचारी से अपना हाथ उठाया, उनका मुंह भय से आप ही आप खुल गया। मैंने अभी जो देखा, वे आंखें नहीं, बल्कि कुएं थे, उन्होंने सोचा। कुएं जिनमें मैं गिर जाने वाला हूं, क्योंकि उनमें मैंने कुछ ऐसा देखा है जिसे मैंने कहीं और नहीं देखा। उनमें मुझे किञ्चिंधा के लिए आशा दिखी है। उनमें मैंने सारा किञ्चिंधा देखा है। उनमें अस्तित्व का सारा दुख है, इसकी अनंत असार्थकता है, मगर फिर भी उनके साथ सामंजस्य, शक्ति के साथ सामंजस्य बिठा लिया है। यह लड़का साधारण नहीं है। और अब यह और मैं एक साथ बंध गए हैं, बहिष्कृत और अनिच्छित गुरु।

हनुमान दौड़ते रहे, शायद इतने वेग से जिससे पहले कभी नहीं दौड़े थे। उनके पीछे धूल का एक गुबार उठा। धूल के भंवर में एक भूरे बिंदु की तरह वे क्षितिज के हरे बादल में घुसे, पत्तों को झकझोरते हुए वे एक एकाकी स्थान पर चढ़ गए जो उनके महादुख को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त रूप से अलग-थलग था।

बाद में, बहुत साल बाद, उत्तर कहेंगे कि जिस जगह उनके आंसू धरती पर गिरे थे वहां अनमोल रत्नों की एक लड़ी बन गई थी। वो कहेंगे कि हनुमान के आंसुओं से बना एक विशाल घेरा उन्हें उसी तरह संरक्षण प्रदान करेगा जिस तरह कभी उन्होंने हनुमान को संरक्षण दिया था। उन्हें इसकी आवश्यकता पड़ेगी।

*

फलों और कुछ मेवों के सामान्य से अपराह्न के भोजन के बाद विश्वामित्र ने उत्तर-

राजा को विदा कहा और हनुमान को साथ लेकर फिर से उत्तर की अपनी यात्रा पर चल दिए। विश्वामित्र और हनुमान ने सुग्रीव से आग्रह किया था कि वह दक्षिण दिशा में नदी के साथ-साथ आगे बढ़े और घर चला जाए।

मगर सुग्रीव तय नहीं कर पाया कि क्या करें। वह सारी सुबह हताशा में डूबा, लोभ और एकदम ही नया कुछ करने, धर्म की अपनी निजी धारणा बनाने के नए तरीकों की आवश्यकता के बीच झूलता सुन्न सा नदी किनारे बैठा रहा था।

अगर वह वापस जाता है, तो क्या वह वाली को यह विश्वास दिला सकेगा कि सारा दोष उसका था, और कि अगर उसे क्षमा किया जाता है, तो हनुमान को भी किया जाना चाहिए?

क्या वह अपनी माँ को आश्वस्त कर सकेगा कि वे वाली से बात करें?

या वे उसे चुप कर देंगे, जैसे अक्सर कर देते थे? क्या उसमें इतना साहस होगा कि मुंह खोल सके? अपने मित्र और भाई हनुमान के तिरस्कार और उसके साथ हुए अधर्म की ग्लानि के साथ क्या रूमा और वह कभी शांति से रह पाएंगे?

असहाय और हताश भाव से सुग्रीव ने एक पत्थर उठाया और उसे नदी के पास पानी के एक उथले से गड्ढे में फेंक दिया। उसे थोड़ा बेहतर लगा क्योंकि उसका निशाना एकदम सटीक रहा था, और क्योंकि उसने गड्ढे के किनारे धूप सेंक रहे एक मेंढक परिवार को नहीं मारा था।

मगर वे पानी में कद गए थे, उनकी शिकायती आंखें उसे धूर रही थीं।

उसने अपने धावों को और इस पीड़ा के कारण को देखा। विश्वामित्र ने कुछ पत्तों को पीसकर उनका लेप उसे दिया था, और वे बहुत ठीक हो गए थे। ऐसा संभव नहीं था कि वे फिर से मगर मच्छों या जटायुओं का ध्यान खींच पाएं। उसे बस भोर से दिन ढलने तक नदी के किनारे-किनारे चलना था। सातवीं सुबह उसे ऋष्यमुख की चोटी दिख जाती, और फिर, घर।

उसे देखकर उसकी माँ उसी तिरस्कारपूर्ण विजयी भाव से मुस्कुराएंगी जो वे तब दर्शाती हैं जब उनके मन की बात होती है। वाली उसे उठा लेगा और फिर दायां हाथ नीचे छोड़ देगा बस यह दिखाने को कि वह एक हाथ से भी ऐसा कर सकता है, और कि वह कितना शक्तिशाली है। वह उसके साथ अपने सर्वश्रेष्ठ फल और फूल बांटेगा। उसे और रूमा को कोई अभाव नहीं होगा। वाली और तारा उन पर अतिशय लाड़ लुटाएंगे जैसे कि वे उनकी अपनी संतान हों। समय के साथ उनके बच्चे भी होंगे। ऋक्षराज प्रसन्न होंगी। वे सभी दिशाओं और पर्वतों से मुखियाओं को बुलाएंगी, और महाभोज और उत्सव होगा। वे देवी की स्तुति गाएंगे, और किञ्चिंधा के उपवनों में सदैव प्रसन्न रहेंगे।

मगर फिर भी हनुमान के बिना संसार की कोई भी वस्तु, कोई भी प्रसन्नता वास्तविक नहीं होगी।

सुग्रीव ने एक और पत्थर उठाया और उसे कसकर पकड़ लिया। वह उसे अपने माथे के पास ले गया, और उन शब्दों को याद किया जो विदा के रूप में विश्वामित्र ने उससे कहे थे। यह भाग्य के विषय में नहीं था, जिस पर अनेक किञ्चिंधावासी दुख से जीभ चटकारते हैं, बल्कि नियति के विषय में था, धर्म के अनुसार जीने के विषय में था, जो बदल गया था, नृत्य कर रहा था, और सर्वाधिक तो अधर्म द्वारा लील लिए जाने के लिए तैयार खड़ा था। और अधर्म यहीं था। उसकी माँ में, उसके भाई में, उस

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

सब में जो हो रहा था।

नदी तो दोनों ओर ही जाती थी, किञ्चिंधानगर और घर की ओर जहां अर्धम् अपना सिर उठा रहा था, और विपरीत दिशा में पर्वतों की ओर जहां हनुमान और विश्वामित्र जा रहे थे, धर्म के लिए, धर्मानुसार।

“नदी मां,” सुग्रीव ने धीरे से जल से कहा, “जब मैं वहां पहुंच जाऊंगा जहां आप चाहती हैं मैं जाऊं, तब मैं इस पथर को आपको लौटा दूँगा जिसे मैंने आपकी कोख से उठाया है।”

इन शब्दों के साथ, और रूमा और अपने घर को विदा कहने के क्षणिक विचार के साथ सुग्रीव उत्तर दिशा की ओर मुड़ा और फिर अत्यंत वैग से हनुमान और विश्वामित्र की ओर दौड़ पड़ा।

&

Novels English

13

पुराने और नए राजा



ऋक्षराज फूलों से सजे सिंहासन पर बैठी थीं और स्नेह जैसे किसी भाव से तारा के सिर को थपथपा रही थीं, मगर वास्तव में यह स्नेह नहीं था। रूमा को ऐसा लगा जैसे वृद्ध साम्राज्ञी किसी विजयचिह्न को चमका रही हों। उनके प्रसन्न होने का कारण भी था। वाली ने एक उत्सव को फिर से शुरू किया था जिसे कई पीढ़ियों से नहीं मनाया गया था। यह एक विशिष्ट दिन होने वाला था।

सारी सुबह, पाषाणनगरी की वादी प्रार्थनाओं और उत्सवों की ध्वनियों और गंधों से भरी रही थी। आसपास के पर्वतों के मुखिया वाली और ऋक्षराज का अभिनंदन करने आए थे।

किष्किंधानगर में अनिश्चय का वातावरण था, यद्यपि केसरी और अंजना को महाप्रयाण पर गए दस दिन बीत चुके थे। एकाधिक बार धीमे स्वरों में यह कहा जा चुका था कि “यह उत्सव फलहीन भूसे के समान है” हालांकि वाली या ऋक्षराज के आसपास कभी नहीं कहा गया। अन्य लोग यह कहना पसंद कर रहे थे, “यह देवी के उस मंदिर के समान है जहां सब कुछ है, मगर देवी नहीं हैं।” वे अपने राजा और उसके परिवार को याद कर रहे थे।

रस्मों के समाप्त होने और विश्वामित्र के कभी असंतुष्ट रहे एक शिष्य द्वारा, जिसे अब उसकी संरक्षिका ने उसकी कल्पना से परे एक पद पर स्थापित कर दिया था, विभिन्न सींगों और नगाड़ों को बजाए जाने के बाद ऋक्षराज ने उंगली के इशारे से वाली को अपने पास बुलाया।

उसने तुरंत आज्ञापालन किया, और इस बात ने ऋक्षराज को प्रसन्न किया। वे मुस्कुराई, आगे झुकीं और उसकी बलैया ले लीं। उसे किसी की बुरी नज़र नहीं लग सकती।

उन्होंने बड़े ध्यान से दर्शकों को मापा था, देखा था कि कौन-कौन से कुनबे आए हैं, मुखियाओं ने कितना झुककर नमन किया था, वे कितना मुस्कुराए थे, अब वे कहाँ बैठे हैं, एक-एक बारीकी जिसे एक सक्षम साम्राज्य-निर्मात्री को देखना चाहिए था। केसरी बहुत सम्मानित राजा था, और लोगों की दृष्टि में वाली आसानी से उसका स्थान नहीं ले सकेगा। अगर हनुमान बड़ा होता, और अगर वह अभी यहाँ होता, तो बहुत आसानी से लोकप्रिय पसंद होता। वे यह जानती थीं। और वे जानती थीं कि

उन्होंने इस दिशा में कुछ कदम उठाकर ठीक ही किया।

प्रार्थनाएं समाप्त हो गई, और अब उस प्रदर्शन का समय था जिसे अपने जीवनकाल में बहुत कम लोगों ने देखा था। ऋक्षराज जानती थीं कि जिसे प्रतिभा का अभाव नहीं पा सकता, उसे एक तमाशा हासिल कर सकता है।

वे धीरे से खड़ी हुईं, रूमा और तारा उनकी बांहें थामे हुए थीं। मुखियाओं और नीचे बैठे लोगों के बीच तालियों की नम्र लहर दौड़ गई।

“मेरे प्रिय बच्चों,” उन्होंने घोषणा की, “आज आप लोगों ने मुझे अत्यंत सम्मानित किया है। निससंदेह, आज अगर सब लोग हमारे साथ होते तो मुझे कहीं अधिक संतुष्टि मिलती। मगर अब हम यही कर सकते हैं कि मेरे प्रिय केसरी के अच्छे कामों को आगे बढ़ाएं और हमारे राजकुमार, मेरा मतलब, राजा वाली के हाथों को दृढ़ता प्रदान करें।”

परिसर में ज़ोरों की हुंकार उठी। ज़ोरदार आवाज़ों वाले सभी लड़कों को ऐसे स्थानों पर बिठाया गया था जहां से उनके शब्द भलीभांति पहुंच सकें।

“इनके हाथों में हाथियों की शक्ति है! इनकी जंघाओं में इनके पितरों की शक्ति है! वाली की जय हो!” वे चिल्लाएं।

ज़ोरदार दहाड़ के साथ, अच्छी तरह तेल पुते, दमकते, बलिष्ठ युवा उन पत्थरों के पीछे से कुद पड़े जो दर्शकों को धेरे हुए थे। हरेक के पास एक छोटा समूल उखड़ा, लाल, नारंगी और बैंगनी रंगों में लिपटा खूज़र का पेड़ था। पत्तों से कौड़ियों की लड़ी बांधी गई थी, और जब हवा उनसे होकर गुज़रती तो वे खनखना उठती थीं।

फिर वे युवा चिल्लाते, शोर मचाते, अपने पीछे खतरनाक ढंग से अपने विशाल पेड़ों के सोटों को झुलाते किञ्चिंधानगर के मार्गों पर दौड़ने लगे। पेड़ों से चोट खाने से बचने के लिए भीड़ को पीछे हटना पड़ता। यहां-वहां, जब आगे खड़े लोग वृद्ध दादा-दादियों को पीछे धकेलते तो वे व्यर्थ रोष जताते, उन पर गुरते और उनके हाथों पर चपत लगाते।

मगर बच्चे इसका आनंद लेने से स्वयं को रोक नहीं पाए। वे तो असल में यही चाहते थे, अकेले और दुर्लभ पेड़ के गिरने की प्रतीक्षा करना नहीं बल्कि जब जी चाहे किसी भी पेड़ को खींचकर गिरा लेना और उसे लेकर भागना। वे चिल्ला रहे थे, शोर मचा रहे थे, हँस रहे थे, पीछे घिसटते पत्तों को पीटने की कोशिश कर रहे थे, और जितना हँगामा मचा सकते थे, मचा रहे थे।

अचानक, उन्होंने और शोर सुना। एक अन्य युवक उनके ऊपर स्थित चोटी से निकली एक चट्टान पर चढ़ गया था, जबकि एक अन्य घाटी के पार उसके ठीक सामने ऐसी ही एक अन्य चट्टान पर पहुंच गया था। उनके नीचे खड़ी भीड़ हैरानी से देख रही थी कि अब वे क्या करेंगे।

“जय वाली!” वे एक सुर में चिल्लाएं, और नीचे बैठे लोगों के सिरों के ऊपर विशाल, तैरता सा वृत्त बनाते हुए नारियल फेंकने लगे। नारियलों का हर जोड़ा आपस में टकराता, और उनके अंदर का माल-पानी नीचे बैठे लोगों के सिरों पर छितर जाता।

ऋक्षराज आनंद से हँस पड़ीं। दर्जनों बच्चे, माता-पिता, वृद्धजन नारियल के टुकड़ों को जमा करने के लिए आपस में धक्का-मुक्की करने लगे थे। उन्हें आनंद लेते देखना अच्छा लग रहा था।

अंततः, वाली के सारे दक्ष प्रदर्शनकर्ता उसकी मां के सामने पंक्तिबद्ध खड़े हो गए। उन्होंने राजसी भाव से अपना हाथ उठाया, और भीड़ को उनके लिए तालियां बजाने को प्रेरित किया।

“अब कुश्ती,” उन्होंने वाली की ओर इशारा करते हुए ऐलान किया।

उनके पुत्र ने ताली बजाई और पीछे की ओर बैठे एक दूसरे गुट की ओर हाथ हिलाया। वे धीमी और मंथर गति से चलते हुए सामने के हिस्से में एक चबूतरे पर पहुंचे जहां प्रार्थना और रस्में संपन्न की गई थीं। नए पुरोहित और उसके सहायकों ने जल्दी-जल्दी अपनी भेंटें हटा ली थीं, जबकि एक दूसरा गुट केले के सूखे पत्तों पर नदी की नर्म रेत ले आया।

पहलवान अखाड़े में खड़े थे और झुककर अभिवादन कर रहे थे। दर्शकों पर विस्मय से भरा मौन छा गया। किञ्चिंधावासी कुश्ती लड़ते थे, और कुछ अवसरों पर स्वयं केसरी भी लड़ते थे। मगर एक लंबे समय से इसका इस तरह का आयोजन नहीं हुआ था।

वाली ने अपनी मां को प्रणाम किया, और फिर तारा पर एक दृष्टि डालकर अपनी मालाएं उतारकर लड़ने की तैयारी करने लगा।

“याद रखना,” ऋक्षराज ने धीमे से उससे कहा, “किसी को तोड़ना मत। अपाचार की ये बातें अभी भी सबके मुंह पर हैं।”

वाली ने मुस्कुराकर हामी भरी। हाल-फ़िलहाल में उसने किसी को नहीं तोड़ा था, सिवाय एक के, वह भी बहुत पहले, और ऋषि विश्वामित्र ने अपाचार के किसी भी दोष के बिना उसे संभाल लिया था। वह एक ग़लती थी। और विश्वामित्र क्षमाशील थे।

“दहाड़ो, पुत्र,” ऋक्षराज निर्लज्ज अभिमान से चिल्लाई। उन्होंने देख लिया था कि सेवक काली रेत लाए थे जैसा कि उन्होंने उस स्थिति के लिए निर्देश दिया था कि कहीं कुछ ग़लतियां हो जाएं और रक्त बह जाए, तो यह कम दिखाई देगा।

वाली ने अपने हाथ उठाएँ और शक्ति-मद में चलता हुआ रेत के अखाड़े में पहुंचा।

केवल तारा ने इस सारी धूल और अस्त-व्यस्तता के बीच भी रूमा की आंखों के आंसू देख लिए थे। उनके बचपन से ही वे पेड़ उनके पिता की पहाड़ी पर लगे हुए थे। पेड़ों के लिए कोई स्पष्ट परम धर्म नहीं था, मगर इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं थी, कम से कम अब तक तो नहीं थी।

*

शहर की हबड़-धबड़ से दूर, केसरी और अंजना ने यह जानते हुए एक और दिन का आरंभ किया कि यह उनका अंतिम दिन हो सकता है। वे हनुमान से मिल सकते हैं, और उससे विदा ले सकते हैं या शायद ऐसा न हो। अब कुछ भी पत्थर पर खिंची लकीर नहीं था।

“मुझे लगता है देवी चाहती हैं कि हम अभी यहां रहें,” आंख खुलने पर केसरी ने शांत भाव से कहा। वे उसी स्थान पर थे जहां रात में उन्होंने सोने का निर्णय

लिया था। वह विशाल पेड़ जिसके तले वे सोए थे, अब उनसे बात करता प्रतीत हो रहा था, सुबह की धूप में एकदम सजीव, जाग्रत और हरा-भरा। उनकी तरह ही वह पेड़ भी यह देखकर रौमांचित प्रतीत हो रहा था कि वे अभी भी वहीं थीं, वह स्त्री जो उनका प्रेम थीं, वह स्त्री जो संघर्ष करके अपने पुत्र के प्राण वापस ले आई थीं जिसका जन्म श्वासहीन हुआ था।

अंजना भी जग गई थीं, और फिर उन्होंने चिंतित भाव से केसरी को सिर से पांव तक देखा। “जय माता सरस्वती,” वे बोलीं, और अंगड़ाई लेकर काम के लिए तैयार हो गईं।

यह देखकर केसरी उस बोझिल भाव को भूल गए जो अभी भी उन पर सवार था, जबकि कुछ दिन पहले जब सत्ता हस्तांतरण के दौरान उनकी अंजुरी से पवित्र जल वाली की अंजुरी में गिरा था तो कुछ बोझिलपन किसी पत्थर की भाँति उनके मन से हट गया था।

“लगता है मेरा मांस जटायुओं की पसंद का नहीं है,” उन्होंने परिहास किया।

अंजना की तीखी निगाह ने उन्हें चुप कर दिया, और उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट उत्तर आई। “हाँ। आप जटायुओं और मगरमच्छों या और जो भी कोई रात में आता-जाता है, उसके जबड़ों से परे होंगे।”

“मैं अभी भी शक्तिशाली, अजेय केसरी हूं,” उन्होंने अपनी जांघ पर हाथ मारते और पूँछ को हिलाते हुए डींग मारी। फूलों, कौड़ियों और उन आठ प्रकार के लेपों के बिना जिनसे सभी प्राणियों पर अपने राजत्व को जताने के लिए राजा को सजना होता है, केसरी फिर से छोटे से प्रतीत हो रहे थे, वह छोटा, खिलंड़ा लड़का जिसके लिए बहुत समय पहले अंजना ने तीसरे संस्कार की प्रार्थना कही थी, जब वे राजकुमार ही थे, और जब रानी होने के बावजूद ऋक्षराज में विनोद भाव हुआ करता था।

मगर केसरी की डींग वैसी नहीं थी। यह तो उनका हंसने का ढंग था। यह पछतावा नहीं था, अपना सिंहासन, अपना घर छोड़कर चले आने के अपने निर्णय पर तो नहीं, क़र्तई नहीं। मगर उसमें वही बात थी जो किञ्चिंधा की नियति की सर्वव्यापी स्वीकृति में थी।

यह कहने का प्रलोभन उनके मस्तिष्क पर हावी था। हनुमान कहां है? वो कैसा है?

अंजना ने अपनी आंखें बंद कर लीं और हाथ जोड़कर शांत खड़ी होकर प्रार्थना करने लगीं। उन्होंने अपना मंत्रोच्चार शुरू किया और फिर धीरे-धीरे घूमने लगीं, बाएं से दाएं, जब तक कि ऐसा नहीं लगा कि किञ्चिंधा की हर दिशा और हर कोने ने अपने हनुमान के लिए उनके आशीर्वाद की शक्ति को महसूस नहीं कर लिया होगा।

14

गणेशों का देश



आदि गणेश ने धीरे से अपना विशाल सिर हिलाया और मुस्कुराए। उनके नन्हे मेहमान पर्वतों की ठंडी हवाओं के आदी नहीं थे। “ऋषिवर, मेरे विचार से पहले आपको हमारे मित्रों को कुछ गर्माहट प्रदान करने के लिए पीली घाटी में ले जाना चाहिए!”

“मुझे स्वयं भी थोड़ी गर्माहट चाहिए,” विश्वामित्र ने थरथराते हुए कहा।

हनुमान ने गहरी सांस ली और स्वयं को सीधा किया। वे कांपना रोक सकते थे मगर उनके रोम सीधे होने को तैयार नहीं थे। उन्होंने अपने हाथों को देखा और मन ही मन हँस पड़े। पर्वतों की भव्य सुंदरता के सामने, विशाल और सुशिष्ट गणेशों की उपस्थिति में, उनके द्वारा अब तक देखे गए राज्यों में से सबसे सुंदर राज्य में हनुमान को अहसास हुआ था कि वे कितने छोटे हैं, और इसलिए उनकी परेशानियां भी छोटी हैं। जब सभा और उन गंभीर मसलों को हल कर लिया जाएगा जो विश्वामित्र के मस्तिष्क पर हावी हैं, तब वे वहां के एक-एक पहाड़ की चोटी पर दौड़ लगाएंगे। जटायु के साथ यात्रा करने के बाद ऊंचाई को लेकर कोई भय नहीं रहा था।

“हनुमान, यह देश कितना सुंदर है,” सुग्रीव ने प्रशंसा करते हुए कहा। “एक दिन मैं अपनी रूमा को यहां लेकर आऊंगा।”

हनुमान ने उसकी पीठ थपथपाई। सुग्रीव अंततः शांत हो गया था और अब फिर से दुख में डूबे बिना उसके बारे में बात कर सकता था। उसने वह पत्थर भी यहां गर्म पानी के स्रोत में फेंक दिया था जो वह उत्तरों की नदी से लाया था, वह अपने निर्णय से संतुष्ट था।

यह पर्वतों की बात थी। और हाथियों की भी। उनका सभी प्राणियों पर यही प्रभाव पड़ता था। यह इस तथ्य की याद दिलाता था कि जीवन इतनी सुंदरताओं से भरा हुआ है कि इसे किसी भी बात पर विलाप करते हुए व्यर्थ नहीं गंवाया जा सकता, अत्यंत मुश्किल समस्याओं में भी नहीं।

*

स्नान और विश्राम करने के बाद हनुमान, सुग्रीव और विश्वामित्र को एक चुस्त, युवा हाथी महासभा में ले गया। वहां अर्धवृत्त में अठारह हाथी मौजूद थे। अन्य अनेक

उनसे कुछ पीछे उनकी सेवा में खड़े थे। मैदान के प्रवेशद्वार पर एक मां-सदृश हथिनी ने उन तीनों पर हल्दी का लेप लगाया, और सुगंधित जल और गुलाब की पत्तियों का छिड़काव किया। गर्म जल से नहाने के बाद, और अब दोपहर की आनंददायक और गर्म धूप में ऐसा लग रहा था जैसे कहीं कोई समस्या ही न हो, कि यह केवल मित्रों की आनंदपूर्ण सभा होने वाली हो।

यद्यपि शिष्टाचार के मामले में हाथी देवी सरस्वती की संतानों में सबसे ज्यादा नियमनिष्ठ थे, मगर आदि गणेश को हमेशा नियमों पर चलना पसंद नहीं था। उन्होंने जैसे ही विश्वामित्र को देखा, वे उस समूह से अलग हुए जिससे वे बात कर रहे थे और अर्धवृत्त के बीच में आ गए जहाँ उनके लिए विशाल पर्णांगों और केले के पत्तों की एक पताका सी बनाई गई थी। उनके आसपास से आती गणेश भाषा की मद्दम, घड़घड़ाती आवाजें धीमे-धीमे थम गईं।

उन्होंने अपनी सूंड उठाई और एक लंबी, सुंदर ध्वनि निकाली जिसने वादी और पर्वतों को सभी भटकावों से मुक्त कर दिया प्रतीत होता था। यह गणेश भाषा में ‘ओम’ का पवित्र स्वर था, हनुमान ने आनंद में अपनी आँखें बंद कर लीं। उनकी अपनी भाषा में यह कभी इतना मधुर नहीं लगा था। हमारी भाषा बहुत दंतव्य है, उन्होंने सोचा।

फिर आदि गणेश ने एक ऊंचे, हिम से ढके पर्वत की दिशा में प्रार्थना की कुछ पंक्तियां कहीं जो दोपहर की धूप में रक्ताभ लिए हुए था। “हे पर्वत पिता, नदी माता,” उन्होंने कहा, “सत्य की जीत हो!”

उनके अंदर धर्मचार की समझ थी, और स्पष्ट रूप से इसके लिए स्मरणशक्ति और बुद्धि भी थी।

*

“हम किञ्चिंधानगर के अपने बंधुओं का स्वागत करते हैं,” आदि गणेश ने कहना शुरू किया। “हमारे सम्मानीय ऋषि विश्वामित्र महत्वपूर्ण प्रश्न लेकर आए हैं। उनके साथ केसरी-अंजना के पुत्र हनुमान, और ऋक्षराज के पुत्र सुग्रीव भी हैं। साथ ही, सभा कृपा करके यह जान लें कि सुग्रीव के भाई वाली अब किञ्चिंधानगर के राजा हैं।”

सुग्रीव और हनुमान ने सिर झुकाया और प्रणाम किया। घेरे में अभिवादन की कुछ कोमल और स्नेहमयी गङ्गाहाट गूंज उठी।

“विश्वामित्र, कृपा कर आप बोलें,” आदि गणेश ने शालीनतापूर्वक संकेत किया।

“माता सरस्वती मुझे बुद्धि और अभय प्रदान करें,” विश्वामित्र ने कहना आरंभ किया। “हे सम्मानित गणेशों, हम एक भय के कारण अपने गृह से इतनी दूर यात्रा करके आए हैं जो अंत में सार्थक हो भी सकती है और नहीं भी। पिछले चार वर्षों से, मेरे शिष्य और मैं नदी माता में अपवित्रीकरण की घटनाएं देखते रहे हैं। पहले तो मझे ऐसा नहीं लगा कि ये परम धर्म अपाचार हो सकती हैं, उन नियमों का उल्लंघन जिसे सुदूर पश्चिम के गणेश धर्मदिश कहते हैं और सुदूर पूर्व के मार्गम् कहते हैं।” विश्वामित्र ने दो हाथियों की ओर सिर हिलाया जिन्हें उन्होंने इन दो सुदूर प्रांतों के दूतों के रूप में पहचाना था। उन्होंने भी सिर हिलाकर स्वीकृति दी मगर ऐसी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी जैसे वे किसी उल्लंघन के बारे में जानते हों।

फिर उन्होंने कहना जारी रखा। “मुझे लगा कि ये घटनाएं किसी ग़लती का परिणाम हैं, जैसी ग़लतियां जीवन के इस विशाल रंगमंच पर हो जाती हैं। शायद कहीं कोई घड़ियाल अपनी संतान को अपना धर्म सिखा रही हो और बालक से कुछ चूक हो गई हो। शायद अपने पंखों और सुंदर छवि पर आत्ममुग्ध किसी जटायु ने अपनी प्रिया को लुभाने के लिए अपनी चोंच कुछ ज्यादा ही ऊँची उठा ली हो और कोई टुकड़ा गिरा दिया हो। इसलिए मैंने प्रार्थना की और उन उल्लंघनों को निबटा दिया। मगर फिर...”

अचानक विश्वामित्र ने स्वयं को एकाकी पाया। वे एक लंबा जीवन जी चुके थे। बहुत लंबा। मगर देवी की अनुकंपा से इसका अधिकांश भाग शांतिपूर्ण रहा था। वे जानते थे कि उनके आगामी शब्द शायद उस शांति पर विराम लगा देंगे जिससे गणेश भी परिचित थे। किंतु अगर यह सच है, तो गणेशों को भी जानना चाहिए क्योंकि वे किञ्चिंधा की सर्वश्रेष्ठ सुरक्षा थे, और जो भी संकट उसके ऊपर आने वाला था, उसका सामना पहले उन्हें ही करना था।

“मगर फिर नदी और लाई। अतएव मैं यह जानने के लिए नदी के मुहाने की यात्रा पर निकल पड़ा कि इतने व्यवस्थित ढंग से ये उल्लंघन क्यों हो रहे हैं। मैंने जटायुओं से पूछा, मगर वे नहीं जानते थे। वे दक्ष और धैर्यवान हैं, और नित्य भोर में उनके आवास में शुद्धीकरण अग्नि उत्पन्न होती है। वे अपनी ग़लतियों को छोड़ते नहीं हैं। न ही किसी ने किसी स्वर्धर्मत्यागी की चर्चा की। कोई ऐसे किसी जीव को नहीं जानता जो उस रेखा को पार कर सकता है जिसका राजाओं, गुरुओं और किञ्चिंधा के अधिकांश नागरिकों ने इतने वर्षों से सम्मान किया है।”

आदि गणेश ने अपना सिर झुकाया और किसी बिंदु को देखने लगे जो उनकी लंबी सूंडों के बीच किसी अदृश्य स्थान पर स्थित था। “तो इस समस्या का स्रोत सुदूर उत्तर में कहीं हो सकता है?” उन्होंने पूछा।

“मैं यही पता करने आया हूं,” विश्वामित्र ने उत्तर दिया।

सभा में देर तक मौन छाया रहा। यदा-कदा गणेश अपने कान फटकारते, या अपनी पूँछें हिलाते। वे सोच रहे थे, अपनी यात्राओं और अन्य गणेशों से, उससे भी अधिक यात्री पक्षियों से बातचीत की हर छोटी से छोटी तफसील को याद कर रहे थे, जो आधे वर्ष संसार के उत्तरी छोर पर रहते थे और शेष वर्ष दक्षिण में। उनके पांवों में महत्वपूर्ण जानकारी समाई होती थी, भले ही उसे बताने में वे उतने वाचाल न हों जितने पंचवाक्षणी पक्षी होते हैं।

“पूर्व में तो मैंने किसी संकट के बारे में नहीं सुना,” दूत ने धीरे से कहा।

“न ही पश्चिम में मैंने।”

“और उत्तरी प्रकाश पर्वत पर साधना करने वाले रोमिल संन्यासी यद्यपि दूसरों के मामलों से बेपरवाह रहते हैं, मगर हम मान सकते हैं कि वे भी ठीक ही होंगे। वैसे भी इतने ठंडे स्थान पर हमारे कठोर बंधुओं के सिवा और कौन रह सकता है?” एक अन्य संभ्रांत हाथी ने कहा। “वैसे प्रतीत होता है कि जहां तक हम जानते हैं, धरती पर अभी भी शांति है।”

“जहां तक हम जानते हैं,” आदि गणेश ने खिन्न स्वर में कहा। वे जानते थे कि विश्वामित्र सरीखे ऋषि केवल संदेह मात्र पर इतनी दूर नहीं आते। उनकी बातें ही नहीं, उनके हावभाव भी उस गंभीर विपदा का संकेत कर रहे थे जो आसन्न थी। अन्य

किसी भी व्यक्ति से अधिक क्रृषियों ने अपने भयों को जीत लिया था। वे परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया नहीं करते थे, बल्कि स्वयं को निरंतर धर्म के प्रवाह के साथ रखने के लिए कार्य करते थे। उन संकेतों का सुबूत जिन्हें प्रकृति उनके पास भेज रही थी, विश्वामित्र के चरणों में था।

*

अगले कुछ दिन सब प्रतीक्षा करते रहे, इस आशा में कि कुछ प्रवासी पक्षी कोई ऐसा समाचार लाएंगे जो उनके लिए उपयोगी हो।

विश्वामित्र धीरे-धीरे सहज होने लगे। इस स्थान की सुंदरता, झरनों की गर्मी, हाथियों के साथ होने वाली बुद्धिमतापूर्ण बातचीत, सब इतनी शांतिदायक थीं कि उनसे विमुख नहीं हुआ जा सकता था। हनुमान भी बहुत संतुष्ट प्रतीत हो रहे थे; उन्हें उम्मीद थी कि देवी सरस्वती नरकराजा का मार्गदर्शन करेंगी कि उनके माता-पिता को लौटा दें, और वे भी एक दिन यहां आ पहुंचेंगे। और सुग्रीव भी अब बीमार नहीं था।

फिर एक दोपहर जब सूरज ने उनके आसपास के वातावरण को अपने प्रकाश से नहला दिया था, और सब कुछ किसी सोते हुए शिशु की मानिंद भला लग रहा था, अचानक विश्वामित्र समझ गए। कुछ बाल गणेश अपनी सूंडों से नक्कली कुश्ती करते हुए हनुमान और सुग्रीव के साथ खेल रहे थे। हाथियों के अत्यंत बुद्धिमानी भरे पैंतरों से भी दक्षतापूर्वक बचते हुए हनुमान हौसला बढ़ा रहे थे और हंस रहे थे। विश्वामित्र जल्दी से उनकी ओर भागे और एक हाथी के लगभग पैरों के नीचे जा बैठे। उन्होंने उसके मुंह को खुलते और उसके दांतों को चंचलता से झूमते देखा। और उन्होंने देखा कि उठाए जाने पर उसकी सूंड किस तरह खिंच जाती है। वे समझ गए।

वे लुढ़कते हुए उनके रास्ते से हटे और जल्दी से जल्दी आदि गणेश को ढूँढ़ने के लिए चल दिए। अचानक उनके आसपास स्थित शांत स्वर्ग जैसे रक्त में नहा गया था। उनकी आंखों के सामने लालिमा और अग्नि का दृश्य छा गया। ऐसा लग रहा था मानो नर्क यहां आ गया हो—और वह भी नरकराज के न्याय और नियंत्रण के बिना।

*

“यह तो वास्तव में भयावह है,” आदि गणेश ने गंभीरता से कहा।

“मुझे बहुत खेद है कि देवी ने यह जानने के लिए मुझे चुना,” विश्वामित्र ने कहा। “किंतु सबसे अधिक परेशान करने वाला उल्लंघन जो नदी में बहकर आया था जिसे मैं कभी समझ नहीं पाया, वह गणेश के मुख-हस्त का अंश था।”

हनुमान ने चकित भाव से गणेश के चेहरे को देखा। वे विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि किसी सूंड को शेष शरीर से अलग कैसे किया जा सकता है। यह वृक्ष पर लगे किसी केले के समान तो थी नहीं जिसे गिरना ही होता है। यह तो ऐसा था जैसे किसी के चेहरे को हिंसात्मक ढंग से चीर दिया गया हो।

“हमारे महाप्रयाण स्थल का अतिक्रमण कोई नहीं करता है,” आदि गणेश ने कहा, “जटायु भी नहीं।”

“देवी सरस्वती के संपूर्ण संसार में केवल आपको ही यह सम्मान प्राप्त है,”

विश्वामित्र ने कहा, फिर उन्हें भान हुआ कि यह असंगत सी बात है। “मतलब केवल गणेशों को,” उन्होंने स्वयं को सुधारा।

“तो आप कहते हैं कि वह बहुत नष्ट भी नहीं हुई थी?” आदि गणेश ने पूछा।

विश्वामित्र जानते थे कि इसमें क्या संभावना निहित है। किसी हाथी की कब्र को लूटना बुरा होता। लेकिन अगर... अगर बात इससे भी बुरी हो तो?

आदि गणेश समझ गए। “विश्वामित्र, आप बहुत दुखद सूचना लाए हैं, लेकिन संभवतः यह हमारे लिए ही अच्छा है कि अभी कार्रवाई करें बजाय और प्रतीक्षा करने के। मैं यह सुनिश्चित करने के लिए वर्जित स्थानों पर एक खोजी दल भेजूँगा कि महाप्रयाण पर जाने वाले हमारे वयोवृद्धों के साथ किसी प्रकार का अनादर तो नहीं हो रहा।”

विश्वामित्र ने सिर झुकाया, और फिर इस ढंग से अपना हाथ उठाया जिसका अर्थ निवेदन और स्वीकृति दोनों था।

“हां। अगर आप भी साथ जाएं तो हम बहुत आभारी होंगे। आपके ज्ञान की आवश्यकता होगी।”

विश्वामित्र मुड़े तो देखा कि हनुमान और सुग्रीव उनकी ओर तक रहे हैं। “वह स्थान तुम्हारे लिए नहीं है,” उन्होंने हिचकिचाते हुए कहा, “अच्छा होगा कि मेरे वापस आने तक तुम लोग कुछ दिन यहीं रहो।”

हनुमान ने सविनय अवज्ञा भाव से अपनी बांहें मोड़ लीं। सुग्रीव ने भी यही किया। विश्वामित्र उनकी जंघाओं की मांसपेशियों को तनते देख रहे थे।

पथर में आग की तरह, उन्होंने सोचा और अस्पष्ट से भाव से हम्म कहते हुए चले गए, जैसे केसरी कहते थे।

*

अगली सुबह विश्वामित्र ने आदि गणेश से विदा ली और चल दिए, उनके पीछे हनुमान और सुग्रीव थे।

वीर गणपति ने उन्हें अपने ऊपर सवार करके ले चलने का आग्रह किया था; उनका कहना था कि ऋषियों के चरण हमेशा पुण्यों से भरे होते हैं, और जो उन्हें उठाते हैं उनका वे कल्याण करते हैं। मगर विश्वामित्र द्विजक रहे थे। ये पर्वतराज के पुत्र, और स्वयं देवी के वंशज थे। अंत में, परस्पर सम्मान के आदान-प्रदान से जब उनकी यात्रा शुरू करने में अंतहीन देरी का संकट खड़ा हो गया तो हनुमान निर्णयात्मक ढंग से कूदकर साथ चल रहे दो सेना गणों में से एक के ऊपर जा बैठे, सुग्रीव ने भी यहीं किया।

फिर वीर गणपति ने सम्मानपूर्वक विश्वामित्र को अपनी सूंड में लपेटकर उठाया और दूसरी सेना के ऊपर रख दिया।

धीरे-धीरे, गजगति से वे छहों पहाड़ों में ऊपर और आगे की ओर बढ़ चले।

15

झरना



जैसे-जैसे वे चढ़ते गए, नीचे स्थित घाटी और खड़ी होती गई, और पेड़ों और फूलों की महक भी बदलने लगी। यहां-वहां उन्हें पर्वतवासी भी दिख जाते थे। वे एक विशेष रूप से खुशहाल गांव से निकले जहां के बच्चे उन्हें सुदूर गर्म दक्षिण के अपने बंधुओं के रूप में पहचान गए। वे शाखाओं के किनारों तक दौड़ गए, उत्साह बढ़ाते, उनकी लंबी पूँछें हवा में उनसे ऊपर उठी हुई थीं, उनके नारंगी रोएंदार सिरे दक्षिणी किञ्चिंधावासियों की एकरंगी धूसर-भूरी पूँछों की तुलना में शोख और आकर्षक ढंग से भिन्न थे। उन्होंने पूछा कि वे लोग कहां जा रहे हैं, मगर विश्वामित्र ने बस हाथ हिलाया और मुस्कुरा दिए।

फिर तीसरी सुबह वन में हवा की तरह एक ध्वनि उभरी, मगर एक बार शुरू होने के बाद वह बंद नहीं हुई।

“हनुमान, यह कैसी ध्वनि है?” अंततः सुग्रीव ने पूछ ही लिया। वे अब कई घंटों से उसे सुन रहे थे। वह धीरे-धीरे निकट आ रही थी।

“यह ध्वनि हवा की सी लगती है, मगर कुछ अधिक ही लगातार है,” हनुमान ने उत्तर दिया।

लगता था जैसे हाथी ध्यान नहीं दे रहे हैं, इसलिए शायद यह कोई अपेक्षित ध्वनि ही थी।

अंतत, सुग्रीव अपनी उत्सुकता को रोक नहीं पाया, और उसने कुछ चिंतित भाव से विश्वामित्र से पूछा कि यह ध्वनि कैसी है। केवल उसी को ऐसा क्यों लग रहा था कि यह ध्वनि और वह संकट जिसे वे खोज रहे थे आपस में जुड़े हो सकते हैं?

विश्वामित्र केवल रहस्यमय ढंग से मुस्कुरा दिए।

कोई हैरानी नहीं थी।

*

गुप्त घाटी का दृश्य ध्वनि, पवन और जल की दीवार की तरह टकराया था।

“जय माता सरस्वती!” विश्वामित्र ने अपनी बांहों को सिर के ऊपर ले जाकर प्रणाम करते हुए हुँकारा भरा।

किसी इतनी ऊँची जगह से एक झरना दहाड़ते हुए गिर रहा था कि उसे

आकाश कहा जा सकता था। उनके चारों ओर, हर कहीं, छोटे-छोटे प्रपात गिर रहे थे और काले पत्थरों से टकराते, धड़धड़ाते हुए दूर नीचे गिर रहे थे। हर ओर धुंध में इंद्रधनुष नृत्य कर रहे थे जैसे देवी के गले में माला पड़ी हो।

“वे जिनकी ग्रीवा इंद्रधनुषों की माला से सजी हैं,” हनुमान ने धीरे से उस प्रार्थना की पंक्ति दोहराते हुए कहा जो उनकी माता देवी सरस्वती की स्तुति में गाती थीं।

“हनुमान! सुग्रीव!” विश्वामित्र ने आह्लादित स्वर में पुकारा। “आओ, मेरे बच्चों, माता को देखो!”

अचानक वीर गणपति अपना सिर झुकाए आगे बढ़े। ऐसा लगा जैसे वे उस संकरे रास्ते से गिर ही जाएंगे मगर स्पष्ट था कि उन्हें अपने मार्ग का पता था। सेना भी पीछे चली।

अब विश्वामित्र उत्साहपूर्वक स्तुति करने लगे, उनकी बांहें सामने फैली हुई थीं, और तेज़ी से ऊपर-नीचे उठ रही थीं मानो वे किसी अतीव रूपसी से बहस कर रहे हों कि उसका वर्णन करने के तमाम प्रयास अंत में कितने निरर्थक साबित होंगे।

स्पष्ट था कि वे प्रसन्न हैं।

*

जब उस संकरे मार्ग की तलहटी में हाथी रुके, तो हनुमान को समझ में आया कि वे इस स्थान विशेष पर क्यों आए हैं। “सुग्रीव, ऊपर देखो, यह तो स्वयं माता का मुख है,” उन्होंने आश्चर्यचकित होते हुए कहा।

उनके नीचे भंवर बनाते पानी के पार जहां झरने का बीच का भाग था, गोद की तरह निकले विशाल पत्थरों से एक अकेला पेड़ निकला हुआ था। पत्थर हर रंग के फूलों से ढके हुए थे, और पानी की बौद्धार और हवा के बावजूद उन पर हजारों मधुमक्खियां मंडरा रही थीं।

“मधुमक्खियों की पालनहार जो किष्किंधा की जिहवा पर मधुर और सत्य वचन लाती हैं!” सुग्रीव ने देवी के बारे में एक अन्य कथन का संदर्भ देते हुए कहा।

धीरे-धीरे, उनकी आंखें ऊपर की ओर उठीं जब तक कि उन्हें जल के आवरण से ढका एक स्थान नहीं दिखाई दिया जो किसी चेहरे जैसा लगता था। उसे देख पाना कठिन था, मगर जब भी पानी की अवस्था बदलती, वह दिख जाता; नाक जिससे रोशनी फूट रही थी, मानो उसमें अनमोल रत्न जड़े हों, मुस्कुराते चेहरे का एक कोना, वात्सल्य भाव से अपनी संतानों को देखते माता के नेत्र।

हनुमान और सुग्रीव हाथियों की पीठ से फिसलकर उतरे और विश्वामित्र के समीप पहुंच गए। पिछले कुछ दिनों की सारी परेशानियों और सिर पर मंडरा रहे इस भय के बाद कि अभी और भी कुछ होना है, यह ऐसा था मानो देवी ने यह सब नियत किया हो ताकि वे उन्हें उनके प्राचीन स्वरूप में देख सकें।

“काश सब लोग आपके इस रूप को देख पाते, माता सरस्वती!” हनुमान ने उदार और उदास स्वर में कहा।

विश्वामित्र पलटे और उन्होंने गहरी दृष्टि से हनुमान को देखा। उन्हें लगा जैसे वे कुछ ऐसी बात समझ सकते हों जो अभी तक उनसे छूट रही थी। इसमें कोई चूक

नहीं थी। हनुमान को यहां आना ही था। उन्हें ऐसे तरीकों से सम्मानित होना है जिनसे बहुत कम ही लोग सम्मानित हुए हैं। वे मात्र बालक हैं, मगर अपने मन में वे जानते हैं कि दूसरे संस्कार का क्या अर्थ है। यह संबंधियों के नाम, और फलों और वृक्षों की संख्या याद करना मात्र नहीं है, बल्कि संसार में अपने स्थान को समझना है, कि सब लोग आपस में जुड़े हैं और महत्वपूर्ण हैं। हनुमान ने देवी के सामने सबके विषय में सोचा, और विश्वामित्र के लिए इतना पर्याप्त था।

“वत्स हनुमान,” विश्वामित्र ने कहा और धीरे से अपना हाथ उनके सिर पर रख दिया। “मैं एतदद्वारा तुम्हें तुम्हारे द्वितीय संस्कार के सभी सम्मानों, आनंदों और दायित्वों से अभिषिक्त करता हूं।”

हनुमान प्रसन्नता से मुस्कुराए। यह अत्यंत अनपेक्षित, अपरंपरागत कार्य था। पहले कभी अपाचार के लिए बहिष्कृत किसी को किसी भी धर्माचार से अभिषिक्त नहीं किया गया था, क्योंकि इस प्रकार के नियम किञ्चिंधावासियों में दुर्बलता थे। इस तरह की चेष्टा के लिए वे सरलता से अपनी संतानों को विश्वामित्र के गुरुकुल में भेजना बंद कर सकते थे।

मगर वे तो संसार के शिखर पर थे। विश्वामित्र को संभवतः अब इस प्रकार की बातों की चिंता नहीं रही थी।

अब हनुमान ने वहां उपस्थित सभी लोगों को आनुष्ठानिक तरीके से प्रणाम किया, उनकी पूँछ पारंपरिक ढंग से उनके कंधों और वक्ष पर लिपटी हुई थी। “जय गुरुदेव। जय सरस्वती माता।”

वीर गणपति को जो एकमात्र आशीर्वाद आता था, उन्होंने वही दिया, “तुममें सदैव पर्वतों की शक्ति रहे।”

सुग्रीव हृताशापूर्वक कहीं शहद के छत्ते की खोज में लगा था, इस आसक्ति पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था। हनुमान ने देखा, मगर हंसे और स्नेहपूर्वक गले लगाने के लिए उन्होंने उसे अपने निकट खींच लिया।

“अगर वे कहते हैं कि यह नहीं किया जा सकता, तो मैं कहता हूं किया जा सकता है। अगर वे चूनौती देंगे तो वे इनसे बात करें।” विश्वामित्र ने आत्मविश्वासपूर्वक ऊपर शिखर की ओर संकेत किया और हंस पड़े।

अब हनुमान औपचारिक रूप से वयस्क हो गए थे, और इसके साथ मिलने वाले सभी विशेषाधिकारों और दायित्वों के भागी हो गए थे।

*

जब उन्होंने पगड़ंडी पर वापस जाना शुरू किया तो हनुमान ठहर गए। उन्होंने अपने सीधे हाथ की तर्जनी उठाई और आंखें बंद कर लीं। मुस्कुराते हुए वे चट्टानों पर पड़ रहे पानी की ताल से निकलते संगीतात्मक सुरों के साथ गुनगुनाने लगे।

विश्वामित्र ने हनुमान के कंधे पर हाथ रखा। “संसार के सभी गान यहीं से निकलते हैं, हनुमान। किसी दिन, अगर देवी ने चाहा तो, हम वापस आएंगे और दिन भर यहां रुकेंगे।”

हाथी धीरे-धीरे बढ़ने लगे, और हनुमान सूक्ष्मता से झरनों के रूप-रंग को आत्मसात करते रहे। विशेषकर दो चट्टानें थीं, जिनमें से एक ऐसी थी जैसे उनकी

दाहिनी जंघा के ऊपर हो, और दूसरी चट्टान-मुख से उनके वक्ष के बाईं ओर निकली हुई थी जिनसे सबसे अधिक संगीतात्मक ध्वनियां निकलती प्रतीत हो रही थीं। कभी-कभी जब हवा पानी को हिचकोले देती तो उन्हें दोनों चट्टानों के बीच की दूरी को पाटती एक तिरछी धारा दिखाई देती, जो उनके बीच स्थित दीवार के साथ लगे एक टीले की ओर जा रही थी।

उन्होंने अपने कंधों पर एक लता रखने, काफी कुछ उस तरह जैसे धर्मानुष्ठानों में लोग पूँछ रखते हैं, और उसे खींचने की कल्पना की। जब वे खेलते थे तब कुछ-कुछ ऐसा ही होता था। लताएं अपनी ही ध्वनि निकालती हैं, नारियल के खोपरों की तरह, जिन्हें जब बच्चे बजाते थे तो वे सबसे तेज़ शोर करते थे। क्या चट्टानों से भी वे वैसी ही आवाज़ें निकाल सकते हैं?

अपनी विचित्र सी कल्पना पर आनंदित होते हुए हनुमान ने उसे दरकिनार कर दिया। देवी उनके मन को उनकी टांगों से भी ज्यादा तेज़ दौड़ा रही थीं।

*

अगली शाम, वे पर्वतों के बीच के एक रास्ते से एक ऐसे स्थान पर बाहर निकले जो अंतहीन और बंजर पठार सा दिख रहा था। दूर कहीं, उन्हें एक और पर्वत शृंखला की चोटियां दिख रही थीं जो हाथियों की मंज़िल थी जो अभी से अंधेरे में विलीन होने लगी थीं। रात के लिए वे पतले-पतले पेड़ों के एक छोटे से झुरमुट के निकट रुक गए।

जैसे-जैसे रोशनी मद्दम पड़ी, हवा की अनवरत गुराहट ने जैसे अपना अलग ही रूप धर लिया था। ऐसा लग रहा था जैसे अनेक स्वर फुसफुसाकर कोई राज़ बता रहे हों, मानो किञ्चिंधा के सभी जीवों के अच्छे-बुरे सपने यहां अनियंत्रित क्रोध के रंगमंच पर खेले जा रहे हों, जिसका साक्षी किसी को नहीं होना था।

हनुमान ने अपने भाई के साथ गर्महट को बांटते हुए सोने की कोशिश की। विश्वामित्र जगे हुए, दूर कहीं सितारों को तकते मालूम दे रहे थे। उनके चारों ओर तीनों हाथी अर्धवृत्त में आराम कर रहे थे। उनके शरीर किसी सीमा तक हवा से उन्हें राहत दे रहे थे।

हनुमान ने गहरी निगाह से तारों को देखा। वे इतने निकट दिख रहे थे कि हाथ बढ़ाकर छू लो। फिर उत्तर में झिलमिलाता प्रकाश दिखा और गुम हो गया। वह मैरू पर्वत था, किञ्चिंधा के शिखर पर स्थित दिव्य पर्वत। माना जाता था कि यहां इसके ठीक नीचे बालों वाले गणेश चिरानंद की स्थिति में रहते हैं, जैसे वे इसे अपनी पीठ पर लादे हुए हों।

सपनीली अवस्था में हनुमान को अपनी मां की आवाज़ याद आई, और वे कहानियां जो वे सुनाती थीं; एक पैर उठाकर नाचने वाले देवता की, और प्रशंसा में जय-जयकार करने वाले ऋषि, और नाग, महान राजा, और घर के निकट स्थित गंधर्व जो ज्ञानी ऋषियों के अलावा किसी अन्य द्वारा देखे गए बिना ही पृथ्वी पर और इसके प्राणियों के जीवन में चले आते थे।

ये, ये गुरु हैं, हनुमान ने सोचा, चमकती दिव्यात्मा जो समय-समय पर अपने भारी दैदीप्यमान चरण पृथ्वी पर रखते थे ताकि संसार के बालकों की उस सम्मोहक, चुंबकीय, उपद्रवी द्रव्य, राहू और केतु से रक्षा कर सकें। क्या ये उनके ही

पदचिह्न थे जिन्होंने सुग्रीव को घाटी के पार कुदान लगाते हुए भ्रमित कर दिया था? अथवा वे कष्टकारी गुरु शनि थे जो लोगों को देवी के चरणों में खींच लाते थे, इस बात से अनजान कि इससे क्या कष्ट उत्पन्न हो सकता था? ये दिव्य सत्ताएं कौन थीं, जो केवल प्रकाश-बिंदु के रूप में ही दिखती थीं, किंतु वरिष्ठजन उनके विषय में इस तरह बात करते थे मानो वे संपूर्ण बल हों?

और यहां हनुमान इनके विषय में, सारी बातों के विषय में क्यों सोच रहे हैं?

मानो इस शरारत को और हवा देते हुए, दूर कहीं चांद का महीन सा घुमाव उठ आया। उस पर्वत के शिखर के पास यह कशों के आभूषण की तरह टंगा हुआ था, जिसकी गणेश उपासना करते हैं जो अब उनके पीछे स्थित था, इस बात का ध्यान दिलाते हुए कि वे कितनी दूर निकल आए हैं।

सब चीज़ें उन्हें देख रही थीं, और सब चीज़ें केवल परिपूर्ण ही हो सकती हैं, हनुमान को अपने पिता के स्वर में यह शब्द याद आया। एक पूर्णता महसूस हो रही थी, जैसे देवी सरस्वती ऐसा ही चाहती हों, ग्रह हो या न हो।

*

अगले दिन, उनकी यात्रा फिर शुरू हो गई। घोर बंजर प्रदेश में हाथी उन्हें एक छोटी सी झील पर ले गए, जहां उन्हें पानी, कुछ पत्ते और बेरियां मिलीं।

“एक दिन और चलना है,” वीर गणपति ने कहा, “और फिर कल हम महाप्रयाण स्थल पहुंच जाएंगे। एक लंबे समय से उसे छेड़ा नहीं गया है।”

“उम्मीद है इसे कभी छेड़ा भी नहीं जाएगा,” विश्वामित्र ने उन्हें आश्वासन दिया।

हनुमान और सुग्रीव अपने संबंधियों के नाम और वंशावली को दोहराने का अभ्यास कर रहे थे। इतने दूर देश में उनके विषय में सोचना विचित्र रूप से संतोषजनक लग रहा था, कि उनमें से कोई भी कभी भी सोच नहीं सकता कि वे इस समय किस रोमांचकारी अभियान पर निकले हुए थे।

अचानक हनुमान ने एक अजीब सी बात कही। “हम किञ्चिंधानगर के गहमागहमी भरे वनों की बात कर रहे हैं, और यहां बहुत समय से हमें कोई जीवित प्राणी नहीं दिखा है।”

यह सच था। सुग्रीव ने चारों ओर, और फिर वापस हनुमान को देखा। बस वे छह लोग थे, और कुछ भी नहीं, आकाश में एक परिंदा तक नहीं था; जो उनके ऊपर दूर तक फैला हुआ था, नीला और अंतहीन।

हनुमान हाथी की पीठ से फिसलकर उतरे और सोने से बचने के लिए उन्होंने कुछ आगे दौड़ जाने का निर्णय किया। सुग्रीव भी पीछे-पीछे आ गया। एक चट्टान को पाकर वे उस पर कूद-फांद करने लगे, और फिर कुछ देर वहीं बैठ गए, उनकी इच्छा हो रही थी कि उन्हें कोई ज़्यादा लंबी और चुनौती भरी चीज़ मिल पाती।

फिर हाथी रुक गए। विश्वामित्र ने दयालुतापूर्वक मुस्कुराते हुए देखा। वे वापस आए और कूदकर फिर से उनके साथ हो लिए।

*

आकाश में फिर से तारे निकल आए, टिमटिमाते और रहस्यमय।

“मुझे विश्वास नहीं होता कि हम उसी किञ्चिंधा में हैं,” हनुमान ने कहा। “देवी की सृष्टि हर स्थान पर कितनी व्यापक और भिन्न है।”

“और यह सोचना कि यह तो बस आरंभ है,” वीर गणपति ने हौले से हंसते हुए कहा। “जानते हो, हम उस स्थान के बहुत निकट हैं जहां से, लोग कहते हैं, देवी ने छत्तीस प्रजातियों को संसार के सारे हिस्सों में भेजा था।”

“मैं तो समझता था कि वे बारह थीं,” सुग्रीव ने कहा। “चारों दिशाओं और तीन उन्नतांशों के लिए एक-एक।”

विश्वामित्र हंसे। “वह वृक्षवासियों के लिए है। गणेशों की अपनी गणना है। और मत्स्य, उनकी वंशावलियों को समझने की तो चेष्टा भी मत करना, केवल देवी ही उनके संसारों को समझ सकती हैं।”

“मगर,” सुग्रीव ने कुछ अड़ियलपन से कहा, “मगर यह कैसे हो सकता है? बारह के छत्तीस, और कहीं और कुछ और कैसे हो सकता है?”

उनका स्वर इतना गंभीर था कि सबको हंसी आ गई।

“मैं तुम्हें दिखाता हूं,” विश्वामित्र ने कहा और अचानक पीठ के बल लेट गए और अपने चारों पैर उन्होंने सतर ऊपर उठा लिए। “चार,” उन्होंने कहा, और फिर अपनी पीठ पर इस तरह घूम गए कि अब सुग्रीव को केवल उनके हाथ दिख रहे थे, टांगें नहीं। “जहां से तुम देख रहे हो, वहां से केवल दो।”

अपने सम्मानीय गुरु को इस तरह की हरकत करते देखकर हनुमान हंसने लगे।

“रुको,” विश्वामित्र ने थोड़े हल्केपन में कहा। “तुमसे पांचवीं तो छूट ही गई!” और उन्होंने अपनी पूँछ भी उठा ली।

वीर गणपति तक को हंसी आ गई। उन्होंने चतुराई से उसे दबाया और ऐसी अस्पष्ट सी ध्वनि निकालने लगे जैसे हवा की शीतलता के कारण गला साफ़ कर रहे हों। उन्होंने जल्दी से अपनी गर्दन सेनाओं की दिशा में घुमा ली और एक और खुरदुरी सी ध्वनि की मानो कह रहे हों, “चौकस रहो।”

विश्वामित्र फिर से सीधे खड़े हो गए। “ये सब देखने का ढंग है, सुग्रीव। माता विशाल हैं और हम तुच्छ हैं। बस इतनी सी बात है।”

इसके बाद वे शांति से सो गए। विश्वामित्र आमतौर की अपेक्षा कहीं अधिक शांति महसूस कर रहे थे। एक लंबे अरसे से उन्होंने इस तरह का चिंतारहित बचपना नहीं किया था। अब देवी उनके बहुत निकट थीं। एक हल्की सी आशंका, बल्कि संदेह के साथ उन्होंने रात भर के लिए अपने विचारों को विराम दिया कि वे लोग जिस किसी भी चीज़ की खोज में थे, वह बहुत जल्दी उनके सामने आने वाली है। उनके मन में भय की किरण सी उभरी, मगर अभ्यस्त प्रवृत्ति की तरह आस्था की एक लहर ने उसे अपने चंगुल में दबाकर कुचल दिया। वे शांतिपूर्वक सो गए।

*

जब वे उठे तो पठारी मैदान पर धुंध का आवरण सा फैला हुआ था। अभी भी अंधेरा था। वीर गणपति धीमे-धीमे सेनाओं से कुछ कह रहे थे। वे अपने सिरों को ऊंचा उठाए हुए थे, और सूंडों को और भी ऊंचा।

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

“क्या बात है?” विश्वामित्र ने पूछा।

“कुछ कह नहीं सकता,” गणपति ने उत्तर दिया। “कोई चार-पांच दिखते हैं, और वे एक पंक्ति में बढ़ रहे हैं। शायद उत्तर या पश्चिम के गणेश हों। मगर वे हिरण यात्री भी हो सकते हैं। यहां से कहना मुश्किल है।”

हनुमान ने दृष्टि गड़ाकर क्षितिज को भाँपा। “हिरण नहीं हैं। हो सकता है उनमें से दो छोटे गणेश हों, और तीन बड़े।”

गणपति ने आगे बढ़कर सुनने की कोशिश की। हवा तेज़ झोंकों में चल रही थी, जिसने उनकी कोशिश को मुश्किल बना दिया था। “वे किसी स्पष्टता या उद्देश्य से नहीं बढ़ रहे हैं। शायद वे रोशनी होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो कि समझदारी की बात है।”

“बेचारे भटक गए लगते हैं,” सुग्रीव ने कहा। “शायद आपके सेना उनकी मदद कर सकते हैं, गणपति।”

विश्वामित्र सहमत थे। “हो सकता है उनके पास ऐसी कोई जानकारी हो जो हमें चाहिए। वे बहुत ही हताश होंगे जो इतनी अंधेरी रात में यात्रा कर रहे हैं।”

“बहुत संभव है कि वे उत्तरी गणेश हैं जो भटक गए हैं। वहां ऐसा हो जाता है, शायद हिमपात जल्दी हो गया होगा।”

“वे फिर से चल रहे प्रतीत होते हैं,” हनुमान ने कहा।

गणपति आगे बढ़े और ज़ोर से दहाड़े, यह घोषणा करते हुए कि पर्वत के बीर गणपति सहायता करने आ रहे हैं।

क्षितिज के हाथी ठहर गए।

“सेना, जल्दी करो, जाकर उनका अभिवादन करो,” गणपति ने आदेश दिया। “उन्हें हमारी सहायता का प्रस्ताव देना।”

सेना तीव्र गति से चल दिए।

“क्षय-स्थल में जा पहुंचना बुद्धिमानी नहीं है, विशेषकर जब कोई तैयार न हो,” गणपति ने कहा। “अच्छा हुआ कि हमने अभी उन्हें देख लिया।”

“हमारे टोही से मिलने के लिए वे अपने एक हाथी को आगे भेज रहे हैं,” हनुमान ने सूचना दी।

“आह, अब समझ आया कि वे हमारी पुकार का उत्तर क्यों नहीं दे रहे थे; वे हमारी भाषा को लेकर अनिश्चय में होंगे,” गणपति ने कहा।

“क्या उन्हें उत्तर देना चाहिए था?” हनुमान ने कुछ चिंतित होते हुए पूछा।

“शायद वे थके होंगे,” गणपति ने कहा, अब वे थोड़े से चिंताग्रस्त थे। “पता नहीं। मगर एक अरसे से इन क्षेत्रों में गणेशों के बीच टकराव नहीं हुआ है। हम एक-दूसरे को समझ ही लेते हैं।”

“फिर वे अन्य हाथी दूर क्यों जा रहे हैं?” हनुमान ने हैरान होते हुए कहा।

16

प्राणी



हनुमान ने सेना के पीछे जाने का निर्णय लिया, और उनके पास पहुंचने के लिए दौड़ पड़े। संभवतः वे ठीक से समझ पाएंगे कि हो क्या रहा है, और अगर आवश्यकता हुई तो जल्दी से आगे जाकर अन्य हाथियों से भी बात कर सकेंगे। अगर वे इतना ही भटक गए हैं जितना कि मालूम दे रहा है तो उनकी सहायता करना और यह सुनिश्चित करना अच्छा ही होगा कि वे संकरे पहाड़ी दरों में न भटक जाएं जहां मुड़ पाना भी मुश्किल होगा।

“सेना, मैं भी आ रहा हूं,” हनुमान चिल्लाए। “मगर आगे बढ़ते रहें, आपको पहले उनसे बात करनी चाहिए।”

सेना ने स्वीकृति में अपनी सूंड हिलाई और आगे बढ़ते रहे।

अजनबियों की ओर से जौ अकेला छोटा सा हाथी आगे आया था, वह सावधानीपूर्वक सेना की ओर बढ़ रहा था।

“पर्वत के वीर गणपति ने हमें तुम्हें और तुम्हारे परिवार को सुरक्षित पहुंचाने के लिए भेजा है,” सेना ने घोषणा की।

हाथी ने कुछ नहीं कहा। वह कुछ पल प्रतीक्षा करता रहा, और फिर धीरे-धीरे पीछे हटने लगा।

“मित्र,” सेना चिल्लाए। “भयभीत मत हो। मैं वीर गणपति का सेवक हूं और तुम्हारी सहायता करने आया हूं।”

हाथी फिर रुक गया।

हनुमान ने यह देखने के लिए उसकी आंखें खोजने की बहुत कोशिश की कि क्या वह डर रहा है। वे ठीक से उसका चेहरा भी नहीं देख पा रहे थे। मगर वह थका सा लग रहा था, उसकी त्वचा शिथिल और सिकुड़ी हुई थी।

“तुम्हारे माता-पिता कहां हैं? कृपया भय मत करो,” सेना ने अब हाथी के निकट जाते हुए कहा।

हाथी थोड़ा नीचे झुकता सा लगा, मानो उनकी मौजूदगी को स्वीकार कर रहा हो। फिर वह शीघ्रता से दुबारा पीछे हटने लगा।

यह तो सच में बीमार है, हनुमान ने सोचा, उसकी टांगें बहुत कमज़ोर और डगमगाती सी लग रही थीं।

“बालक, सुनो,” अब सेना अपने सिर को झुकाए जल्दी से आगे बढ़े, उनके स्वर में उदारता झलक रही थी।

अचानक, हवा में कर्णभेदी आवाज़ गूंज गई। हाथी डगमगाया, और फिर जैसे झुरझुराकर अपनी खाल उतारने लगा था!

हनुमान ने जो देखा उससे वे हतप्रभ रह गए।

छोटे, बर्बर, दोपाये जीवों का एक समूह दौड़ता हुआ सेना की ओर आया। वे हाथी की लाश के अंदर छिपे हुए थे।

हर दिशा से सेना पर पत्थरों की बौद्धार होने लगी, और वे पीड़ा से कराह उठे।

हनुमान सीधे इस हंगामे में कूद पड़े, इस जिस भी रूप में आतंक अपनी लालची मौजूदगी के साथ उन पर टूट पड़ा था, इन प्राणियों की बदबू अनाम शैतानी शक्ति की तरह उनके फेफड़ों पर छाने लगी थी।

*

सेना की टांगें डगमगाईं और वे गिर पड़े। गिरते समय उन्होंने वह एकमात्र काम किया जो संभवतः वे कर सकते थे, ऐसा काम जिसे करने की आवश्यकता उन्हें अपने लंबे जीवन में कभी पड़ी ही नहीं थी। गिरते समय भी उन्होंने चिंघाड़कर व्यग्रता और हताशा भरी चेतावनी दे दी थी।

हनुमान ने सुन लिया था कि उनके पीछे बहुत दूर से वीर गणपति ने प्रत्युत्तर दिया था, मगर स्पष्ट रूप से बहुत देर हो चुकी थी। इन जीवों के घिनौने युद्ध-नाद अब उनके पीछे से भी सुनाई दे रहे थे। वे घिर चुके थे।

यह सब एक भटकाव, एक जाल था। उन्हें सुग्रीव, विश्वामित्र और सबसे अधिक वीर गणपति की पीड़ा और क्रोध भरी चीखें भी सुनाई दे रही थीं।

हनुमान ने निर्णय लिया कि पहले वे अपने निकट वाले घायल सेना की मदद करेंगे। वे नीचे झुककर हवा में उड़ते पत्थरों से बचते हुए भागे, जो घातक ढंग से उनके पैरों के पास गिर रहे थे और चारों ओर लुढ़क रहे थे। उन्होंने अपनी पूँछ को भी धरती से ऊपर मगर नीचे झुकाए रखा और ठीक उसी तरह जैसे एक बार उन्होंने पेड़ से गिरते पत्तों और फलों के रंगों को ध्यान से देखा था, वैसे ही गिनते, वर्गीकरण करते और व्यावहारिक ढंग से सब कुछ समझते हुए उन्होंने उन हिंसक जीवों और सेना की ओर बढ़ने के उनके तरीके को परखा।

तीन जीव चिल्लाते और सेना को व्यस्त रखते हुए उन पर पत्थर फेंक रहे थे। सेना ने फिर उठने की कोशिश की, मगर नाकाम रहे। उनसे टकराते पत्थर उनके मांस को काटे डाल रहे थे, और वे इतनी भयानक आवाज़ें कर रहे थे कि हनुमान के रोंगटे खड़े हो गए।

उन्होंने अपने सबसे पास वाले हमलावर को मार गिराया, और फिर दूसरे को भी। तीसरे ने संघर्ष किया। दूसरे ने अपनी शक्ति वापस पा ली और खड़ा हो गया था, और फिर चौथा भी। सेना बिल्कुल नहीं उठ पा रहे थे। मगर इसका लाभ भी था। हनुमान अभी भी हैरान कर सकते थे। बहुत संभव था कि उन्होंने अब तक हनुमान पर ध्यान दिया ही न हो।

फिर हनुमान का ध्यान गया कि एक जीव कोई पत्थर नहीं फेंक रहा था। वह

मछली की तरह चुप था, और उतनी ही सहजता से धुंध में होता नीचे गिरे हाथी की ओर बढ़ रहा था। वह भी दो पैरों पर ही चल रहा था, मगर आत्मविश्वास से, किसी तेंदुए या शेर की तरह।

उसके दाएं हाथ में पेड़ के तने का एक लंबा, कठोर टुकड़ा था। उसका सिरा रात में चमक रहा था और उसकी रुक्षता ने हनुमान को चौंका दिया। इसका उद्देश्य हाथी के मांस को फाझ डालना था।

धर्म का अंत हो गया था।

*

हनुमान सेना के पीछे से कूदे और शक्तिशाली दहाड़ के साथ सीधे उस भाले वाले जीव के सामने कूद पड़े। वह प्राणी भय से जड़ हो गया, अंधेरे में और मिट्टी और बालों की मोटी परत के नीचे भी हनुमान उसकी उन्मत्त आंखों को देख सकते थे। लेकिन उसने जल्दी ही प्रतिक्रिया की और हनुमान की छाती की ओर कूदते हुए अपने भाले को नीचे कर लिया।

यह तेज़ था, मगर हनुमान उससे ज्यादा फुर्तीले थे। वे तेज़ी से आगे बढ़े और इससे पहले कि वह जीव अपना भाला नीचे ला पाता, उन्होंने उसकी दाहिनी बांह पकड़ ली। वह मज़बूत, मगर चिपचिपी और गंदी लगी।

हनुमान ने उस जीव की आंखों में घूरा, उनके अंदर ऐसा क्रोध उठ रहा था जो उन्होंने पहले कभी महसूस नहीं किया था। उन्हें अहसास हुआ कि वह जीव अब उनका गला दबाने की कोशिश कर रहा है। उसकी चिपचिपी उंगलियां उनकी गरदन के चारों ओर थीं। अब उसकी आंखों में बेतहाशा भय दिख रहा था, क्योंकि हनुमान गिर नहीं रहे थे।

हनुमान ने उस भाव को देखा, और उन्हें लगभग, बिल्कुल लगभग, दया आने लगी। मगर अब उन पर पत्थर पड़ने लगे थे।

एक दबंग वार में उन्होंने उस जीव का हाथ अपनी गर्दन से झटका और उसे थप्पड़ मारा, इतना ज़ोरदार थप्पड़ कि वह चिल्लाए बिना ही नीचे गिर पड़ा।

अब पत्थर परेशान करने लगे थे।

हनुमान नीचे झुके, और तेज़ी से अपने बाईं ओर, सबसे पास दिख रही दोनों टांगों की ओर दौड़ पड़े। खड़े होने के लिए केवल दो ही टांगे, आसान है। उन्होंने पहले जीव को टक्कर मारी और आसानी से उसे लुढ़का दिया। दूसरे ने उनके चेहरे पर पत्थर फेंका लेकिन पूरी तरह चूक गया।

हनुमान ने नीचे रहते हुए ही बालों से उसके सिर को पकड़ा और घुमाकर एक अन्य पर फेंक दिया।

चौथा प्राणी आँड़ लेने के लिए गिरे हुए सेना के पीछे भाग गया। हनुमान तेज़ी से घूमकर उसे ढूँढ़ने पहुंच गए। वह हाथी के विशाल ढेर के सुदूर सिरे पर खड़ा था और डरी हुई आवाज़ के साथ झुक गया जैसे भागने वाला हो।

हनुमान जानते थे कि वह डरा हुआ है, मगर वे उसे छोड़ना नहीं चाहते थे कि कहीं वह सेना को और हानि न पहुंचाए। सुग्रीव और अन्य लोगों के संघर्ष की चीज़ें और आवाज़ें अब और तेज़ होती जा रही थीं। उन्हें उनकी मदद के लिए भी जल्दी

वापस जाना था।

वह जीव कुछ क़दम भागा और फिर गिरे हुए हाथी की ओर लौट आया। उसके हाथ में पत्थर था। उसने जल्दी, मगर कुछ क्षीण भाव से हाथी की पीठ में छेद करने की कोशिश की। सेना पीड़ा से चिंघाड़ उठे।

हनुमान ने क्रोध में हुंकार भरी और वह जीव पीछे लौट गया। उन्हें इस पर क्रोध तो आया मगर वे यहां समय गंवा रहे थे। वे इस आशा के साथ मुड़ गए कि शायद अब वह सेना को हानि नहीं पहुंचाएगा।

मगर जैसे ही हनुमान मुड़े, वह जीव वापस आ गया। इस बार हनुमान ने जो देखा, उसे देखकर वे सकते में आ गए थे। वह जीव सेना की पीठ से चिपका हुआ था, और अपना चेहरा उनके घाव में धंसाए हुए उनके मांस को इस तरह चूस रहा था मानो वे कोई आम हों।

हनुमान को घोर दया और घिन आ रही थी मगर वे इसे जारी नहीं रहने दे सकते थे। वे फिर से उसकी ओर बढ़े और वह भागकर सेना के दूसरी ओर चला गया। अब तक हनुमान सम्मान के कारण अपने गिरे हुए साथी के ऊपर कूदने से झिझक रहे थे, मगर शायद यह करना आवश्यक हो गया था।

अचानक, क्रोध में भरी घुरघुराहट के साथ सेना की सूँड उठी और उस जीव के चारों ओर लिपट गई। वह आतंक से चिल्लाया। फिर और कुछ सोचे बिना सेना ने नारियल की तरह उसे नीचे पटक दिया।

“शाबाश, सेना,” हनुमान ने कहा, वे घायल सेना के जुझारूपन से प्रभावित हुए थे।

“जाइए, स्वामी हनुमान, उनकी सहायता कीजिए,” उन्होंने क्षीण स्वर में उत्तर दिया।

*

वीर गणपति और अन्य सेना ने विश्वामित्र और सुग्रीव को घेरकर रक्षात्मक आड़ बना ली थी। वहां कम से कम दस दोपाये उन्हें घेरे हुए थे। उन्होंने बहुत सटीक घात बनाई थी, एक छोटे दल को उन्हें भ्रमित करने के लिए छोड़ दिया जबकि अन्यों ने उन्हें पीछे से घेर लिया था।

हनुमान तेज़ी से उनकी ओर बढ़े। वे सब आकार के थे, कुछ तो बहुत छोटे, स्पष्ट रूप से बच्चे थे जो पत्थर फेंकने में हिस्सा ले रहे थे।

सुग्रीव ने मुक्राबला करना शुरू कर दिया था, वह अपने पास आ रहे पत्थरों को जमा करके उन्हें वापस फेंक रहा था। उसका लक्ष्य घातक था। एक जीव तो पहले ही धराशायी हो चुका था।

अन्य उसकी कोई परवाह करते प्रतीत नहीं हो रहे थे। वे अपने गिरे हुए साथी के ऊपर, उसे रौंदते और उसकी कसी उंगलियों पर ध्यान दिए बिना दौड़ रहे थे।

जिस तरह की उनकी भूख थी, उसकी हनुमान कभी कल्पना नहीं कर सकते थे।

हनुमान उनके पीछे गए। आगे-पीछे, तेज़ी से जाकर उन्होंने सबसे शक्तिशाली लड़ाकों को आंका। वीर गणपति ने उन्हें देख लिया था, और कृतज्ञता से सिर हिलाकर उनकी उपस्थिति को सराहा था।

हाथी आसानी से आगे दौड़कर उन्हें कुचल सकते थे, मगर इससे सुग्रीव, और सबसे अधिक विश्वामित्र संकट में पड़ जाते। उन्हें बस एक पल, एक अवसर चाहिए था।

हनुमान इसे तलाश लेंगे; उन्हें बस ये पता करना था कि उनमें से सबसे अधिक धातक कौन सा है। कोई तो होना चाहिए, अब वे उन्हें काम करते देख चुके थे और उनके तौर-तरीकों को समझ गए थे।

अंततः हनुमान ने उसे देख लिया। अपने भाले को नीचे किए वह झुका हुआ था, और हाथियों के कमज़ोर पड़ने का इंतज़ार कर रहा था। पत्थर उन्हें बहुत चोट पहुंचा रहे थे, और बस कुछ ही समय की बात थी कि वे हाथियार डाल देते।

हनुमान उसके पीछे लग गए, साथ ही वे गणपति की गतिविधियों पर भी निगाह रखे हुए थे। अचानक गणपति ने अपनी सूंड उठाई और उसे एक ओर मोड़ लिया।

दूसरी ओर, भाला लिए एक और था, जो दबे पांव आगे बढ़ रहा था। वे दोनों मिलजुलकर काम कर रहे थे, और दोनों हाथियों को मारने के लिए सही पल का इंतज़ार कर रहे थे, या कम से कम एक हाथी और सुग्रीव को।

विश्वामित्र ने आंखें बंद कर रखी थीं और ध्यान में रत प्रतीत हो रहे थे, उन्हें एक भी पत्थर नहीं लगा था।

पत्थरों की बौद्धार बढ़ गई, और हाथियों को देखकर लग रहा था जैसे वे या तो ढह जाएंगे या हताशा में हमला कर देंगे।

हनुमान को अपना पल मिल गया और उन्होंने भयंकर गर्जना के साथ अपने पास वाले भाला-फेंकू पर हमला कर दिया। उसके भयभीत साथी ने उसी पल अपना भाला फेंका, मगर गणपति को चूक गया। अचानक गणपति मुड़े और सीधे उसकी आंखों में देखा। पल भर को वह जड़ हो गया, और फिर उसने चीखते हुए सीधे शक्तिशाली हाथी पर हमला कर दिया। उसके हाथ में एक और पत्थर था, दांतेदार, और उसने इसे ऊंचा उठा रखा था, जो मिलता उसे काट डालने को तैयार।

वीर गणपति आगे बढ़े, वे उस जीव को अपनी सूंड से मारने को तैयार थे। वह जीव दक्षता से हट गया, मगर पर्याप्त दक्षता से नहीं। वह सीधे उनके दांतों में बिंध गया।

फिर गणपति ने शेष हमलावरों पर हमला कर दिया, उस जीव की झूलती लाश अब उन्हें डरा रही थी। सेना ने विपरीत दिशा में खड़े लोगों पर हमला कर दिया। सुग्रीव ने सामने बचे हुए दोनों हमलावरों को निबटा दिया।

कुछ ही पलों में सब खत्म हो गया, उतनी ही तेज़ी से जितनी तेज़ी से शुरू हुआ था।

अंधकार भरे क्षेत्र में कहीं जीवित बचे जीवों की कराहटें और रुदन अभी भी सुना जा सकता था। हनुमान और सुग्रीव ने एक-दूसरे को देखा। जब उन्हें अहसास हुआ कि उनकी उंगलियों में क्या भरा हुआ है और उन्होंने क्या किया है तो घिन से उनकी उंगलियां मुड़ गईं।

अचानक विश्वामित्र अपनी समाधि से उठ खड़े हुए और नृत्य करने लगे। उन्होंने कुछ नहीं कहा, किसी को नहीं देखा। वे बस उठे और किसी नर्म और भले व्यक्ति की त्वचा के भीतर दबे भयंकर बवंडर की भाँति अपनी टांगों पर कूदने और नाचने लगे। यह भयावह था।

सुग्रीव उनसे दूर हट गया कि कहीं उसे चोट न लग जाए।

हनुमान थोड़ा निकट गए।

शांति से वे उन्हें देखते रहे, अपने सुशिष्ट, हानिरहित और ज्ञानी पितामह को अपने सारे बंधन, सारे शिष्टाचार परे रखकर ऐसे उन्मत्त भाव से नाचते हुए देखते रहे, जो कोई नहीं कह सकता था कि उनके अंदर है।

मगर फिर भी नृत्य परिपूर्ण था। जिस भाव से उनके हाथ उठते, जैसे पांव थिरकते, जैसे वे घूमते और कूदते, सब कुछ परिपूर्ण और गरिमामय था।

यह युद्ध-नृत्य था, हनुमान समझ गए थे, उन्माद का नृत्य, असत्त्व पीड़ा को निकालने का माध्यम।

जब अंततः वे शांत हो गए तो हनुमान ने उन्हें गले लगा लिया। “मेरे गुरुवर,” उन्होंने हौले से कहा।

विश्वामित्र ने उन्हें थामा और रोने लगे। चार साल से जिन भयों को उन्होंने दूर रखा हुआ था, वे अब उनके सामने आ खड़े हुए थे; वे सच हो गए थे।

*

बैंगनी रंगत लिए भोर के पहले प्रकाश में उन्होंने अपने सामने फैली भयावहता का जायज़ा लेना शुरू किया। गणपति ने हाथियों की त्वचा के उन अवशेषों की जांच की जिन्हें उन जीवों ने छलावरण की तरह प्रयोग किया था। वे उन्हें उठाते और फिर से नीचे रख देते, बार-बार। अपने घायल साथी के पास दूसरे सेना शोकाकुल खड़े थे। जब-तब उनकी टांगें उठतीं मानो वे खड़े होने को तैयार हों मगर फिर नीचे गिर जाते।

विश्वामित्र फिर से कोई प्रार्थना करने में तल्लीन हो गए थे।

सुग्रीव उनके पास चौकस खड़े थे।

हनुमान धीरे-धीरे घायल जीवों के बीच घूम रहे थे। उनके बीच अंतर कर पाना या मिट्टी से सने बालों के बीच उनके चेहरों को समझ पाना मुश्किल था। वे ऐसे दिख रहे थे मानो किसी दलदल से निकलकर आए हों।

मगर हनुमान को सबसे ज़्यादा उलझन उनके हुलिए को लेकर नहीं बल्कि उनके आचरण को लेकर हो रही थी। एक-दूसरे की चोटों को लेकर जैसे उन्हें कोई दुख ही नहीं था।

वे वहां बैठे थे, स्तब्ध से, मगर उनकी आंखें अवज्ञापूर्ण थीं; डरी हुई मगर अवज्ञापूर्ण।

उनमें दो छोटे थे, शायद बालक थे।

हनुमान ने उन्हें घूरा, वे समझ नहीं पा रहे थे कि इतने छोटे प्राणी इतनी ज़्यादा हिंसा कैसे कर सकते हैं।

आखिरकार, अन्यों से कम भ्रमित दिख रहे एक जीव की आंखों में आंखें डालकर

उन्होंने पूछा, “तुम कौन हो? किस कुल के हो? तुम्हारे घर का क्या नाम है?”

उनकी आवाज़ दृढ़ मगर क्रोधरहित थी। फिर भी उन जीवों ने उसमें आक्रामकता की कमी महसूस नहीं की। वे बस विरोध में गुर्जाएं, और मुट्ठियों को ज़मीन पर मारते रहे। वे गुस्से में थे। और, हनुमान का अनुमान था, भूखे भी थे। वे ललचाई निगाहों से हाथियों को तक रहे थे।

“यह किस तरह की भावना है, सुग्रीव?” हनुमान ने अपने बड़े भाई से पूछा।

“मुझे कुछ पता नहीं है, मित्र,” उसने शांति से उत्तर दिया। “मगर यह अच्छी नहीं है।”

“क्या भूख किसी को इस हद तक ले जा सकती है? या यह अधर्म है जो इतना दुर्भाग्य उत्पन्न कर रहा है?” हनुमान हैरान थे।

सुग्रीव ने कोशिश करने का निर्णय किया। वह उन जीवों के पास गया और बात करने की कोशिश करने लगा, शांत भाव से, इस उम्मीद में कि शायद वह उन्हें आश्वस्त कर सके कि उन्हें कोई हानि नहीं पहुंचाई जाएगी। वे आपस में बहस करने लगे, फिर उन्होंने ज़ोरों से प्रतिक्रिया की।

सुग्रीव पीछे हट गया, उसका सिर झुका हुआ था, और पूँछ और भी ज्यादा झुकी हुई थी।

फिर एक जीव सीधी खड़ी हो गई। हनुमान सर्कार हो गए। उसने एक बच्चे को बालों और गरदन से पकड़ा और खींचकर उठाया। बच्चा रोने-चिल्लाने लगा। इतना तो स्पष्ट था। फिर वह बच्चे को उसकी इच्छा के विरुद्ध खींचती हुई विश्वामित्र के पास ले गई, बजाहिर यह समझते-बूझते हुए कि वे उस समूह में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं।

विश्वामित्र ने आश्वर्यचकित होते हुए आंखें खोल दीं। उस जीव ने बच्चे को बाल पकड़कर खींचा और ऋषि के पैरों के सामने धरती पर धकेल दिया।

फिर उसने अपनी बांहें उठाकर अपने वक्ष दिखाएं और कुद्द भाव से उन्हें पीटने लगी।

“यह इसका बेटा है,” हनुमान ने कहा। वे हैरान थे कि किञ्चिंधा के लड़कों से समानताएं होने के बावजूद उसकी पूँछ ही नहीं थी। लेकिन ये जीव जो कोई भी थे, मां अभी भी अपने पुत्र के प्रति चिंतित प्रतीत हो रही थी। “यह विश्वामित्र से उसके प्रति दया दिखाने को कह रही है।”

“नहीं, हनुमान,” सुग्रीव ने अविश्वास से भरकर कहा। “यह सौदेबाज़ी कर रही है। इसने इसे हमारे परम आदरणीय विश्वामित्र को भेट किया है, जिसे ये मान रही है कि वे अपने कलेके में खाना चाहेंगे।”

17

बालक



बालक की सुबकियों से विश्वामित्र घबरा गए। उसे दिलासा देने के लिए वे आगे को झुके।

बच्चे ने अपने दांतों से उन्हें काट लिया।

“हे माता! हे देवी!” विश्वामित्र चिल्ला उठे और उन्होंने अपना हाथ पीछे खींच लिया।

बच्चे की माँ ने उसके सिर के पीछे धौल जमाया जिससे वह गिर गया। माँ ने एक बार फिर विश्वामित्र की ओर कोई उत्तेजित सा इशारा किया। उसने बच्चे की ओर संकेत किया, और फिर हाथियों की ओर संकेत किया।

“यह विचित्र संकट है,” विश्वामित्र ने कहा। “मैं नहीं समझ पा रहा कि इस रोग को क्या कहूँ जो मांओं को अपनी संतानों को हानि पहुंचाने पर विवश करता है।”

“परम धर्म की तो बात ही जाने दें,” हनुमान ने जोड़ा।

अचानक एक जीव ने उठकर भागने की कोशिश की। सुग्रीव ने दौड़कर उसे गिरा दिया और बेहद गुस्से में भरकर उसे धूरा। वह विरोध में फनफनाता, ज़ोरों से ज़मीन पर पांव पटकता अपने झुंड में लौट गया।

अब रोशनी तेज़ हो गई थी। धीरे-धीरे सबकी चोटें दिखने लगीं। रक्त और भय की गंध चारों तरफ फैली हुई थी।

हनुमान ने लाचारी से अपने हाथों को देखा। एक ही दिन में वे उन हाथों से जिन्होंने देवी माँ के सबसे सुंदर और पवित्र झरने के स्वरूप की आराधना की थी, बदलकर ऐसे हाथ बन गए थे जिन्होंने परम धर्म का उल्लंघन किया था। आज के बाद उनका जीवन ऐसा हो जाएगा जिसे विश्वामित्र ने अकारण अग्नि कहा था।

*

वीर गणपति अपने सेनाओं के साथ वापस आ गए थे। घायल हाथी धीमे-धीमे, हर पग के साथ हौले-हौले कराहता हुआ चल रहा था।

“दुष्ट प्राणियो!” उन्होंने दुख और धृणा से भरे स्वर में कहा। “कैसी क्रूर इच्छाओं ने तुम्हें मेरे साथियों के साथ ऐसा करने के लिए विवश किया?”

अब वह जीव भय से सिकुड़ गई। वह आगे भागी और अपने बच्चे के पास ज़मीन पर गिर गई। एक बार फिर उसने उसकी ओर संकेत किया, और फिर दूर कहीं संकेत किया। नीम-रोशनी में यह स्पष्ट था कि वह क्या चाहती है। अब उन्हें हाथी नहीं, बल्कि खालें चाहिए थीं। सेनाओं ने सम्मानपूर्वक उन्हें एक-दूसरे के पास ज़मीन पर रख दिया था।

“बच्चे। वे भी गण संतान थे,” गणपति ने आगे कहा, अब उनकी आवाज़ रुधि गई थी।

मगर हनुमान उनके आत्मनियंत्रण को सराह रहे थे। बोलते हुए वे अपने स्थान से तनिक भी नहीं हिले थे। यहां तक कि उनका सिर भी नहीं हिला था। प्रतिशोध के लिए इन जीवों को हानि पहुंचाने का उनका कोई इरादा नहीं था, हालांकि उनके स्वर में आग भरी थी।

“आप इनमें से किसी को पहचानते हैं?” विश्वामित्र ने उनसे पूछा। “हो सकता है ये वे परिवार हों जो महाप्रयाण पर निकले हों?”

गणपति ने अपना सिर हिला दिया। “नहीं। बालक शायद ही कभी जाते हैं। ये उन परिवारों के अवशेष हैं जो अभी भी सांसारिक जीवन में रहे थे। और यही बात इसे और भी अधिक चिंताजनक बना रही है।”

“वह कैसे?” विश्वामित्र ने पूछा।

“ये जीव शव-भक्षक मात्र नहीं हैं। इन्होंने उन लोगों की जानें ली हैं जो अभी अपने जीवन के यौवनकाल में थे।”

“मैं तो सोच रहा हूं कि ये पता नहीं कितने और होंगे।”

“मुझे भय है अनेकानेक और, क्रृष्णिवरा। वे गण जिनकी जान ली गई है, वे उत्तरी गण हैं, यह आप उनके लंबे बालों से जान सकते हैं जो स्याह दिनों में सूरज के डूबने पर उन्हें गर्म रखते हैं। हमारी तरह वे भी बहुत बड़े परिवारों में रहते हैं, आमतौर पर चौंसठ लोगों के समूह में, कभी-कभी नव्वे तक भी। वे शायद ही कभी बिछड़ते होंगे।”

“तो अगर ये आठ या नौ...” सुग्रीव की आवाज़ डूब गई।

“हां। इसका मतलब है कि बस यही नहीं हैं। इन जीवों ने उत्तरी गणों के पूरे कुनबे को नष्ट कर दिया होगा, या शायद एक से अधिक परिवारों को।”

“इसका अर्थ है कि ये जीव कहीं अधिक तादाद में हैं,” सुग्रीव ने कहा।

“अगर सैकड़ों गणों को हानि पहुंचाई गई है तो इसका अर्थ है कि कहीं पर ये बर्बर जीव हज़ारों की संख्या में होंगे,” हनुमान ने कहा।

ऐसा कहना अमंगलकारी लग रहा था मगर विश्वामित्र को बुरी से बुरी स्थिति के बारे में बताना था। “या शायद उससे भी ज़्यादा। और हमें इनके बारे में बस इतना ही पता है। ये मारते हैं। खाते हैं। ये मौत से भी भय नहीं खाते।”

“और ये हमारी ओर आ रहे हैं,” वीर गणपति ने कहा।

अचानक वह जीव जो याचना कर रही थी, चिल्लाई और भागने लगी; अन्य जीव भी उठे और भागने लगे। सुबह की रोशनी में उनकी आकृति और भी घृणास्पद, मगर बहुत हानि पहुंचाने में सक्षम लग रही थी।

सेना उनकी ओर बढ़े, मगर विश्वामित्र ने उनसे रुकने को कहा। “देखते हैं ये कहां जा रहे हैं,” उन्होंने शांतिपूर्वक कहा।

दूढ़ता के साथ, अपनी चिल्लाहटों को ज़रा भी कम किए बिना वे हाथियों की खालों की ओर दौड़ रहे थे।

“ये किसी बात से डर गए हैं,” सुग्रीव ने कहा।

हनुमान पलटे। क्रूर और घातक रात का अंत होने पर जब उन्होंने सूरज को धीरे-धीरे क्षितिज पर उठते देखा तो चैन की सांस ली। उन्होंने अपने हाथ जोड़े और शीघ्रता से प्रार्थना की। “वे सूरज से डरते हैं,” उन्होंने कहा।

जीव खालों पर गिर पड़े, यह देखकर सेना को क्रोध आ गया और अचानक वे तेज़ी से उनकी ओर दौड़ पड़े। उन्हें देखकर उन जीवों ने दो खालें उठाईं, मगर फिर एक को छोड़ दिया, और स्वयं को सूरज से बचाने की कोशिश करते, आपस में लड़ते-झगड़ते भाग खड़े हुए।

कुछ देर पीछा जारी रहा लेकिन फिर यह साफ़ हो गया कि सेना उन्हें नहीं पकड़ पाएंगे। वीर गणपति ने उन्हें रुकने और वापस आने का संकेत दिया।

“बुद्धिमतापूर्ण निर्णय है,” विश्वामित्र ने कहा। “मगर अब इस झंझट का क्या करें?”

वह लड़का जिसे जीव अपने पीछे छोड़ गए थे, वहीं विश्वामित्र के पैरों में शांत पड़ा हुआ था।

*

दोपहर से पहले वे हाथियों के महाप्रयाण स्थल को जाने वाले दर्दे के मुहाने तक पहुंच गए थे। जिस पठार को पार करके वे आए थे, वह उनके पीछे दूर तक किसी विशाल बंजर भूमि की तरह अपने भीतर बदसूरत रहस्य छिपाए फैला पड़ा था।

“गणपति,” विश्वामित्र ने कहा, “मैं पहलौ ही उससे कहीं अधिक देख चुका हूं जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। कृपा करके अपने कर्तव्य का निर्वाह करें, हम यहीं आपकी प्रतीक्षा करेंगे।”

गणपति ने धीरे से अपना सिर हिलाया। उनके वर्जित क्षेत्र में हाथियों के अलावा कभी कोई और नहीं गया था। उन्होंने विश्वामित्र की विचारशीलता की सराहना की। “हम उत्तर के अपने साथियों की रीति संपन्न करेंगे और बहुत जल्दी वापस आ जाएंगे,” उन्होंने कहा।

सेना ने बच्चे को धरती पर हनुमान के पास उतारा। अपनी पीठ पर लादी खालों के बोझ तले वह हाथी बहुत उदास, लगभग विकृत सा लग रहा था।

हनुमान ने अपनी आंखों में आंसू महसूस किए। यह ऐसे गण थे जिनकी मासूमियत हमेशा के लिए छिन गई थी; वे घायल थे, उनका भाई चुटैल था, और उन्हें अपने साथियों के अवशेष लादकर लाने पड़े थे जिन्हें अत्यंत अन्यायपूर्ण ढंग से उनके परिवारों, गरिमा और जीवन से च्युत कर दिया गया था। अपने मुंह के नीचे अपनी सूँड में वे उनके हत्यारों के बालक को, एक हत्यारे की तरह नहीं, बल्कि एक बच्चे की तरह इस सावधानी के साथ उठाकर लाए थे कि उनके दांत उसे फाड़ न दें।

हे गण, आप देवी सरस्वती की रचना में सर्वश्रेष्ठ हैं, हनुमान ने मन ही मन सोचा, और इस विचार ने उनमें आशा का संचार कर दिया। भले ही थोड़ी सी।

*

जब गण वापस आए तब तक सूरज अपनी तीन-चौथाई यात्रा पूरी कर चुका था, उनके मस्तकों पर सफेद राख मली हुई थी। “हमारे पूर्वजों के आराम में खलल नहीं पड़ा है,” गणपति ने विश्वामित्र को बताया। “पर्वतदेव अभी भी हमारी रक्षा कर रहे हैं।”

इस आश्वासन पर विश्वामित्र क्षीणता से मुस्कुराए। वे यह जांच करने आए थे कि कहीं हाथियों के अवशेष उनके वर्जित स्थल से तो नहीं चुराए जा रहे हैं। इसके बजाय उन्हें वहां बेगुनाह हाथियों के अवशेष लेकर आना पड़ा था।

सूर्यास्त के निकट, वह बालक धीरे-धीरे कुनमुनाता हुआ उठा।

विश्वामित्र ने उसे थोड़े पत्ते और कुछ बेरियां दीं जिन्हें वे रास्ते से उठाते लाए थे। बच्चे ने लोलुपता से उन्हें खाया, और फिर से बेहोश हो गया।

“यह बीमार है,” विश्वामित्र ने कहा। “हमें जल्दी से किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचना चाहिए।”

“बहुत संभव है कि वे रात को वापस आएं,” वीर गणपति ने कहा। “इस बार वे हमें हैरान नहीं करेंगे।”

“मगर हैरानी के अभाव की भरपाई वे अपनी तादाद से कर सकते हैं, है न?” हनुमान ने कहा।

“और अब हमें एक और की चिंता करनी है,” सुग्रीव ने सावधानी से बच्चे को छूते हुए कहा।

विश्वामित्र ने गहरी सांस ली। “गणपति, क्या कोई और मार्ग भी है?”

“मैंने अपने पूर्वजों को किसी नदी के बारे में कहते सुना है,” गणपति ने धीरे से कहा। “यह वेगवती और प्रचंड है और बहुत कम ही लोग इसे पार कर पाने का साहस करते हैं। लेकिन अगर हमें सफल होना है तो हम धरती मां द्वारा बनाया सरल मार्ग ढूँढ़ लेंगे।”

“आपका मतलब वशिष्ठ के भंवर से है?” विश्वामित्र ने पूछा।

“हां,” गणपति ने जवाब दिया। “कहते हैं कि ऋषि वशिष्ठ ही उसे पार करने में सक्षम हैं। यह भी कहते हैं कि उनकी प्रार्थनाएं इतनी शक्तिशाली हैं कि देवी पवन की ढाल बनकर उनके चारों ओर आ जाती हैं।”

विश्वामित्र हँस पड़े। “प्रत्येक समस्या के साथ देवी उत्तर भी प्रदान कर देती हैं। वशिष्ठ का आश्रम ही ऐसा स्थान हो सकता है जहां हमारी समस्याओं के समाधान भी हों।”

गणपति उलझन में पड़ गए। “गणपतियों को बिना विलंब किए सुरक्षा सभा बुलानी चाहिए। आवश्यक हो तो हमें रक्षा अभियान भी आयोजित करने चाहिए।”

विश्वामित्र मुस्कुराए और उन्होंने हामी भरी। “बेशक, वीर गणपति। सुरक्षा तैनात करनी चाहिए, और जितने किञ्चिंधा को हम बचा सकते हैं, हमें बचाना चाहिए। मगर हमारा सबसे बड़ा अन्न फिर भी वशिष्ठ के पास ही हो सकता है।”

“ऋषि वशिष्ठ कौन हैं?” सुग्रीव ने झिझकते हुए अंततः पूछ ही लिया।

“हमारे गुरु के अपने गुरु,” हनुमान ने उत्तर दिया।

“और वे केवल ऋषि नहीं हैं, बालको, वे ब्रह्मर्षि हैं,” विश्वामित्र ने जवाब

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

दिया। “वे जीवन के ऐसे रहस्यों के बारे में जानते हैं जिन्हें बहुत कम ही लोग समझ पाए हैं। वे इस बालक का उपचार करेंगे, और अगर देवी सरस्वती ने चाहा तो वे हमें यह भी बता देंगे कि इन दुष्ट जीवों को क्या रोग है।”

स्पष्ट था कि वीर गणपति इस प्रकार के उत्साह को बांट नहीं पा रहे थे।

विश्वामित्र ने यह देख लिया था। “बेशक, पहले हमें एक भंवर से भी पार पाना है। और इसमें हमारी सहायक एक बात, बस एक बात हो सकती है।”

“वह क्या?”

“प्रार्थना करें कि वशिष्ठ घर पर हों।”

18

वशिष्ठ का भंवर



अगली शाम तक, चट्टानी क्षेत्र की एक दरार से प्रकाश के विशाल वृत्त की तरह उठते वशिष्ठ के भंवर के फ़ेन और फुहार दिखने लगी। शाम की मद्धम रोशनी में फुहार के पोरों पर रंगों का नृत्य सा हो रहा था।

“देवी की जय हो,” विश्वामित्र ने उद्घोष किया। “और आपकी सेनाओं को मेरा अभिनंदन, नेक गणपति। हमारे पास अभी भी इतना प्रकाश है कि हम भंवर के पार जा सकें।”

एक-एक करके तीनों हाथी शिखर के किनारे पर पहुंचे। यदा-कदा, हवा उनके चेहरों पर फुहार का छिड़काव कर देती थी।

“हनुमान,” अंततः सुग्रीव ने कहा, “मुझे नहीं लगता कि यहां से नीचे जाने का सच में कोई मार्ग है।”

हनुमान अच्छी तरह देख सकते थे और ऊंचाइयों के मामले में वे विशेषकर अच्छी तरह देख लेते थे। ऐसा कहीं कोई चिह्न नहीं दिखता था कि वहां किसी तरह का कोई आसान रास्ता हो सकता है। उनके सामने फैली, बर्फीली सर्दियों में जमा हुए सूखे अपशिष्ट से भरी अंतहीन धरती सपाट और हल्की भूरी थी, और फिर अचानक एक अथाह कुंड में खुल रही थी। दरार के पार, धुंध के बीच उन्हें अपने सामने वाली चोटी का अस्पष्ट सा काला पथरीला अग्रभाग दिखाई दे रहा था। वहीं कहीं उसकी शिराओं में छिपा वह छोटा सा रास्ता था जो वशिष्ठ की गुफा तक जाता था।

अचानक, लगभग कगार पर पहुंचकर हाथी एकदम दाएं मुड़ गए। एक संकरी ढलवां पगड़ंडी उनकी निगाहों से दूर किसी स्थान को जा रही थी।

नीचे जल की गर्जना बढ़ती गई और उसने किसी भूखे दानव की तरह उन्हें लील लिया।

*

हाथी बार-बार सूँडों से अपनी आंखें पोंछ रहे थे। धुंध गहरी थी, और वादी ठंडी होती जा रही थी। पगड़ंडी संकरी थी, और हर पग के साथ हाथियों के कूल्हों के बाईं ओर झूमने के साथ ऐसा लगता मानो उनके सवार गिर पड़ेंगे। सुग्रीव घायल सेना

पर सवार थे, और विश्वामित्र वीर गणपति पर। शेष बचे सेना पर हनुमान अपने आगे बेहोश बच्चे को पकड़े बैठे थे ताकि वह गिर न जाए।

अथाह कुंड की पहली झलक ने हनुमान को सन्न कर दिया। फिर उन्होंने अपनी निगाह हटा ली, मन ही मन स्वीकार किया कि यह एक ऐसा पतन है जिसका ऐसे व्यक्ति को भी सम्मान करना होगा जो बालपन में गुरुत्वाकर्षण को धता बताने में आनंद लेता था। मगर धीरे-धीरे हाथियों के आगे बढ़ने के साथ हनुमान ने फिर से ज्ञांकना शुरू किया, और उस घाटी में नीचे दूर तक देखने लगे, और सहायता के उन सभी छोटे-मोटे साधनों को तलाशने लगे जो वह बीहड़ चट्टानी अग्रभाग प्रदान कर सकता था; बाहर निकली एक चट्टान, एक कगार, छोटे-छोटे पेड़ों का एक झुंड। यह उन सब चीजों से परे था जो उन्होंने अब तक की थीं, मगर जैसा कि उनके पिता हमेशा कहते थे कि अगर वे अपने मन को देवी के आगे समर्पित कर देंगे तो शायद असंभव भी नहीं होगा।

घाटी के पार, सुदूर छोर पर, सूरज की रोशनी लाल होने लगी थी। यह धीरे-धीरे चट्टान के एक और ऊपर उठी, और नीचे स्थित हिस्से को गहरे अंधेरे में डुबो गई। उन्होंने अभी आधा रास्ता ही पार किया था, और शीघ्र ही सूरज ढूब जाने वाला था, जिससे उनके लिए रास्ता देख पाना और मुश्किल हो जाएगा। हवा नम थी।

हनुमान ने पास से गुज़रते हुए चट्टान को छुआ। वह गीली थी। शायद हाथियों के पैरों के नीचे पगड़ंडी भी रपटवां होगी।

*

रोशनी का लाल धब्बा तेज़ी से उनके ऊपर उठा। यह छोटा होता गया, कुछ पल को चट्टान के सिरे पर ठहरा और फिर लुप्त हो गया। सूरज ढूब गया था। कुछ ही क्षणों में उनके ऊपर लगभग कोई प्रकाश नहीं होगा।

हाथी तेज़ चलने लगे। उनका विवेक जो कह रहा था, अब वे उस पर नहीं सोच रहे थे, बल्कि उस प्रवाह में चले जा रहे थे जो पर्वत उनके सामने पेश कर रहा था। इनकी उपासना महान है, हनुमान ने सोचा। वे निश्चय ही पर्वतदेव की संतान थे। पीढ़ियों से चलते-चलते वे इतनी दूर निकल आए थे, जैसा हनुमान और सुग्रीव ने किया था, किंचित्काल नगर के गर्म जंगलों से चलते-चलते वे बर्फ से ढकी चोटियों तक पहुंचे, और फिर महाप्रयाण स्थल के पठार से चलते हुए पृथ्वी के हर कोने में पहुंचने और उसे अपना घर बनाने निकल पड़े थे।

हनुमान उन विशेषताओं के बारे में सोचने लगे जो देवी ने हाथियों को प्रदान की थीं, और उन्होंने भला ऐसे विचित्र और क्रूर जीवों को क्यों रचा होगा जैसा उनके सामने लेटा हुआ था। वह अभी बच्चा ही था और उसका चेहरा छोटा, मासूम सा था। हनुमान ने उसे साफ करने की चाहे जितनी भी कोशिश की हो, मगर उसकी कीचड़ और बालों से अभी भी रक्त की गंध आ रही थी। क्या यह जन्मा ही ऐसे था? क्या यह मारने के लिए जन्मा था? क्या यह दूसरों की जान लेने के लिए जन्मा था, हाथियों की संतानों को उनके माता-पिता से दूर करने के लिए? क्या इसे देवी सरस्वती के प्रथम संस्कार नहीं सिखाए गए थे जिससे यह जान पाता कि कौन सी

वस्तु भोजन है और कौन सी नहीं है? क्या इसका सिर, हाथ और दांत भिन्न नहीं हैं? वे तो हनुमान के दांतों से भी छोटे हैं? जटायुओं की चोंचों की तरह वे तेज़ भी नहीं थे। फिर वे सख्त मांस के आदी भी प्रतीत हो रहे थे।

क्या यह बच्चा भी जागने पर उन्हें मारना और खाना चाहेगा?

“हनुमान,” अचानक सुग्रीव ने कहा, “यह हम पर क्या बरस रहा है?”

*

हनुमान को लगा वह पानी था, मगर पानी नहीं था। यह उनके हाथों पर चिपक गया था, और मिट्टी जैसा लग रहा था। उन्होंने ऊपर देखा। जिस पगड़ंडी से वे उतर रहे थे, वह अंधकार में डब चुकी थी।

“गणपति,” उन्होंने कहा, “आपको कुछ सुनाई दे रहा है?”

वीर गणपति ने हौले से अपने कान हिलाए। “शायद रात के प्राणी हैं। मुझे चूहों, और हाँ, क्षिपकलियों के पैरों की आहट सुनाई दे रही है।”

“मुझे तो बकरियों की सी लग रही है,” सुग्रीव ने कहा।

“बकरियां रात में क्यों बाहर निकलेंगी?” विश्वामित्र ने कहा। “और मुझे बकरियों की भाषा की कोई ध्वनि सुनाई नहीं दे रही है।”

“सुनें,” गणपति ने पल भर को ठहरते हुए कहा ताकि उनके अपने पैरों की आहट बाधा न डाले।

उन्होंने उसे सुना। यह छोटे पशुओं की पदचाप से कहीं अधिक थी, और वह भी थम गई। वे आगे बढ़े और फिर अचानक ही दुबारा रुक गए। उन आवाजों ने भी ऐसा ही किया।

“ये चार पैरों के चलने की आवाजें नहीं हैं,” गणपति ने फुसफुसाते हुए कहा। “जल्दी करें, हमें कोई ऐसा कोना ढूँढ़ना होगा जहाँ हमारे मुड़ने और उनका सामना करने की जगह हो।”

मगर देर हो चुकी थी। वे जीव पगड़ंडी पर उनके चारों ओर टपकने लगे थे।

*

इस बार बहरूप नहीं धरा गया था, कोई हाथी की खाल नहीं थी। भयंकर रूप से चिल्लाते हुए वे दोनों तरफ से गणों की ओर दौड़ पड़े।

“सुग्रीव, पीछे का हिस्सा संभालो, गणपति सामने संभाल रहे हैं,” हनुमान चिल्लाए। उन्होंने बच्चे को विश्वामित्र को थमाया और हाथी की पीठ से कूद पड़े।

जीवों ने ऊपर से कुछ पत्थर फेंके, मगर कुछ ही पलों में हनुमान ने उनकी क्रतारों को चीरते, उन्हें नीचे गिराते, अपने मुँछों से उन्हें मारते, अपनी पूँछ से उनके पांवों को खींचते हुए उन्हें गिरा दिया।

मगर वे आते ही रहे। अपने नीचे हनुमान दर्जनों जीवों को देख रहे थे जो पगड़ंडी पर आ पहुंचे थे और अपने भालों से हाथियों को डराने की कोशिश कर रहे थे। सुग्रीव बहादुरी से पीछे का मोर्चा संभालने में लगा था, जबकि वीर गणपति कोई ऐसा कोण पाने की जुगत में थे जहाँ से वे अपनी सूंड से हमलावरों का सामना कर सकें।

और उनके ऊपर छायाएं हिल रही थीं, थरथरा रही थीं। साथ की दीवार पर भी वे जीव छिपकलियों की तरह रेंगते हुए उतर रहे थे।

हनुमान अपने सबसे पास निकली कगार पर कृदे और कुछ जीवों को उन्होंने धकेलकर एक ओर कर दिया जो वहाँ तक आ पहुंचे थे। मगर अनेक नीचे पहुंच चुके थे और हाथियों पर हमला कर रहे थे। वीर गणपति ने एक हमलावर को दूर फेंक दिया मगर एक दूसरे ने उनकी सूँड को छेद दिया। उस संकरे स्थान में सेना भी विश्वामित्र को फिर से बचाने की कौशिश करने के अलावा ज्यादा कुछ नहीं कर पा रहे थे।

“हनुमान, देखो!” अचानक सुग्रीव चिल्लाया।

धाटी की तलहटी से चौंधिया देने वाली सफेद रोशनी का एक प्रक्षेपास्त्र उठा। उसे देखते ही वे जीव पीड़ा से चिल्ला उठे।

“आगे बढ़ो, फौरन!” गणपति ने आदेश दिया और कगार के सामने मौजूद हमलावरों को आसानी से धकेलते हुए तेज़ी से आगे बढ़ गए। बचे हुए जीव चट्टानों की दरारों में घुसते और अपनी बांहों से सिरों को छिपाते हुए पीछे हटने लगे थे।

“वशिष्ठ ने हमें देख लिया है,” विश्वामित्र ने चैन की सांस लेते हुए कहा। “सुग्रीव, हनुमान, वापस आओ। गणपति, शीघ्रता करें। ये रोशनी हमें कुछ ही पल दे पाएगी।”

जल्दी से हाथी फिर आगे बढ़ने लगे। विश्वामित्र को ज्ञात था कि उन्हें बहुत बुरी चोटें आई हैं, और आगे बढ़ते हुए वे रक्त के चिह्न छोड़ते जा रहे हैं। “आशा करें कि वशिष्ठ ने तलहटी में हमसे मिलने के लिए अपने शिष्यों को भेजा होगा। भंवर को पार करने का और कोई मार्ग नहीं है।”

*

रोशनी धुंधलाते हुए हल्की पीली पड़ी और फिर अंधेरे में गुम हो गई। धीरे-धीरे जीवों की आवाजें फिर से उभरने लगीं।

“फिर से,” नीचे धुंध में से एक स्वर गूंजा। आग की लकीर छोड़ती एक और पीली रोशनी आसमान की ओर उठ गई। अब जब हनुमान और अन्य लोग तलहटी में पहुंच गए थे तो वे उस चट्टान के अग्रभाग को देख सकते थे जिससे उतरते समय वे सटे हुए थे। यह सोच पाना भी असंभव जान पड़ रहा था कि हाथियों का कोई समूह उससे गुज़र सकता है। मगर अब एक नया संकट सामने था। उनके ऊपर वाली पगड़ंडी हिंसक जीवों से भरी थी जो तब तक ही एक-दूसरे में गुत्थमगुत्था थे जब तक कि रोशनी उनके चेहरों पर पड़ रही थी।

“यह अस्थायी हल है,” धुंध में से उभरे स्वर ने कहा, “मगर आशा है कि वे भंवर के पार मार्ग को नहीं देख पाएंगे।”

“वशिष्ठ! देवी की कृपा है कि आप घर पर हैं!” विश्वामित्र कह उठे।

“अभिनंदन, मेरे मित्र, और स्वागत है, वीर गणपति,” वशिष्ठ धुंध में से बाहर आए, उनका सिर गीला और चिपचिपा हो रहा था। उनकी आंखें वर्तमान से परे किन्हीं अन्य कार्यों पर सधी प्रतीत हो रही थीं, हालांकि वर्तमान स्थिति अत्यंत दुर्गम थी। “इस तरफ से आएं, सावधानी से मेरे शिष्यों के पीछे चलें।”

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

वशिष्ठ के तीन शिष्य शीघ्रता से उनसे आगे निकले और प्रत्येक हाथी के साथ एक हो लिया। बिना किसी झिझक के उन्होंने हाथियों की सूँड थामी और उन्हें बर्फीले पानी में आगे ले चले।

हनुमान ने पानी में झांका। यह एक विशाल दायरे में तेजी से बह रहा था। अपने बाईं ओर कहीं उन्हें इसका भीषण भंवर दिख रहा था। मगर वशिष्ठ के शिष्यों को भली-भांति पता था कि किन गुस पत्थरों पर पैर रखना है। “बंधु गण, यहां!” “बंधु गण, वहां!” वे कहते यह सुनिश्चित करते हुए कि वे सुरक्षित स्थानों पर ही पैर रखें।

जब तक अंतिम हाथी पार हुआ, रोशनी फिर से मद्दम पड़ने लगी थी। जल्दी से समूह चट्टानी दीवार की ओर की पथरीली पगड़ंडी की ओर बढ़ने लगा। कुछ ही पलों में वे एक गुफा के मुहाने पर पहुंच गए थे। हाथी बहुत कठिनाई से अंदर घुस पाए, मगर जैसे ही वे अंदर पहुंचे, हाथों में पेड़ का एक लंबा तना लिए पहले से प्रतीक्षा कर रहे शिष्यों का एक अन्य समूह झटपट आगे बढ़ गया जिससे लुढ़कते लट्टों का एक पूरा गठुर खिंच आया जिन पर एक विशाल पत्थर रखा हुआ था।

“पर्वत हमारी भली-भांति रक्षा करते हैं, किंतु हमें सावधानी बरतना नहीं भूलना चाहिए, खासकर उन आगंतुकों के बाद जिन्हें आप अपने पीछे लाए हैं,” वशिष्ठ के स्वर में राहत का हल्का सा पृट था।

विश्वामित्र हाथी की पीठ से उतरे और उन्होंने बड़े भाई की तरह वशिष्ठ को गले लगा लिया।

19

परिवर्तन काल



वाली हंसा। पंच-नारियल को मना करने वाले एकमात्र मुखिया पर उसकी जीत का समाचार तेज़ी से किञ्चिंधानगर के आसपास के वन्य और पर्वतीय कुनबों में फैल गया था। अब वह नारियलपत्रों और आम की पत्तियों से सजी एक ऊँची चट्टान पर बैठा सुपारी और वे पत्ते चबा रहा था जो उसके एक सेवक ने उसके लिए जुटाए थे। उसकी मां भी उससे प्रसन्न थीं। उसके प्रशंसकों, युवा वाली सेना, की संख्या तेज़ी से बढ़ती जा रही थी।

हुआ यह था कि नदी किनारे के एक छोटे से गांव के अहंकारी अदना से राजकुमार ने उसकी सेना की, और विस्तृत अर्थ में स्वयं उसकी, अवज्ञा करने की हिम्मत की थी। झगड़ा शुरू हुआ था एक केले के पेड़ से। लड़के बस वाली और उसके काफ़िले के गांव आने पर उनके स्वागत में तोरण सजाने के लिए केले की कुछ शाखाएं चाहते थे। वृद्ध दादी को पेड़ से लगाव था, उन्होंने शाखाएं देने से मना कर दिया। फिर जब वाली के लड़कों ने उन्हें एक ओर धकेल दिया, तो उनके पोते ने उन्हें अच्छे से धो डाला। उसने इतनी ज़ोर से उन्हें मारा कि अभी तक नील दिख रहा था। उस पर तुर्रा यह कि उसने डींग भी हांकी। उसने हंसते हुए कहा था, या ऐसा वाली के लड़कों ने उसे बाद में बताया था, “जाकर अपनी रानी से कह दो मुझे भी कोई और अपाचार लगाकर निष्कासित कर दें। मैंने रक्त तो नहीं निकाला न?”

इस सबने वाली को आगबबूला कर दिया। मगर ऋष्टराज पर इसने कुछ अलग ही प्रभाव डाला। उन्होंने कुछ पल सर्द मौन में विचार किया। फिर उन्होंने अपने नवनियुक्त राजगुरु को बुलाया, जो कभी विश्वामित्र का कमज़ोर शिष्य था और अब किञ्चिंधानगर में सामाजिक श्रेष्ठता की ऊँचाई पर पहुंच गया था। उन्होंने और राजगुरु ने मंत्रणा की, और अगली पूर्णमासी की सुबह एक प्राचीन अनुष्ठान आरंभ करने की घोषणा कर दी, जिसे पंच-नारियल अभियान कहा जाता था और जिसके बारे में हाल के दौर में सुना भी नहीं गया था।

राजगुरु ने चुने हुए नारियलों पर हल्दी और अन्य शुभ चिह्न अंकित किए। फिर बहुत तामझाम और आत्मविश्वास के साथ वाली की सेना उन नारियलों को सबसे निकट के गांव में लेकर गई जहां उन्हें मुखिया को सौंप दिया जाना था। फिर वह अपने सहयोगियों के साथ चलकर अगले गांव जाता, और इसी तरह सिलसिला

चलता। यह अनुष्ठान उसे सुदृढ़ करने का सीधा-सरल तरीका था जिसका संकेत ऋक्षराज महीनों पहले दे चुकी थीं।

वाली महज गांव का मुखिया नहीं था। वह राजा था।

बेशक, उस सुबह इस अभियान का पहला पड़ाव उस अहंकारी का गांव था। स्वाभाविक रूप से, उस अहंकारी ने नारियल उठाने से इंकार कर दिया। स्वाभाविक रूप से, इसके लिए उसे और उसके भाइयों को भी कठोर दंड दिया गया, जब तक कि इस सारी हिंसा से बौखलाकर कोई नारियल उठाकर अगले गांव के लिए नहीं दौड़ गया।

इस तरह से प्रतिरोध खत्म होने लगे, और साम्राज्य के तंत्र उभरने लगे। ऋक्षराज अपने लिए आने वाली भेंटों को देखकर प्रसन्न होने लगीं। मगर कभी-कभी उन्हें सुग्रीव की याद आती और उनका मन चाहता कि वह लौट आए। अपने दोनों बेटों का एक साथ दोनों बहनों के साथ विवाह कराना कितना मुनासिब होगा। मगर यह अभी रुक सकता था।

जिस गति से वाली अपनी सेना बना रहा था और देश में आगे बढ़ता जा रहा था, देर-सवेर वह सुग्रीव से टकराएगा ही; और ओह, उस हनुमान से भी, अगर वह अभी भी जीवित है तो।

ऋक्षराज यह सोचकर मन ही मन आनंदित हो गई कि केसरी का पुत्र जब उनके पुत्र को दस हजार योद्धाओं की सेना से धिरा और उनकी प्रशंसा से सराबोर देखेगा तो कैसे प्रतिक्रिया करेगा। क्या वह क्षमायाचना करेगा? क्या वे उसे प्रदान करना चाहेंगी? संभव है, साम्राज्ञी मेहरबान हो जाएं, अब, जबकि केसरी हमेशा के लिए जा चुका है।

और... संभव है न हों!

उस लड़के को राजकुमार या राजा नहीं, भिक्षु होना चाहिए, उन्होंने सोचा।

वे ज़ोर से हँस पड़ीं और अपने सिंहासन पर लुढ़क गईं, और आम छील रही लड़कियों में से एक की पीठ पर ज़ोरदार धौल जमा दिया, बस मस्ती में।

*

केसरी और अंजना वन में चले जा रहे थे। जटायुओं द्वारा ले जाए गए बिना बीतते हर दिन के साथ अपने पुत्र को देखने की उनकी आशाएं बढ़ती जा रही थीं।

“मुझे कोई अच्छा फल खाना चाहिए,” केसरी ने परिहास किया। “मेरा तत्व जटायुओं की पसंद का नहीं होगा।”

“हम महाप्रयाण पर हैं, है न?” अंजना ने प्रतिवाद किया। “हम केवल वही खाते हैं जो भूमि पर पड़ा हो, और केवल उतना ही कि अगले दिन चल सकें। यही नियम है।”

“किंतु... बेचारे जटायु,” केसरी ने याचना की।

“बेचारे केसरी,” अंजना ने आग्रह किया।

केसरी हँस दिए। प्रत्येक रात जब वे सोने का नाटक करते तो सोचते कि क्या वे सच में सारे बंधनों को तोड़कर संसार को छोड़ने के लिए तैयार हैं। सिद्धांततः उन्हें यही करना चाहिए था। यही धर्म था। संसार में अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर चुकने

के बाद उनसे दूर चले जाना, और विचारों के, और फिर तत्व के नष्ट होने तक चलते जाना। कुछ लोग उस पल को ऐसे देखते जैसे कोई नदी ऊपर की ओर बह रही हो, सीधे आकाश में जहां वह देवी के बादलों के केशों में विलीन हो जाएगी। कुछ इसे ऐसे देखते मानो यह कोई हँस हो जिसे देवी ने उन्हें लाने भेजा हौ। मगर बहुत संभव है कि ये महज जटायु ही होगा।

अब यह अर्थहीन था। केसरी अंजना के सामने यह स्वीकार नहीं करेंगे, मगर अभी संसार को छोड़ने का उनका कोई इरादा नहीं था। महाप्रयाण तभी सार्थक होता जब वे अपने सारे कर्तव्य पूरे कर चुके होते। उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र के संस्कार भी पूरे नहीं करवाए थे। उन्हें तौ यह भी पता नहीं लगा था कि उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन उनके बेटे के साथ क्या हुआ था। उन्होंने उसकी अनुपस्थिति में उसे निष्कासित कर दिया था। और अब उन्होंने स्वयं को निष्कासित कर लिया था।

यही उत्तम था कि अंजना यह नहीं जानती थीं। पर्वत पर उनकी पहली रात एक जटायु आया था। केसरी सतर्क थे, बस सोने का नाटक कर रहे थे। वे गहरी सांसें लेते रहे। उस पंछी को उलझन में डालने के लिए उन्होंने हर संभव संकेत दिया था। अंत में, जटायु ने बस अपनी स्त्री के साथ प्रेमरत एक पति को ही देखा जो अभी संसार त्यागने के लिए तैयार नहीं था।

बेशक, केसरी को पता नहीं था कि अंजना ने भी सब कुछ देखा था। मगर उन्होंने भी न देखने का नाटक किया। देवी जानती थीं कि उनका हृदय पवित्र है, और उसमें केवल अपनी संतान के लिए मां का प्यार है। शायद स्नेह की आकांक्षा करना सही नहीं था। मगर इससे पहले कि वे संसार को वास्तव में त्यागें, या संसार उन्हें सदैव के लिए जाने की अनुमति दें; एक बार, कम से कम एक बार और, हनुमान को देखने की इच्छा करने में कुछ ग़लत नहीं था।

और जब वे सात पुष्पों के वन में पहुंचे तो लगा जैसे संसार उनसे चाहता हो कि कुछ समय और उसका आनंद लें। वनों में सर्वाधिक शांत वन में, जहां सर्वोत्तम जीव शांत चिंतन-मनन करते हुए रहते हैं, केसरी की भेंट ऐसे व्यक्ति से हुई जिसकी उन्हें सबसे अधिक आवश्यकता थी। वे हनुमान नहीं थे, न ही विश्वामित्र थे, बल्कि एक अन्य व्यक्ति थे जो बहुत समय पहले महाप्रयाण पर निकल चुके थे।

“स्वागत है, मेरे पुत्र,” केसरी को चकित करते हुए उनके पिता ने कहा।

20

धर्म पर चर्चा



वशिष्ठ की गुफा तंत्र में जल की आपूर्ति और निकास अनेक भूमिगत झरनों और कुओं के द्वारा होता था। यह अच्छा था। क्योंकि अब अनेक घावों की सफ़ाई की जानी थी।

उनके शिष्य उस बालक के अजीब से रूप-रंग के बारे में खुसुर-पूसुर करते हुए उसे एक दूसरी गुफा में ले गए। शिष्यों के एक अन्य समूह ने हाथियों का उपचार किया।

थके-हारे हनुमान और सुग्रीव एक छोटे से जलकुंड में उतर गए जो आश्वर्यजनक रूप से गर्म था। वशिष्ठ के एक शिष्य ने उनके पास एक पत्थर पर कुछ चूर्ण और जड़ी-बूटियाँ रखीं और उनका मिश्रण बनाने लगा। जैसे ही उसने वह मिश्रण उस कुंड में डाला, एक सफेद, मीठी गंध वाला झाग फनफनाने लगा, और उनकी मांसपेशियों की पीड़ा शांत होने लगी।

“मैं ऐसे राजा के समान महसूस कर रहा हूं जिसके राज्य ने कभी कोई संघर्ष नहीं देखा,” सुग्रीव ने कुछ राहत के साथ कहा।

“तुम्हें ऐसे राजा की तरह महसूस करना चाहिए जो एक ऐसे युद्ध से लौटा है जिसने उसके राज्य को उस संघर्ष से बचाया हो,” हनुमान ने उत्तर दिया।

दोनों भाइयों ने उदासी और स्नेह से एक-दूसरे को देखा। हनुमान समझ सकते थे कि उनकी बातें सुग्रीव के मन को थोड़ा सा अपने भाई और मां की ओर ले गई थीं। मगर हनुमान के आकलन में वास्तविक साहस सुग्रीव के अंदर था। केसरी हमेशा कहते थे कि वे अपने पुत्र के पक्ष में नहीं, बल्कि अपने भतीजे के पक्ष में सिंहासन छोड़ेंगे क्योंकि वंश में अनुग्रहों के इतिहास की यही मांग थी, और हनुमान का भी मानना था कि वाली को सुग्रीव को शासन करने देना चाहिए। उसके अंदर और किसी की अपेक्षा उस संकट को समझने की कहीं बेहतर समझबूझ थी जो उनके संसार के सामने खड़ा था।

मगर उन्होंने अपने विचारों को विराम दिया। यह उचित नहीं था। विश्वामित्र उनके गुरु थे, और यहां वे अपने भी गुरु के साथ थे। सबके लिए महत्वपूर्ण इस नई वास्तविकता के साथ उन्हें उस तरह से निबटना है जैसे मां सरस्वती उनसे चाहें।

“सुग्रीव, चलो अपने अपाचार का विश्लेषण करते हैं,” हनुमान ने पहले तो गंभीरता से कहा, मगर फिर वे अपनी स्थिति के बेतुकेपन पर मुस्कुराए बिना नहीं

रह सके। गिरने भर की वजह से उन्होंने अपना घर छोड़ा था, और अब वे उससे कहीं अधिक रक्त में लिपट चुके थे जितना उन्होंने अपने जीवन भर में देखा होगा।

बचपन में दोनों भाई बोलते थे, “ये। ये। ये।” वे अपनी पीठों, गरदनों, टांगों, पैरों, बांहों, सीनों, माथों, गालों और जंघाओं की हर खरोंच, गूमड़, कटन और छिलन को इंगित करते थे। और अंत तक पहुंचते-पहुंचते हंसी के मारे उनकी आंखों में आंसू आ जाते थे।

“वह अपाचार नहीं है, हनुमान,” सुग्रीव चिल्लाए, “मेरी पूँछ है।”

“और यह अपाचार नहीं है, सुग्रीव,” हनुमान हँस पड़े, “यह मेरा सिर है!”

उस आड़ी-तिरछी कंदरा में किसी पत्थर की तरह चलते वीर गणपति धीरे-धीरे उनकी ओर आए। दीवारों से निकलते मद्दम प्रकाश में उनकी त्वचा नीली और औषधियों के लेप से हरी दमक रही थी। “लगता है अब आप बेहतर हो गए हैं,” उनसे एक सम्मानजनक दूरी पर ठहरते हुए उन्होंने कहा।

“अभिनंदन, गणपति,” हनुमान ने उत्तर दिया। “अब आपके सेना कैसे हैं?”

“वे कुशल हाथों में हैं। वे ठीक हो जाएंगे।”

“जब से हमने घर छोड़ा है, दुनिया कितनी बदल गई है,” हनुमान ने कहा। “कौन जानता था कि इतने जीवों के प्राण, भले ही वे कितने ही निकृष्ट हों, हमारे हाथों से निकलना बदा था?”

गणपति की सुंड बाएं-दाएं लहराई मानो वे कोई रहस्यमय संकेत कर रहे हों जिसका अर्थ विचारीं या शब्दों द्वारा नहीं समझा जा सकता था।

“हमारे लिए भी यह इसी तरह शुरू हुआ था,” सुग्रीव ने जोड़ा, “एक परम धर्म अपाचार, और अब मैं यह सोचते हुए भी डरता हूँ कि पिछले दो दिनों में हमारे कामों के लिए धर्म हमसे क्या मांग करेगा। पता नहीं प्रायश्चित का कोई उपाय है या नहीं।”

“मैंने भी एक बार सोचा था कि कोई और रास्ता होता,” गणपति ने गहरी सांस भरते हुए कहा मानो भविष्यवाणी कर रहे हों कि उनके युवा मित्र अब क्या कहेंगे। “मुझे सबसे अधिक हैरानी तो इस बात की थी कि अपने बधुओं में से मुझे ही ऐसे मामलों के लिए, अपने लोक की सुरक्षा के लिए योग्य गण माना गया। मैं हैरान हुआ करता था कि मुझे ये विशेषाधिकार क्यों दिया गया है। क्या मेरे आकार के कारण? या मेरी योग्यताओं के कारण? या मैं इस तरह का हो गया था क्योंकि मुझे वीर बनने का प्रशिक्षण दिया गया था? अंततः, यह अर्थहीन था। पर्वत देव और माता की यही इच्छा थी। मैं वीर था, और वीर हूँ। मैं सबकी सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार हूँ। मैं जहां आवश्यक हो वहां बल के बुद्धिमतापूर्ण प्रयोग के लिए ज़िम्मेदार हूँ।”

“हमने जो किया, क्या वह आवश्यक था, गणपति?” हनुमान ने पूछा। “क्या हम परम धर्म का उल्लंघन टाल सकते थे?”

“अगर परिस्थितियों की मांग हो तो हमसे यही करने को कहा जाता है।” गणपति ने खोई-खोई निगाहों के साथ अपना सिर उठाया। “मगर हमें पहले कभी ऐसा नहीं करना पड़ा है, कम से कम मेरे जीवनकाल में तो नहीं। आज, हमने विधान तोड़ दिया। और हमने अपनी मां के कल्याणकारी शासन को तोड़ दिया।”

“आप उन्हें भी मां की संतान मानते हैं?” हनुमान ने पूछा।

“माता के परे तो कुछ नहीं है,” गणपति ने कहा। “मगर हम ग़लतियां करते हैं। और कभी-कभी, अगर रोकी न जाएं तो, ग़लतियां दुष्कर्मों का पूरा पहाड़ बन जाती हैं। फिर उनके लिए देवताओं को दोष देना कठिन होता है। वे तो भला ही चाहते हैं। इसीलिए तो वे हमारे देवता हैं।”

“आपको लगता है कि ये जीव कोई ग़लती थे?” सुग्रीव ने पूछा।

“वे हमारी तरह जीते हैं, सांस लेते हैं और माता-पिता बनते हैं,” गणपति ने कहा। “मगर फिर भी हमारी तरह नहीं हैं। मैं नहीं कह सकता।”

“पता नहीं ऋषिगण क्या बात कर रहे होंगे,” सुग्रीव ने अंधेरे में उस ओर देखते हुए कहा जहां से बीच-बीच में आवाजें आती सुनाई दे रही थीं।

“लगता है वे बहुत से रहस्य साझा कर रहे हैं,” हनुमान ने कहा। “मगर आशा है कि वे हमें भी कुछ बताएंगे कि अब क्या करना है।”

“मेरे ख्याल से बस एक ही काम किया जाना है,” गणपति ने कहा। “हमें अपने बलों को एकत्र करना और लड़ना होगा।”

वे मौन हो गए। हनुमान पानी में तकते रहे। वे अब कह नहीं सकते थे कि क्या क्या है। उनके अपने और उन जीवों के रक्त में क्या अंतर था? कुछ भी प्रतीत नहीं होता था। किंतु फिर भी अंतर था। उन्होंने किसी जीव का रक्त अपने रक्त में नहीं मिलने दिया था। ये जीव तो बस दूसरों के रक्त से ही भरे हुए थे। यहां तक कि जटायु भी ऐसा केवल तभी करते थे जब तत्व से प्राण निकल जाते थे। मगर ये जीव नहीं। ये प्रतीक्षा क्यों नहीं करते? इन्हें देवी सरस्वती का सबसे पहला नियम ज्ञात क्यों नहीं है? क्या इन्हें कभी ये पता था और फिर उससे भटक गए?

अगर ऐसा है तो क्या ये फिर से देवी के मार्ग पर लौट सकते हैं?

*

अगली सुबह, विश्वामित्र ने वशिष्ठ को नमन करके एक गंभीर घोषणा की। “मित्रो, हमारे सामने उपस्थित संकट निश्चय ही बहुत बड़ा है। यह पवित्र गुफा, जिसमें हमारी कई पीढ़ियों ने हमारी देवी और हमारे गुरु से सद्वावना के रहस्य जाने हैं, शायद अब सुरक्षित न रहे। हम उन प्रवेशद्वारों को स्थायी रूप से बंद कर देंगे जिनसे हमलावर आ सकते हैं, और पर्वतों से बाहर अपनी यात्रा जारी रखेंगे। हमें शीघ्रता से वनों में स्थित अपने आश्रमों और उनके आगे पहुंचना होगा, और साथ ही किञ्चिंधा के शासकों को उस संकट के प्रति सतर्क करना होगा जो हमारे संसार के सामने है। हम आशा करते हैं, स्वाभाविक रूप से, कि एक दिन वापस आएंगे अपनी संतानों के साथ, और यह गुरुकुल एक बार फिर ज्ञान की अपनी खोज आरंभ कर देगा।”

झटपट वशिष्ठ के शिष्यों ने सबको दो समूहों में संगठित कर दिया। एक समूह भूमिगत सुरंगों के संकरे पथ को पकड़ेगा और तुलनात्मक रूप से जल्दी पर्वतों की तलहटी में पहुंच जाएगा। दूसरा, जिसमें हाथी शामिल थे, पहले दूसरी ओर के एक रास्ते से निकलेगा और फिर नदी के किनारे-किनारे एक और खड़ी पगड़ंडी से जाएगा। आशा थी कि अगर वे जीव उनका पीछा करने लगे तो धाटी और पर्वत शृंखला उन्हें उनसे कुछ दिन आगे निकाल देंगे।

कूच करने से पहले वीर गणपति विश्वामित्र का आशीर्वाद लेने उनके पास

आए। अगर दक्षिण में अपने गर्म जंगलों से उन्होंने अपनी लंबी यात्रा न की होती तो उन्हें अपने ऊपर मंडरा रहे संकट की चेतावनी ही न मिली होती।

“हे विश्व के मित्र,” गणपति ने कहा, “आपकी, और किञ्चिंधानगर के आपके नेक साथियों की उपस्थिति ने मुझे और मेरे साथियों को उन घोर संकटों से उबारा है जो एक लंबे समय से गणों की दुनिया के सामने नहीं आए हैं। मुझे आशा है कि हम जल्दी ही फिर मिलेंगे, और अपनी मुश्किलों का हल पाएंगे।”

“सौभाग्यवान गणपति,” विश्वामित्र मुस्कुराए, “किञ्चिंधा का सौभाग्य है कि गण इसके संरक्षक और मित्र हैं। मुझे निश्चय ही अत्यंत खेद है कि मैंने अपनी यात्रा पहले शुरू नहीं की। आपके उत्तरवासी संबंधियों के दुर्भाग्य के लिए कृपया आदि गणेश को मेरी संवेदनाएं कहिएगा। आशा है जब आप सुदूर स्थित गणों के वंशों को संदेश भेजेंगे तो आपको सुसंवाद प्राप्त होगा।”

अंधेरे में गणपति का मुँह हल्के से हिला मानो शब्द सरलता से उपलब्ध न हों। “ऋषिवर, मैं जीवन भर बिना युद्ध लड़े योद्धा रहा हूं। ऐसे भी समय रहे हैं जब मैं सोचता था कि अगर पर्वतदेव मेरे सामने केवल पत्थर हटाने या कामुक युवाओं को अनुशासित करने के अलावा भी कुछ चुनौतियां भेजें तो अच्छा होगा। शायद ऐसा सोचना योद्धा का अभिशाप है। अब जब मैं देख चुका हूं कि युद्ध योद्धाओं की परीक्षा नहीं बल्कि एक भयानक, धर्मविरुद्ध चीज़ है।”

“आपका प्रश्न क्या है, गणपति?” विश्वामित्र ने उन्हें कोंचा।

“मैं चाहता हूं कि युद्ध सभा में अपने साथ एक ऋषि का परामर्श लेकर जाऊं। सबसे पहले, मैं जानना चाहता हूं कि जो संकट हमने देखा था, क्या वह उस प्रतिक्रिया के योग्य था जो अब तक हमने दी है, और दूसरे, मैं जानना चाहता हूं कि जो संकट हमारे सामने आया है क्या वह किसी अत्यंत बुरी चीज़ का आरंभ मात्र है। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूं कि मैं सभा के सामने क्रोध में, एक योद्धा के प्रशिक्षित क्रोध में, न बोलूं। क्या यह संकट आसन्न है?”

“हमारे सभी उत्तर, और आशा एं भी, उस बालक में निहित हैं, गणपति,” विश्वामित्र ने उस बाल-जीव की ओर इशारा करते हुए कहा जिसे वशिष्ठ के शिष्य पत्तों और शाखाओं की कामचलाऊ डोली में बांध रहे थे। “मैं दो दिन और दो रात से इसे देख रहा हूं, और मैंने यह देखा है कि नींद में भी यह अपने सिर के साथ हमेशा दक्षिण में घूम जाता है, इस अंधेरी गुफा के अंदर भी। ये उस प्रकार के कौशल हैं जो देवी सरस्वती अपनी संतानों को प्रदान करती हैं, बेहद अभागों को भी। मुझे विश्वास है कि इसके जैसे जीव बहुत लंबे समय से हमारी ओर आ रहे हैं, शायद इसके जन्म लेने से भी पहले से। अगर यह इनकी प्रकृति में ही है तो ये आएंगे।”

“मैं सभा को सलाह दूंगा। निश्चय ही वहां ऐसे लोग होंगे जो उत्तर में मुहिम भेजने की बात कहेंगे, और शायद पूर्व और पश्चिम में भी। हाथी इस प्रकार की बातों को कमज़ोरी नहीं समझते, जैसा कि आप सोच सकते हैं।”

विश्वामित्र मुस्कुराए और उन्होंने हामी भरी।

“किंतु मेरा मानना है कि जो हो चुका है, हम उसे वापस नहीं फेर सकते,” गणपति ने कहना जारी रखा, “इसलिए मैं वरिष्ठजनों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हमें पर्वतीय दर्रों को सुरक्षित करने और इन जीवों को शेष किञ्चिंधा में फैलने से रोकने पर ध्यान देना चाहिए।”

“मैं आपकी सफलता की कामना करता हूं, गणपति। यह बुद्धिमतापूर्ण नीति है।”

“और मेरी शांति के लिए, हे कृष्णवर, कृपया मेरे पहले प्रश्न का उत्तर दें।”

“उनसे निवटने के लिए हमने जो किया, क्या वह उचित था?”

“हां। बिना प्रश्न किए आज्ञापालन करने वाले वीर को भी यह जानना चाहिए। वास्तव में, अन्य किसी से अधिक हमें जानना चाहिए। मेरी सेनाएं शक्तिशाली हैं, मगर वे हत्यारे नहीं हैं। अब मुझे उनसे नए, कठिन कामों के लिए कहना होगा।”

“आपको पता है न कि ये जीव क्यों आ रहे हैं?”

“क्यों?”

“वे हमें खाने आते हैं। बस। ठंडे उत्तर की तुलना में जहां देवी सपनों को भी सोने भेज देती हैं, किञ्चिंधा के हमारे हिस्से में धूप और नदियों के साथ ज्यादा जीवन है। शुरू में उत्तर में जीवन कम था, मगर जरूर कुछ हुआ होगा, कुछ बुरा, कि देवी सरस्वती की संतानों ने इस प्रकार का हताश, कुरुप मार्ग चुना।”

“कुरुप तो सही है,” गणपति सहमत थे।

“‘हताश’ मत भूलना। हम सौभाग्यशाली रहे हैं। हमारी वृक्ष-माताएं अच्छी तरह फल-फूल रही हैं, और हमारे पास कभी भोजन की, गर्मी या प्रकाश की कमी नहीं रही। हमें बस यही करना था कि अपने धर्म का पालन करें और ऐसे कामों को कम से कम करें जिनसे उसे हानि हो।”

“हम सौभाग्यशाली हैं। काश वे भी...” गणपति ने कहना आरंभ किया।

“एक सच्चे नायक की तरह कहा है, गणपति,” विश्वामित्र ने कहा, वे अच्छी तरह जानते थे कि हाथी क्या कहने वाला है। “हम सब चाहते हैं कि ये दीन-हीन प्राणी भी शांति, आश्रय और धर्म की समझबूझ पा सकें। मुझे विश्वास है, वशिष्ठ उस बीमार बच्चे के अध्ययन से कोई उत्तर पाने की चेष्टा करेंगे। तब तक हमें जो करना चाहिए, वह हम करेंगे। मगर यह हमेशा याद रखना, हमें उन्हें खाना नहीं है। इस समय वे हमें खाने के अलावा और कुछ नहीं जानते। अपने साथियों को यह बता देना। उनसे कहना कि परास्त करें, नष्ट न करें। केवल यह अंतर समझना ही हमारे ऊपर देवी की अनुकंपा है।”

गणपति ने एक नए निश्चय के साथ सिर हिलाया। उन्होंने अपनी सूंड उठाई और उसे अपने माथे तक ले जाकर प्रणाम किया। हर मांसपेशी इस गरिमा के साथ हिली थी जो कहती प्रतीत होती थी कि किञ्चिंधा सरलता से समर्पण नहीं करेगा।

हनुमान भी जिस बाहर निकली चट्टान पर बैठे यह सारी बातचीत सुन रहे थे, वहीं से उन्होंने भी हाथ उठाकर अपने शक्तिशाली गण बंधु को प्रणाम किया। गणों के पास बुद्धि और बल दोनों थे। अपने शत्रुओं की तरह एक से नहीं, बल्कि दोनों से अनुग्रहीत होना कितना बड़ा सौभाग्य था! घुटनों पर बांहें बांधे वे देर से बैठे थे। अब उन्होंने हथेलियों से धीरे-धीरे अपने घुटने मले। उन्हें एक-एक आघात याद आ रहा था जो उन्होंने अपने हाथों से, फिर मुँझों और कोहनियों से उन प्राणियों को दिया था। उन्हें याद आया कि किस तरह उन्होंने उन जीवों को परास्त किया था, उन्हें दोहरा कर दिया था मगर रक्त नहीं बहाया था, कम से कम आघात के स्थान से तो नहीं बहाया था। उन्होंने उन्हें पीटा था, मगर फिर भी अंगभंग नहीं किया था। एक मित्र, एक अपाचारी के घावों को साफ़ करने मात्र के लिए निष्कासित बालक के रूप

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

में वे अभी भी देवी की शरण में थे। उन्होंने झरने की देवी के बारे में और उन पत्थरों के बारे में सोचा जिनसे पानी के अंदर संगीत उत्पन्न होता है। एक विचित्र सी नई छवि उनके मन में कौंध गई। उन्होंने कल्पना की कि देवी अचानक पर्वतों से मुक्त हो खड़ी हो गई हैं और बहुत बल से, और बेपनाह क्रोध से उन पत्थरों को उस निकृष्ट अज्ञानता पर फेंक रही हैं जिसने इन जीवों को ऐसा बनाया जैसे वे हैं।

हनुमान फुर्ती से खड़े हो गए और उन्होंने वह पहला गोल, चिकना पत्थर उठा लिया जो उन्हें गुफा में मिला। यही एकमात्र रास्ता हो सकता है जिससे उनके संसार के छोटे, धीमे, शांतिपूर्ण प्राणी अपने सबसे महत्वपूर्ण नियम की पवित्रता का उल्लंघन किए बिना आक्रमणकारियों की उग्रता का जवाब दे सकते हैं।

परास्त करो, नष्ट नहीं।

&

Novels English

21

राजकुमारी वैष्णवी



पिछले कुछ दिन के भयावह अनुभवों के बाद लंबे, मीठी सुगंध वाले पेड़ों वाली तलहटी हनुमान और सुग्रीव को बहुत सुखद और गर्म लग रही थी। देवी सरस्वती की अनुकंपा से वशिष्ठ की गुफा की भूलभुलैया से उनकी यात्रा बहुत तीव्र और सुरक्षित रही थी। एक बार, रास्ते में बस एक बार, उन्होंने अपने हाथी मित्रों को देखा था, जो पहाड़ी सर्पाले रास्तों पर चलते हुए दूर से चींटियों की तरह दिखाई दे रहे थे।

“दो बड़ी पर्वत शृंखलाएँ हैं जो महाप्रस्थान स्थल से निकलती हैं,” विश्वामित्र ने समझाया था, “गणेश एक को सुरक्षित करेंगे, और अगर हम भाग्यशाली हुए तो दूसरी की रक्षा करने के लिए हमें समुचित मित्र मिल जाएंगे।”

“ये मित्र कौन हैं?” सुग्रीव ने पूछा था। वह प्रायः सोचता था कि क्या वाली और उसकी मां ऐसे समय में उनकी मदद के लिए आएंगे।

विश्वामित्र ने उत्तर नहीं दिया, जब तक कि वे अंततः एक ऐसी पगड़ंडी पर नहीं पहुंच गए जो थोड़ी सी ढलान से होती हुई एक सुंदर हरीभरी वादी में जाती थी।

“राजकुमारी। उनकी प्रजा उन्हें मां भी कहती है। उनके लिए वे वास्तव में मां और देवी जैसी हैं, यद्यपि अभी युवा ही हैं। किञ्चिंधा की रक्षा के लिए वे उन सबसे अधिक उपयोगी सिद्ध होंगी जिनके बारे में हम सोच सकते हैं।”

वे तीनों पहाड़ी की तलहटी में प्रतीक्षा करते रहे, जबकि एक सेविका पहाड़ी के ऊपर गुफा में राजकुमारी को उनके आगमन की सूचना देने गई।

सुग्रीव अधीर होने लगा और उद्देश्यहीन सा पास के एक पेड़ के तले से लगकर अंगड़ाई लेने लगा।

सबसे पहले हनुमान ने राजकुमारी को देखा। बैंगनी और लाल धारियों से ढकी, दो सखियों के साथ वे गुफा से निकलीं। “महर्षि!” वे चिल्लाई। वे उनके ऊपर स्थित चट्टान के कगार से एक पेड़ के ऊपर कूदीं और बिना प्रयास फिसलकर नीचे आ गईं।

उनके हाथ में एक फूल था जो उन्होंने विश्वामित्र को भेंट कर दिया।

“राजकुमारी वैष्णवी,” विश्वामित्र ने कहा, “ये हनुमान हैं, केसरी और अंजना के पुत्र, और ये इनके चर्चेरे भाई सुग्रीव हैं, कृष्णराज के पुत्र।”

पहचान जानकर वैष्णवी की आंखें चमक उठीं। वे मुस्कुराईं। “स्वागत है, किञ्चिंधानगर के नेक राजकुमारो,” उन्होंने कहा, उनकी आंखें हनुमान की ओर मुड़ी मानो वे उनके बारे में ऐसे रहस्यों को जानती हों जो वे स्वयं भी नहीं समझते थे।

*

“हनुमान,” जब उन्हें एक गुफा में विश्राम करने के लिए अकेले छोड़ दिया गया तो सुग्रीव ने धीरे से कहना शुरू किया। “यहां हर कोई मुझे रूमा की याद दिला रहा है।”

“इसका कारण है,” हनुमान ने जवाब दिया। “अगर तुम्हारा अब तक ध्यान नहीं गया है तो।”

सुग्रीव ने सिर हिला दिया। स्पष्ट रूप से उन्होंने ध्यान नहीं दिया था।

“राजकुमारी के राज्य में कोई पुरुष नहीं है, बंधु सुग्रीव! तुम, मैं और विश्वामित्र एकमात्र पुरुष हैं जिन्हें वादी में आने के बाद से मैंने देखा है,” हनुमान ने बताया।

“क्या पैनी निगाह है तुम्हारी, हनुमान!” सुग्रीव ने चिढ़ाते हुए कहा।

“नहीं, ऐसा नहीं है, मुझे तो बस लगा कि यह...” हनुमान कहने लगे, सुग्रीव के शरारती स्वर से वे थोड़ा भौंचक्के से थे। ऐसे अवसर होते थे जब वे सुग्रीव के प्रति सुरक्षात्मक महसूस करते थे, और फिर ऐसे अवसर होते जब उन्हें लगता कि वे जीवन के बारे में वह सब नहीं जानते जो सुग्रीव जानता था। अंततः उनका भाई उनसे बड़ा था और तीसरे संस्कार की ड्यूढ़ी पर था।

“नक्षत्र बहुत तीव्र गति से बढ़ रहे हैं, मेरे छोटे भाई,” सुग्रीव ने हंसते हुए कहा। “और वे सब युद्ध की हवाओं से प्रेरित नहीं हैं।”

हनुमान ने सुग्रीव के नए-नए पनपे रहस्यवाद को समझने का प्रयास किया। “तुम्हारे विचार में क्रृषि हमें यहां क्यों लाए हैं, सुग्रीव?” उन्होंने अत्यंत गंभीरता से पूछा, इस उम्मीद में कि बातचीत की दिशा शायद उस ओर मुड़ जाए जिसमें कोई सार हो। “तुम्हें लगता है इन भली श्वियों के पास पर्वतों में कहीं कोई शक्तिशाली सेना छिपी है? मेरा मतलब, इनके पास सेना होगी ही क्यों? यहां तो लोगों से कहीं अधिक पेड़ दिखाई देते हैं।”

“शायद इसी कारण। अपने प्रचुर पेड़ों के साथ यह वादी एक बहुत बड़ी सेना को जमा करने का आदर्श स्थान होगी। उत्तर में आगे किसी स्थान पर इतना भोजन नहीं होगा जो सेना को सशक्त रख सके,” सुग्रीव ने उत्तर दिया।

“यह है असली पैनी निगाह, सुग्रीव,” हनुमान ने टिप्पणी की।

“मैंने अचानक ही बहुत दुनिया देख ली है, मेरे मित्र,” सुग्रीव ने कुछ उदासी से कहा।

*

सूर्यास्त पर, विश्वामित्र ने राजकुमारी की एक सेविका को भेजकर हनुमान और सुग्रीव को बुला भेजा। वे उसके पीछे-पीछे एक गुफा में गए जो पहाड़ी के दूसरी ओर एक पगड़ंडी पर खुलती थी। वहां, चोटी के किनारे विश्वामित्र, राजकुमारी और

उनकी कुछ सलाहकार बैठी थीं।

“आओ, बच्चों, तुम्हें ये देखना चाहिए,” विश्वामित्र ने कहा। बहुत हल्की फुसफुसाहट में बोलने के बावजूद यह स्पष्ट था कि इस सारे अभियान के आरंभ होने के बाद से वे अब सबसे अधिक प्रसन्न थे।

ढलते सूरज की नारंगी आभा में वैष्णवी की आंखें विशुद्ध और ऊर्जावान स्लेह से भरी लग रही थीं। हनुमान को लगा कि वे अत्यंत शांतिपूर्ण हैं, यद्यपि दिन भर में कृषि से सुने सारे समाचारों ने उन्हें निश्चय ही परेशान कर दिया होगा।

“हमारे मित्र एकत्र हो गए हैं,” उन्होंने गर्व से, हालांकि नर्म स्वर में अपने नीचे वादी की ओर संकेत करते हुए कहा।

हनुमान और सुग्रीव धीरे से किनारे पर पहुंचे और उन्होंने नीचे झांका।

“हे मां सरस्वती!” हनुमान अचंभित हो कह उठे।

उनके नीचे सारी वादी में सैकड़ों रंगबिरंगे पंछी बैठे थे। ढलते सूरज की रोशनी वादी में बिखरी दर्जनों छोटी-छोटी झीलों और तालाबों में पंछियों के पंखों और टांगों का अक्स बना रही थी, जिससे प्रतीत हो रहा था मानो उनकी आंखों के सामने किसी जादू से वे कई गुणा हो गई हों। वे लाल, नारंगी, बैंगनी, मोरपंखी और हरे रंग के थे। उनमें से कुछ झङ्क सफेद थे और कुछ एकदम काले। कुछ की लंबी चोंचें थीं तो दूसरों की बहुत नहीं सी। कुछ के सिर पर चमकीली कलंगी थीं तो दूसरों के सिर पर कुछ नहीं था।

कुछ पानी पर थे तो कुछ उसके चारों ओर स्थित पत्थरों पर, और वे सब एकदम मौन थे।

उनका सारा ध्यान उस एक पंछी पर केंद्रित लग रहा था जो चोटी के नीचे पहाड़ी की तलहटी में बैठी थी। पंछी की लंबी गरदन नीचे को झुकी थी और उसका सिर धरती पर आराम करता सा लग रहा था। हनुमान ने देखा कि उसकी गरदन की मांसपेशियां हिल रही हैं मानो वह कुछ कह रही हो, मानो प्रार्थना कर रही हो।

फिर अचानक उसने अपना सिर उठाया और एक तीखी, आदेशात्मक ध्वनि की। हर पंछी तुरंत प्रतिक्रिया करता प्रतीत हुआ।

वह मोर था। उसने अपनी पूँछ खोली और चुस्ती से झील के बीच स्थित एक पत्थर की ओर बढ़ गया। एक निर्णयात्मक क़दम में वह हवा में उछला और उड़ गया।

शांति बिखर गई। अन्य पंछियों ने पहले अपनी आवाज़ बुलंद की और फिर अपने पंख फैलाकर उड़ गए। ऐसा लगा मानो मालाओं के किसी पर्वत ने आकाश में उड़ने का निर्णय किया हो।

“देवी सरस्वती आपके पंखों और आपकी जिह्वा की रक्षा करें!” विश्वामित्र ने उद्घोष किया।

“सुग्रीव,” हनुमान हँसे। “राजकुमारी के पास कोई साधारण सेना नहीं है। उनके पास उड़न सेना है।”

किञ्चिंधा के सभी मुखियाओं को संदेश भेज दिया गया था। आशा थी, कुछ तो कम से कम सुनेंगे।

इतने युगों में पहली बार, पर्वतों के शिखरों पर प्रकाश की पूरी शृंखला स्थापित की गई थी। वशिष्ठ के शिष्यों द्वारा दिए गए हरा प्रकाश फैलाने वाले पत्थरों के माध्यम से राजकुमारी के संतरियों ने परिधि में चारों ओर मोर्चे बना दिए थे। यह संभव तो नहीं था कि वे जीव इतनी दूर तक और इतनी जलदी आ जाते, मगर विश्वामित्र ने सुरक्षा करने का आग्रह किया। कुछ-कुछ पल बाद संतरी पत्थरों को टकराकर प्रकाश बढ़ाते। प्रकाश के घेरे में बहुत देर तक कोई अंधेरा हिस्सा दिखाई देता तो इसका अर्थ होता कि संकट शायद निकट है।

सुग्रीव इन व्यापक प्रबंधों को लेकर सबसे अधिक उत्साहित था। पिछले कुछ दिन की उग्र और भयानक मुठभेड़ों के बाद एक शासक के लिए यह अधिक उपयुक्त प्रतीत होता था। उसने संतरियों की तैनाती का सही तरीका, और परिधि में सेँध लगाने की स्थिति में झटपट पहुंचने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग दर्शाया, यद्यपि हनुमान को लग रहा था कि वैष्णवी की प्रजा सब कुछ स्वयं संभालने में पर्याप्त सक्षम है।

“सब ठीक रहेगा, सुग्रीव,” अंततः हनुमान ने अत्यंत शांति महसूस करते हुए कहा।

“हम किञ्चिंधावासी हैं,” सुग्रीव ने गर्व से कहा। “चाहे जो हो हम परम धर्म का निर्वाह करेंगे।” हनुमान ने देखा कि उसकी पूँछ उसी तरह तन गई है जैसे एक विशेष ढंग से बोलते हुए वाली की तन जाती थी।

उन्होंने सुग्रीव को थोड़ा और प्रोत्साहित करने का निर्णय किया। “शीघ्र ही वाली भी यहां होगा, मेरे मित्र।”

अपने भाई के नाम का सुग्रीव पर वही प्रभाव हुआ जिसकी हनुमान ने कल्पना की थी। उसका शरीर सतर हो गया, पूँछ टेढ़ी हो गई और चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान फैल गई। फिर अचानक सुग्रीव ने अपने उल्लास को छिपाने की कोशिश की कि कहीं हनुमान यह न सोचें कि वह उनके साथ हुए अन्याय को भूल गया है।

हनुमान ने आश्वासन देते हुए सुग्रीव के कंधे पर हाथ रखा। “देवी हमें कभी मुश्किलें नहीं देतीं, सुग्रीव, केवल अवसर देती हैं कि हम अपने बारे में कोई अच्छी बात जान लें।”

अब सुग्रीव मुस्कुराया। इन परिस्थितियों में हनुमान के साथ वाली की तुच्छ प्रतिद्रिंद्विता भी समाप्त हो जाएगी। और शायद इसकी समाप्ति पर वे सब घर लौट पाएंगे, और हनुमान का निष्कासन शेष सारी बातों की तरह एक भ्रम साबित होगा।

“जय माता सरस्वती,” उन्होंने कहा।

*

पंछी कुछ ही घंटों में अपनी मंजिलों पर पहुंचने लगे। वैष्णवी ने उन्हें सावधानी से निर्देश दिए थे। सभी वंशों के मुखियों को आसन्न महासंकट की चेतावनी दी गई थी। वे अपने योद्धाओं को एकत्र करेंगे, जो कि ऐसे देश में सरल कार्य नहीं था जहां परम धर्म उत्कृष्ट माना जाता हो, और जो भी लड़ सकता होगा, उसे उनकी वादी की ओर रवाना कर देंगे। वहां, जो भी आक्रमण होने वाला होगा, वे उसकी तैयारी करेंगे।

तीसरे दिन मौर किञ्चिंधानगर पहुंचा। सबसे पहले उसे देखने वाले छोटे बच्चे ऋक्षराज के पुरोहित को बुलाने गए, जो कुछ डरते-डरते पंछी के पास गया। शायद

यह उसके गुरु की फटकार थी, उसके लिए चेतावनी थी कि वह बहुत पैर फैला रहा है, और कि वह बहुत मोटा हो गया है।

पंछी ने जिज्ञासा से उसे देखा, और एक बार फिर आदेशात्मक स्वर में कुहुका। वह जान गया था कि यह बंदा जो भी हो, मुखिया तो नहीं ही हो सकता।

डांट खाकर और किसी हृद तक राहत पाकर कि पंछी ने उसके विरुद्ध कुछ नहीं कहा था, वह कृष्णराज तक समाचार पहुंचाने के लिए खिसक गया।

धीरे-धीरे, दंभ सहित कृष्णराज अपने दोपहर के विश्राम से उठीं। उन्होंने अपनी सेविकाओं को वाली को बुला लाने भेजा जो नदी किनारे कुश्ती लड़ने में रत था, और अपनी राजसी मालाएं पहनने लगीं। पुरोहित के बताए विवरण से वे कह सकती थीं कि वह पंछी उत्तरी मोर है, और स्वाभाविक रूप से, अत्यंत महत्वपूर्ण स्थानों पर अत्यंत महत्वपूर्ण संदेश पहुंचाने के लिए राजसी परिवारों द्वारा उपयोग किया जाने वाला दूत।

अब कृष्णराज स्थायी रूप से स्थापित केले के पत्तों के चंदोवे के नीचे पूरी गरिमा के साथ बैठ गई थीं। पास ही फलों और अनमोल रत्नों के ढेर लगे थे जो व्यग्र मुखियों और राजाओं ने भेट किए थे जो बिना किसी मुश्किल के वाली के पंच-नारियलों के निकल जाने से राहत महसूस कर रहे थे। जल्दी ही इन्हें गिनना होगा और जब वह पुरोहित उनकी सूची बनाता है तो उस पर कड़ी निगाह रखनी होगी। वर्ना, हिसाब रखना मुश्किल हो जाएगा।

पंछी ने उनकी ओर सिर झुकाया। उसने वाली की दिशा में देखा जो, हमेशा की तरह, राजसी चिह्नों और लेपों की जगह पसीने में लिपटा चला आया था। पंछी ने वाली की ओर भी सिर झुकाया और फिर बोलना शुरू किया।

पहले तो उसकी ध्वनियां किसी को परिचित नहीं लगीं। फिर धीरे-धीरे, बार-बार कोशिश करने पर उसने अपनी ध्वनियों को साधा जब तक कि शब्द उत्पन्न नहीं होने लगे। गणेश, वैष्णवी देवी। महासंकट। सेना। नदी के साथ जाओ। उत्तर। उत्तर। सेना। उत्तर।

*

तारा और रूमा बिना कुछ कहे, हल्की सी मुस्कुराहटों और गंभीरता से सिर हिलाने के अलावा और कोई प्रतिक्रिया दिए बिना मौन बैठी थीं।

“तुम्हारे पतियों को यह महानतम अवसर प्रदान किया गया है,” कृष्णराज ने ऊंचे स्वर में कहा। “मेरा बड़ा पुत्र, मेरा वाली, अब सारे किष्किंधा में अब तक की सबसे बड़ी सेना का नेतृत्व करेगा और मेरे वंश का नाम ऊंचा करेगा। और तुम, छोटी पुत्री, मैं तुम्हारे भयों को समझती हूँ। तुम्हें अब चिंता नहीं करनी चाहिए। वाली अपने छोटे भाई को साथ लेकर लौटेगा और तुम दोनों का विवाह होगा और तुम्हारे अनेक पुत्र-पुत्री होंगे। मैंने, कृष्णराज ने, तुम्हें आशीर्वाद दिया है!”

“धन्यवाद, शक्तिशाली मां,” तारा ने विनम्रता से कहा। चुपके से उसने अपनी पूँछ से बहन की टांग को थपथपाकर उसे भी अभिवादन करने की याद दिलाई।

कृष्णराज प्रसन्न दिख रही थीं, जैसा कि वे तब होती हैं जब लोग उन्हें यथोचित सम्मान देते हैं। उन्हें थोड़ी चापलूसी भी पसंद थी, बशर्ते सही ढंग से की जाए। जो

भी हो, अब उनके सामने बहुत व्यस्त समय आने वाला था। वाली और उसके साथियों के बिना, भेंट संग्रह, गणना और नवाचार बनाए रखने की प्रक्रिया में उनका बहुत समय लगने वाला था। इसलिए अपनी दोनों भावी पुत्रवधुओं का प्रशिक्षण आरंभ करने का यह अच्छा समय था। तारा द्वारा अपने लेपों और स्नानों का निरीक्षण करने, और रूमा द्वारा हिसाब-किताब रखने की कल्पना करते हुए कृष्णराज वाली के अलंकरण को देखने चल दीं। वह लड़का पूरे प्रांत में अपना प्रभाव जमाने वाला था। उस पर छोड़ दें तो वह भूसा बीननेवाले सा दिखता हुआ निकल पड़ेगा, अपने बेढ़ंगे और अनुपस्थित पिता की तरह, हाँ, अपने पिता की तरह, न कि अपनी राजसी मां की तरह।

जब तारा को विश्वास हो गया कि कृष्णराज गुफा से अच्छी-खासी दूर निकल गई हैं तो वह रूमा की ओर मुड़ी और धीरे से बोली, “आज रात हमें जाना होगा। तैयार रहना।”

रूमा हैरान दिखी।

“यही एकमात्र रास्ता है, रूमा,” तारा ने आगे कहा। “वाली और सुग्रीव दोनों को हमारी आवश्यकता है। हम नहीं जानते कि वे किस संकट में कूद रहे हैं। बहुत समय से इस तरह की चेतावनी नहीं दी गई है।”

“किंतु वे? उनके स्नान का ध्यान कौन रखेगा?” रूमा ने अपनी भावी सास की दिशा में सिर हिलाते हुए पूछा।

“ऐसे समय में मैं नहीं चाहती कि मुझे उनका या उनके स्नानों का ध्यान रखने के लिए छोड़ दिया जाए,” तारा ने उत्तर दिया।

रूमा मुस्कुरा दी। शायद, जैसा तारा सोचती थी, वाली अगर इस सबसे दूर, मतलब अपनी मां से दूर रहे, तो कहीं अधिक दयालु और अपनी मां की सनकों से कम प्रभावित साबित हो। शायद वे सुग्रीव को भी वापस ला सके। उसका ये विश्वास कभी नहीं डगमगाया था कि सुग्रीव अभी भी सकुशल है। किञ्चिंधा की हर स्त्री की भाँति रूमा भी जानती थी कि हनुमान किस मिट्टी के बने हैं।

22

युद्ध का उद्घोष



“इस लड़के को हम जो भी भोजन देते हैं, यह उसे अस्वीकार कर देता है,” वशिष्ठ के शिष्य ने उदास स्वर में बताया। “यह बैठा रहता है और घंटों नहीं हिलता, और फिर, अचानक दीवारों पर मुक्के मारने लगता है।”

“इसे क्या कष्ट है, ऋषिवर?” वैष्णवी ने पूछा। दोपहर भर लड़के का होहुल्लड़ तीव्र रहा था जिससे चिंतित तमाशबीनों की तादाद भी बढ़ गई थी।

“भोजन की कमी और किसी प्रकार की विषाक्तता जो तभी हो गई थी जब यह अपनी मां के गर्भ में था,” वशिष्ठ ने कहा, वे अपनी हथेली पर कुछ पत्ते पीसने में व्यस्त थे। “जैसा आप देख सकती हैं, यह बच्चा बिना पूँछ के जन्मा है।”

वैष्णवी की एक सलाहकार खिलखिला पड़ी मगर फिर शीघ्रता से उसने स्वयं को संयत किया। अब वह लड़के के लिए बहुत दुखी दिख रही थी।

विश्वामित्र मुस्कुरा दिए।

“हां,” वशिष्ठ ने आगे कहा, “पहले तो हमने सोचा कि शायद बच्चे की पूँछ उसके माता-पिता ने काट दी होगी, क्योंकि उनमें इस तरह के कामों को करने की प्रवृत्ति है। मगर यह इस तरह हुआ नहीं लगता।”

“देवी भला क्यों...” वैष्णवी ने कहना आरंभ किया, वे अभी भी लड़के के पिछले हिस्से को देखकर कुछ अविश्वास में थीं।

“वक्रकाव्यलीलावती,” वशिष्ठ और विश्वामित्र दोनों एक साथ कह उठे।

“वे जो वक्र शब्दों के साथ लीला करती हैं,” वशिष्ठ ने वैष्णवी को समझाया। “पूर्वी क्षेत्रों में यह देवी का एक नाम है। यह उनकी लीला है। इसीलिए कुछ किञ्चिंधावासियों की लंबी नाकें होती हैं, और कुछ की लंबी पूँछें। और अब, यह पूँछ ही नहीं है। और हां, बाल भी नहीं हैं।”

“लेकिन जब आप इसे लाए थे तब तो इसके बाल थे,” वैष्णवी ने कहा।

“सब सजावटी थे। जैसे हम फूलों का प्रयोग करते हैं, इसकी प्रजाति के लाग कीचड़ और बालों का प्रयोग करते प्रतीत होते हैं। नीचे इसकी त्वचा चिकनी और पीली है। मगर एक बात बहुत प्यारी है।”

“वह क्या?”

“यह अंगूठा चूसता है, हमारे बच्चों की तरह।”

हनुमान मुस्कुराए। उन्होंने आहिस्ता से लड़के की बांहों पर उंगलियां फिराईं। शायद ये दयनीय प्राणी इतने भिन्न भी नहीं हैं।

*

तीन दिन बाद पंछी लौटने लगे। अपने गंभीर, शांत और अनुशासित प्रस्थान के विपरीत अब वे सब उत्तेजित थे, और मिलीजुली ध्वनियों का कोलाहल मचा हुआ था। राजकुमारी की सलाहकार झील के आसपास घूम रही थीं, और ध्यान रखने का प्रयास कर रही थीं कि कौन पक्षी कहां से लौटकर आया है और वे क्या उत्तर लेकर आए हैं। विश्वामित्र शांति से उनके साथ चल रहे थे। वे सहज ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें किष्किंधा के कई कुनबों से संवाद करने का सबसे अधिक अनुभव था।

सलाहकार पंछियों द्वारा उत्पन्न की जाने वाली ध्वनियों की नक्ल करने और उनसे यह निष्कर्ष निकालने की कोशिश में जुड़ रही थीं कि मूल संदेश क्या रहा होगा। कुछ भाषाएं अच्छे से अनूदित हो गई थीं। कुछ नहीं हुई थीं।

मगर विश्वामित्र जानते थे कि चेतावनी सफलतापूर्वक पहुंचा दी गई है। क्या हो रहा है यह सबने सही-सही समझ लिया था या नहीं, वे वास्तव में आएंगे या नहीं, यह अभी स्पष्ट नहीं था। वे जानते थे कि कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता कि ये जीव कितने निर्मम हो सकते हैं। यहां तक कि वैष्णवी की प्रजा भी भयभीत से अधिक उत्सुक दिखाई देती थी। उन्होंने एकमात्र जीव वह बालक ही देखा था। और विश्वामित्र जानते थे कि उस बालक को छिपाकर रखना होगा, कहीं सैनिक आने वाले हिंसक संघर्ष की अपेक्षा मनोरंजन की प्रत्याशा न करने लगें।

पक्षियों के बीच रास्ता बनाते हुए विश्वामित्र उन पक्षियों को लेकर भी हैरान थे जो अभी तक वापस नहीं आए थे। क्या वे रास्ता भटक गए थे? क्या उनकी एकाग्रता भंग हो गई थी? क्या उनका उचित स्वागत नहीं हुआ? क्या कुनबों के मुखिया अभी भी सोच-विचार, और बहस करने में लगे थे कि ऐसा क्या संकट हो सकता है जिसके लिए इतने विशाल स्तर पर सेनाएं एकत्र की जा रही हैं?

मगर वे जानते थे कि जिसकी उन्हें सबसे अधिक आवश्यकता है, वह आएगा। किष्किंधानगर में ऋक्षराज ही एकमात्र बची थीं जिनके पास उस काल की यादें थीं जब प्रांत में संघर्ष रहता था। उन्होंने सदैव उस यश को चाहा था, और अब वाली को भी वह उसे हासिल करने भेजेंगी।

पाषाणनगरी से मोर अभी तक नहीं लौटा था।

*

इस बीच, सुग्रीव और हनुमान को जीवों द्वारा अपने ऊपर किए गए हमले और बचाव में अपने द्वारा किए गए उपायों के बारे में जितना याद आ रहा था, वह सब वे वैष्णवी की सैनिकों को दिखाने की कोशिश कर रहे थे। यह बहुत कारगर नहीं हो रहा था क्योंकि जब भी हनुमान या सुग्रीव दिखाते कि वे जीव अपनी पिछली टांगों पर कैसे चल रहे थे तो वे अपनी हँसी रोक ही नहीं पाती थीं।

अंततः हनुमान ने हार मान ली और अपनी अनिच्छुक शिष्याओं से दूर चले गए। “हम उस नस्ल को नहीं सिखा सकते जिसने कभी इससे जुड़ा युद्ध किया ही

नहीं है।”

“तुम कह रहे हो कि और कोई रास्ता ही नहीं है?” सुग्रीव ने पूछा।

“मैं कोई और रास्ता सोच भी नहीं पा रहा हूं, सुग्रीव। हमारी लड़ाइयां हमेशा मुद्रा को लेकर होती हैं। हमारा धर्म कारगर है क्योंकि हमारे यहां एक सक्षम प्रणाली कार्यरत है। हमारे विवाद हर व्यक्ति की साख के अनुरूप सुलझाए जाते हैं। हम शायद ही कभी क्रोध में एक-दूसरे से उलझते हैं।”

“और अगर उलझते भी हैं...” सुग्रीव हंसा।

“...तो एक-दूसरे को धक्का देते हैं। बस। अधिक से अधिक हम कुश्ती करते हैं। दांतों का इस्तेमाल करना तो दूर, हम खरोंच तक नहीं मारते।”

सुग्रीव ने गुर्नने में अपने हौंठ सिकोड़ने की कोशिश की।

“यह वास्तव में बहुत उपयोगी है,” हनुमान ने कहा। “यद्यपि जब हम ऐसा करते हैं तो चकराए हुए भेड़ियों जैसे दिख सकते हैं...”

लजाकर सुग्रीव ने अपना मुंह बंद कर लिया।

हनुमान हंस पड़े। “नहीं। यह अच्छा है। हमें बुनियादी बातें सीखनी होंगी। हम कंधे से कंधा, मांसपेशी से मांसपेशी मिलाकर इन जीवों को परास्त नहीं करेंगे। नहीं। उनके पास जो कुछ भी है, उससे वे हमारी बांहें, अंग और सिर चीर डालेंगे। मेरे विचार में हमें भय से शुरू करना होगा। हमें उन्हें दिखाना होगा कि हमारे पास वह सब कुछ है जिससे वे भय खाते हैं। आग, रोशनी, आवाज़। दांत, शायद।”

“मगर हनुमान,” सुग्रीव ने उदास स्वर में कहा। “तुम्हें लगता है हमें वाकई उन्हें काटना होगा?”

“तुमने ऐसा करना चाहा था? जब तुम लड़ देये?”

“मैंने चाहा था और नहीं चाहा। मुझे नहीं पता। वो विचित्र नस्ल हैं।”

“सुग्रीव, मैं तो दोबारा उनके निकट भी कहीं नहीं जाना चाहूँगा। मगर दुखद सच यह है कि वे हमारी ओर आ रहे हैं। वे हमें मारने आ रहे हैं। मुझे विश्वास है कि हम यहां सुरक्षा खड़ी कर सकते हैं और उन्हें रोक सकते हैं। मगर मैं अभी भी यह नहीं जानता कि उन्हें रोकने का वास्तव में क्या अर्थ है।”

“साधारण। हम उन्हें हरा देंगे। हम उन्हें जटायुओं के लिए छोड़ देंगे। हम घर जाएँगे। हमारा नायकों की भाँति स्वागत होगा। मेरी मां ये फ़ालतू अपाचार की बातें छोड़ देंगी। वाली शासन करेगा। तुम और मैं भाइयों की तरह रहेंगे। और...”

“और?”

“और रूमा और तारा सुनिश्चित करेंगी कि कुछ वर्षों में तुम भी...”

हनुमान हंस पड़े। “मुझे ये कभी समझ नहीं आया है। मगर तुम जिस तरह रूमा के लिए और रूमा तुम्हारे लिए महसूस करती है, उससे मैं प्रसन्न हूं।”

विश्वामित्र वहां आ गए। “तुम लोग प्रसन्न सुनाई दे रहे हो इस दुखद काल में भी।”

“हम कोशिश करते हैं,” सुग्रीव ने कहा, “हमें आने वाले अच्छे दिनों के बारे में सोचना चाहिए।”

“हम वास्तव में सोच रहे थे, ऋषिवर,” हनुमान ने अब गंभीरता से कहा, “कि इन जीवों को रोकने का क्या अर्थ है। मैं इन शांत पहाड़ियों से उनके सैकड़ों, या शायद हज़ारों की तादाद में गिरने की कल्पना कर सकता हूं। मैं कल्पना कर सकता

हूं कि फूलों, कलरव करते पंछियों और इन सुंदर लड़कियों की ये वादी नरकराज का रक्तरंजित क्षेत्र बन गई है। मैं कल्पना कर सकता हूं कि उनकी संतान, इस बच्चे की तरह, ये अनिच्छुक मेहमान जिसे देवी ने हमारे हाथों में सौंप दिया है, भी नीचे गिर रही हैं। मैं विश्वास नहीं कर सकता कि ऐसा आतंक ही एकमात्र उपाय है जो देवी हमारे सामने रख रही हैं।”

“यह सच है, हनुमान। लेकिन शायद हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि यह और आगे न जाए।”

“मेरी चिंता यही थी, ऋषिवर,” हनुमान ने कहा। “मान लेते हैं कि हम विजयी होते हैं, जो कि अगर देवी ने चाहा तो हम होंगे भी। मान लेते हैं कि हम इन बर्बरों को जटायुओं के मुंह में और उनकी आग में फेंक देते हैं जब तक कि उनमें से कोई न बचे। मान लेते हैं कि हम अपने घरों को लौट जाते हैं, जैसा सुग्रीव कहते हैं, नायकों की तरह। हम तब भी क्या वही रहेंगे जो अभी हैं? क्या हम तब भी परम धर्म के लिए वही श्रद्धा महसूस करेंगे जो पहले करते थे?”

विश्वामित्र का चैहरा अंधेरे में चमकता सा लगा।

“या,” हनुमान ने आगे कहा, “क्या हम केवल उसे ढोएंगे जो ये जीव हमारे ऊपर लाएंगे? हमें उन जैसा बनने से, परम धर्म के प्रति उदासीन बनने से क्या बात रोक सकेगी?”

“अरे, हनुमान,” सुग्रीव ने कहा, “हम निश्चय ही उन बर्बरों से भिन्न हैं। उनसे लड़ चुकने के बाद हम अच्छी तरह स्नान करेंगे, सुंदर फूलों में लोटेंगे, और फिर इस सबको और इस सबकी गंध को पीछे छोड़ देंगे।”

विश्वामित्र ने गहरी सांस ली। “तुम युवा और शक्तिशाली हो, मेरे मित्रो। और तुम्हारा भाई भी आएगा, सुग्रीव, क्योंकि अब वह प्रांत के सभी मुखियाओं में सबसे अधिक शक्तिशाली है, सारे पंछी यही कह रहे हैं, और हमारे लोक की सारी प्रजातियां आज यही कह रही हैं। इसलिए चिंता न करो। हम उन जीवों को निकलने नहीं देंगे। मगर हनुमान की बात भी सही है। इस तरह का युद्ध हमारे धर्म के भाव पर क्या असर डालेगा, यह भी महत्वपूर्ण है। और परम धर्म को नष्ट किए बिना जीतने में केवल एक ही व्यक्ति हमारी सहायता कर सकता है।”

“वह कौन?” हनुमान ने पूछा।

“वशिष्ठ,” विश्वामित्र ने उत्तर दिया। “वे बालक की चिंता केवल इसलिए नहीं कर रहे हैं कि वे उसे जीवित देखना चाहते हैं, बल्कि इसलिए भी कि वे उन बातों को समझते हैं जिन्हें हम नहीं समझते। वे इन बर्बरों का उपचार करने का कोई मार्ग निकाल लेंगे।”

“इससे पहले कि उनका रोग हमें भी पीड़ित करने लगे?” हनुमान ने पूछा।

“मुझे दुख है, हनुमान,” सुग्रीव ने अब थोड़ा परिहास में कहा, “यह तो संभव ही नहीं है। जब अधर्म सिर उठाता है तो धर्म उसे ऐसी पटखनी देता है कि वह धूल चाटने लगता है। हम भी अब यही करेंगे। तुम बस वाली के आने की प्रतीक्षा करो। हम तीनों मिलकर उनके दांत ऐसे तोड़ेंगे कि वे फिर कभी किसी जीवित प्राणी को नहीं मार पाएंगे।”

“यह भी एक विकल्प है,” विश्वामित्र ने भी अपने सिर को समान रूप से मस्त झटका देते हुए कहा।

*

ऋक्षराज ने पुरोहित पर की अपनी कृपा की एक-एक बूँद निचोड़ ली थी। उनका अनुमोदन पानौं के लिए उसे ऊंचे स्वर में, देर तक और लगभग युद्ध जैसी उग्रता के साथ मंत्रोद्भार करना पड़ा था। वाली अभियान पर निकलने के लिए अधीर हो रहा था। उसकी सेना ने आसपास के राज्यों से सैकड़ों लड़कों को जमा कर लिया था। अधिकांश तो अपनी इच्छा से आए थे। पंच-नारियल के बाद इन राज्यों के मुखिया ही वाली के नेतृत्व में शामिल नहीं हुए थे बल्कि उनकी प्रजा भी शामिल हो गई थी, विशेषकर युवा। ऋक्षराज ने गायकों और नर्तकों की एक विशेष टोली बनाई थी जो गांव-गांव जाकर वाली की वीरता की कहानियां सुनाती। शीघ्र ही, जो भी युवा अपनी पूँछ को ज़मीन से उठाने में सक्षम था, वह अपने माता-पिता से कहने लगा था कि वह वाली की सेना का अंग बनना चाहता है।

जब ऋक्षराज ने वाली के नेतृत्व में लड़ने के लिए इतने सारे लोगों को जमा देखा तो पहली बात उनके मन में यह आई कि यह उस भीड़ से लगभग आगे निकल गई है जो हनुमान के जन्म पर उसे देखने आई थी। मगर वो रिरियाते बच्चों और अतिउत्साही दादी-नानियों का तुच्छ जमावड़ा था। वाली की यह सेना वास्तविक शक्ति थी। केसरी कभी इस तरह की सेना जमा नहीं कर सकता था। वे संतोष से धुरधुराईं।

उपयुक्त पल पर, उन्होंने पुरोहित को समाप्त करने का संकेत दिया। उसने एक विशाल, अलंकृत आरती जलाई जिसे उसने बहुत सावधानी से उठाया ताकि अभ्यास के दौरान जली उंगलियों के बाद अब और उंगलियां न जलें। विश्वामित्र द्वारा किए जाने वाले आग के किसी भी खेल की अपेक्षा यह बहुत बड़ी और कहीं अधिक शानदार थी। संगीतकारों के एक दल ने पत्थर बजाने और ज़ोरों से खोखले तने फूँकने शुरू कर दिए। माहौल में एक विकट सा तनाव बन गया था, और ऋक्षराज जानती थीं कि वे और वाली जो अब उचित प्रकार से सुसज्जित था, इसके केंद्र में हैं।

जब वाली अपनी मां का आशीर्वाद लेने आगे बढ़ा तो सब ध्यान से देखते रहे। वन में मिलने वाले हर प्रकार के लाल और नारंगी फूलों से लदा हुआ वह सुदूर कोनों से भी बहुत दर्शनीय दिख रहा था। एक के बाद एक दंडवत प्रणाम करते वाली की मांसपेशियां चमक रही थीं और शक्ति दर्शा रही थीं। अंततः जब वह मुड़कर अपनी सेना के सम्मुख होने वाला था कि तभी ऋक्षराज के पीछे से तारा आगे आई। वह थोड़ा सा प्रसन्न दिखाई दिया, मानो उसकी उपस्थिति सारी तड़क-भड़क से अधिक वास्तविक हो। तारा जानती थी कि वह प्रसन्न है मगर उसने यह दर्शाया नहीं, उसकी मां के सामने तो वैसे भी नहीं। गंभीर भाव से, और ऋक्षराज की ओर एक-दो बार उत्सुक निगाहें डालकर वह वाली को हार पहनाने और माथे पर तिलक लगाने आगे बढ़ी। जब वह यह कर रही थी तो वाली सच में बहुत चकराया सा दिख रहा था। वह अपने अभियान पर निकलने के लिए उत्सुक था, मगर उसका एक छोटा सा हिस्सा तारा के साथ भी रहना चाहता था। वह बचपन से ही ऐसा रहा था।

तारा उसे किसी से भी बेहतर जानती थी, ऋक्षराज से भी। वह प्रतीक्षारत सेविकाओं की पंक्ति के पीछे चली गई, और उसने अपना चेहरा ढक लिया मानो रोने

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

वाली हो। यह निश्चित होते ही कि ऋक्षराज ने यह देख लिया है, वह अपना चेहरा ढककर धीरे-धीरे सुबकते हुए खिसक लेगी मानो अपने कक्ष के शोकपूर्ण एकांत में जा रही हो।

वाली अपनी सेना का जायज़ा लेने के लिए आगे बढ़ा। तटीय पर्वतों के एक अधीनस्थ ने उसे एक शंख दिया था, इस ओर के स्थानों में किसी ने इसके बारे में नहीं सुना था। वह उसे अपने मुंह के पास ले गया और उसे फूंका। सैनिकों ने लोलुपता से हुंकारे लगाए।

अभियान शुरू हो गया।

अंतिम सैनिक तक के वन में ग्रायब होने में सारी दोपहर लग गई थी। उनके आगे बढ़ने की आवाज़ देर तक गूंजती रही। आखिरकार, सूर्यास्त के लगभग केवल नगाड़ों की बहुत हल्की सी आवाज़ पर्वतों में गंज रही थी।

अगली सुबह को ही सेविकाओं ने उस संदेह की पुष्टि की जो ऋक्षराज को रात भर कुलबुलाता रहा था। तारा और रूमा चली गई थीं।

Novels English

23

जामवंत



राजकुमारी वैष्णवी की वादी में पहुंचने वाली सबसे पहली सेना जामवंत की थी। उनकी संख्या बहुत अधिक तो नहीं थी, मगर उनकी उपस्थिति ही इसकी भरपाई के लिए पर्याप्त थी। हर भालू सहज ही अपनी कांख में तीन-चार जीवों को दबोचने में सक्षम दिख रहा था।

जैसा कि विश्वामित्र को अपेक्षा थी, जामवंत लड़के को देखकर पूरी तरह चकरा गए थे। “इस छोटे से बच्चे के कारण सारे किञ्चिंधा में हड्डबड़ाहट फैला दी गई है?” उन्होंने हैरानी से कहा।

दूसरी ओर, बच्चे को जैसे वे भा गए थे। किञ्चिंधा के आतिथ्य का अनिच्छुक भागीदार बनने के बाद से पहली बार वह मुस्कुराया था। जब वह सो रहा था तब राजकुमारी की सेविकाओं ने उसे साफ-सुथरा कर दिया था मगर वह अभी भी त्वचा, बालों और कीचड़ के उस गंदे और सिकुड़े बोरे से चिपका हुआ था जिससे वह ढका हुआ था। उसकी बीमारी और चिड़चिड़ाहट अब काफ़ी कम हो गई थी। वशिष्ठ की औषधियां काम कर रही थीं, भले ही धीमे काम कर रही हों।

वह जामवंत के पास गया, और उसने नर्मी से उनके बालों को छुआ।

“आप कहते हैं यह बालक हाथियों को खाता है?” जामवंत ने पूछा, अब वे पूरी तरह से अचंभित थे।

हनुमान और सुग्रीव को हंसी आ गई। जामवंत में कोई बहुत ही आकर्षक बात थी। वे कोई बरसों के बिछड़े चाचा या दादा जैसे लगते थे। उन्होंने भी हनुमान को तुरंत ही पसंद कर लिया था, और अब उनकी गँजती प्रश्न करती आवाज़ से ऐसा लग रहा था जैसे हनुमान और सुग्रीव ने उस बच्चे की प्रजाति को लेकर जो देखा था, वह सब कोई दुखद भ्रम था।

“अब यह बच्चा केले खाता है,” वशिष्ठ ने गर्व से कहा, “जैसे किसी भी बच्चे को खाने चाहिए।”

“मगर जब यह बच्चा था, इतना छोटा सा,” जामवंत ने हावभाव के साथ कहा, “तब यह हाथी खाता था, या आप ऐसा कहते हैं।”

विश्वामित्र ने जामवंत के कंधे को छुआ, जहां तक वे बड़ी मुश्किल से ही पहुंच रहे थे। “आओ, मित्र, राजकुमारी तुम्हारे ज्ञान की प्रतीक्षा कर रही हैं।”

सेविकाएं को मलता से बच्चे को ले गईं। वह आत्मविश्वास से गया मानो अपनी मां का हाथ पकड़े हो। अब उसकी चाल भी ठीकठाक दिख रही थी। हालांकि उसका शरीर ऐसा नहीं दिख रहा था, मगर जिस तरह से चलते समय वह अपने शरीर को झुला रहा था, उसे देखकर लगता था कि वह किसी सामान्य किञ्चिंधावासी बालक की तरह ही पेड़ों पर चढ़ सकता है और उनसे कूद सकता है।

“देवी ने आपको क्या चमत्कार प्रदान किया है, ऋषिवर?” हनुमान ने वशिष्ठ से पूछा।

वशिष्ठ झुके और अपने पैरों को देखने लगे मानो उन्हें लेकर कोई ऐसा अध्ययन चल रहा हो जिसे और कोई न समझ सकता हो। “ओह, बस कुछ पत्ते। कुछ घास। कुछ रस,” उन्होंने अस्पष्ट सा कहा।

हनुमान ने उनके कहे हर शब्द के बारे में ध्यान से सोचा। वास्तव में वशिष्ठ ज्यादा नहीं बोलते थे, और अब भी जब वे बोलते थे तो सब बातों को लेकर बहुत बेपरवाह से प्रतीत होते थे। मगर वह व्यक्ति जो इतना कम बोलता हो, उसे जो वह बोलता है, उन बातों को लेकर उससे अधिक गंभीर होना चाहिए जितना वे होते हैं।

घास। पत्ते। जीव कुपोषित थे। शायद यही समस्या थी।

“हे ऋषिवर, कृपया रुकिए,” हनुमान अचानक यह देखकर कि सब लोग जा चुके हैं, उनके पीछे गए। “मेरा एक प्रश्न है। जब किञ्चिंधानगर में हम नदी के पास खेला करते थे, तो उसके प्रवाह के साथ तैरा करते थे। मगर पेड़ों की जो पंक्तियां दिखाई देती थीं उन्हें देखकर हमें हमेशा पता होता था कि हम कहां जा सकते हैं और कहां नहीं।”

“अच्छे लड़के हो!” वशिष्ठ ने इस तरह देखते हुए कहा जैसे वे उस पेड़ पर चढ़कर उसकी ऊँचाइयों में कहीं गुम हो जाने वाले हों जिसे वे देख रहे थे।

“मेरा प्रश्न यह है। ये घासें जिन्होंने इस बच्चे को ठीक किया है, अगर हम उन्हें ऐसी जगहों पर उगाएं जहां वे जीव उन्हें पा सकें तो?”

“अच्छा प्रश्न है!” वशिष्ठ चिल्लाएं और कूदकर पेड़ के तने पर चढ़ गए।

हनुमान वहीं खड़े सोचते रह गए कि क्या यह संभव है। “मगर इस प्रश्न का उत्तर क्या है?” उन्होंने अंततः कुछ खीजकर पुकारा।

वशिष्ठ का स्वर अब पत्तों के बीच कहीं गहराई से उभरा, शायद किसी दूसरे ही पेड़ से। “विश्वामित्र। सारे उत्तर उनके पास हैं।”

*

“तो हम महाप्रस्थान के सारे स्थान पर पेड़ और घास लगाएं?” सुग्रीव ने हनुमान से पूछा। उसके स्वर में इतना अविश्वास था जो उस चर्चा में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर रहा था। “और इससे वे हमें अकेला छोड़ देंगे?”

“महर्षि वशिष्ठ ने कहा था कि यह अच्छा प्रश्न है। मैं मान रहा हूं कि इसका मतलब यह है कि इस पर गंभीरता से विचार किया जा सकता है,” हनुमान ने उत्तर दिया।

“क्या वे प्राणी जो हाथियों को खाते हैं, अचानक ही पत्ते और घास खाने लगेंगे और हमें अकेला छोड़ देने का निर्णय करेंगे?” जामवंत ने अन्यमनस्कता से पूछा।

ऐसा लग रहा था जैसे वे या तो इस नई वास्तविकता के साथ या सुबह उठने को लेकर तालमेल न बिठा पाए हों। जो भी हो, प्रश्न निर्थक नहीं था, हनुमान ने सोचा।

“मैंने उनकी भूख देखी थी, और मेरा विचार है कि वही उनसे वह सब करवाती है जो वे करते हैं। अगर महर्षि वशिष्ठ की औषधियां उनके शरीरों की उस भूख को जीतने में मदद कर सकती हैं तो शायद वे भी धर्म के अपने आदर्श को विकसित कर सकें,” हनुमान ने कहा।

जामवंत ने प्रशंसा भरी निगाह से उन्हें देखा, मानो उनको अपना खोया पुत्र मिल गया हो। उन्होंने हाथ से गरिमापूर्ण संकेत किया कि हनुमान कहना जारी रखें।

हनुमान मुस्कुराए। “यह बच्चा उदाहरण हो सकता है। बच्चे माता-पिता से सीखते हैं। मगर विपत्ति के समय में या अचानक होने वाले परिवर्तनों में—जो कि वर्तमान संसार के बारे में कहा जा सकता है—माता-पिता भी बच्चों से सीखते हैं। शायद देवी ने इसे हमें इसलिए सौंपा है कि हम उस समस्या का तोड़ निकाल सकें जिससे इसकी प्रजाति के लोग पीड़ित हैं।”

सुग्रीव ने ज़ोरों से सिर हिलाया। “उस बेचारे बच्चे को तो रहने दो अभी। मगर तुम वह भूल रहे हो जो तुमने अपनी आंखों से देखा था, हनुमान। तुम्हारी दी औषधियां या हल आज़माने के बजाय शायद इसकी अपनी मां इसे खा जाए।”

पहली बार, वैष्णवी ने प्रतिक्रिया की। ऐसी बात सुनने के लिए प्रायश्चित में उनका हाथ अपने गाल थपथपाने के लिए उठ गया था। मगर वे रुक गईं क्योंकि वे एक शासक भी थीं और जानती थीं कि उन्हें हर पल किस तरह दिखना चाहिए। उन्होंने स्वयं को सतर किया और सुग्रीव को आगे बोलने दिया।

“जामवंत यहां हैं। गण भी आ रहे हैं। और मुझे विश्वास है कि बहुत शीघ्र मेरी मां वाली को भी युद्ध में हमारे साथ लड़ने के लिए भेजेंगी,” सुग्रीव ने कहा। “मेरा विचार है कि हमें इन जीवों को अपने पास भी फटकने देने से रोकना चाहिए।”

जामवंत चुपचाप सुग्रीव को देखते हुए पीछे टिककर बैठ गए। फिर उन्होंने एक गहरी सांस ली और कहा। “मैं यहां दोनों ही दृष्टिकोणों की बुद्धिमता को देख रहा हूं। मैं भी मानता हूं कि भूख लोगों को भयंकर सीमा तक ले जा सकती है। अपने लोक में हम अधिकांशतः भाग्यशाली रहे हैं। हमारे लोग, चाहे बड़े हों या छोटे, धर्म का पालन करते हैं। हमने किसी व्यापक स्तर पर भुखमरी नहीं देखी है, जैसा कि इस अभागी नस्ल के प्राणी भोग रहे हैं। हमें यह मानकर चलना चाहिए कि किसी काल में ये भी धर्म के प्रति जागरूक रहे होंगे, मगर फिर किसी तरह ये बुरे दौर में आ गए। तो, यह कहने के बावजूद, ऐसी संभावना है कि अगर हम उनकी संतानों की मदद करने में समर्थ रहते हैं तो भी संभवतः उनकी मदद न कर पाएं।”

“ऐसा क्यों?” हनुमान ने पूछा।

“ऐसा संभव है कि वे घास और फलों को आमंत्रण की तरह देखें। अगर वे उतने ही चालाक हैं जितना तुम कहते हो, स्वयं को हाथियों की खाल में छिपाना आदि, तो यह हो सकता है कि वे हमारे भोजन को उस तरह प्रयोग करना सीख लें जो उनके लाभ में हो। ठीक उसी तरह जैसे हम थोड़े से शहद से मधुमक्खियों को लुभाते हैं जिससे वे अपने भरेपूरे छते हमारे लिए छोड़ दें। अगर उन्होंने हमारे फलों और पेड़ों का प्रयोग हमारे संगी-साथियों को लुभाकर अपने जाल में फंसाने के लिए किया तो?”

हनुमान ने हामी भरी। इन भालू का मस्तिष्क तो उतना ही बड़ा है जितनी बड़ी इनकी साख है।

“और चालाकी की बात करें तो,” जामवंत ने आगे कहा, “इस तरह के जीवों को साधारणतया जटायुओं का ध्यान खींच लेना चाहिए था। मुझे बहुत जिज्ञासा है कि उत्तर के किसी जटायु ने इस बारे में कुछ नहीं कहा है।”

सभा में सर्द मौन पसर गया।

“हाल के दिनों में मैंने उत्तर के किसी जटायु को न तो देखा है, न किसी से बात हुई है,” विश्वामित्र ने कहा।

“अगर मेरा संदेह सही है,” जामवंत ने कहा, “तो ये जीव अत्यंत बुद्धिमान हैं, भले ही संकीर्ण, स्वार्थी रूप में हों। संभवतः वे केवल हाथियों को ही नहीं, बल्कि उन विशाल पंछियों को भी खा रहे हैं जो इतनी सरलता से हमसे दूर उड़ते हैं। वे जो भी देखते हैं शायद सब खा लेते हैं।”

हनुमान निराश दिखाई देने लगे।

“यह दुखद वास्तविकता है, मेरे नन्हे मित्र,” जामवंत ने कोमलता से हनुमान के कंधे पर हाथ रखा। “ऐसा प्राणी जिसने अपने सामने आने वाले किसी भी जीव को मारने का निर्णय कर लिया है, वह कहीं नहीं रुकेगा। केवल देवी की महान अनुकंपा और बल ही अब फिर से संतुलन स्थापित कर सकता है।”

“यानी युद्ध अवश्यंभावी है,” सुग्रीव ने कहा, मगर अब जब स्थिति वास्तव में सामने आ गई थी तो वह अनुत्साहित सा लगा।

*

उस शाम राजकुमारी वैष्णवी फिर से उस बच्चे के पास गई। स्थिति में सुधार होने के बावजूद, दिन ढलने के समय वह कभी-कभी बेचैन और चिड़चिड़ा हो जाता था। उसकी मांसपेशियां ऐंठ जातीं, वह हाथ-पैर चलाने लगता और गुफा में गोल-गोल भागने लगता।

“मुझे विश्वास है कि यह वह सब याद किए बिना नहीं रह पाता जो सूरज ढलने पर इसके सगे-संबंधी करते हैं,” विश्वामित्र ने कहा था। “कभी-कभी मस्तिष्क शरीर से जल्दी ठीक हो जाता है, तो कभी इसका उलटा होता है।”

वैष्णवी निकट आई तो वह लड़का और अधिक उत्तेजित हो गया। वह अपनी ऊंगली चबाने लगा, और गुफा की दीवारों पर हाथ मारने लगा।

वैष्णवी ने उदास होकर अपनी आंखें बंद कर लीं, और फिर उन्हें दोबारा खोल दिया। वे पैनी निगाह से लड़के के चेहरे को देख रही थीं, और अचानक, बिना किसी चेतावनी के वह शांत हो गया। उन्होंने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया, और लड़के ने अपना हाथ उठाकर उसे कसकर पकड़ लिया।

फिर उगते चांद के साये में पर्वतों की राजकुमारी शांति से बच्चे को घुमाने ले गई।

वैष्णवी सोदेश्य पगड़ंडी पर चली जा रही थीं जब तक कि उस गुफा तक नहीं पहुंच गई जहां हनुमान विश्राम कर रहे थे। पल भर वे वहां चुप खड़ी रहीं, यह सोचती कि हनुमान क्या कहेंगे। लड़का कुछ आवाजें निकालने लगा था, कुछ ऐसी

जैसे गा रहा हो।

आवाज़ सुनकर हनुमान बाहर आए। “अभिवादन, राजकुमारी,” उन्होंने हल्का सा सिर झुकाया।

“शायद चांदनी ने बच्चे की पीड़ा शांत कर दी है,” उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।

“आपकी सेविकाएं भी इसे घुमाने ले जा सकती थीं, लेकिन आप बहुत उदार हैं कि आपने यह स्वयं किया,” हनुमान ने कुछ हिचकिचाते हुए कहा। उन्हें लग रहा था कि राजकुमारी को एक खतरनाक नस्ल के बच्चे पर विश्वास करने की असावधानी नहीं बरतनी चाहिए, कहीं उन्हें कोई रोग न लग जाए। सुबह की सभा से पहले इन जीवों के कल्याण की संभावना को लेकर उनके मन में जितनी आशा थी, वह अब बहुत घट गई थी।

“आप जो भी यत्र कर रहे हैं, उसके लिए मैं आपका सम्मान करना चाहती हूं, किञ्चिंधानगर के बुद्धिमान पुत्र,” राजकुमारी ने कहा। “देवी की लीला में अगर शांतिपूर्ण हल खोजने की तनिक भी कोई गुंजाइश है तो हमें उस पर काम करना चाहिए।”

“महान राजकुमारी,” हनुमान ने अब उनकी ओर आते हुए कहा। “मुझे नहीं लगता कि अपने विचार व्यक्त करने के लिए देवी इस धरती पर आपसे बेहतर व्यक्ति पा सकती हैं।”

“आइए, मैं आपको कुछ दिखाना चाहती हूं। आपने अब तक जो भी मुश्किलें देखी हैं, उनके बाद यह आपके मन को शांति प्रदान करेगा,” उन्होंने खुलकर मुस्कुराते हुए कहा।

उन्होंने एक पहाड़ी के शिखर की ओर जा रही पगड़ंडी पर चलना शुरू किया, तो सम्मानपूर्वक कुछ पगों की दूरी रखते हुए हनुमान उनके पीछे चल पड़े। चलते-चलते वे ठहरतीं और मुड़कर हनुमान से कुछ कहती जातीं, और जल्दी ही उनकी असुविधा का ध्यान रखते हुए हनुमान उनके साथ चलने लगे थे।

फिर जब वे शिखर के निकट पहुंचे तो बच्चे ने आगे बढ़कर हनुमान का भी हाथ पकड़ लिया। अचानक, उसने अपने पैर धरती से उठा लिए और उन दोनों के बीच झूलने लगा।

“अब यह हम जैसा ही हो गया है!” वैष्णवी हंस पड़ीं।

ऐसा और कैसे हो सकता है? हनुमान ने सोचा और मुस्कुरा दिए। मगर अपने आशावाद के बावजूद वे चौकस थे। कुछ ही समय में वे बहुत अधिक सुंदरता और कुरुपता को एक साथ देख चुके थे।

उनके नीचे वादी देवी के चेहरे की मुस्कान की तरह फैली हुई थी। झीलें और उसके आसपास बिखरे दर्जनों छोटे-बड़े जलकुंड चांदनी को प्रतिबिंबित कर रहे थे मानो किसी अप्सरा को आईना दिखा रहे हों। मंद बयार में पत्ते धीरे-धीरे हिल रहे थे और सुगंधित हवा से हनुमान बहुत संतुष्ट और शांत महसूस करने लगे थे।

“कितना सुंदर प्रदेश है यह, राजकुमारी,” उन्होंने कहा।

“आप मुझे वैष्णवी कह सकते हैं। जब मैं अपनी सखियों के साथ खेलती हूं तो वे मुझे ऐसे ही बुलाती हैं,” उन्होंने थोड़े से पछतावे के साथ कहा।

“आप जैसा कहेंगी मैं वैसा ही करूंगा, राजकुमारी वैष्णवी,” हनुमान ने तुरंत कहा।

वे हंस पड़ीं।

बच्चा भी प्रसन्नता भरी आवाजें निकालने लगा था।

“काश इनकी सारी परेशानियां किसी बुरे सपने से अधिक कुछ न हों, हनुमान,” उन्होंने बच्चे को देखते हुए कहा। “इस धरती का हृदय इतना विशाल है कि मैं समझ नहीं सकती कोई किसी और को हानि क्यों पहुंचाना चाहेगा। मुझे आशा है कि यह बच्चा संघर्ष को टालने का माध्यम साबित होगा जो वास्तव में होना ही नहीं चाहिए। मुझे आशा है कि एक दिन इसकी माँ आकर इसे गले लगाएंगी, और इसे अपने स्नेह से भर देगी।”

यह बहुत उदार कामना है, हनुमान ने सोचा। मगर उन जीवों, और अपनी संतानों के साथ भी उनकी स्पष्ट कूरता की याद ने उन्हें विचलित कर दिया। वे इस पर बहस नहीं करना चाहते थे। “मुझे लगता है सुबह मैं कुछ अधिक ही बोल गया था,” हनुमान ने स्वीकार किया।

“नहीं। आपकी बुद्धिमता स्पष्ट है। यह आपकी शक्ति है। समय के साथ हासिल की गई शांति युद्ध में हासिल की गई विजय से बेहतर है। पहाड़ियों पर जल रही उन सारी हरी रोशनियों को देखें, उन बेचारों को देखें जो हर रात चौकस जगे रहते हैं, हमारी नींद के लिए अपने होशो-हवास बनाए रखते हैं। युद्ध आने वाले शत्रु को हरा सकता है, मगर उस शत्रु का क्या जो हमारे मस्तिष्कों में आ बैठता है, भय, अविश्वास, संदेह का शत्रु? हम उस स्थिति में जीने लगे हैं।”

“यह सच है। मैं इस चांदनी को या इस सौंदर्य को उस तरह नहीं सराह सकता जैसे कभी सराहा करता था। मेरा मन प्रसन्नता की स्थिति में जाता है और अचानक ही किसी सकपकाए खरगोश की मानिंद उछल पड़ता है। क्या वह कोई छाया है? या वह चट्टान अभी हिली थी? क्या वह पेड़ अपने भयंकर पंजों के साथ मेरे ऊपर टूट पड़ेगा?”

“आपके हाथ भी ऐसे ही चलते हैं जैसे आप युद्ध में हों, हनुमान,” वैष्णवी ने कहा।

“ऐसा ही हो रहा है, वैष्णवी,” हनुमान ने कहा, और हाथ जोड़कर देवी की प्रार्थना करने लगे। “मैं रोकना चाहता हूँ मगर मेरे मन का कोई अंश कहता है रुक मत, बल्कि अभ्यास कर, बार-बार कर, कल्पना कर कि वे बर्बर लोग तेरे मित्रों को चोट पहुंचा रहे हैं, और कल्पना कर कि तेरे घूंसे और कोहनियां पत्थरों की तरह उनके सिर और सीनों पर पड़ रहे हैं।”

वैष्णवी कुछ नहीं बोली। हनुमान की सांसों की आवाज ने सन्नाटे को भर दिया था।

उन्होंने आगे बढ़कर अपना हाथ हनुमान के सीने पर रख दिया। उनके हृदय की गति तीव्र हुई, और वह भय, फिर आशा, आतंक और फिर एक विचित्र सी पवित्रता की भावनाओं से भर गया। वैष्णवी ने धीरे से सिर हिलाया और मुस्कुरा दीं।

हनुमान को अपनी धड़कन धीमी होती महसूस हुई, और उनके भीतर उभरता क्रोध शांत हो गया। “देवी मुझे क्षमा करें; इतने सुंदर स्थान पर मैंने कैसे आग उगलते शब्द बोले हैं!” वे हंस पड़े।

“आओ, यहां बैठकर सुनते हैं,” वैष्णवी ने कहा।

अपने बीच में बच्चे को बिठाकर हनुमान और वैष्णवी वहां बैठ गए और दूर

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

कहीं देखने लगे। वैष्णवी धीरे-धीरे एक कोमल, मधुर गीत गुनगुनाने लगीं। हनुमान को अहसास हुआ कि वे देवी के सहस्र नामों का जाप कर रही हैं, मगर शब्दों को उच्चारे बिना। इसका प्रभाव जादुई, और शांतिदायक था। दूर कहीं हरे पत्थर टकराए, चमके और धुंधला गए।

हनुमान घास पर लेट गए और धीरे-धीरे सो गए। ये सब देवी की सृष्टि हैं, यह सुंदर राजकुमारी, यह विचित्र बालक, यह मायावी वादी। वह भय और क्रोध जो वे महसूस कर रहे थे, भटकाव मात्र थे। वे कुछ नहीं बदल पाएंगे। वे उन्हें नहीं बदल पाएंगे।

वे सो गए, लगभग एक ऋतु पहले, किञ्चिंधानगर में अपने माता-पिता के साथ बिताई अंतिम रात के बाद पहली बार इतनी अच्छी नींद सोए थे।

जब उनकी आँख खुली, तो कुछ पग दूर वैष्णवी अभी सो ही रही थीं। मगर वह बच्चा जा चुका था।

Novels English

24

सेनाओं का जमावड़ा



अगली सुबह, समाचार तेज़ी से और एक साथ अनेक दिशाओं से आया। दो गणपतियों का अग्रिम दल आया, जिनके पीछे-पीछे पंछियों का एक झुंड आया जिनके अस्पष्ट शब्दों से पता चला कि संभवतया और मदद पहुंचने वाली है। फिर प्रातःकालीन प्रार्थनाओं के कुछ ही देर बाद दक्षिण से एक अत्यंत अप्रत्याशित अग्रिम दल आया।

“यह क्या है!” वैष्णवी ने धीरे से कहा। दल के शुरू में एक कामचलाऊ सी पालकी थी और उसके अंदर उनका मोर लेटा हुआ था, स्पष्ट रूप से असहज और परेशान सा। “इन मूर्खों ने किया क्या है?” उन्होंने अपनी सेविकाओं से पूछा, जो समान रूप से हैरान थीं।

मानो संकेत पाकर वाली की सेना के दो सदस्यों ने पालकी का कपाट खोल दिया और मोर को फुसलाकर निकालने की कोशिश करने लगे। वह मोटा और अस्थिर सा दिख रहा था।

सैनिक नीचे बैठे और उन्होंने मोर की ओर इशारा किया। “हे राजकुमारी, हमारे राजा शक्तिशाली वाली सम्मान सहित आपके सुंदर दूत को वापस करते हैं।”

मोर विरोध में चीखा और वैष्णवी को फिर से देखकर राहत पाकर लड़खड़ाता हुआ पेड़ों में चला गया।

विश्वामित्र ने उन्हें आश्वस्त किया कि कोई गंभीर बात नहीं है। उत्तर उस सामग्री में निहित था जो सैनिक अपने कंधों पर ढोकर लाए थे: केले, नारियल और आम के ढेर। उन्होंने पंछी को इतना भोजन खिलाया था जिसका वह आदी नहीं था, और इतना लादकर भी लाए थे जो पूरी कृष्टु के लिए पर्याप्त मालूम दे रहा था।

इस बात से आश्वस्त होकर कि वैष्णवी अपने पंछी की आवभगत से प्रभावित हुई हैं, वाली की सेना अब सर्गव और उद्घोषणाएं करने लगी। स्वामी वाली, किञ्चिंधानगर के राजा, पठार और दोनों दिशाओं में नदी माता के किनारों के संरक्षक, चारों दिशाओं और तीनों ऊंचाइयों के हितैषी रक्षक, निर्भीक सैनिकों की शक्तिशाली सेना, निष्ठावान सेवकों, और सब प्रकार की तैयारियों के साथ उत्तर की राजकुमारी वैष्णवी और उन सभी की सहायता करने आ रहे हैं जो किञ्चिंधा से बाहर स्थित विचित्र संसारों से आए संकट का सामना कर रहे हैं।

वैष्णवी की सेविकाओं ने विनम्रता से दूतों को धन्यवाद दिया, और उन्हें राजकुमारी की गुफा से बहुत दूर एक वाटिका में ले गई। उनके आतिथ्य से प्रसन्न होकर सेना के युवा न केवल अपने राजा की प्रशंसा में, बल्कि उनकी सुंदर राजकुमारी, और देवी सरस्वती की भी प्रशंसा में जयकारे लगाने लगे, यद्यपि अंत में वे कोई भी उच्चारण ठीक से करते प्रतीत नहीं हुए।

इस सबके बीच, भालू संतुष्ट दिखाई दे रहे थे। चूंकि वे पहले आ गए थे, तो उन्होंने सबसे अच्छे पेड़ों के नीचे और झील के सबसे निकट अपने शिविर लगा लिए थे।

“भद्र जामवंत,” एक बुजुर्ग से भालू योद्धा ने धीरे से कहा, “आपको विश्वास है कि हमें आना चाहिए था?”

“आपको लगता है मैंने भी उनसे यह नहीं पूछा होगा?” जामवंत ने अपने अनूठे स्वर में उत्तर दिया।

*

दोपहर तक, वादी अनेक भिन्न भाषाओं में अनेक आवाजों द्वारा पूछे जा रहे अनेक प्रश्नों में व्यस्त रही। एक बार फिर विश्वामित्र सब जगह थे, अनुवाद करते, बीच में पड़ते, और सबसे अधिक तो अफवाहों और मिथ्या धारणाओं का खंडन करते, जिनमें एक विशेष रूप से बेतुकी थी कि दक्षिण के शक्तिशाली राजा वाली और उत्तर की प्रभावशाली राजकुमारी वैष्णवी के विवाह की घोषणा की जाने वाली है। “नहीं, नहीं, और फिर से नहीं,” शीघ्र ही विश्वामित्र चिल्ला रहे थे। “उत्तर के आगे बर्बर लोग हैं—नहीं, ये भालू हैं, हमारे मित्र—बर्बर कहीं अधिक घातक हैं। रुको। रुको। कुछ ही समय में हम सभा करेंगे।”

“हे राजकुमारी,” जब विश्वामित्र राजकुमारी की गुफा में पहुंचे तो उन्हें कहना ही पड़ा, “मुझे लगता है कि हमें आपकी सेविकाओं को दूसरे कामों में लगा देना चाहिए। मुझे भय है कि युवाओं का यह नया दल जिसे वाली ने भरती किया है, भली ज्ञानियों के लिए कुछ अधिक ही उद्दंड है।”

“चिंता न करें, ऋषिवर,” वे मुस्कुराई। “वाली के आदमियों ने अगर मेरी सैनिकों को वास्तव में भला समझने की भूल की तो मैं उनके लिए ही चिंता करूँगी।”

विश्वामित्र को यही अंदेशा था। मगर इस आश्वासन से सहायता मिली। उन्होंने हाथ उठाकर हृदय से राजकुमारी और अन्य सभी को आशीर्वाद दिया। आज के दिन वे सबको बहुत आशीर्वाद दे रहे थे।

आशा थी कि देवी उन्हें देख रही हों, और उनका हाथ दयालुतापूर्वक विश्वामित्र के सिर पर भी फिर रहा हो।

*

हनुमान अंततः अपनी व्यर्थ खोज से वापस आ गए। वादी के आसपास की किसी पहाड़ी या पेड़ पर उस लापता बच्चे का कोई चिह्न नहीं था। जब हनुमान ने वशिष्ठ को यह समाचार सुनाया तो उन्होंने कोई विशेष प्रतिक्रिया नहीं की, बल्कि बेपरवाही से कुछ ज्ञानियों में निकल गए। जो भी हो, हनुमान को यही लगता रहा

कि स्वयं को सोने देकर उन्होंने राजकुमारी और कृषि दोनों को निराश किया है। किसी सुदूर प्रतिध्वनि की तरह कृक्षराज का स्वर उनके मस्तिष्क में गूंज रहा था। अक्षम हनुमान। उपद्रवी हनुमान।

हनुमान ठहर गए। और, पहली बार, वे उनके शब्दों के विचार पर हँस दिए। अब इससे कोई अंतर नहीं पड़ता था।

जिस तरह से पत्तियां कुचली गई थीं, और निगरानी पर तैनात पहरेदारों ने शोरगुल की सूचना दी थी, उसके आधार पर हनुमान ने निष्कर्ष निकाला था कि वह बद्धा दक्षिण की ओर निकल गया है, और इस तरह कम से कम उसके अपने हिंसक समूह में लौटने की आशंका तो नहीं थी। शायद किसी दिन, अगर ऐसा होना होगा तो, देवी उसे एक बेहतर जीवन की ओर ले जाएं।

स्वाभाविक रूप से, सुग्रीव आश्वस्त नहीं था, और उसने अपनी खोज देर तक जारी रखी। उसका मानना था कि वह लड़का अपने समूह को चोरी-छिपे वादी में ला सकता है, इसलिए उसे फिर से पकड़ लेना चाहिए। लड़के के व्यवहार ने सुग्रीव को विश्वास दिला दिया था कि वशिष्ठ ने उसका जो भी उपचार किया है वह असफल रहा है।

अंततः दोपहर देर गए सुग्रीव ने भी हार मान ली। दूर कहीं से बिजली की कड़क जैसी ध्वनि सुनाई दे रही थी। वह पास आती, और तीव्र होती गई।

सूर्यस्त पर, संगीतकारों, गायकों और ताङ के पेड़ की पताका-धारकों का एक जुलूस एक पहाड़ी से नीचे वादी में उतरा। उनके पीछे-पीछे लोगों का समुद्र सा आ रहा था। आखिरकार, भीड़ छंटी और अपने केंद्र में बैठे लाल और नारंगी रंगों में लिपटे दुर्जय व्यक्ति के सामने झुक गईं।

“अन्ना!” सुग्रीव चिल्लाएँ, और खुशी से आंसू बहाते गुफा से नीचे दौड़ पड़े।

“राजकुमारी वैष्णवी,” हनुमान ने शांत भाव से कहा। “ये मेरे चचेरे भाई सुग्रीव के भाई राजा वाली हैं।”

अपनी गुफा से, इतनी ऊँचाई और दूरी से भी वे उस स्नेह को देख सकते थे जिसके साथ वह शक्तिशाली, लाल रंगों में सजा व्यक्ति अपने भाई को गले लगाने के लिए अपनी पालकी से बाहर कूदा था। एक तरह से हनुमान को गहरी राहत मिली थी।

*

वार्तालाप अगली सुबह शुरू हुआ था। जैसा कि विश्वामित्र को अंदेशा था, इस बात को लेकर कोई स्पष्ट सोच नहीं थी कि असल में संकट है क्या। न ही किसी के पास ऐसा कोई विचार था कि इससे किस तरह निबटा जाए। एक तरह से शायद यह अच्छा ही था कि वह बद्धा भाग गया था। उसकी मौजूदगी भ्रामक थी। कोई विश्वास नहीं करता कि कोई इतना छोटा और क्षीण प्राणी किसी निर्मम प्रजाति का हो सकता है।

मगर अब वीर गणपति भी आ गए थे और उनकी बातों में सबसे अधिक वज़न होता था। सारा किञ्चिंथा मानता था कि इस तरह के मामलों में गणपति का कथन अंतिम होता है, यद्यपि किसी को याद भी नहीं कब से ऐसा कोई मामला सामने

आया ही नहीं था।

अपने सारे तामज्जाम भरे प्रदर्शन के बाद वाली अचानक बहुत विनम्र और तत्पर प्रतीत हो रहा था, शायद अपने भाई से स्लेहपूर्ण मिलन होने के कारण। उसने हनुमान से भी स्नेह से और इस तरह से बात की कि उसने वैष्णवी का ध्यान भी खींच लिया था।

“कुछ लोग अपनी आंखों से, समकक्षों के समान, दूसरों की आत्माओं से मिल लेते हैं,” उन्होंने चुपके से विश्वामित्र से कहा, “हे ज्ञानी गुरु, मगर हनुमान के साथ मैं कह सकती हूँ कि हमारे राजसी मेहमान उस सारे तामज्जाम के बिना कभी सुलह नहीं कर पाते जो वे अब अपने साथ लाए हैं। वे हनुमान से समकक्ष की तरह मिल रहे हैं क्योंकि अब वे राजा हैं। पहले उनमें शायद इस विश्वास की कमी थी कि वे कभी हनुमान को उस रूप में समझ पाएंगे जैसे वे हैं।”

विश्वामित्र मुस्कुराए, और उन्होंने शांति और आशीर्वाद की मुद्रा बनाई, जो कि अब उनकी आदत बन गई थी। वैष्णवी सही कह रही थीं।

वाली की पिछली मूर्खताएं जो भी रही हों, मगर अब वह युद्ध के लिए तैयार था। उसने वास्तव में वैसा कुछ भी नहीं देखा था जिसका सामना हनुमान, सुग्रीव और गणों ने किया था, मगर यह सच अपने स्थान पर था कि उसके पास पर्याप्त रूप से दक्ष और बहुत ही समर्पित सेना थी। वाली की सेना के सदस्य कच्चे थे, मगर उनके अंदर इस स्तर की प्रेरणा थी जिसे कोई और महसूस नहीं कर सकता था, और वह प्रेरणा यश पाने की थी। वाली की तरह उन्होंने भी केवल शांति काल देखा था जो बहुत लंबे समय चला था, और वह आनंद-लोक उनकी प्रकृति को दबा रहा था। वे लड़ाइयां, और उन लड़ाइयों की कहानियां चाहते थे जिन्हें वे अपने पोते-पोतियों को सुना सकें।

*

वीर गणपति ने सभा का आरंभ किया। “मित्रो, हमारे कोई भी शब्द उस आतंक को बयान नहीं कर सकते जो हम अपने संसार के सामने मौजूद इस नए अनजान संकट को लेकर महसूस कर रहे हैं। साधारण शब्दों में कहें तो हत्यारों की एक प्रजाति हमारे उत्तरी क्षेत्रों में प्रकट हुई है, जिसे न परम धर्म का कोई ज्ञान है, न अपनी संतानों के प्रति स्वेह है।”

उनके स्वर में वही प्रभाव था जिसकी विश्वामित्र को अपेक्षा थी। इसने अपनी गंभीरता को लेकर संदेह की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी थी।

मगर हनुमान अपने सामने उपस्थित चुनौती को भी समझ रहे थे। उनके अलावा और किसी ने उन जीवों को नहीं देखा था। ऐसी संभावना थी कि अन्य सभी या तो उन्हें कम आंकेंगे, या शायद इस तरह समझते हुए शुरू करेंगे और फिर उनके विरुद्ध लड़ते हुए उम्मीद खोने की दूसरी चरम स्थिति में चले जाएंगे।

“जैसा कि ऋषि विश्वामित्र ने आप में से अनेक लोगों को बताया है,” गणपति ने कहना जारी रखा, “महाप्रस्थान स्थल पर इस नस्ल के लोगों के साथ हमारी दो आमने-सामने की भयानक मुठभेड़ हुई थीं। और वह भी, उन लोगों के लिए यहां से बस कुछ ही दिनों की दूरी पर जो पहाड़ी रास्तों को जानते हैं। हम अनुमान लगा

सकते हैं कि वे अब तक यहां नहीं आए हैं क्योंकि उन्हें रास्ता नहीं मिला है या शायद इसलिए कि मौसम ठंडा हो गया है, और पहाड़ी रास्ते अब हिमपात से भर जाएंगे। मगर कुछ ही समय में वे रास्ता खोज लेंगे क्योंकि वे बुद्धि में कम नहीं हैं।”

“हां, वक्र बुद्धि में,” एक मुखिया ने घृणा से कहा।

“यह हो सकता है। मगर अभी तो यही वास्तविकता है।”

“सुदूर उत्तर के बालदार गणेशों ने इसका सामना कैसे किया?” पीछे से किसी ने पूछा जिससे शर्मिंदगी भरी खुसुर-पुसुर शुरू हो गई।

गणपति ने अपना सिर झुका लिया। “हम मानेंगे कि हमारे उत्तरी मित्रों ने हमें चेतावनी देने के लिए अपने प्राण गंवा दिए। वे जीवित नहीं बचे। हमारा मानना है कि हिम-मरुस्थल के पार उस प्रदेश में इन जीवों के अलावा अब और कोई शेष नहीं है।”

“पश्चिम में?” उसी स्वर ने अब थोड़ा सम्मानपूर्वक पूछा।

“हमारे दूत वापस नहीं आए हैं,” गणपति ने कहा। “पूर्व से भी कोई सूचना नहीं मिली है। जहां तक उन क्षेत्रों के परे की बात है जहां हमारे पूर्वज महानायक श्री वराह गणपति ने हमारे रहने के लिए भूमि खोजी थी, तो हमारे पास वहां का भी कोई समाचार नहीं है।”

“वराह गणपति कौन हैं?” हनुमान ने इस आशा से धीरे से विश्वामित्र से पूछा कि शायद यह कोई और शक्तिशाली योद्धा है जो उनकी सहायता कर सकता है।

“एक प्राचीन किंवदन्ती,” विश्वामित्र ने भी धीरे स्वर में कहा। “लोग कहते हैं कि जब समुद्र से भयंकर प्राणी निकले और उन्होंने हाथियों को खा लेने की धमकी दी तो उन्होंने अपने छह हाथी दांतों से अकेले ही उन्हें हरा दिया था, और सारे हाथियों को सुरक्षित समुद्र के पार ले गए।”

“क्या ये प्राणी भी समुद्र से आए हो सकते हैं जिनका अब हम सामना कर रहे हैं? या शायद उनके वंशज हैं?” हनुमान ने पूछा।

विश्वामित्र ने इस पर सोचा, फिर सिर हिलाते हुए जताया कि उनके पास इसका उत्तर नहीं है।

“तो यह स्थिति है, मित्रो,” गणपति ने बात समाप्त की। “हमारे लोक के सबसे ज्ञानी और बहादुर नायक यहां उपस्थित हैं। अब आप सबको इस संकट को दूर करने के उचित उपाय पर विचार करना है।”

“ये जीव रहते कहां हैं?” वाली ने पूछा। “उनके आने से पहले ही मेरे सैनिक उनके यहां धावा बोलकर उन्हें हरा सकते हैं। बस हमें रास्ता दिखा दें, गणपति।”

बाहर खड़े वाली के प्रशंसकों ने समर्थन में शोर मचाया। उसने उन्हें शांत रहने का इशारा किया।

“मुझे नहीं लगता कि वे इतने सभ्य हैं कि हमारी तरह घर-परिवार में रहें, भाई,” अब सुग्रीव बोला। “यह कल्पना करना मुश्किल है, मगर वे ऐसे ही हैं। वे हत्या करते हैं, खालें जमा करते हैं, और आगे बढ़ जाते हैं अपने अगले शिकार की तलाश में। बस।”

“उनके शिविर तो होंगे? शायद नदी किनारे हों? मुझे विश्वास है कि उनके समान शक्तिशाली प्रजाति का कोई शक्तिशाली मुखिया तो होगा ही, और उसका कोई स्थान भी होगा जहां वह अपनी भेंटों को देखता होगा, कोई ऐसा स्थान जहां वे

लाशों को जमा करते और बांटते होंगे।”

सुग्रीव ने प्रायश्चित्स्वरूप अपने कान छुए मगर यह जाहिर नहीं होने दिया कि वह वाली के कथन की निर्ममता से आहत हुआ है।

वाली ने ऊंचे स्वर में कहना जारी रखा। “हमें उनके मुखिया को चुनौती देनी होगी, और मैं उसे परास्त कर दूँगा।”

उसके प्रशंसकों ने फिर हुंकारा भरा।

गणपति उसी धैर्य के साथ बोले जिसके लिए उनकी प्रजाति विख्यात थी। “आपकी उपस्थिति के लिए हम कृतार्थ हैं, शक्तिशाली वाली। अगर यह सामने आता है कि इन प्राणियों का किसी तरह का कोई धर्म है, भले ही वह कोई विकृत धर्म हो, तब यह संभव हो सकता है कि हम बहुत अधिक दुख-तकलीफ के बिना अपना लक्ष्य पा लें, अपने लिए भी और उनके लिए भी।”

“बहुत सही कहा, गणपति,” विश्वामित्र मुस्कुराए। “मुझे लगता है कि सबसे पहले तो हम सबके सामने यह स्पष्ट होना चाहिए कि हमारे लक्ष्य क्या हैं। अधर्म के सामने जो कि निश्चय ही यहां हमारे सामने है, और संघर्ष की तीव्रता में जो कि हम निश्चय ही आने वाले दिनों में देखने वाले हैं, अपने लक्ष्यों को भूल जाना सरल होगा। जहां धर्म केवल न्याय और सुरक्षा की आज्ञा देता है, वहां अग्नि का ग्रास बनना, और बदले एवं दंड के पीछे भागना सरल होगा।”

“हां, हां, मैं सहमत हूं,” वाली ने कहा। “मगर पहले हमें उन पर नियंत्रण पाना होगा, क्या यह सही नहीं है?”

गणपति सहमत थे।

“तो फिर चलते हैं, हम उत्तर की ओर बढ़ते हैं जब तक कि उन्हें पा नहीं लेते, और फिर अच्छी तरह उन्हें पाठ पढ़ाएंगे,” वाली ने प्रसन्नता से कहा।

उसकी सेना एक बार फिर अनुमोदन में हुंकार उठी।

इस बार राजकुमारी हंस पड़ीं। उनका उत्साह मासूम था, और बहुत ख़तरनाक भी। “हे शक्तिशाली वाली,” उन्होंने कहना आरंभ किया, “उत्तर किञ्चिंधा की वाटिका नहीं है। जिस किञ्चिंधा को आप जानते हैं, वह यहां समाप्त हो जाता है। इसके आगे महापर्वतों के पार निर्जन भूमि का अंतहीन विस्तार है। वहां न कोई पेड़ हैं, और न आपकी सेना के लिए कुछ दिन से अधिक भोजन है; और अब वहां का मौसम भी असाधारण रूप से दुश्वार होगा।”

वाली निराश दिखने लगा।

“मगर उनके कल्याण की चिंता न करें। हमारे ऊपर देवी की असीम अनुकंपा है कि यहां हम लंबे समय तक मोर्चा ले सकते हैं।”

“तो हम बस उनके यहां आने की प्रतीक्षा करते रहें? बैठे रहें और प्रतीक्षा करें?” वाली ने कहा।

“प्रतीक्षा करना गुण है, मित्रो, मगर यह सबके लिए नहीं है,” गणपति हंस पड़े। “हमें अपने स्वभाव के अनुरूप आचरण करना चाहिए, मगर प्रकृति के गुरुतर कल्याण के संतुलन में रहते हुए।”

हतुमान इस टिप्पणी पर मुस्कुरा उठे। ऐसा लग रहा था मानो देवी सरस्वती ने स्वयं गणपति को निर्देश दिया हो कि इतने सुस्पष्ट शब्दों में उनके उद्देश्य को स्पष्ट करें।

“हममें से कुछ चलते हैं, कुछ प्रतीक्षा में बैठे रहते हैं। कुछ के पास गति है, कुछ में शक्ति है। मगर हम सबके हृदयों में धर्म है। इसलिए हमें सोचना चाहिए। हमारी सारी प्रजातियों द्वारा अब मिलजुलकर काम करने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग क्या है? हमारे लिए धरती और मौसमी बलों के साथ एकजुट होकर काम करने, और जितना आवश्यक है, उससे अधिक विपक्ष में न जाने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग क्या है?”

“मैं गणपति से सहमत हूं,” वैष्णवी ने कहा। “उत्तर की ओर लंबा अभियान आवश्यकता से अधिक महंगा साबित होगा, हमारी वादी तक आपर्ति रेखा फैली होने के बाद भी। यहां घेराव डालने की तैयारी करना भी व्यर्थ साबित होगा। हमें उन्हें बीच में खींच लाने, और वहां उलझाने का कोई रास्ता निकालना होगा।”

“और हम जानते हैं उन्हें क्या बाहर खींच लाता है,” सुग्रीव ने कहा, शायद कुछ अधिक ही व्यावहारिक अंदाज़ में, और जल्दी से जोड़ा, “मगर हम यह सुनिश्चित करेंगे कि अब किसी को कोई हानि न पहुंचे।”

गणपति मुस्कुराए। सुग्रीव जैसे अदना से व्यक्ति में भी उनके बंधु-बांधवों की रक्षा का दम भरने का आत्मविश्वास था। यही वस्तुतः धर्म का जीवन और भावना थी। शक्ति और आकार मायने नहीं रखते। केवल दूसरों के प्रति उदारता का भाव मायने रखता था, क्योंकि उदारता से उपजी बुद्धिमता कूरता के उनके अभाव की पूर्ति कर सकती थी। “सुग्रीव सही कहते हैं। हमें इन जीवों के बारे में अपनी जानकारी से लाभ उठाना चाहिए। और हम उनके बारे में यह जानते हैं कि वे मेरे भाई-बहनों के मांस के लिए सब कुछ दांव पर लगा देंगे।”

“यानी जाल,” वाली ने कहा।

“आत्म-सुधार के लिए आमंत्रण, हम इसे यह कहेंगे,” हनुमान ने तीखेपन से अपनी ऊंगली उठाई, वाली की बात काटने के अपने दुस्साहस पर वे चकित थे।

और अपने छोटे चचेरे भाई की बुद्धि और विवेक पर अपने तौर पर वाली भी धीरे से मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।

25

एकजुट बहनें



“हम कब...” रूमा ने कहना शुरू किया।

“अभी नहीं, बहना,” तारा धीरे से बोली। “हम अपने वाली और सुग्रीव के निकट हैं, और हमने उन्हें देख लिया है, अभी के लिए यही पर्यास है।”

“सुग्रीव पतले और क्षीण लग रहे हैं। तुमने उनकी बांहों और टांगों पर खरोंचें देखीं?” रूमा ने कहा।

तारा हँस पड़ी। “हम स्वयं भी बहुत सुंदर नहीं लग रही हैं। अंतिम बार हमने स्नान कब किया था भला?”

रूमा भी हँस पड़ी। “किसे पता था कि लड़कों का ध्यान न खींचने के लिए बस न नहाना ही पर्यास है?”

“सुनो,” तारा ने आगे कहा। “सेना के इस सारे अभियान और इतना चिल्लाने के बाद लगता है अब आखिरकार कुछ होगा। कुछ तो झगड़ा होगा। और जैसा सब लोग कह रहे हैं, यह उन सारे झगड़े-टंटों से बहुत भिन्न होगा जो हमने घर में देखे हैं। यह काटने-फाड़ने और धर्म-पर-बिना-विचारे क्रिस्म की लड़ाई होगी।”

“मगर इस तरह तो वाली के सैनिक बात करते हैं।”

“यह सच है। मगर अब लगता है कि वे सारी बातें सच होने जा रही हैं। तुमने देखा उन्हें कैसे प्रशिक्षण दिया जा रहा है? तुमने देखा कि हनुमान और विश्वामित्र कितनी सावधानी से सैनिकों की जांच करते हैं और उन्हें उनके कार्यों से हटा ले जाते हैं?”

“तुम्हें लगता है वे हमें खोज लेंगे? हनुमान, या विश्वामित्र?”

“फिलहाल तो नहीं खोज पाएंगे। यहां ऐसे बहुत लोग हैं जो इसलिए साथ चले आए हैं क्योंकि वे अभियान को लेकर उत्सुक थे और अब बस सिर छिपाए रखना चाहते हैं। इनमें से कोई भी अपने माता-पिता से भी कभी दूर नहीं रहा है, किसी असली युद्ध की तो बात ही छोड़ो। अगर हम अनुत्साहित दिखेंगे तो ऐसे हम अकेले नहीं होंगे। तो अभी के लिए हम भी अपना सिर छिपाए रहेंगे। याद रखो, कभी भी कोई भी स्वयंसेवियों की मांग लेकर आता है तो हम उत्तर नहीं देंगे। सही पल हाथ आने तक हम दबे-छिपे रहेंगे।”

“वह पल क्या होगा, अक्षा?”

“जब दोनों भाई यह समझने के लिए पूरी तरह से तैयार हो जाएंगे कि वे हमारे लिए क्या मायने रखते हैं। यह हो सकता है कि पहले यह युद्ध समाप्त हो, और वे जो जश्न आदि मनाना चाहें, वे समाप्त कर लें। मगर तब तक देवी की कृपा से हम यहां हैं, और हम राजकुमारी वैष्णवी की बादी के आतिथ्य का आनंद लेंगे।”

“वहां तुम, और तुम,” अचानक एक खुरदुरे से स्वर ने उन्हें पुकारा। “तीसरे संस्कार में लड़कों को तकती चचेरी बहनों की तरह लिपटकर खी-खी कर रही हो? स्वामी वाली हमें यहां युद्ध लड़ने के लिए लाए हैं। जाकर उस निगरानी दल में शामिल हो जाओ जो पहाड़ियों के लिए निकल रहा है।”

“इसके पूर्वजों की पूँछ सड़ें...” रूमा ने धीमी आवाज़ में उसे कोसा।

तारा ने चारों ओर देखा। उसका ध्यान ही नहीं गया था कि उनके आसपास के सारे लोग चले गए हैं। अब इससे निकलने का कोई रास्ता नहीं था। “शुभकामनाएं,” उसने धीरे से रूमा से कहा। वे खड़ी हुईं और झटपट उन सैनिकों के समूह की ओर चल दीं जो एक पहाड़ी पगड़ंडी की ओर जा रहा था।

“जय वाली!” उस खुरदुरी सी आवाज़ ने पीछे से हुंकारा लगाया।

“जय वाली,” तारा ने जोश से कहा, और फिर बनावटी क्रोध से अपनी बहन से बोली, “लेकिन जब भी यह मेरे पास चापलूसी करने आएगा तो इसके लिए इसे मेरे बाग की निगरानी करनी पड़ेगी।”

“मैं समझ नहीं पाई, अक्षा,” रूमा ने कहा। “हम अपने प्रियतमों के पास रहने के लिए इतनी विस्तृत और अंतहीन भूमि पार करके आए हैं, और अभी भी अपने बिछोह को बढ़ा रहे हैं।”

“अरी, बहना,” तारा हंसी। “कोई हैरानी नहीं कि तुम्हें सुग्रीव पसंद है और मुझे वाली। बस।”

*

जब वे पहाड़ी के शिखर पर पहुंच गईं तो तारा और रूमा ने एक दूसरे से कुछ दर्जन गज़ दूर दो पेड़ों पर मोर्चे संभाल लिए। उनकी शेष टुकड़ी उनके दाएं-बाएं के स्थानों पर जम गई थी। दूर उनके नीचे चलती-फिरती आकृतियों और छायाओं का समुद्र, जो कि सेना थी, धीरे-धीरे बादी की शांति और निस्तब्धता में समाने लगा था।

“याद रहे,” टुकड़ी के नायक ने धीरे से कहा, “तुम इस पेड़ के तने और इस चट्टान को इस तरह तकती रहोगी जैसे कि ये तुम्हारे अपना माता-पिता हों, और इनके बीच में सब कुछ तुम्हारे अपने भाई-बहन हों।”

“जी, श्रीमान्,” रूमा और तारा ने कहा।

“किसी छाया या पत्ते से अधिक कुछ भी हिले तो तुम चेतावनी की आवाज़ निकालोगी। चेतावनी के लिए दो आवाजें, अधिक संकट के लिए केवल एक।”

“जी, श्रीमान्,” उन्होंने फिर से उत्तर दिया।

अंधेरा तेज़ी से उत्तरा, और हवा में ठंडक आ गई। फिर पेड़ों में छिपे दूसरे सैनिकों की छायाएं भी जल्दी ही अंधेरे में घुलने लगीं, और यहां तक कि रूमा और तारा भी एक-दूसरे को मुश्किल से ही देख पा रही थीं।

“जगी हो न?” तारा ने आखिरकार धीरे से पूछा।

“हां, बहन।”

“अच्छा है। बस पता कर रही थी। हमें चौकस रहना चाहिए।”

“काश उन्होंने हमें वे हरे पत्थर दे दिए होते। उससे हमारे पास कुछ तो करने को होता।”

“हम इतने वरिष्ठ नहीं हैं! इतने प्रशिक्षित भी नहीं हैं!”

पेड़ों में छिपे संतरियों में से एक ने कुछ आवाज़ की जिसका अर्थ तो नहीं, मगर मंशा पूरी तरह स्पष्ट थी। वह कुछ था।

तारा और रूमा ने धीरे से चिड़ियों की तरह चहचहाने की आवाज़ की, मानो उसे चिढ़ाने के लिए, मगर फिर चुप हो गई। इतने दिनों से कोई टकराव नहीं हुआ था मगर वह सही था। उन सबके वहां होने के कारण की गंभीरता को भुला देना अनुचित था।

*

रूमा को सबसे पहले गंध महसूस हुई थी। पहले तो वह दूर से आती लगी, मानो हवा के साथ आई हो। फिर यह बहुत निकट लगी, मानो उनके नीचे से ही आ रही हो।

वह सोच ही रही थी कि चेतावनी दे या नहीं। हो सकता है यह रात में निकलने वाले किसी जीव की गंध हो, किसी ऐसी प्रजाति की नहीं जो उनके समान साफ़-सुथरे नहीं रहते हैं।

मगर फिर भी, रूमा ने सोचा, किञ्चिंधा के अधिकांश प्राणियों को जब अपने शरीर के प्राकृतिक अपशिष्टों को निकालने का कार्य करना होता है तो वे अन्य प्राणियों की उपस्थिति से दूर जाते हैं। वे पसंद नहीं करते कि कोई उन्हें दुर्गंध से जोड़कर देखे।

क्या वह खुरदुरे स्वर वाला सैनिक जानबूझकर उन्हें किसी अस्वच्छ क्षेत्र में लाया है?

एक संतरी ने आवाज़ की। ये दो आवाजें थीं, आम चेतावनी की। रूमा ने तारा को देखा। अंधेरे में भी उसकी आंखें सफेद और खुली हुई थीं। वह एकटक उनके सामने स्थित चट्टान को देख रही थी।

चट्टान के बगल में एक आकृति सी थी जो पहले वहां नहीं थी। शायद कोई छाया थी, और वह चांदनी के कोण के साथ हिल गई थी।

मगर आकाश में बदली थी, और चांद दिख भी नहीं रहा था।

अचानक छाया हिली और फिर लगभग पूरे आकार में उठ गई। उसने अपने हाथ ऊपर उठाए, और किसी भाषाहीन पशु की भाँति चिल्लाया।

“रूमा, मेरे पीछे, जल्दी,” तारा चिल्लाई, और शाखा से कूद पड़ी। धरती पर उस जीव की दुर्गंध और भी तीव्र थी।

रूमा ने एक शाखा तोड़ ली थी और उसे तारा को थमा दिया। तारा ने उसे उठाया और उस जीव पर गुराई।

वह जीव अब और गुराया और उसने अपने हाथ ऊपर उठा लिए। उनमें वह कुछ पकड़े हुए था—पत्थर।

“बगल से मोर्चा बनाओ, बगल से मोर्चा बनाओ,” कोई चिल्लाया, अब तक

शेष निगरानी दल सहायता करने के लिए पेड़ों से उतर आया था।

उस जीव ने अपने हाथों में पकड़े पत्थर तारा पर फेंके, और वे उसके पैरों से कुछ अंगुल दूर धरती पर टकराए। तारा पीछे हट गई और उसने अपनी शाखा ऊंची उठा ली।

वह जीव कुछ पग आगे बढ़ा और फिर ठहर गया।

तारा ने ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की। यह बहुत कुछ वैसा ही था जैसा वाली की सेना अपने नक्ली युद्धों में अभ्यास करती थी। उसने योजना बनाई। जब वह जीव पास आएगा तो वह नीचे झुककर उसके पैर खींच लेगी। वह अपनी पीछे की टांगों पर बहुत अधिक भरोसा कर रहा है। अब तक एक बार भी उसने अपनी अगली टांगें धरती पर नहीं टिकाई थीं।

वह अपने हमले की तैयारी कर ही रही थी कि उसके पीछे एक आवाज़ हुई, और फिर चारों ओर होने लगीं। दुर्गंध तेज़ी से और बिना किसी रहम के आई थी। वे जीव सब दिशाओं से उन पर कूद रहे थे।

“जय माता सरस्वती!” तारा चिल्लाई जबकि पीछे से एक जीव की बांहों ने उसे गिरफ्त में ले लिया था। उसने देखा कि रूमा भी गिर गई है और एक अन्य हमलावर के नीचे लोटपोट हो रही है। दुर्गंध असहनीय थी, और उसकी बांहों और कंधों में चुभन हो रही थी मानो उस जीव के हाथों में कांटे हों।

तारा ने अब दूसरे जीवों को भी अपनी ओर भागते देखा, और बिना कुछ सोचे वह अपने हाथों के सहारे ज़मीन से कूदी और पीछे को उछली जब तक कि उसकी टांगें उस जीव के सिर पर नहीं लिपट गईं। उसे महसूस हो रहा था कि वह जीव उसकी अंदरूनी जंघाओं को तोड़ने की कोशिश कर रहा है। उसकी बांहों और सीने की गंध से तारा का दम घुट रहा था। और उसकी टांगों के दबाव से उस जीव पर कोई असर पड़ता नहीं लग रहा था। इसलिए वह पीछे झुकी, और जैसे वह पेड़ से नारियल तोड़ती है उस तरह से उसने ठीक उस जगह लात मारी जहां उसका चेहरा था। वह जीव दर्द से बिलबिला गया और उसने तारा को छोड़ दिया।

झटपट वह दूसरे जीवों के हाथों से बचती उस जीव तक पहुंची जो रूमा के ऊपर सवार था। भयंकर चीख के साथ उसने उसके कान पकड़कर खींच लिए।

रूमा पलटी और उसने अपने नाख़ूनों से उसके चेहरे को खरोंच डाला जब तक कि वह दर्द से चिल्लाने नहीं लगा। वह पीछे हटा, और उसने लात चलाकर मदद करने आगे आए एक दूसरे संतरी को कीचड़ में लुढ़का दिया।

अब वह पहला जीव उनकी ओर आया जिसे तारा ने लात मारी थी। उसके हाथ में एक बड़ा सा नुकीला पत्थर था। उसने उसे ऊपर उठाया और लक्ष्य तलाशने लगा। तारा और रूमा खड़ी हो चुकी थीं और भाग सकती थीं मगर नीचे गिरा संतरी हिल भी नहीं पा रहा था, और उसकी सांस उखड़ रही थी। वह जीव क्रोध में उसकी ओर मुड़ा और उसने सीधे उसके सिर पर पत्थर फेंक दिया।

रूमा इस आसन्न अपाचार को देखकर चिल्ला उठी, मगर तभी पेड़ से बवंडर जैसा कुछ नीचे उतरा और उसने पत्थर को पकड़ लिया।

वे हनुमान थे।

“सब रुक जाएं!” हनुमान चिल्लाए। उनके पीछे तेज़ी से एक सफेद आकृति आई और उसने चरचराहट की आवाज़ के साथ एक डंडे के किनारे पर चमकती हुई

पीली आग जला दी। वे विश्वामित्र थे।

सभी जीव अपनी चोटों की देखभाल करते, उदास निगाहों से उन्हें देखते एक पंक्ति में खड़े हो गए। रोशनी में अब सब स्पष्ट था। वे वाली के सैनिक थे, उनकी ही तरह, कीचड़, सुखे पत्तों और किसी ऐसी चीज़ में लिपटे जिससे दुर्गम्भ आ रही थी। अपनी पूँछें उन्होंने पेटी की तरह कमर पर बांध रखी थीं ताकि पहचाने न जा सकें।

“रुक जाएं,” हनुमान ने दोनों पंक्तियों को शांत करने के लिए अपनी हथेली उठाते हुए फिर से कहा। “यह असली हमला नहीं है! यह अभ्यास है! आप किष्किंधावासी हैं और बंधु हैं। कहिए यहा।”

विश्वामित्र ने कोमल स्वर में यह कहा, और फिर धीरे-धीरे सबको इसे दोहराने के लिए प्रोत्साहित किया। तारा को महसूस हुआ जैसे शीतल हवा उसके अंदर जाकर उस आग को शांत कर रही हो जो अभी भी उसके शरीर के सारे हिस्सों में फैली हुई थी। उसके मन का एक हिस्सा कह रहा था कि उन जीवों ने उसे और उसकी बहन को चोट पहुंचाने की कोशिश की थी। एक अन्य हिस्से ने केवल उनके दुखी चेहरे, उनके घाव देखे, और उन्हें क्षमा कर दिया।

“हमें क्षमा करें, नेक सैनिको,” विश्वामित्र ने दोनों पंक्तियों के लोगों से कहा। “बहुत जल्दी ही हमारा जिससे सामना होने वाला है, उसकी तैयारी करने का यही एक तरीका है। इस गंध को याद रखें, क्योंकि आपको जो गंध आएगी वह और भी घिनौनी होगी। फिर भी आपको उसे गले लगाना होगा, बांहें, टांग और हाथ पकड़ने होंगे जो आपके जैसे नहीं होंगे मगर फिर भी आपके जैसे होंगे। आपको इस नुकीले पथर जैसे और इससे भी बुरे अस्त्रों से स्वयं को बचाना होगा। और इस सबके दौरान भी आपको अपना धर्म याद रखना होगा, और देखना होगा कि कैसे उन्हें नष्ट किए बिना आप उन्हें परास्त कर सकते हैं।”

“आप लोगों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है, सैनिको,” हनुमान ने जोड़ा। “अब आपको मुक्त किया जाता है, आप वादी में विश्वाम करने के लिए जा सकते हैं।”

जब सब जाने लगे तो हनुमान पंक्ति में सबसे अंत में खड़े व्यक्ति के पास गए और आश्वासन देते हुए उसके कंधे को छुआ।

“भाई हनुमान,” रुमा ने रोते हुए कहा और उनसे लिपट गई।

*

अगली सुबह तक तारा और रुमा बहुत बेहतर दिख और महसूस कर रही थीं। दोनों एक-दूसरे से चिपकी हुई थीं, उस ठंडे पानी से अभी भी कुछ भीगी हुई जिससे वे नहाई थीं। राजकुमारी वैष्णवी स्नेह और आनंद से उन्हें देख रही थीं। इस प्रसंग से वे अब सुग्रीव, और विशेषकर वाली, को भिन्न दृष्टि से देखने लगी थीं। वे प्रभावित थीं कि युद्ध से जुड़ी अपनी सारी बातों के पीछे अंतरतम से वे सामान्य किष्किंधावासी थे जिन्होंने इन दोनों युवा बहनों का प्यार जीत लिया था।

“यह तुम्हारी बहादुरी थी, तारा, और रुमा, तुम्हारी भी,” वाली ने अपनी आशा के अनुसार उचित रूप से औपचारिक और विनम्र स्वर में कहा था। फिर वह लगभग ऐसा कुछ कहने ही जा रहा था कि उनकी अनुपस्थिति से उसकी मां कितना चिंतित होंगी, मगर उसने स्वयं को रोक लिया। उसके जाने बिना, तारा की योजना

काम कर रही थी। अपनी मां की दमदार उपस्थिति से दूर वाली अपने दम पर खड़े होना सीख रहा था। उसकी आंखें मुस्कुरा उठीं।

“हम यहां तुम्हारा साथ देने और युद्ध में तुम्हारी सहायता करने आए हैं,” रूमा ने असामान्य हठधर्मी से कहा। “इतने दिनों से हमने देखा-सुना है कि सैनिक क्या सोच रहे हैं। वे युवा हैं, और बहादुर हैं। किंतु संकट सामने आने पर अगर उन्हें पलटकर भाग खड़े नहीं होना है तो उन्हें हम सबसे बहुत कुछ चाहिए होगा।”

“संकट की बात क्यों करती हो, रूमा...” सुग्रीव ने कहना आरंभ किया।

हनुमान मुस्कुराए। “अगर हमारे अभ्यासों के दौरान कोई भागता है, तो वह संकट की ओर होता है, सुग्रीव, उससे दूर नहीं। मगर मैं रूमा के मत की सराहना करता हूं। हम किसी भी बात को आंख मूँदकर नहीं मान सकते।”

“और इसीलिए, मैं कहता हूं कि नक्षत्र अनुकूल हैं और देवी ने स्वीकृति दे दी है,” विश्वामित्र ने ताली बजाई और हंसने लगे।

“किस काम के लिए?” वाली ने कुछ अचंभित होते हुए पूछा।

“बेशक तुम्हारे विवाह के लिए,” विश्वामित्र ने अपनी तर्जनी को व्यावहारिक ढंग से उठाते हुए कहा। “युद्ध की तैयारियों के बीच विवाह का प्रबंध करने से अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं है!”

“हमारा उद्देश्य यह नहीं था...” तारा ने कहना आरंभ किया।

“किंतु, ऋषिवर...” वाली कहने लगा।

“अपनी बातें एक-दूसरे के लिए बचाकर रखो,” विश्वामित्र ने ताली बजाते हुए कहा, और फिर अपने हाथों, पैरों और पूँछ से गुलगपाड़ा मचाने लगे। वे अब लगभग मसखरे से लग रहे थे मानो उत्सव भी उतना ही महत्वपूर्ण हो जितना कि युद्ध का प्रबल प्रशिक्षण। “हे राजकुमारी वैष्णवी, आपकी अनुमति से हम आज ही इन्हें वचन पढ़ा देते हैं।”

वैष्णवी ने हनुमान को देखा। वे उनके लिए प्रसन्न दिख रहे थे। क्या ऐसा भी कुछ था जो उन्हें लगता था कि उन्हें चाहिए? क्या उनके मन में ऐसा विचार आया था जो कहता हो, तुम प्रसन्न हो, परेशानियों से विरक्त और उचित कार्य से संतुष्ट, ठीक उसी तरह जैसे देवी कहती हैं; मगर संभवतः तुम इस संभावना पर विचार कर सको कि तुम और भी अधिक प्रसन्न हो सकते हो?

“राजकुमारी वैष्णवी?” विश्वामित्र ने फिर से पूछा।

“यह हमारा सौभाग्य होगा कि हम महाबली राजा वाली और भद्र राजकुमार सुग्रीव का सुशील राजकुमारियों तारा और रूमा के साथ विवाह का आयोजन करें,” उन्होंने कहा, उनका चेहरा सूरज की भाँति दमक रहा था।

जामवंत ने हल्की, गहरी और तेज़ आवाज़ की जो दूर मौजूद लोगों को जम्हाई जैसी लगी हो सकती है। मगर थी नहीं। उन्होंने कहा, “शुभमस्तु,” और फिर उठे और उन्होंने हनुमान को जामवंत शैली में गले लगा लिया।

*

जैसी विश्वामित्र ने अपेक्षा की थी, युद्ध शिविर के तनावपूर्ण माहौल में विवाह की प्रत्याशा ने सैनिकों को प्रसन्न होने का कारण दे दिया था। हाथियों ने युद्ध के काले

चिह्नों को धो डाला और चमकीले रंगों से सजकर आए जैसा कि शुभ अवसरों पर उनकी परंपरा थी। वैष्णवी की सेविकाएं यहां-वहां भागती वादी की ओर निकली एक चट्टान पर समारोह के आयोजन के लिए झटपट मंडप तैयार कर रही थीं और सई जैसे पत्तों वाले पेड़ों के शिखरों से फूलों की लंबी लड़ियां पिरो रही थीं। उनके नीचे सैनिक लंबी और प्रसन्नमना पंक्तियाँ में बैठे थे, जबकि अन्य उन्हें ऐसे शानदार और रंगीन फल प्रदान कर रही थीं जो उन्होंने कभी देखे भी नहीं थे।

इस बीच वशिष्ठ एक अग्नि के पास अपने शिष्यों के साथ बैठे एक कटोरे जैसे पथर में कुछ चला रहे थे। उससे बहुत अच्छी सुगंध उठने लगी थी।

सैनिकों की पंक्ति में हनुमान और विश्वामित्र घूम रहे थे। अपनी लंबी यात्रा और पिछले कुछ दिनों के और भी कड़े प्रशिक्षण के बाद वे प्रसन्न और तरोताज़ा दिख रहे थे। यहां-वहां वे वैष्णवी की सैनिकों के साथ भी बैठे हुए थे जो अब तक अपने आप में सीमित रहती आई थीं।

“प्रेम के लिए कितना सुंदर दिन है, हनुमान,” विश्वामित्र ने कहा।

“देवी अप्रत्याशित रूप से कृपालु हैं,” हनुमान ने उत्तर दिया। “किसने सोचा होगा कि इतने मुश्किल और भयंकर प्रशिक्षण अभ्यास की परिणति आज इतने सुखद दिन में होगी?”

“कृपा जब आए, तभी उसे स्वीकार करना महत्वपूर्ण है, हनुमान,” विश्वामित्र ने आगे कहा। “और इसीलिए मैंने आग्रह किया। वाली निस्संदेह पहले अपना युद्ध जीतना चाहता था। तारा भी स्वाभाविक रूप से चाहती थी कि पहले वह अपना युद्ध जीत ले कि कहीं वह उसे अपने कर्तव्यपालन की राह में भटकाव न समझने लगे। मगर ताज़ा हवा का एक झाँका भी अच्छा है। देखो, इनके आत्मबल पर इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है, सुनो ये सैनिक क्या कह रहे हैं।”

यह सच था। हनुमान को पिछले कई दिनों की अपेक्षा कहीं अधिक मुस्कुराहटें दिख रही थीं। सैनिक घर में छूटे अपने प्रियजनों की, अपने मित्रों की बातें कर रहे थे, और कि वापस पहुंचने पर वे क्या करेंगे, और हां, कि कैसे उन्होंने बहुत पहले ही तारा और रूमा को पहचान लिया था मगर निष्ठा के कारण कुछ नहीं कहा था। यह बिल्कुल पाषाणनगरी के किसी सामान्य दिन जैसा लग रहा था।

जामवंत ने उन्हें आते देखा और सिर उठाकर संकेत किया कि वे कुछ कहना चाह रहे हैं। जब हनुमान निकट पहुंचे तो उन्होंने बस उनकी बांह थामी और चिल्लाकर विश्वामित्र से कहा, “हे ऋषिवर, आप इस लड़के का क्या करने वाले हैं? क्या हमें इसके भी तृतीय संस्कार के प्रबंध करने आरंभ नहीं कर देने चाहिए?”

हनुमान हैरान थे कि इतना सब हंगामा क्यों है। यह कहते हुए कि पीछे वाले लंबे पेड़ की सजावट नहीं हुई है और इससे पहले कि कोई और उसके ऊपर चढ़े और उस शुभ दिन पर गिरकर चोट खाए, उन्हें उस पर चढ़ना होगा, वे उन सब शरारत भरी बातों से दूर हट गए।

मगर जो महत्वपूर्ण था, वह विश्वामित्र और जामवंत ने देख लिया था। वैष्णवी ने भी उनकी बातें सुनी थीं, और महत्वपूर्ण यह कि वह मुस्कुरा दी थीं।

26

सरस्वती का ज्ञान



वाली और सुग्रीव ने अपने तृतीय संस्कार में तारा और रूमा के साथ सुपारी के पत्ते बदले और सबके भोज करने, और आनंद और प्रेम के गीत गा चुकने के बाद कोमल शाखाओं, घास और पताकाओं से आपस में बंधी दो छोटी नावों में नदी में और वादी के आसपास कुछ सुखद समय साथ बिताने के लिए चले गए।

वादी के चारों ओर की सीमा पर विश्वामित्र ने जिन पंछियों को पूरी तरह चौकस रहने के लिए तैनात किया था, उन्होंने अभी तक किसी संकट की सूचना नहीं दी थी। मगर फिर भी विश्वामित्र ने कुछ पंछियों को आदेश दिया था कि नवविवाहित जहां भी जाएं, वे हवा में उनके पीछे-पीछे रहें।

उनकी अनुपस्थिति में हनुमान और वैष्णवी ने अभियान की तैयारियों का दायित्व ले लिया था। इस तरह के समय में एक तैयार सेना विवाह का सर्वश्रेष्ठ उपहार होगी, विश्वामित्र ने कहा था, और हनुमान ने हमेशा की तरह उनके कथन को गंभीरता से लिया था।

जब तक सुखी दंपती पहाड़ियों में घम-फिर कर लौटे, हनुमान वास्तव में तैयार थे। उन्होंने सैनिकों को प्रभावी इकाइयों में संगठित कर दिया था और वाली के लौटने पर उनके बारे में उसे बताया।

“ये, महावीर राजा वाली, आपके टोही हैं। ये आपके ढिंडोरची और पुकार लगाने वाले हैं, और इनकी आवाज दुश्मन की चीखों और गालियों को दबा देगी और आपके योद्धाओं को प्रेरित करेगी। ये निस्संदेह आपके योद्धा हैं जिन्हें हमने तीन समूहों में बांटा है। ये दुर्जय कुश्ती और आमने-सामने की लड़ाई में पारंगत पारंपरिक टुकड़ी है। इनके साथ जामवंत के सैनिक रहेंगे। फिर हमारे पास हमारी छोटी, मगर अत्यंत महत्वपूर्ण, महिला योद्धा हैं जिनमें राजकुमारी वैष्णवी की सैनिकों के साथ ही किञ्चिंधानगर की हमारी अपनी कुछ बहनें भी हैं। हां, आपके तृतीय संस्कार के बाद हमें पता चला कि और भी हैं!”

वाली उलझ सा गया था।

हनुमान ने समझाया। “हमें उनकी आवश्यकता पड़ेगी क्योंकि हमारे विपरीत हमारा दुश्मन अपनी मांओं और बच्चों को भी युद्ध में झोंकने को लेकर कुछ नहीं सोचता है। और हमारा धर्म हमें सिखाता है कि स्त्री-पुरुषों में कोई भेद नहीं है सिवा

—”

“—युद्धकाल के,” वाली ने अब अनमनेपन से हनुमान की पीठ थपथपाते हुए कहा। उन्होंने इस उद्दंड, नायक को पूजनेवाले योद्धा दल को बदलकर क्या बना दिया है!

“स्त्री दुश्मन के सामने आने पर हो सकता है हमारे सैनिक उस तरह न लड़ें जैसे उन्हें लड़ना चाहिए,” हनुमान ने आगे कहा। “या इससे भी बुरा यह कि अगर वे लड़ते हैं तो यह धर्म के अनुरूप नहीं होगा। तो, हमारी बहनें यह सुनिश्चित करेंगी कि उनकी बर्बर बहनें नियंत्रण में रहें।”

“यह तो बहुत अच्छा है, हनुमान,” वाली ने कहा, अब उसके स्वर में प्रशंसा वास्तविक थी।

“किंतु और भी है, श्रेष्ठ राजन,” हनुमान ने कहा, और अब वे वास्तव में मुस्कुरा भी रहे थे। पहली बार वाली ने हनुमान के चेहरे को ध्यान से देखा, और उन चीज़ों को देखा जिन पर उसने कभी ध्यान दिया ही नहीं था। उनके चिह्न—वे उन्हें कितना केसरी चाचा जी की तरह दर्शाते थे। मगर फिर भी हनुमान में एक विशिष्ट सौम्यता भी थी, अंजना चाची की तरह। वे दो पूरी तरह भले लोगों का सटीक मेल थे। पहली बार वाली ने हनुमान को वैसे देखा था जैसे वे थे, और स्वयं को भी देखा जैसा वह था। अपनी मां से दूर, अपनी प्रियतमा के प्रेम में रत, शासक के रूप में अपने कर्तव्य निर्वाह को तैयार, वाली संतुष्ट था। वाली को अहसास हुआ कि उसकी कृतज्ञता में संतोष था।

“और ये सैनिक,” हनुमान ने किनारे पर खड़े सैनिकों के एक छोटे समूह की ओर इशारा किया, “एक ऐसी चीज़ लिए हैं जो धर्म को क्षीण किए बिना हमारे धर्म युद्ध में सहायता करेगी।”

“उठाओ। शक्ति!” इकाई का नायक चिल्लाया।

पांव पटकते और दहाड़ते हुए सैनिकों ने उस वस्तु को उठाया जो उनके पास रखे पेड़ के छोटे तनों जैसी दिख रही थी। हर छड़ी के सिरे पर एक छोटी, गोल, भारी वस्तु थी।

“ऋषि वशिष्ठ इन्हें गदा कहते हैं,” हनुमान ने बताया। “वे कहते हैं कि ये उन्हें नदी किनारे पड़े विष्णु पत्थरों की याद दिलाती हैं।”

वाली हैरान था कि ऐसी साधारण सी वस्तु के बारे में उसने पहले क्यों नहीं सोचा। वे आसानी से दुश्मन के शरीर को तोड़े बिना उन्हें घुटनों पर, और धरती पर गिरा सकती थीं।

“वे परास्त करेंगे, मगर आवश्यक नहीं कि नष्ट भी करें,” हनुमान ने कहा। उन्होंने सेनानायक की ओर संकेत किया और दो लोगों से प्रदर्शन करने को कहा।

दोनों में से लंबे-चौड़े आदमी ने दो नुकीले पत्थर उठाए और अपना मोर्चा संभाल लिया। छोटे आकार का सैनिक सामने कुछ पग दूर अपनी गदा लेकर खड़ा हो गया। दोनों ने वाली को प्रणाम किया, और फिर अचानक लंबे वाले ने अपने उठे हाथों में पकड़े पत्थरों से छोटे वाले पर हमला बोल दिया।

छोटा सैनिक निश्चल और शांत खड़ा रहा, और फिर तेज़ी से की गई हरकतों के साथ उसने अपने विरोधी के बार का जवाब दिया, उसके पैरों पर बार करके गिरा दिया और उसके सिर पर अपनी दुर्ज्य गदा रखकर खड़ा हो गया।

“परास्त करें, मगर नष्ट नहीं। यही हमारा धर्म है,” हनुमान ने फिर से कहा।

वाली ने सैनिकों की ओर प्रशंसासूचक सिर हिलाया, और वे अपनी पंक्तियों में लौट गए। फिर वह हनुमान की ओर मुड़ा और धीरे से अपना दायां हाथ उठाकर उसने उनके कंधे पर रख दिया। “प्रिय हनुमान,” उसने निष्कपट और स्नेहपूर्ण स्वर में कहा, “मैं या हमारा लोक तुमसे प्रिय मित्र कभी नहीं पा सकते।”

सुग्रीव ने रूमा की दी हुई माला के फूलों को सूंघना बंद किया और उन दोनों को देखा। उसे अपने सौभाग्य पर विश्वास नहीं हुआ। पहले तो, उसकी रूमा यहां। फिर उसका विवाह। और अब पुनर्मिलन, इतने समय बाद। वह आगे बढ़ा, और उस छोटे भाई की तरह जिसे सबके जीवन में अपने स्थान का विश्वास होता है, उसने उनकी मित्रता और बंधुत्व को देखकर मन ही मन व्यग्र भाव से प्रार्थना करते हुए एक हाथ वाली की पीठ पर रखा और दूसरा हनुमान की, और मुस्कुराते हुए उनके बीच आगे को झुक गया। दोपहर की धूप में उनके पैरों में उनकी एक ही छाया बन रही थी। देवी ने चाहा तो वे भाइयों के रूप में वापस जाएंगे। प्रत्येक की सांस अपनी अलग आवाज़ कर रही थी, और फिर धीरे-धीरे हनुमान की अगुआई में उन्होंने अपनी सांसों को ‘ओम’ के सतत प्रवाह में बदल दिया।

सेना देवी सरस्वती के धर्म के लिए तैयार थी।

*

वीर गणपति ने आखिरकार युद्ध के लिए सही स्थान चुन लिया। उत्तर के विशाल पर्वत अब हिम से पूरी तरह ढक गए थे, और यह असंभव मालूम देता था कि वे जीव उन्हें पार करेंगे। अगर वे दक्षिण में उनकी ओर बढ़ रहे थे, जैसा कि भय था, तो यह मुमकिन था कि वे उत्तर-पश्चिमी दर्रों से पर्वतों के आसपास धीमे-धीमे आगे बढ़ेंगे। इसी स्थान पर युद्ध लड़ा जाएगा।

इसी के अनुरूप, अनेक हाथी परिवारों को उस क्षेत्र को छोटे दायरों में घेरने के लिए भेजा गया। गणपति को आशा थी कि वे जीव हाथियों का पीछा करते हुए ऐसे स्थान पर आ जाएंगे जहां उन्हें हराया जा सकेगा। फिर शायद, जैसा कि ऋषि का आग्रह था, किसी प्रकार की कोई औषधि उन्हें दी जा सकेगी, यद्यपि भगोड़े बच्चे की हरकतों ने उन्हें कुछ हताश कर दिया था।

सूर्योदय से कुछ पहले गणपति ने अपनी प्रार्थना समाप्त की। नायक एक घेरे में आमने-सामने खड़े थे जबकि विश्वामित्र द्वारा जलाई गई पवित्र अग्नि तड़तड़ाने लगी थी। वशिष्ठ ने प्रत्येक नायक की कलाई में पतला लपेटा हुआ एक छोटा सा पत्ता बांध दिया, गणपति ने इंगित किया कि वे उसे उनकी सूंड में बांध सकते हैं।

फिर जब सूरज ऊपर आया, तो विश्वामित्र ने आकाश की ओर संकेत करके घोषणा की कि युद्ध के नक्षत्र सही स्थान पर हैं। शुभ मुहूर्त आ पहुंचा था।

शंख बजाने का सम्मान उनकी बहादुर और सुसभ्य आतिथेय को दिया गया। राजकुमारी वैष्णवी ने उसे अपने होंठों तक ले जाकर फूंक दिया। एक नई ऊर्जा का संचार करती ध्वनि सारी वादी में फैल गई। पीछे खड़े सैनिक फुसफुसाने लगे कि उन्हें रानी के पीछे से उभरते आठ हाथ दिख रहे हैं, आग से भरे, तूफान में घिरे पेड़ों की तरह प्रहार करते।

वादी में मौजूद हर आवाज़ की घोर हुंकार के साथ उन्होंने अपना प्रयाण शुरू किया। इस भव्य दृश्य को देखने सैकड़ों पंछी पेड़ों से उड़कर ऊपर चक्कर काटने लगे थे, वे प्रसन्न थे कि उन्होंने भी अपनी भूमिका निभाई थी।

जब तक सैनिकों की अंतिम पंक्ति निकली, सूरज आकाश में चढ़ चुका था।

*

जब वे डूबते सूरज की दिशा में बढ़ रहे थे तो प्रतिदिन प्राकृतिक दृश्य बदल जाता था। जल्दी ही वे हरी-भरी वादियों और वैष्णवी की प्रजा की पहाड़ियों से एकदम भिन्न स्थान पर पहुंच गए। वातावरण अभी भी ठंडा था जिससे आभास हो रहा था कि वे समुद्रतल से बहुत ऊँचाई पर हैं। मगर एक के बाद एक स्थित पर्वत शृंखलाओं और लंबे-लंबे पेड़ों की बजाय वे सूखी मिट्टी, और पीली एवं लाल चट्टानों के अंतर्हीन प्रदेश में पहुंच गए थे जहां यहां-वहां ज्ञाड़ियों के झुंड और छोटे-छोटे पैड थे।

“मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे हम वापस महाप्रस्थान के क्षेत्र में पहुंच गए हों, हनुमान,” सुग्रीव ने कहा।

“ऐसा लगता तो है—हमारे गृहस्थान की अपेक्षा कितने कम पैड हैं,” हनुमान सहमत थे। फिर उन्हें मुस्कुराने का कारण मिल गया। “किंतु अगर देवी ने चाहा तो यह स्थान महामिलन स्थल के रूप में जाना जाएगा। शायद यहीं हम उस सारे ज्ञान और औषधियों से अर्धम को रोकेंगे जो हम ऋषियों के रूप में अपने साथ लाए हैं।” हनुमान ने सम्मानपूर्वक अपने पीछे चल रहे वशिष्ठ के शिष्यों की पंक्ति को देखा जिनके कंधों पर जड़ी-बूटियों के बड़े-बड़े रहस्यमय गठुर लदे थे।

“तुमने हमें अत्यंत शक्ति और साहस से भरी सेनाओं से सुसज्जित कर दिया है, हनुमान,” सुग्रीव ने कहा। “मगर तुम अभी भी इस तरह बात कर रहे हो जैसे तुम्हें आशा हो कि युद्ध होगा ही नहीं।”

“मुझे आशा है कि हम जो चाहते हैं उससे संघर्ष करेंगे, और जल्दी ही करेंगे, सुग्रीव। हमारे मित्र गणेश बहुत कुछ गंवा चुके हैं, और हमारे शत्रुओं को लुभाकर यहां तक लाने में वे अभी भी अपनी जान जोखिम में डाल रहे हैं। मगर मुझे आशा है कि हमारी मुठभेड़ उतनी हिंसक और अर्थहीन नहीं होगी जैसी कि पहले रही थी।”

“तुम्हें लगता है कि अब हम उनसे बात कर पाएंगे, उन्हें समझा पाएंगे?” सुग्रीव ने पूछा।

“किञ्चिंधा में विश्वामित्र जहां भी गए हैं, वहां संबंध जोड़ने में शायद ही कभी असफल रहे हैं। अगर हम इन जीवों के भीतर सुलग रही अग्नि को बुझाने के लिए बुद्धिमानी से अपनी शक्ति का प्रयोग कर सकें तो शायद हम उन्हें ऐसी स्थिति में लासकते हैं जहां वे फिर से धीरे-धीरे स्वयं को देवी की सृष्टि के अंग की तरह देखने लगेंगे।”

“काश तुम सही कह रहे हो, हनुमान,” सुग्रीव ने कहा। फिर वह वाली की ओर मुड़ा, जो उस स्थल के सौंदर्य को सराहते हुए विचारों में गुम दिख रहा था। “तुम क्या सोच रहे हो, भाई?”

वाली मुस्कुराया। वह धीरे से मुड़ा ताकि उसके घुटने पर सिर रखकर सो रही तारा की नींद में बाधा न पड़े। खुली पालकी के हिलने-डुलने से यह हो सकता था।

“उन शिखरों को देख रहे हो?” उसने एक ऊँची, खड़ी चट्टान की ओर इशारा करते हुए कहा। “एक दिन लोग यहां से गुज़रेंगे और कहेंगे, ‘ये चट्टानें वाली, सुग्रीव और हनुमान सरीखे महावीरों सी दिखती हैं।’”

“तुम्हें लगता है वे सच में हमें महावीर मानेंगे?” सुग्रीव ने पूछा।

“मुझे क्या पता?” अब वाली ने कंधे झटके। “अगर, जैसा हनुमान कहता है, शांति की विजय होगी तो शायद लोग इन चट्टानों को देखें और कहें, ‘ये भद्र और प्रबुद्ध संतों वाली, सुग्रीव और हनुमान जैसी दिखती हैं।’”

वे हंस पड़े, और वाली सबसे ज़ोर से हंसा, उसने तो अपने हंसने में तारा को लगभग जगा ही दिया था।

*

पहली निगाह में नदी का आकार और भव्यता उनसे चूक गई थी। कठोर पत्थरों वाले और शृंष्ठक प्रदेश में यह संकरी, छोटी और साधारण सी लगी थी। मगर जब विश्वामित्र उन्हें सही स्थान पर ले गए, तो उन्होंने अपने नीचे फैली वादी के विस्तार को देखा। नदी चौड़ी और धीमी थी, और उसके दोनों किनारों पर दूर तक हरियाली फैली हुई थी।

“उतनी प्रचंड नहीं है जितनी हमारे क्षेत्र में सरस्वती नदी है, मगर फिर भी यह बहुत सुंदर है,” सुग्रीव ने कहा।

“बुरा नहीं है, युद्धभूमि के लिए यह बुरा नहीं है। अगर हम वाक्रई उन्हें यहां ला पाएं तो,” वाली ने अपनी पालकी से उतरते हुए कहा।

गणपति भी पहाड़ी पर उनके पास चले आए। उन्होंने धीरे-धीरे प्रत्येक दिशा में अपने कान घुमाए, और फिर हामी भरी। “यह अच्छा है। मुझे लगता है मैं सुदूर पश्चिम में अपने बंधुओं के पैरों की आवाज़ सुन रहा हूं।”

“यानी उन पर धावा नहीं बोला गया,” वाली ने कहा।

“नहीं। मुझे ऐसा नहीं लगता,” गणपति ने उत्तर दिया, क्षण भर को उन्होंने सोचा कि क्या वाली का मतलब इसका उलटा था। मगर वह भी देख सकते थे कि अपने विवाह के बाद से वाली कहीं अधिक गंभीर और सम्मानपूर्ण हो गया था। “आपकी प्रार्थनाओं के लिए शुक्रिया।”

“हम आपके क्रृणी हैं, गणपति,” वाली ने कहा।

विश्वामित्र पहाड़ी के एक ओर से नीचे उतरे और उन्होंने जल्दी-जल्दी यहां-वहां उग रहे पेड़ों और वनस्पतियों की जांच करना शुरू कर दिया। उनके पीछे-पीछे उनकी मदद करने के लिए कुछ सैनिक भी थे।

वे लौटे, और फिर उन्होंने हनुमान को निर्देश दिए कि किस तरह सेना को मोर्चाबिंदी करनी चाहिए।

“तो अब इंतजार करें?” वाली ने पूछा।

“हम यही करते हैं,” सुग्रीव ने उत्तर दिया।

*

अगली सुबह टोही दल उस प्रदेश की ओर ज्यादा जानकारी लेकर लौटे। नदी की

वादी विस्तृत थी और मीलों दूर तक फैली थी। पर्वतों से होकर तीन दर्रे थे जिनके पार पश्चिम और उत्तर के रेगिस्तान थे। अगर सब सही रहा तो हाथी जल्दी ही वहां से आते दिख जाएंगे।

चार स्थानों पर शिविर लगाकर एक बड़ा सा वर्ग बनाने के बाद हनुमान ने एक-एक शिविर में जाकर ऐसे स्थानों को चिह्नित किया जहां से उन्हें सबसे अच्छा दृश्य दिखता था।

“आज रात अंधेरा होने के बाद हम फिर से आग जलाकर देखेंगे कि हम एक-दूसरे को कितनी अच्छी तरह समझते हैं,” उन्होंने वशिष्ठ के शिष्यों से कहा जो अपनी आतिशबाज़ी की दक्षता का फिर से इस्तेमाल करने को लेकर उत्साहित थे। “इन जीवों के बारे में जितना हमें पता है, उससे वे रात को ही आएंगे।”

फिर उन्होंने सावधानीपूर्वक चुने सोलह स्थानों पर एक व्यापक गोलाकार परिधि में निगरानी लगाई। उस चतुर छ्ल-बल को देखते हुए जिसके साथ उन प्राणियों ने पहली बार उन पर हमला किया था, वे किसी भी ओर से उन पर टूट सकते थे और हनुमान चाहते थे कि उनकी सेना किसी भी कोण से उन्हें अंदर खींच लाने के लिए तैयार रहे।

सबके मोर्चे, काम और संकेत के नियम तय करने के बाद हनुमान ने सेनापतियों को बुलाया और उनसे अपने सैनिकों को नदी किनारे खड़ा करवाया। फिर उदाहरण स्थापित करते हुए उन्होंने झाड़ी के एक सिरे से कंकड़-पत्थर उठाते हुए धीरे-धीरे नदी की ओर बढ़ना शुरू किया।

“चिकने, गोल पत्थर दे देना ताकि हम उन्हें पहाड़ों में रख सकें। खुरदुरे, नुकीले पत्थरों को नदी की ओर ले जाना।”

एक हुंकारे के साथ सब काम में लग गए, और जल्दी ही नदी का किनारा उन नुकीले पत्थरों से खाली हो गया जिन्हें वे जीव उनके विरुद्ध इस्तेमाल कर सकते थे। वाली ने एक विशेष रूप से घातक पत्थर उठाया और बोला, “तुम कहते हो वे इनसे मांस काट देते हैं?”

हनुमान ने हामी भरी।

वाली उसे अपनी त्वचा में धंसाता रहा जब तक कि उसने लाल धब्बा उभरते नहीं देखा।

“युद्ध की गर्मागरमी में जब हम इन घावों को देखेंगे तो हम भी उन प्राणियों को ऐसी ही चोटें पहुंचाना चाहेंगे,” हनुमान ने कहा।

“मैं समझता हूं, हनुमान। हो सकता है हम यह लाभ गंवा रहे हों, मगर मैं समझता हूं।”

“हम सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारे दुश्मन को भी ये निर्मम लाभ हासिल न हो,” हनुमान ने कहा। “अगर आप सैनिकों को ये दिखाएं तो अच्छा होगा।”

वाली आगे बढ़ा और उसने अपने हाथ में पकड़े पत्थर को उठाया। फिर चीखते और हुंकार भरते हुए उसने एक अर्धवृत्त बनाया और पत्थर को नदी के बीच में गहराई में फेंक दिया।

फिर सैनिक अपने पत्थरों को नदी में जितनी दूर हो सकता था फेंकने लगे।

दूसरी ओर, सैनिकों ने गोल पत्थरों को छोटी-छोटी खेपों में पहाड़ियों पर चढ़ाना शुरू कर दिया।

“परास्त करें, मगर नष्ट नहीं,” राजकुमारी वैष्णवी ने मुस्कुराते हुए हनुमान से कहा।

वैष्णवी को अपने पास खड़ा देखकर हनुमान को खुशी भरा अचरज हुआ। अचानक उन्हें अपने आसपास काम में लगी सेना का शोर-शराबा धुंधला गया सा महसूस होने लगा। वे वैष्णवी की आंखों में कुछ समझने सा लगे थे, कुछ ऐसा जो उन्होंने पहले देखा तो था लेकिन जिसके लिए अब तक उनके पास कोई नाम नहीं था। वे अपने हाथ अपने माथे के ऊपर तक ले गए और नीचे अपने पूर्ण शरीर की ओर इशारा किया।

“ये सब कुछ देवी सरस्वती की कृपा से अस्तित्व में है, राजकुमारी वैष्णवी,” उन्होंने उत्साहपूर्वक कहा। उनकी आंखें इस आशा से भरी थीं कि अंततः कोई है जो उन्हें समझेगा। “यह त्वचा, यह चेहरा, ये आंखें। हम यह नहीं देखते कि अंदर क्या है, लेकिन युद्ध में हम देखेंगे। यह एक निराशापूर्ण दृश्य है, और जो भी इसका सम्मान करता है कि शिशु के निर्माण में एक मां को क्या छिलना पड़ता है, वह इसे नहीं देखना चाहेगा।”

“बैठ जाइए, हनुमंत, अपनी चिंताओं के संसार से दूर हो बैठ जाइए और मुझे बताइए।”

हनुमान दूसरी दिशा में देखने लगे जैसे अभी करने को और बहुत से काम हैं इससे पहले कि वे आराम करने का सोच सकें। लेकिन वे राजकुमारी से अधिक महत्वपूर्ण कुछ और नहीं सोच सके।

“सच में, बैठ जाइए,” उन्होंने हठ किया।

हनुमान ढलान पर उनसे हाथ भर नीचे बैठ गए। वे देख रहे थे कि राजकुमारी की पहरेदार किस प्रकार खड़ी थीं: उनसे एक सम्मानजनक दूरी पर, किंतु निरंतर सतर्क। वे अक्सर सोचते थे कि उन्हें संबोधित करने का सबसे अच्छा तरीका क्या होगा। मित्रता और घनिष्ठ बातचीत की उस एक रात ने उन्हें महसूस कराया था कि वे उनसे उसी तरह बात कर सकते हैं जैसे सुग्रीव से, पूरे भरोसे के साथ; लेकिन वे एक राजकुमारी थीं, और एक ऐसी मित्र थीं जो किसी भी अन्य से भिन्न दिखाई देती थीं।

वे तट पर थोड़ा नीचे को फिसल आई ताकि हनुमान का चेहरा आंख के स्तर पर साफ़ देख सकें। “आपने क्या देखा, वीर हनुमान? वह क्या है जो अब हम सब देखने वाले हैं?”

“मैंने अपने जीवन में घाव, गिरना, छिलना, खरोंचें और इसी तरह की चीज़ें देखी थीं, और कुछ नहीं। लेकिन उस रात जो मैंने देखा, जब जीव आए थे... वह... भयावह था। वे अपने दांतों से जीवित प्राणियों का मांस फाड़ देते हैं। यह बड़ा भयानक दृश्य है, राजकुमारी। कौन जानता था कि हम आम या नारियल से भिन्न नहीं हैं? कौन जानता था कि कोई देवी सरस्वती की रचनाओं की गरिमा को इतनी आसानी से फाड़ सकता है?”

“आपने क्या देखा था?”

हनुमान ने अपनी बांह के पास त्वचा को मोड़ा। “यह सब कुछ किसी चीज़ से रुका हुआ है, राजकुमारी। हम लोग इसके बारे में सोचते नहीं हैं। लेकिन जब यह फटता है, तो रक्त बह निकलता है। तब इसकी नग्न भयावहता को देखा जा सकता

है।”

“रक्त की गंध सचमुच डरावनी होती है।”

हनुमान ने उनकी ओर देखा, जैसे उन जैसी उदारमना को वह सब नहीं सुनना चाहिए जो उनके मन को मथ रहा था। “जब शरीर फटता है, और आप रक्त के पार देखते हैं, तो आपको पता लगता है कि अंदर छोटी-छोटी उंगलियां और हाथ हैं।”

वैष्णवी की उंगलियां कुलबुलाईं।

हनुमान हंस पड़े। “बस ऐसी नहीं होतीं। लेकिन हमारे अंदर हर तरह की चीज़ें हैं, वे जो जीवित हैं, हिलती हैं, अपने तरीके से एक-दूसरे से बात करती हैं। और जब वे चोटिल होती हैं, तो ऐसी दिखती हैं। ऐसा लगता है जैसे बच्चों की नन्ही उंगलियां आसमान को जकड़ना चाहती हैं, दर्द से बिलख रही हैं।”

वैष्णवी कांप गई।

“ऐसे में हम क्या करते हैं, वैष्णवी?” व्याकुलता के कारण हनुमान की आवाज़ फुसफुसाहट में बदल गई थी। “यदि कोई बच्चा गिर जाए, तो हम उसे उसकी माँ के पास ले जाते हैं और उसे सांत्वना देते हैं। लेकिन हमारे अंदर के इस जीवन का क्या जो उतना ही कोमल है? मैंने ऋषि को बहुत से कष्टों का इलाज करते देखा है; मैंने देखा है कि वे अपने पत्तों और रस के द्वारा धावों के बावजूद त्वचा को बात करने को मजबूर कर देते हैं, और त्वचा फिर से जुड़ जाती है। लेकिन जब कुछ ज्यादा विनाशकारी हो तब?”

“जैसे युद्धक्षेत्र में छोड़ दिए गए बच्चे।”

हनुमान इस कथन की सटीकता से चकित रह गए। उनके पेट में एक धूंधला सा दर्द उठने लगा। उन्हें उन सारी भयावहताओं का कारण समझना था जो उनकी प्रतीक्षा में थीं, उन्हें सुनिश्चित करना था कि यह न भूलें कि वे कौन हैं और इस सबके आरंभ से पहले किञ्चिंधा क्या था।

“भोजन। यह सारी भयावहता इसलिए है कि उन्हें लगता है हम उनका भोजन हैं। लेकिन हम वह नहीं हैं जो वे हमें समझते हैं। हम पूर्ण जीवन हैं। हम परिवार हैं, मित्र हैं, माता परामर्शदाता हैं। हम जानते हैं कि हम क्या ले सकते हैं और हमें क्या नहीं लेना चाहिए। हम इस प्रार्थना के साथ अपने जीवन का आरंभ करते हैं कि वे हमें भोजन ढूँढ़ने की बुद्धि दें—हमारा प्रथम संस्कार, जिसका आयोजन हमारे माता-पिता हमारे लिए उस समय करते हैं जब हम अपनी पहली सांसें ले रहे होते हैं,” वे बोले। “किंतु वे हमें इससे कहीं अधिक देती हैं, हमें कहीं ज्यादा की आवश्यकता होती है, जिसका हमें अहसास तक नहीं होता। वे हर चीज़ पर शासन करती हैं, वैष्णवी, मैं यह देख सकता हूँ। वह बीज जो केवल हवा और पानी के सहारे बढ़कर एक विशालकाय वृक्ष में बदल जाता है, वह बच्ची जो बड़ी होकर माँ और नानी बनती है, वह आंख जो देखती है, वह जीभ जो बड़ी होते-होते स्वरों के आकारों को सीख लेती है और, सबसे बढ़कर, वह शरीर जो जीवन को एक रहस्य की तरह संजोकर रखता है।”

“सब कुछ।”

“सब कुछ। सब कुछ, सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, रक्त की सबसे छोटी बूँद से विशालतम गणेश तक। रचना का जो भी रहस्य है, सब कुछ घटित हो रहा है, ब्रह्मांड में सब कुछ केवल देवी सरस्वती की बुद्धिमत्ता के कारण अस्तित्वमान है।

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

और इस भयावहता को जो अब हम देखेंगे, हमें यह सब भुलाने नहीं देना चाहिए।”

Novels English & Hindi

27

जीवन का चिह्न



तारा असमंजस में थी कि पहले वाली को बताए या रूमा को। उसने सपना देखा था और जब वह जगी तो एक अजीब सी उत्तेजना के साथ वह सपना उसे याद रहा था। वह विश्वास से नहीं कह सकती थी कि यह उसकी कल्पना थी या उसे अपना हो गया था।

वशिष्ठ जो सभी के क्रियाकलापों से दूर, हमेशा दबे पांव चलते थे, अचानक जैसे किसी निश्चय के साथ तारा की ओर बढ़ आए। वे उसके सामने रुके और अपना हाथ उठाकर कोमल, लयात्मक स्वर में कुछ कहने लगे।

तारा हँस पड़ी। उनमें असाधारण रूप से कुछ वात्सल्य भाव सा था। बेखबर मगर फिर भी मां के समान। उसे स्पष्ट विरोध दिखाई दे रहा था: अगर ऋक्षराज योद्धा समान माता थीं, तो वशिष्ठ उनके विपरीत थे। विश्वामित्र ने कहा था, सभी ब्रह्मर्षि ऐसे ही होते हैं। उनकी त्वचा नर्म व कोमल होती है और उनके मुख चमकदार व स्वच्छ। वे मधुर शब्द बोलते हैं, भले ही कम बोलें। वे रचयिता हैं, और इसीलिए पोषण की प्रवृत्ति उसमें सहज भाव से होती है। शासकों व राज्य के क्रियाकलापों का ध्यान रखने वाले विश्वामित्र जैसे राजर्षि अधिक प्रबल होते हैं।

इतने निकट से वशिष्ठ की इतनी लंबी उपस्थिति किसी के लिए भी सुखद आश्चर्य ही होती, और अपना कौतुक शांत होने के बाद ही तारा उन अद्भुत शब्दों को समझ सकी जो वे कह रहे थे।

शीघ्रता से उसने अपने हाथ जोड़े और सिर झुकाकर नमन किया।

“राजकुमार का अच्छे से ध्यान रखना, पुत्री,” वशिष्ठ ने कहा। “वह विश्व में महापरिवर्तन के कगार पर है।”

*

उस रात वाली ने खूब उत्सव मनाया। उसने मधु के दो छत्ते पूरे चट कर दिए जो भालुओं ने उसे उपहार में दिए थे, और उसने गीत गाया, दौड़ लगाई और जल के किनार शिविर के एकांत स्थान पर नृत्य किया। चार संतरी शिविरों का प्रकाश दूर से झिलमिलाया और धुंधला गया। चार संतरी शिविरों में एक छोटी सी गतिविधि भी हो रही थी। यह बहुत हो-हुल्लड़ भरी तो नहीं थी लेकिन हो रही थी। हनुमान ने

सेनापतियों को उनके योद्धाओं को अपने स्थान पर बने रहने, परंतु खुलकर मौज-मस्ती करने की अनुमति देने का आदेश दिया था। ऐसा समाचार शीघ्र ही फैल गया। उन्होंने गाने गाए, खेल खेले और एक रात भरपूर आराम किया।

उस शांत घाटी में, जहां कोई और नहीं केवल निकटतम व्यक्ति ही जान सकते थे, हनुमान, सुग्रीव और विश्वामित्र बैठे हुए आनंद से अपने राजा को उत्सव मनाते देख रहे थे। अंततः वह दौड़ता हुआ उनके पास आया और उन्हें अपने मधु के छत्ते से मधुपान करने का आग्रह करने लगा।

विश्वामित्र ने समाधि में होने का नाटक किया।

सुग्रीव ने हनुमान को देखा। हनुमान मुस्कुराए और उन्होंने मादक पदार्थ के लिए मना कर दिया। परंतु वे जानते थे कि वह रात सुरक्षित थी। देवी सरस्वती ने चिंताजनक समय के बीच उन्हें एक बार पुनः सुखद समाचार से धन्य किया था। यद्यपि सुग्रीव लिस हो सकता था। उसका मन भी था।

हनुमान मुस्कुराए और सुग्रीव को धौल मारा। “मेरे लिए एक घूट ले लो, मित्र।”

मध्य रात्रि के आसपास चार संतरी शिविरों से रोशनी की एक श्रृंखला आकाश में उठी, जो बहुत कुछ वैसी ही थी जैसी उन्होंने वशिष्ठ की गुफा में देखी थी। यद्यपि यह रोशनी सौम्य थी, और हवा में बहते हुए रंग बदलती थी। फिर बहुत देर बाद, वे उस स्थान व समय के योद्धाओं की घाटी पर मृदु व रंगीन चिंगारियां बिखेरते हुए फूटने लगीं, जिसने कभी रक्त नहीं देखा था।

*

भोर में संतरियों ने खबर दी कि धूल का गुबार देखा गया है। हाथी आ रहे थे। गणपति क्षितिज की जांच करने बाहर गए।

“वही हैं,” उन्होंने अत्यधिक राहत के भाव से कहा। “और वे सुरक्षित हैं।” फिर उन्होंने अपने सैनिकों को उनसे मिलने और घाटी में उनका मार्गदर्शन करने के लिए भेजा।

“अब सब कुछ देवी की इच्छा के अनुसार ही होगा,” विश्वामित्र ने कहा। “अब समय आ चुका है जब हमें अपने-अपने स्थान ग्रहण कर लेने चाहिए।”

हनुमान, वाली, सुग्रीव और जामवंत चतुर्भुज में एक-दूसरे की ओर मुँह किए खड़े थे। प्रत्येक को एक हिस्से को नियंत्रित करना था। हनुमान और गणपति उत्तर की दिशा संभालेंगे और वाली पश्चिम की। जामवंत दक्षिण की दिशा को सुरक्षित रखेंगे और सुग्रीव पूर्व की।

विश्वामित्र ने आशीर्वाद दिया, और चारों सेनापतियों ने अपने मोर्चे की ओर चल दिए।

गुबार निकट आ चुका था, और जल्द ही हाथी और धूल के बीच अंतर किया जा सकता था। हनुमान और गणपति ध्यान से देखने लगे। उनके मनों में अभी भी एक अनकहा भय था जो किसी को नहीं बता सकते थे।

“देवी अब हमें कोई बुरा समाचार नहीं देंगी, गणपति,” हनुमान ने आश्वासन देते हुए कहा। “आज का दिन युद्ध का नहीं होगा।”

गणपति ने इधर-उधर कान फड़फड़ाए। “आशा करता हूं तुम सही हो, युवा मित्र। काश तुम हमेशा सही रहो। जो हम देख रहे हैं अगर वह सत्य नहीं हुआ तो मुझे विश्व में विश्वास नहीं रहेगा।”

हाथी पहुंच चुके थे, और उनके व्यक्तिगत विस्तार व आकार दिखने लगे थे। बालक अपनी माताओं की टांगों से सटकर चल रहे थे, और कहीं-कहीं पहरेदार शेष सब पर हावी हो रहे थे।

“पर्वतों के देवता की जय हो,” गणपति ने राहत की सांस ली। “तुम्हारे शब्दों को तो जैसे देवी ने सुन लिया, हनुमान। यह कोई छलावा नहीं है। मैं उनके हृदय की धड़कन भी सुन सकता हूं। चलो उनका अभिवादन करते हैं, आओ।”

हनुमान और गणपति पहाड़ी से नीचे उतरे और वीर हाथियों के स्वागत को आगे बढ़े।

“वीर गणपति की जय हो,” दल की अधिपति ने अभिवादन में अपनी सूंड उठाई।

“मेरी बहन, मेरी प्रिय नेक बहन,” गणपति उसकी सूंड का आलिंगन करने के लिए दौड़े। “सब ठीक है? तुम्हें कोई क्षति तो नहीं पहुंची?”

“नहीं, बिल्कुल नहीं,” उसने कहा। “उत्तर अभी सुरक्षित है। हमें कोई क्षति नहीं हुई।”

हनुमान मुस्कुराएँ और अपने साथ के एक सेनानायक को निर्देश दिया कि वापस जाकर उचित संकेत करे। सेनानायक ने पुनः सुनिश्चित करने के लिए हनुमान को तीन उंगलियां दिखाई, फिर अभिवादन किया और वापस दौड़ गया।

“बहन, ये श्रेष्ठ हनुमान हैं, गणेशों के मित्र, सभी के मित्र।” गणपति ने हनुमान का परिचय कराया।

“हमारी देवी माता आपको सदा सुरक्षित रखें, हनुमान,” उसने कहा।

हनुमान ने अभिवादन का उत्तर दिया और वह प्रश्न किया जो सभी के मन में था। “आपने क्या देखा, देवी गणपति? मुझे विश्वास है कि आप भय और पीड़ा के दृश्य से बची रही होंगी। लेकिन क्या हमारी योजना कारगर रहेगी?”

“आप देवी के पथ के सच्चे अनुयायी हैं, हनुमान,” उसने कहा। “आपकी शांति हमेशा बनी रहे।”

वह अपने एक सहयोगी की ओर मुड़ी जो दल के पिछले हिस्से की ओर जा रही थी। पल भर बाद वह एक और हाथी के साथ वापस आई, एक टोही जो समाचार लाया होगा, हनुमान ने अनुमान लगाया।

लेकिन बात इससे कहीं अधिक थी। हाथी के पीछे जीवों का एक छोटा छितरा हुआ दल था।

*

“ये क्या है,” गणपति ने आश्र्वय से कहा। “और ये सूर्य से भी नहीं डरते!”

जीवों ने हाथ जोड़कर अपने सिर झुका लिए। अब वे प्रकाश से डरे हुए नहीं लग रहे थे, और कुछ साफ़-सुथरे भी लग रहे थे। वे अधिकतर बच्चे, स्त्रियां और कुछ वृद्ध पुरुष थे।

“इन्होंने हमसे संरक्षण मांगा था, भाई। हम इन्हें मना न कर सके।”

“हाथियों के शिकारी उनसे ही सहायता कब से मांगने लगे?”

“ये हमारी बात सुनते हैं, भाई। और अगर हम धैर्य से काम लें, तो हम भी समझ सकते हैं कि इन्हें क्या कहना है।”

“और इन्हें क्या कहना है?”

“जीव बहुत अधिक हैं, उतने ही जितनी कि पृथ्वी पर रेत है, और वे एक-दूसरे को एवं अन्य सभी को मारने पर तुले हुए हैं। यहां तक कि ये पश्चिम के पश्चियों को भी समास कर चुके हैं, अब आकाश में कोई भी नहीं उड़ता।”

दल की एक वृद्ध महिला दोनों मुट्ठियों में रेत उठाती है और उसे हिंसात्मक व नाटकीय ढंग से एक साथ फेंकती है।

“आशा तो है,” हनुमान ने कहा। “जहां संवाद है वहां देवी का धर्म अंततः स्वयं को स्थापित करता ही है।”

“कदाचित्,” गणपति ने धीरे से कहा, संदेह के साथ। “मैं देख सकता हूं कि वाली क्या कहेगा।”

“इनकी भूख का क्या है, देवी? क्या अब वह इन्हें उस तरह विवश नहीं करती जैसे किया करती थी?”

“ये अपना भरण-पोषण छोटी वस्तुओं से करते हैं। ये संध्या के समय नदी खोजने का प्रयास करते हैं और फिर देर तक उसके किनारों पर फिरते हैं।”

“मुलायम घास? हमारी तरह?”

“नहीं, ये कवचधारी छोटी वस्तुओं का रस पीते हैं। प्रतीत होता है कि वह इन्हें शेष समय में बिना बीमार पड़े चलते रहने के लिए पर्याप्त पोषण प्रदान करता है।”

“क्या इन्होंने यही किया था? ये तुम्हारे पीछे चले?”

“नहीं, इन्होंने हमें अपने कवच प्रस्तुत किए और स्नियां...” देवी गणपति रुकीं, “...चाहती थीं कि हम समझें कि वे माताएं हैं।”

हनुमान ने उन्हें सावधानी से देखा। उन जीवों की तुलना में जिन्होंने उन पर आक्रमण किया था, ये जीव छोटे, थोड़े से छोटे लगे। इनकी त्वचा चमकदार और चिकनी थी। उनके नेत्र छोटे, गहरे धंसे थे, जो लगता था कि भय देख चुके हैं परंतु उस भय का उत्तर उन्होंने हिंसा से, कम से कम किसी बड़ी हिंसा से नहीं दिया था। वे शांत थे, यद्यपि उनकी भी पूछें नहीं थीं, जिसे हनुमान माता सरस्वती की कृपा मानते थे।

“उन निराशाजनक जीवों के विपरीत जिन्हें हमने पहले देखा था, ये माताएं अपनी संतानों का ध्यान रखती हैं,” हनुमान ने महसूस किया। “ऋषि वशिष्ठ को अवश्य ही पता होगा कि इसके क्या मायने हैं।”

वीर गणपति ने फिर गहरी सांस ली। “ठीक है, सैनिकों के संरक्षण में हम इन्हें उस टीले तक ले चलते हैं और अन्यों को आने और इन्हें देखने देते हैं।”

देवी गणपति मुस्कुराई। “सभ्यताएं इसी प्रकार प्रारंभ होती हैं,” उसने कहा।

*

जैसी कि हनुमान ने अपेक्षा की थी, वशिष्ठ व विश्वामित्र को सुखद आश्र्वय हुआ कि

कुछ जीव वास्तव में शांतिपूर्ण भी हो सकते हैं, यद्यपि परम धर्म से वे पूरी तरह परिचित नहीं थे। विश्वामित्र ने धैर्य और शिष्टता से जीवों से बात करने का प्रयास किया जैसा कि वे किसी के भी साथ करते थे, बिना किसी अभिमान के। हनुमान ने देखा कि वे अपना सिर हिला रहे थे और खूब मुस्कुरा भी रहे थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि जब वशिष्ठ ने बच्चों को यहां-वहां छुआ और हाथ फेरा तो बच्चे उनकी जिज्ञासु आंखों और हाथों को देखकर हँसे। उन्होंने कुछ बेर भी लिए जो वशिष्ठ के शिष्य उनके लिए लाए थे, और उन्हें चाव से खाया। फिर जब उन्होंने देखा कि उनकी उंगलियां लाल हो गई हैं, तो छोटे बच्चों ने रोना शुरू कर दिया।

उनकी माताओं ने उनकी उंगलियां साफ़ कीं और उन्हें दिलासा दिया।

“ये आसान होंगे,” विश्वामित्र ने हनुमान को कहा। “कदाचित् अभी भी आशा है।”

“हंसी-मज़ाक बहुत हुआ,” अंत में धीरे से भूमि से उठते हुए वाली ने कहा, “अगर यह हमारे बस में है, तो हमें अपने अतिथियों से उनकी प्रजाति के अन्य लोगों के बारे में पूछना चाहिए। उनके लिए ही तो हम इतनी दूर आए हैं, सही है न?”

“जितना हम जानते हैं,” विश्वामित्र ने कहा, “ये भिन्न प्रकार के लोग हैं। उनमें से कुछ, जैसे कि यह दल, बड़े जीवों का विरोध नहीं करते। इसी कारण शायद ये भाग आए हैं, ये दूसरे दल से डरते हैं।”

वाली हँसा।

“हम अभी बहुत अधिक नहीं जान सकते, वाली,” विश्वामित्र ने आगे कहा, “लेकिन इन जीवों के रूप में हमारे पास श्रेष्ठ पूर्व चेतावनी व्यवस्था है जिसके बारे में हम सोच सकते थे। इन्होंने अपना जीवन अपने युद्धों से भागने में बिताया है। शत्रु को देखने से पहले ही इनके शरीर हमें उसके आने की सूचना दे देंगे।”

“या उन्हें सूंघ कर,” वाली चिल्लाया, और पुनः हँसा, लगभग बच्चों को डराते हुए। लेकिन उसे हँसता देख आसपास के योद्धा भी अंततः हँसने लगे।

*

“आपको लगता है कि हम इनके लोगों के साथ शांति व्यवस्था करने में सफल रहेंगे?” वैष्णवी ने हनुमान से पूछा।

“इनमें से कुछ धर्म के छोर पर खड़े हैं, कदाचित् अपनी आवश्यकताओं के कारण इससे दूर हो गए हैं, लेकिन फिर भी निकट हैं। हमारे ऋषि आशावान हैं।”

“जब इनके शेष लोग आएंगे—मैं ‘अगर’ नहीं कह सकती, क्योंकि अभी तक हमें उन गणेशों की कोई सूचना नहीं मिली है जिन्हें पश्चिम से आना है—तब क्या होगा?” वैष्णवी ने पूछा। “क्या वे घेराबंदी करेंगे और हमें धमकियां व मांगें भेजेंगे? या बुद्धिहीन संहार होगा?”

वैष्णवी को इस प्रकार की भयावह बातें करते सुन हनुमान का हृदय थोड़ा द्रवित हो गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि विश्व के बारे में वे उससे बहुत अधिक जानती हैं जितना उनके सुशिष्ट व्यवहार से झलकता है। “संहार बुद्धिहीन होता है,” उन्होंने कहा। “पहले जब जीव हमारे ऊपर आ पड़े थे तब ऐसा ही लगा था। तब कोई मांग नहीं थी, प्रभुत्व जताने का कोई प्रयास नहीं था, ऐसा कुछ भी नहीं था जो हम

किष्किंधा में यदा-कदा होने वाले झगड़ों में देखते हैं। उनके कृत्यों में कुछ जीवनरहित सा होता है। उनके हाथ हिलते हैं, टांगें हिलती हैं, मगर जो वे कर रहे होते हैं, उसे लेकर उनमें भावना की बहुत कमी लगती है।”

“पत्तियों की कठपुतलियों के नृत्य के समान?”

“कुछ-कुछ वैसा ही, हाँ। जब हम बच्चे थे तब हम देख सकते थे कि कठपुतली के खेल में पत्तियों की गति किसी जीवित प्राणी के समान नहीं होती थी, लेकिन फिर भी हम इस पर विश्वास कर लेते थे, वह हमें हँसाता था। इन जीवों के साथ लगता है जैसे कोई बहुत भयानक चीज उन्हें नियंत्रित कर रही हो। कम से कम, वे ऐसे नहीं लगते जैसे उनका स्वयं पर स्वामित्व है।”

“क्या कभी था?”

“ऋषि ही जानते होंगे। और मुझे संदेह है कि आप भी जानती हैं, वैष्णवी,”
हनुमान मुस्कुराए।

“नहीं, नहीं।”

“आप किष्किंधा के आतंरिक और बाहरी क्षेत्रों को अलग करने वाले अंतिम क्षेत्रों में से एक की शासक हैं। शायद आपने भी कहानियां सुनी होंगी, सारसों से जो कुछ ही दिनों में आधे विश्व की यात्रा पूरी कर लेते हैं, जब वे मौजूद थे।”

“मगर जो कहानियां मैंने सुनी हैं वो कुछ अजीब थीं।”

“बताएं मुझे...”

“मैंने एक उड़न-जीव के बारे में सुना है जो छोटे पक्षियों को जलाता और उन्हें खा लेता है।”

28

युद्ध आरंभ



सूर्योदय से ठीक पहले वीर गणपति को पश्चिमी शिविर के प्रहरियों से समाचार मिला—उन्हें पश्चिम से हाथियों की आवाज़ सुनाई दी थी। खोजियों ने जो बताया उससे ऐसा नहीं लगता था कि जीव हाथियों का पीछा कर रहे थे। सेना की शांतिपूर्ण प्रतीक्षा, उत्तरी हाथियों की सुरक्षित वापसी, और इन कम घातक जीवों का अस्तित्व, इन सबसे ऐसा लगता था कि संकट को शायद कुछ ज्यादा ही आंका गया था।

लेकिन फिर भी गणपति चिंतित दिखाई दे रहे थे। हनुमान यह देख सकते थे।

“मैं देवी से प्रार्थना करता हूं कि वे भी सुरक्षित लौट आएं, गणपति,” उन्होंने कहा।

गणपति की सुंड इधर-उधर झूली और अचानक लटक गई। वे कई दिन से अत्यंत सतर्कता की स्थिति में रहे थे। हनुमान को लगा कि शायद यह इसी का प्रभाव था।

वे तेज़ी से चल दिए ताकि निरीक्षण पहाड़ी के सामने कुछ सौ गज़ पर खड़े खोजी दल के पास पहुंच जाएं। क्षितिज पर धूल का गुबार था, और हवा में उड़ती रेत के कारण लाल सूरज एकदम रक्तिम दिखाई दे रहा था।

“आज वे उग्र हैं,” हनुमान ने सूर्य को देखते हुए कहा।

*

शीघ्र ही हाथियों की आवाजें मैदानों के पार यात्रा करती इतनी तेज़ी से आने लगीं कि हनुमान उन्हें सुन सकते थे। “वे क्या कह रहे हैं, गणपति?”

गणपति प्रार्थना में डूबे लगते थे, लेकिन पूरी तरह चिंतामुक्त नहीं थे।

“वे जल्दी में हैं, हनुमान,” उन्होंने अपनी आंखें खोलते हुए कहा। “मुझे उनके शब्द स्पष्ट रूप से समझ नहीं आ रहे पर ऐसा लगता है कि वे सूर्यस्त से पहले हम तक पहुंचने की जल्दी में हैं।”

“क्या उनका पीछा किया जा रहा है?”

“मुझे संकट नहीं सुनाई दे रहा, लेकिन शीघ्रता अवश्य सुनाई दे रही है।”

हनुमान ने अपने सैनापति से कुछ सैनिकों को सतर्क रखने को कहा। उन्होंने दो

उंगलियों द्वारा आदेश की पुष्टि की। उसी के अनुरूप संकेत पहुंचा दिया गया। पहाड़ी पर एक लंबे पेड़ का तना खड़ा किया गया, जिस पर बराबर दूरी पर नारियल के दो गुच्छे बांधे गए थे। कुछ ही क्षणों में उनके पीछे कुछ दूरी पर एक पेड़ का तना खड़ा कर दिया गया, जो शेष शिविर को सतर्क करने के लिए था। कुछ क्षण बाद उन सबको नीचे कर लिया गया। संदेश पहुंचाया जा चुका था और अब अपने स्थानों को प्रकट करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

जब हाथी दिखाई देना आरंभ हुए, तो सूर्य लगभग क्षितिज पर था।

“सूर्य अब हमारे सामने हैं,” गणपति ने कहा। “मैं उनके चेहरों को ठीक से नहीं देख पा रहा।”

“क्या जीव उनके बीच छिपे हुए हैं?” हनुमान ने अपनी उंगलियों को सिकोड़कर पूरा संकेत देते हुए पूछा।

“मैं विश्वास से नहीं कह सकता। अभी तक उनकी आवाजों और चाल से तो किसी चालबाज़ी का पता नहीं चल रहा है।”

अब हनुमान भी उनके चेहरे देख सकते थे। उनके साथ बच्चे भी थे, और उन्हें तेज़ी से दौड़ते पैरों के बीच गति बनाए रखना कठिन हो रहा था।

गणपति ने जो खोजी हाथी भेजे थे वे अब आधे मैदान के पार थे।

“उन्होंने हमारे खोजियों को देख लिया है। इससे उनमें आशा जागेगी। अच्छी बात है। वे अंधेरा होने से पहले हम तक पहुंच जाएंगे,” गणपति ने थोड़ी राहत के साथ कहा।

सबसे पहले दोनों खोजी ही अदृश्य हुए।

और फिर बस क्षण भर बाद, हाथियों के झुंड के ठीक नीचे ज़मीन में एक विशाल छेद खुल गया। ज़ोरदार गरज और धूल के बादलों के बीच हाथी उस गड्ढे में गिर गए।

वीर गणपति असामान्य उतावलेपन से चिल्ला पड़े। इतनी दूर से भी यह भयंकर दृश्य दिखाई पड़ता था—जैसे एक पूरा पर्वत ढहकर कंकरियों में बदल गया हो। कुछ पल की खामोशी के बाद गड्ढे से चीत्कारों की एक नई लहर उठना शुरू हो गई, पीड़ा की चीत्कार।

हनुमान को अपनी सारी मांसपेशियां अकड़कर क्रोध के अनियंत्रित दौरे में बदलती महसूस होने लगीं। उन्हें महसूस हुआ कि वे अपने दांत पीस रहे हैं और उनका सिर थरथरा रहा है।

“एक!” उन्होंने चिल्लाकर अपने सेनापति से कहा, और गड्ढे में फंसे हाथियों की तरफ इस तरह भागे जैसे बिजली गिरे वृक्ष से आग लपलपा पड़ी हो।

*

उनके पीछे, प्रहरियों ने पूर्ण प्रतिक्रिया के लिए संकेत दे दिया। कुछ ही क्षणों में शंखनाद होने लगा, नगाड़े बजने लगे, और उद्घोषक सैनिकों को कार्रवाई के लिए प्रोत्साहित करने लगे।

अपने विशाल आकार के बावजूद वीर गणपति अभी से हनुमान से आगे थे। हनुमान उनके साथ एक सधी हुई गति से चलते रहे, और किसी तरह की हलचल का

संकेत ढूँढने के लिए नज़र घुमाते रहे। लेकिन चारों ओर अंधेरा था और वे ठीक से कुछ देख नहीं पा रहे थे।

“गणपति,” हनुमान चिल्लाए, “वहां देखिए!”

उस खड़ु के दूसरी ओर जिसने उनके दोस्तों को निगल लिया था, अजीब सी फूली, चमकती चीज़ें पश्चिमी आकाश में तैरती नज़र आई। वे दूर से ही भद्री दिखाई दे रही थीं; वे बादलों जैसी थीं, लेकिन बहुत नीची और बहुत काली।

“वे क्या जीव हैं?” गणपति चिल्लाए। “वे बिना पंखों के कैसे उड़ रहे हैं?”

हनुमान ने सावधानीपूर्वक देखा। वे उड़ती चीज़ें भयानक दिखाई देती थीं। हिचकौले खाती, मुड़ती और उनकी ओर बढ़ती वे चीज़ें परिचित सी लगने लगी थीं, जैसे भालू, जैसे जटायु, जैसे बकरियां। एक उड़ती चीज़ तो हाथी जैसी भी दिखाई दे रही थी, लेकिन उसकी त्वचा में एक मंद सी चमक थी।

“गणपति, ये वही हैं। और इन्होंने भी आग का प्रयोग करना सीख लिया है।”

तैरती हुई इन चीज़ों के नीचे जीवों की एक लंबी क़तार उद्देश्यपूर्ण ढंग से चल रही थी। उनके हाथों में लंबी-लंबी लताएं थीं जिनसे वे हवा में तैरते अपने उपकरणों को नियंत्रित कर रहे थे।

अविश्वास के मारे गणपति वहीं थम गए। हनुमान भी रुक गए।

हवा में तैरती चीज़ें वास्तव में विभिन्न पशुओं की लाशें थीं, और कहीं-कहीं तो दो भिन्न जीवों की लाशें आपस में सिल दी गई थीं।

घोर दुर्गंध फैली हुई थी।

जीवों ने अचानक रस्सियों को झटका दिया, और हवा में तैरते पशु फट गए और नीचे गिरे हाथियों पर जलते हुए पत्थरों की बारिश सी होने लगी।

हनुमान तेज़ी से स्तब्ध गणपति से आगे निकले, और बिना किसी हिचकिचाहट के, बिना नीचे देखने के लिए रुके, उन्होंने रोते-चीखते हाथियों से भरी अंतहीन चौड़ी और नर्क जैसी अंधकारमय खाई के ऊपर छलांग लगा दी।

खाई को पार करने पर उन्होंने आगे दृष्टि डाली और जीवों को देखा। बाईं ओर जहां तक नज़र जाती थी और दाईं ओर हर जगह वे भरे हुए थे। वे एक लंबी भयानक पंक्ति थे।

और फिर उनसे कुछ सौ पग पीछे, आकाश से गिरी ऐसी आग की तरह जिसे किसी ने अपने दुस्वप्नों में भी कभी न देखा हो, हाथी-भक्षियों की शेष सेना एक धीमे, अबाध पशु की तरह बढ़ी चली आ रही थी।

वे अपने शिकारों की खालें पहने हुए थे, और उनके साथ हथियार थे जो उनके हर कदम के साथ ऊपर-नीचे झूल रहे थे।

हनुमान ने पलटकर गड्ढे में देखा। हाथी बुरे हाल में एक दूसरे पर लुढ़के पड़े थे और उनमें से कई की त्वचाएं अभी भी झूलस रही थीं। जो किनारों पर थे, वे उतावलेपन से ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे लेकिन वे ठीक से खड़े भी नहीं हो पाते थे कि फिर गिर जाते थे। वहां अनगिनत मांएं, बच्चे, बूढ़े थे, और सभी फंसे हुए थे, कुचले हुए थे, टूटे हुए थे।

अचानक हनुमान को महसूस होने लगा जैसे उनका हृदय आग का बना हो। वे कल्पना करने लगे कि वे सीधे इन जीवों की अग्रिम पंक्ति पर आक्रमण करेंगे, और एक बार में दो को लेकर गिरते हुए उनके सिर को कंधों पर से अलग कर देंगे।

लेकिन उन्हें अपने पीछे से गणपति की आवाज़ सुनाई दी।

“हनुमान,” उन्होंने कहा, “इनके लिए कोई रास्ता खोजिए।” वे दूसरी ओर पहाड़ी के किनारे पर खड़े थे। वे एक ऐसा विशाल, उदास बादल से लग रहे थे जिसे गुरुत्वाकर्षण ने अनुचित ढंग से आसमान से नीचे खींच लाया हो।

उनके हृदय की आग ठंडी पड़ गई। गहरी सांस छोड़ते हुए उन्होंने जीवों, उनके हथियारों और उनके पागलपन के प्रति अपनी भड़ास निकाल दी। उन्होंने सोचा कि हाथी मुसीबत में भी उसी तरह उनके मित्र हैं जैसे शांति के समय में होते। वे सोचने लगे कि अगर किञ्चिंधानगर के दूर-दराज़ के गर्म वन में कोई फिसल जाता, तो उनके पिता और मित्र उसकी कैसे मदद करते।

हनुमान ने स्वयं को समझाया कि यह पृथ्वी ही तो है, उनकी माँ। यह देवी सरस्वती की ही तो रचना है। और कोई चीज़ महत्वपूर्ण नहीं थी। वे तेज़ी से पूरे गड्ढ की लंबाई में इधर से उधर टहलते हुए चिल्ला-चिल्लाकर हाथियों को विश्वास दिलाने लगे कि वे सुरक्षित हैं, कि मदद आने ही वाली है।

फिर उनकी समझ में बचाव की वह एक संभावना आई जो अभी मौजूद थी।

*

“गणपति, वहां उत्तर-पूर्व में धरती की ढलान भिन्न है। और वहां वृक्ष भी हैं। इन्हें बताइए।”

गणपति ने नीचे हाथियों को आवाज़ दी। एक कमज़ोर सी आवाज़ ने जवाब दिया और अपनी पहचान पश्चिमी हाथियों के प्रमुख के रूप में दी। गणपति ने उससे कहा कि वह अपने लोगों को हनुमान द्वारा इंगित कोने में ले जाए, और फिर वे स्वयं भी शीघ्रता से उसी ओर बढ़ गए।

फिर गणपति जल्दी से सबसे पास वाले पेड़ के पास पहुंचे, और उससे क्षमायाचना के एक द्रुत विचार के साथ उसे ज़मीन से उखाड़ने लगे। अगर पेड़ सही ढंग से गिरता, तो नीचे गिरे हाथियों के लिए एक ज़ीना बन जाता।

जीवों ने उन्हें देख लिया था, और पहले उनका एक गुट और फिर पूरा एक झुंड प्रमुख समूह से अलग होकर उनकी ओर बढ़ने लगा।

हनुमान ने उनके और गणपति के बीच दूरी का अनुमान लगाया, और फिर पलटकर पीछे देखा कि क्या किञ्चिंधा के सैनिक समय से पहुंच सकेंगे।

उन्होंने अपनी आंखें बंद कीं और पूरे युद्धक्षेत्र की ठीक उस रूप में कल्पना की जैसे गणपति ने उन्हें सिखाया था—वगाँ, और फिर और वगाँ की एक श्रृंखला, और फिर उन्हें स्थान, शक्ति और भेद्यता के झुंडों के रूप में देखना, गुणकों में, चार और आठ और बत्तीस और चौंसठ। हनुमान समझ गए। सैनिकों के पहुंचने के लिए पर्याप्त समय नहीं था। जीवों को गड्ढ में फँसे हाथियों को हानि पहुंचाने से केवल वही रोक सकते थे।

देवी सरस्वती से प्रार्थना, और न जाने किस कारण से मस्तिष्क में उभरी वैष्णवी की एक झलक के अलावा और कुछ सोचे बिना शांत भाव से हनुमान हाथियों की ओर मौत के प्रकोप की तरह बढ़ रहे उन्मादी चेहरों की दिशा में भागने लगे।

उन्हें बस पहला प्रहार याद रहा। उन्हें याद रहा कि जीव का चेहरा कैसा था, कि कैसे संपर्क होते ही वह उनकी दृष्टि से, उसे एक व्यक्ति, एक जीवित चीज़ के रूप में सोचने के उनके प्रयास से लुप्त हो गया था। कुछ नहीं। समाप्त। उस थप्पड़ की आवाज़ के साथ ही हनुमान जान गए कि युद्ध आरंभ हो चुका है।

*

हनुमान किसी पहाड़ी दरें में हवा की तरह आक्रमणकारियों की पंक्तियों में घुस गए। उनकी हथेलियां दाएं से बाएं, बाएं से दाएं इतनी तेज़ी से चल रही थीं कि जीव कुछ समझ ही नहीं पा रहे थे। उनके पैर प्रचंडता के साथ गिरे और गिरते शरीरों के बीच चल रहे थे। ऐसा लगता था जैसे उनकी पूँछ को अपना अलग ही अस्तित्व मिल गया हो। वह एक-एक गतिविधि और जीव को आंक रही थी, और इससे पहले कि वो उसे काट पाते वो घुटने तोड़ रही थी, पेटों पर वार कर रही थी, चेहरों को पीट रही थी।

फिर उन्होंने गंध की ओर ध्यान दिया, और वह सांस छोड़ी जो उन्होंने देवी सरस्वती से प्रार्थना करते समय ली थी और तब तक चलती रही थी जब तक कि उन्होंने चौरासी प्रहार करते हुए अपने आसपास लगभग इतने ही जीवों को ढेर नहीं कर दिया था।

वे पलटे और उन्होंने देखा वीर गणपति वहां खड़े एकमात्र बड़े वृक्ष के तने को खड़े किनारे की ओर ले जा रहे थे। नीचे जो हाथी हिल सकते थे, वे थोड़ा उबर चुके थे और बच निकलने के रास्ते पर पंक्तिबद्ध हो चुके थे। पीछे की ओर से कई चिंतित सुंडे और सिर बच्चों को आग और ऊपर की ओर ठेल रहे थे। कई बच्चे तो घायल बड़े हाथियों पर सवार थे।

हनुमान ने अपने शत्रुओं के गिरे हुए शरीरों को देखा, और उन्हें अपने मुंह में एक घिनौना और भयंकर सा स्वाद उठता महसूस हुआ। अब उनका क्रोध अपने चरम पर पहुंच चुका था और उनके अस्तित्व का भाग बन गया था। उन्हें इस संसार में बल के अतिरिक्त कुछ महसूस नहीं हो रहा था, और वह बल वे स्वयं बनेंगे; वे अपना सब कुछ इसके लिए लगाने को तत्पर थे। इन जीवों ने जो किया था, और रोके न जाने की अवस्था में जो ये करने वाले थे, वह देवी सरस्वती द्वारा लाखों वर्ष पूर्व रची जीवन की विशाल नदी में घटित होने वाली सबसे भयानक, सबसे कुरुप चीज़ थी।

उस कसैले स्वाद ने हनुमान के मुंह को भर दिया। और घृणा के एक ऐसे भाव में, जिसके लिए उन्होंने उसी क्षण शपथ ली कि वे इसे कभी भी नहीं दोहराएंगे चाहे जीवन में उनका सामना कितने भी नीच जीव से क्यों न हो, अपने विचारों के लिए पृथ्वी से क्षमा मांगते हुए और एक ऐसी दृष्टि के साथ जिसमें उन्होंने सभी जीवों के क्षत-विक्षत शरीरों को समेट लिया, उन्होंने थक दिया।

हनुमान ने अपने हाथ के पिछले भाग से अपना मुंह पोंछा और हमलावरों की अगली पंक्ति के आने का इंतज़ार करने लगे। उन्होंने एक बार अपने होंठों पर जीभ फेरी। उन्हें अपने पसीने का स्वाद आया। और मिट्टी का।

लेकिन खून की एक बूंद या उसका संकेत तक नहीं।

उन्होंने देवी को धन्यवाद कहा कि उन्होंने उन्हें अपनी शरण में रखा, और फिर

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

उस भयानक रात में तेज़ी से आगे दौड़ पड़े।

Novels English & Hindi

29

केवल एक हनुमान



वीर गणपति ने बच्चों को बाहर निकालने के लिए अपनी सूंड नीचे की हुई थी। अब तक शिविर से भी अनेक हाथी उन तक पहुंच चुके थे, जिससे उन्हें युद्ध के मैदान पर नज़र डालने को एक पल मिल गया था।

काफी दूरी पर, हवा में तैरती वस्तुओं की एक और पंक्ति दिखाई दी जिसे नीचे चल रहे जीवों की एक नई क़तार धीरे-धीरे आकाश में आगे बढ़ा रही थी।

“जल्दी! जल्दी!” गणपति चिल्लाकर गड्ढे में फंसे हाथियों से कह रहे थे कि वे फिर से पत्थरों की वर्षा होने से पहले बाहर निकल आएं।

फंसे हुए हाथियों का प्रमुख सबसे अंत में ऊपर आया। उसकी पीठ झुलसी हुई और बुरी तरह घायल थी। “आपकी जय हो, वीर गणपति,” उसने कहा।

“आने के लिए आपकी जय हो,” गणपति ने कहा। “और मुझे यह देखने का अवसर देने के लिए कि अपने मित्रों के प्रति एक नेक प्राणी की करुणा जब ऐसी किसी चीज़ में बदल जाती है तब क्या होता है।”

दूर, खड़ के पार वे उस एकमात्र कारण को देख सकते थे जिससे यह बचाव संभव हो पाया था। वे आग के विस्फोटों से घिरे हनुमान की आकृति को शत्रु की सेना की पंक्तियों में घुसते देख रहे थे। जीवों की अग्रिम पंक्तियां अब उससे बहुत भिन्न कुछ कर रही थीं जो उन्होंने कुछ देर पहले किया था। उन्होंने देख लिया था कि हनुमान ने उनके सबसे वीर और उत्साही लड़ाकों की पहली खेप के साथ क्या किया था। अब जबकि हनुमान एक विशेष उद्देश्य से उनकी ओर बढ़ रहे थे, तो वो रुक रहे थे, पलट रहे थे और डरकर बच रहे थे।

“उन्होंने उन्हें डरा दिया है!” पश्चिमी गण अविश्वास से चिल्लाएं। “केवल एक...”

“केवल एक हनुमान ने,” वीर गणपति ने गर्व और संतोष के भाव से कहा।

अब गणपति के सेनापति उनके पास आ गए थे। “अब आगंतुक सुरक्षित हैं और योद्धा आ चुके हैं,” उन्होंने सूचित किया।

वीर गणपति ने अपनी सूंड उठाई और एक ज़ोरदार चिंघाड़ भरी। “एक टुकड़ी हनुमान के बाएं। एक टुकड़ी हनुमान के दाएं। आक्रमण!”

गर्जना करने वालों द्वारा क्रोध और बल की ज़ोरदार दहाड़ के साथ, किञ्चिंधा

के सैनिक आग से बिखरे अंधकार की ओर दौड़ पड़े।

*

“लेकिन मैं राजा हूं, गुरुवर,” शिविर की सुरक्षा के अंदर वाली ने विश्वामित्र से विनती की। “मैं चकित हूं कि आप स्वयं को कितना हठी सिद्ध कर रहे हैं!”

उधर स्वयं विश्वामित्र भी वाली के अचानक लिए संकल्प पर चकित थे। लेकिन उन्होंने अपना आश्र्य दिखाया नहीं। वे केवल उन एकाक्षरों को दोहराते रहे जिनके द्वारा युद्ध के पहले ही लक्षण पर उन्होंने स्वयं को एक बहुत ही प्रभावी राजगुरु साबित कर दिया था। “नहीं,” उन्होंने तीखेपन से कहा। “प्रतीक्षा करो।”

पास में ही वैष्णवी हाथ बांधे मौन खड़ी रहीं। उनकी आंखें पूरी तरह खुली हुई थीं, और अपने माथे पर लंबे लाल निशान के साथ वे संसार द्वारा प्रस्तृत किसी भी चुनौती से लड़ने में पूरी तरह सक्षम दिख रही थीं। ऐसा लगता था जैसे वे अपने सिर के ऊपर कहीं दूर किसी बिंदु को देख रही हैं, और उनके होंठ धीमे-धीमे हिल रहे थे जैसे वे कोई मंत्र उच्चार रही हों।

“युद्ध समक्ष है। मैं इतने महीनों से इसी की प्रतीक्षा कर रहा था,” विश्वामित्र को मनाने के लिए वाली ने अपनी बात जारी रखी।

अंततः सुग्रीव बोला। “भाई, हमारे गुरु सही कहते हैं। हनुमान और गणपति ने अभी तक अतिरिक्त बल नहीं मांगा है। हम अपने बलों को अन्य मोर्चों से नहीं हटा सकते।”

वाली ने अपनी गदा धरती पर पटकी और वापस उस चट्टान के नीचे सुरक्षित स्थान पर चले गए जहां तारा और रूमा बैठी हुई थीं।

“आओ,” तारा ने अपने पेट को छूते हुए कहा, “अपने पुत्र को युद्ध के समय एक राजा के कर्तव्यों के बारे में बताओ।”

इससे वह शांत हो गया।

*

आधी रात से पहले किसी समय लड़ाई बंद हो गई। हमलावरों की छितर गई सेना के पीछे रह गए कुछ भटकैये भी अब पीछे हट गए थे।

गणपति ने अपनी संड उठाई और विजयनाद किया। इस पुकार को अग्रिम पंक्तियों के पीछे वाले हाथियों ने लिया और फिर आगे बढ़ते-बढ़ते यह समाचार शिविर तक पहुंच गया।

फिर गणपति हनुमान को ढूँढ़ने चल दिए। यह आसान था। एक बार में पांच जीवों को मारते हुए वे शत्रु की पंक्तियों में घुस गए थे। गणपति पांच के ढेर में गिरी लाशों का पीछा करते गए। उनमें से कुछ अभी भी हिल रहे थे, लेकिन उन्हें आता देखकर वे डर के मारे नीचे पड़े रहे।

“हनुमान,” गणपति ने कहा, “अब वापस चलते हैं।”

*

सवेरे का पहला प्रकाश होते ही वे उन्हें उठाने के लिए वापस आए जो रात को जीवित बच गए थे। उन्होंने वहां पड़े घायल जीवों को शांत किया और फिर उन्हें मैदान के दूर वाले छोर पर ले जाकर इस उम्मीद में छोड़ दिया कि रात ढलने पर उनके मित्र आकर उनकी देखभाल करेंगे।

हर ओर उदासी छाई हुई थी। सूरज भी निराशा की चादर में लिपटा सा दिख रहा था।

विजय बिना कीमत चुकाए प्राप्त नहीं हुई थी।

क्षति अब कहीं ज्यादा दिखाई दे रही थी। हर कहीं मांस और रक्त के टुकड़े दिख रहे थे, और मैदान से दूर वशिष्ठ द्वारा स्थापित औषधि शिविर से घायलों के कराहने की आवाजें रुक-रुककर सुनाई दे जाती थीं।

विश्वामित्र के निरीक्षण में कुछ सैनिकों ने किसी प्रकार की सूखी और कुटी हुई जड़ी-बूटियां पूरे मैदान में बिखेर दीं और उन्हें मिट्टी में मिला दिया। “ये हमारी देवी माता के बोझ को कम कर देंगी। उन्हें रक्त का स्वाद पसंद नहीं है।”

अंततः हनुमान ने अपनी चुप्पी तोड़ी। “मां हमें इसके लिए क्यों विवश कर रही हैं? क्या वे सर्वेशक्तिमान नहीं हैं? जब उनकी इच्छा के बिना एक नाखून या बाल तक नहीं उग सकता तो फिर ये सब क्यों?”

विश्वामित्र ने हनुमान के स्वर में उस बालक की पीड़ा को सुना जिसे औपचारिक शिक्षा तक प्राप्त नहीं हुई थी जो पूरी तरह बड़ा तक नहीं हुआ था, और जो अब वह बन गया था जो एक लंबे समय से कोई भी किञ्चिंधावासी नहीं बना था —एक योद्धा।

“बालक। हनुमान,” उन्होंने उनके कंधे को छूते हुए विनम्रतापूर्वक कहा।

अब हनुमान की आवाज दुख से भारी हो गई थी। “वे हमें सिखाती हैं कि क्या खाना है। हमारे धरती पर खड़े होने से पहले ही वे हमें सिखा देती हैं कि अपनी मां को कैसे पकड़ना है। फिर उनकी शक्ति उन तक क्यों नहीं पहुंचती जो इसके ज़िम्मेदार हैं?” उन्होंने हाथियों के लिए बनाए गए विशाल गड्ढे की ओर इशारा किया। कुछ हाथी उदास से किनारे पर खड़े थे; उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि उन हाथियों के अवशेषों का क्या करें जो पहले गिरे थे और अब कराहना भी बंद कर चुके थे।

“हमें उन्हें नहीं देखना चाहिए,” विश्वामित्र ने शांतिपूर्वक कहा। “गणेश अपना दुख लगभग और किसी से भी अधिक विधि के साथ व्यक्त करते हैं।”

हनुमान चुपचाप युद्धोपरांत की भयावह आवाजों को सुन रहे थे और अपने पैरों के पास पड़े एक शत्रु जीव के विक्षत अवशेष को देख रहे थे। अब वे अपने काम की निशानियों को भी देख सकते थे कि किस तरह जीव पांच-पांच के ढेर में गिरे थे, और उन्हें धीरे-धीरे, जैसे किसी धुंध में से अपने हर वार की याद आ रही थी।

हाथियों के शोक का स्वर उभरा और डूब गया। स्वर बहुत ऊँचा नहीं था, लेकिन स्पष्ट था और डरावना था।

“संसार का दिल टूट जाता है। यह वह आवाज है जब हाथी रोता है। इसीलिए वे दूर चले जाते हैं। इसीलिए हम सब दूर चले जाते हैं, बालक। हम सबके पास मौत की तैयारी के लिए पूरा जीवन होता है। शांति के समय हम बहुत अच्छा करते हैं; हम अपने रिश्ते-नातों को तभी छोड़ते हैं जब हम संतुष्ट हो जाते हैं, जब हम अपने

कर्तव्यों और वैध आनंदों को पूरा कर चुके होते हैं। युद्ध के समय कुछ भी ठीक नहीं होता, हर चीज़ स्थान और समय से परे होती है।”

“क्या यही एकमात्र तरीका था?” हनुमान ने पूछा।

विश्वामित्र ने उत्तर दिया तो उनके नेत्र पूर्णतया खुले हुए थे। “यदि मुझमें तुम जैसी शक्ति होती, मेरे बालक, तो मैं भी ठीक वही करता जो तुमने किया।”

अंत में, वीर गणपति ने विश्वामित्र से एक गंभीर मामले पर बात की। “हे विश्व के मित्र, हमारा एक निवेदन है। उनके परिवार सहमत हैं कि हम मृतकों को अपने महाप्रयाण स्थल में वापस नहीं ले जा सकते। किंतु यह युद्ध अभी आरंभ ही हो रहा है, और हम उन्हें इन जीवों द्वारा अपवित्र किए जाने के लिए यहां नहीं छोड़ सकते। हम भिन्न अनुष्ठानों का पालन करने के इच्छुक हैं। क्या आपके मित्र वशिष्ठ हमारी सहायता कर सकते हैं?”

विश्वामित्र ने उदासी से सिर हिलाया। अब नर्क की अग्नि हर जगह फैलने वाली थी।

*

जब धुआं पूरी तरह से समाप्त हुआ, तब तक लगभग शाम हो चुकी थी। कोई भी कुछ कहने योग्य नहीं दिखाई देता था। वाली के सैनिक जिन्होंने किञ्चिंधानगर में अपने सरल यौवन के दिनों के बारे में शेखियां बघारने के अलावा कुछ नहीं किया था, अब किसी भी अन्य बूढ़े किञ्चिंधावासी की तरह ही गंभीर और परिपक्व दिखाई दे रहे थे। उनके चेहरे खिन्न लग रहे थे। उनकी चुप्पी संतोष की चुप्पी नहीं थी, जैसी उनकी पूरानी दुनिया के वरिष्ठों की होती थी; यह समर्पण की चुप्पी थी। यदि वे पूछ पाते तो बस इतना पूछते कि हे देवी, यह सब क्यों हो रहा है?

जैसे ही हाथी अपने अनुष्ठानों से वापस आए, वाली ने सबको प्रार्थना के लिए इकट्ठा कर लिया। सब जानते थे कि यह बस शुरुआत है। पूरी संभावना थी कि अंधकार होने पर उन पर एक और हमला होगा। कोई ऐसा कह नहीं रहा था, लेकिन हवा में अब एक ऐसी गंध थी जो जीवों को निश्चित रूप से आक्रमण करने का और भी बड़ा निमंत्रण देगी। यह ऐसी गंध थी जिससे उनमें से कम ही परिचित थे। वे युवा थे, और शांतिकाल में पैदा हुए थे; ऐसा कोई अवसर आया ही नहीं था।

“मित्रो,” शिविरों के बीच के स्थान में एक चट्टान के ऊपर खड़े वाली ने कहा। शाम के धुंधलके में, उसके चारों ओर किञ्चिंधा की सेना के चेहरे किसी प्राचीन समुद्र जैसे लग रहे थे। चाहे उसने वास्तव में अपने अजन्मे बेटे से बात की हो या नहीं जैसा कि पिछली रात को तारा ने कहा था, लेकिन अभी तो वह एक पिता और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में कहीं ज्यादा गंभीर सुनाई दे रहा था जो केवल अपने, और अपने अभिमान से ज्यादा के प्रति ज़िम्मेदार था। “मित्रो, हम अपने भय की शक्ति पर अपने बच्चों और अपने देश के लिए बहुत दूर निकल आए हैं। अब हमने अपनी आंखों से उस भय के कारण को देख लिया है। हमारा सामना एक ऐसे शत्रु से है जो युद्ध की उन परंपराओं से बहुत परे है जिनके साथ अतीत में हमने युद्ध किया है। वे ऐसी लाशें लाते हैं जो आसमान से आग बरसाती हैं। वे हमारी नसों से रक्त के दरिया बहाने के लिए लड़ते हैं। और लगता है कि उनके लड़ने का एकमात्र उद्देश्य लड़ना है।”

वाली चुप हो गया। इन शब्दों को बोलने के बाद वह स्वयं को थोड़ा और समझ गया था। उसने अपने पश्चाताप को ज़ाहिर नहीं होने दिया, और आगे कहना शुरू किया। “वे क्रूर और चालाक हैं। वे आग से डरते थे, अब आग से खेलते हैं। वे हमसे बड़े और बलिष्ठ हैं। वे जीवन से ही पोषण लेते हैं, और इसी के द्वारा शक्तिशाली होते हैं। ऐसा लगता है कि वे अधिकांश बाहरी संसार पर विजय प्राप्त कर चुके हैं और इसीलिए उनकी दिशा से हमारे पास एक भी पंछी मित्र नहीं आ रहा है।”

वाली चुप हुआ और आकाश की ओर देखने लगा।

“लेकिन वे हम पर विजय नहीं पाएंगे,” उसने कहा।

उसने यह शांत भाव से कहा था। लेकिन इसका प्रभाव शक्तिशाली था।

“सम्राट वाली की जय!” भीड़ में से दमदार आवाज़ वाला कोई चिल्लाया।

फिर सब इसे दोहराने लगे, और पूरी सेना में एक ज़ोरदार हुंकार गूंज उठी। वे वाली के लिए, सुग्रीव के लिए, और हनुमान के लिए, वैष्णवी के लिए, जामवंत के लिए, और गणपति के लिए जयकारे लगा रहे थे।

हनुमान ने इसे सुना, और जान गए कि उन्होंने पिछली रात को जो किया था और अभी आगे उन्हें जौ करना था, वह सब उनके, और उनके बच्चों के लिए था। यदि उनमें इतनी शक्ति होती तो वे शत्रु को अकेले मिटा डालते और शेष सभी को हिंसा की मुसीबत से बचा लेते। किंतु देवी के संसार में कोई बहुत बड़ा परिवर्तन आ रहा था।

“हे ऋषि, आज रात युद्ध का तारा कहां है?” उन्होंने विश्वामित्र से पूछा।

“वहां है,” विश्वामित्र ने आकाश में एक स्थान की ओर पूरे आत्मविश्वास से इशारा किया, जैसे वे आकाश पर भी उतना ही ध्यान देते रहे थे जितना कि नीचे लड़ाई पर।

“क्या यह अभी भी उसी निष्कर्ष की ओर इशारा कर रहा है जिसकी हमने आशा की थी?” उन्होंने विश्वामित्र से पूछा। “क्या आपको लगता है कि हम इन जीवों को हरा सकेंगे?”

विश्वामित्र ने सामने देखा। वे सारी संभावनाओं पर विचार कर रहे थे। फिर उन्होंने धीरे से सिर हिलाया। “आशा मत खोओ, हनुमान। ज्ञान का तारा भी हमारे पक्ष में है। इसकी समाप्ति के बाद हम सब अपने बारे में और जानेंगे। माता सरस्वती इसी तरह काम करती हैं।”

वैष्णवी भी वहां आ गई और उन्होंने उलझन भरे भाव से पूछा, “तारे?”

हनुमान ने सिर हिलाया। “ऋषि का कहना है कि हमारी योजना अभी भी पूरी होगी।”

“हां, राजकुमारी,” विश्वामित्र ने इस बार अधिक बलपूर्वक कहा। “और ऐसा इसलिए नहीं है कि नक्षत्र ऐसा कह रहे हैं, बल्कि इसलिए कि स्वयं प्रकृति ऐसा कह रही है। केवल एक ही रास्ता है।”

“जिसका सीधे शब्दों में,” अपने चेहरे पर फैल रही मुस्कान को न रोक पाते हुए वैष्णवी ने कहा, “अर्थ है कि हम पिटेंगे, वे पिटेंगे, और फिर अंत में हम उन्हें ऐसे स्थान पर पहुंचा देंगे जहां वे कहेंगे, ‘शायद इस तरह पिटना ही कामों को करने का एकमात्र तरीका नहीं है’।”

“आत्म-सुधार का निमंत्रण,” विश्वामित्र ने हनुमान को उनके शब्दों की याद

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

दिलाई।

अब हनुमान के चेहरे पर एक मुस्कान नृत्य कर रही थी। विश्वामित्र को अनुभव हुआ कि उन्होंने सबके चेहरों पर मुस्कान ला दी है, यद्यपि इसे देख पाना कठिन था। अब अंधकार छा चुका था। संभावित आंतकों की उस अनंतता से कुछ भी आ सकता था। फिर भी अपने युवा मित्रों से मिली इतनी सारी आशा के चलते वे स्वयं को रोक नहीं सके। अपने हृदय में प्रकाशपुंज की तरह उन्होंने अपनी सारी प्रार्थनाओं को, उन सारे लोगों की स्मृतियों को जिन्हें उन्होंने कभी जाना था, और उन लोगों को भी महसूस किया, जिनके साथ वे अभी खड़े थे। वे स्वयं भी मुस्कुराने लगे।

Novels English & Hindi

30

सींगधारी दैत्य



सूर्यास्त के तुरंत बाद जीवों की आवाजें किञ्चिंधा शिविर के क़रीब आने लगी थीं। हनुमान पश्चिमी शिविर में वाली के साथ खड़े थे। उन्होंने चारों शिविरों के कुछ समूहों को हटा दिया था जिससे कि जिन सैनिकों ने पिछली रात की लड़ाई की भयावहता देखी थी, वे इस बार अलग-थलग रह सकें।

आगे मौजूद जीवों के आकार अब स्पष्ट दिखने लगे थे। हनुमान यह संकेत करते हुए वाली के पीछे हो गए कि अब यह लड़ाई उसकी अगुवाई में लड़ी जाएगी। उन्होंने महसूस किया कि वाली प्रसन्न हुआ है पर उसके चचेरे भाई ने यह ज़ाहिर नहीं किया। कुछ था जिसने स्पष्ट रूप से उसे संयमी बना दिया था।

सारे शिविरों में संकेत पहुंच गया था और सब अपनी-अपनी गदाएं, पत्थर और शाखाओं को इकट्ठा करके चौकस हो गए।

जीव पिछली रात की लड़ाई वाली जगह के क़रीब आ गए थे, और अचानक वे रुक गए। हनुमान उनकी हलचल, और भारी सांसों की अजीब तरल सी आवाज सुन रहे थे। वे जैसे खांस, खरबरा और बहुत थ्रूक रहे थे।

“वे क्या कर रहे हैं?” वाली ने पूछा। “वे रुक क्यों गए?”

“निश्चित तौर पर उनकी कोई योजना है। वे किसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हैं, हमारे बाहर निकलने की या फिर अपने साथ किसी और के आने की,” हनुमान ने कहा। शत्रु खेमे में वे किसी आहट को महसूस कर रहे थे, पर यह स्पष्ट नहीं हो रहा था कि आखिर वे करने क्या वाले हैं।

“संभवतः उनका कोई प्रमुख है जो आज सामने आने वाला है,” वाली बोला। “इसका अर्थ है, निस्संदेह, हमने उन्हें कल दिखा दिया कि हम क्या हैं।”

“वह आवाज़ कैसी है?” चुप रहने का इशारा करते हुए धीरे से हनुमान ने पूछा।

हवा चली, और जीवों के खांसने और गुराने की आवाजें और गहरा गईं। पर कुछ और भी था। हनुमान ने वह आवाज़ पहले भी सुनी थी। वह कुछ ऐसा था जिसका संबंध विश्वामित्र से था। तभी उन्हें याद आया। “वे आग लगा रहे हैं,” वे बोले।

वाली ने अपने सेनापति से कहा कि पत्थरधारी किञ्चिंधा सैनिकों को आगे कर दें। उधर से जब उड़न अख्त आएंगे तो अपने नज़दीक भी कहीं आने से पहले वे बीच

में ही पत्थरों से उन्हें नष्ट कर देंगे। उनकी पीठ पर बड़े-बड़े पत्तों की चटाइयां थीं, जिससे अगर शोले उन पर आ भी गिरें तो भी वे जलेंगे नहीं।

सैनिक तेज़ी से और शांति से शत्रु सीमा और अपने शिविर के बीच लगभग आधी दूरी तक आगे बढ़ गए थे। उनकी मदद के लिए योद्धाओं की एक और पंक्ति भी आगे आ गई थी।

अग्नि शलाकाओं का चटकना जारी रहा और, दूर अंधेरे में, चिंगारियां अब स्पष्ट होने लगी थीं। हनुमान को आश्रय हो रहा था कि पहले की तरह वे अपने साथ उड़न अख्ति क्यों नहीं लाए। आखिर वे क्यों नहीं—

अचानक तभी, शत्रु खेमे की ओर से एक आग का गोला सा ऊपर उठा, पिछली रात की तरह धीमे-धीमे नहीं बल्कि उग्र मधुमक्खियों की तरह। एक ज़ोर की फुफकार और चिंगारियों की बौद्धार के साथ वह प्रक्षेपास्त्र ऊपर उठा और मैदान के पार उनकी ओर बढ़ चला।

“आश्रय लो!” वाली चिल्लाया, और उसके रक्षकों ने दो बड़ी ढालों से उसे और स्वयं को ढक लिया।

प्रक्षेपास्त्र उनके ऊपर की ओर उठा था, पर अचानक वेग खोकर उनके सामने की कीचड़ में गिर पड़ा। उसका पिछला हिस्सा घिनौने ढंग से कीचड़ से बाहर निकला हुआ था, और उससे चमड़े और बालों के जलने की गंध आ रही थी। वो जरूर कोई जीवित प्राणी रहा होगा, जो अब एक राक्षसी उपकरण बन गया था।

“क्या बर्बादी है!” वाली हँसा।

लेकिन प्रक्षेपास्त्र एक के बाद एक आते रहे। उनका निशाना तो बेदंगा था, पर वे बेहद भयावह दिख रहे थे, क्योंकि पूरा मैदान आग के गोलों से भर गया था। आगे वाले सैनिकों के पास स्वयं को अपने क़रीब आने वाल अख्तों को रास्ते से हटा लेने के सिवाय करने को कुछ विशेष नहीं था।

“पता नहीं वशिष्ठ को भी ये आता होगा या नहीं कि यह करते कैसे हैं,” हनुमान बोले। “यह सच में एक पेचीदा किस्म की बुद्धिमता है।”

“मगर वे कुछ और नहीं कर रहे हैं,” वाली ने कहा। “इससे वे क्या हासिल करना चाह रहे हैं?”

अचानक, उनके पीछे कहीं से वीर गणपति चीखे, “राक्षस” और हठात वे आगे को दौड़ गए।

हाथी प्रचंड रोष में बाहर की ओर भागे, जो उनके क्रोध का संकेत दे रहा था।

हनुमान का मन बैठ गया। वे समझ गए। “वे अब हमारे साथियों के सुलगते अवशेषों का अपमान कर रहे हैं,” वे वाली से बोले।

वाली ने सैनिकों को आदेश दिया कि वे हाथियों की मदद करें। यह एक और भयानक, पर बेकार की लड़ाई होगी। गहरी सांस लेकर, और प्रार्थना करते हुए हनुमान एक बार फिर कूद पड़े।

*

हनुमान की तात्कालिक चिंता उन जीवों को हाथियों के अवशेषों से दूर हटाना थी। इस बार जीव पहले से ज्यादा परेशान थे, और उनमें से कुछ ने—जो हताशा में

अधजली लकड़ी और राख को कुरेद रहे थे—हनुमान के आने पर कोई प्रतिक्रिया तक नहीं दी। लग रहा था जैसे वे पीड़ा पर विजय पा चुके थे।

गणेश अब बुरी तरह क्रोध में थे। उन्होंने उन जीवों को लात मारी, उन्हें कुचला, बिना किसी पश्चाताप के उन्हें पीछे धकेला, वे तब भी नहीं रुके जब आग के गोले उनकी पीठ पर आ गिरे।

तब भी, उन जीवों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। यह पत्थर के टुकड़ों को मारने जैसा था, हनुमान ने सोचा, घातक, लोभी और खँख़वार पत्थर के टुकड़े। वे रुक क्यों नहीं रहे? क्यों पीड़ा उन्हें परेशान नहीं कर रही? और क्यों वे हाथियों के विरुद्ध मूर्खतापूर्ण लड़ाई लड़ रहे थे?

तब तक, वाली अग्रिम पंक्ति तक पहुंच चुका था। वह अपनी खुली पालकी पर खड़ा था, उसके निजी अंगरक्षक उसके चारों तरफ एक निर्मम अभेद्य चौकोर घेरा बनाए खड़े थे। वाली का चेहरा पसीने और हिंसक क्रोध से लाल और स्याह हुआ जा रहा था। यही वह पल था जिसकी उसे प्रतीक्षा थी। एक ज़ोर की चीख के साथ, उसने अपने स्थान से शत्रु सीमा में छलांग लगा दी, और अपनी वृक्ष गदा से उन जीवों की पंक्तियों को नष्ट करने लगा।

वाली के क्रोध और हाथियों की सेना के बीच यह मोर्चा भली-भांति सुरक्षित था।

आखिरकार, हनुमान ने गणपति को देखा और पुकारा, “गणपति, मुझे भय है कि इससे भी ज्यादा कुछ होने वाला है।”

गणपति रुके और उन्होंने अपनी सूंड नीचे की। एक शिथिल शरीर उससे झूल रहा था। वह एक प्रश्न की तरह थरथरा रहा था।

हनुमान उनकी ओर भागे और फिर से चिल्लाए। “यह केवल ध्यान भटकाने के लिए है।”

*

उत्तर में अपने निगरानी स्थान से, जामवंत जानते थे कि वे जीव उनकी ओर, और कई अलग-अलग दिशाओं से आ रहे हैं। बाईं ओर से आ रही जलते मांस और विस्फोटक पदार्थों की दुर्गंध बहुत ही भीषण थी, इस पर भी, उन्हें लगा कि कुछ और भी पास आ रहा है।

इकलौती समस्या यह थी, जब तक वे उन्हें देख पाए, तब तक वे उनके और उनकी प्रतीक्षारत सैन्य टुकड़ी से केवल कुछ सौ गज़ की दूरी पर थे। वे जीव उत्तर की ओर से दबे पांव झुककर दौड़ते हुए मैदान में आ गए थे। जब जामवंत ने चेतावनी जारी की, तब वे घातक सायों की तरह उठ खड़े हुए।

जामवंत के सैनिक भी काले घने बादलों की तरह अंधेरे में लपके। जल्दी ही वे युद्धरत हो गए और अपने शक्तिशाली वारों से उन्होंने उन जीवों को हतप्रभ कर दिया।

तभी अचानक पूर्व से एक और चेतावनी गूंजी। यह सुग्रीव का शिविर था। उस आवाज से लगा जैसे वहां भी घात लगाकर हमला हुआ है।

तमाम तैयारियों के बावजूद अचानक सब ओर से आ धमके संकट ने शिविरों में

भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। मानो हर से भारी तादाद में जीव उमड़े पड़ रहे थे।

फिर, कहीं से, किसी विशालकाय दैत्य की तरह जिसने अपने पैरों में पूरे के पूरे तने बांध रखे हों, वह आया जिसे महाकाय श्रृंगी कहा गया।

उसकी गर्जना ही पूरी युद्धभूमि को डराने के लिए पर्याप्त थी। यहां तक कि ढिंदोरची भी इससे पार नहीं पा सकते थे। लग रहा था जैसे वह जाप कर रहा हो, या क्रोध में अपशब्द बोल रहा हो, लेकिन फिर पता चला कि वह गा रहा था, भले ही वह बहुत भयावह था।

*

हनुमान और गणपति उत्तर में पहुंचे जहां जामवंत के सैनिक जीवों से लोहा ले रहे थे। पर दूर से ही उन्हें दिख रहा था कि पूर्व में सुग्रीव का मोर्चा बुरी तरह टूट गया था। वह दैत्याकार जीव किष्किंधा के तीन-चार सैनिकों को एक साथ निबटा रहा था। गणपति हैरान थे कि वह एक हाथी के समान लंबा था, और उसके सिर में यै बड़े-बड़े दांत कहां से निकल आए थे।

“ये है वाली का असली प्रतिद्वंद्वी,” नापसंदगी के पुट के साथ हनुमान ने कहा।

किष्किंधा के सैनिकों ने शिविरों के बीच लंबी क्रतारों में फैलने और हमलावरों का सामना करने की असफल कोशिश की। वे मैदान में ढूढ़ता से खड़े रहे, पर कम संख्या में होने के कारण उन्हें पीछे धकेलने में नाकाम रहे। अंततः, आमने-सामने की लड़ाई में उन जीवों का वज़न और ताक़त किष्किंधा के सैनिकों की चुस्ती-फुर्ती और रफ़तार पर भारी पड़े। जहां भी संख्या कम थी, वहां दारुण चीत्कार के साथ वे गिर रहे थे, उन जीवों के भयंकर दरांतीदार पत्थरों से उनकी बांह, या कंधा, या कभी-कभी सर धड़ से अलग जा गिर रहा था।

पर जहां कहीं भी सैनिकों का समूह बड़ा था, वहां वे भारी थे। उन्होंने कुछ प्रहार झेले, लेकिन पांच या छह की संख्या में वे उन जीवों को गिराने में सफल हो रहे थे और अपने गोलाकार पत्थरों से उन्होंने उनके सिरों पर आघात करके उन्हें अचेत कर रहे थे।

हनुमान ने देखा, कुछ किष्किंधावासी हमलावरों के तीक्ष्ण पत्थर को उठाकर अपनी पूरी हिंसक ताक़त से पलटवार कर रहे थे। हालांकि अभी उनसे इस बारे में बात करने का समय नहीं था।

हनुमान ने अपना ध्यान उस सींगधारी दैत्य पर लगाया। संभवतः वाली के दुर्जेय अगुआ वाले सिद्धांत में कुछ दम था। यदि वास्तव में वह दैत्य किसी तरह का अगुआ था, तो उसके हारने पर शेष सेना को कड़ा संकेत जाएगा। हनुमान ने तुरंत निर्णय लिया। उन्हें दैत्य को किसी और के लिए छोड़ना होगा।

“वाली की मध्य में आवश्यकता है। शत्रु के मुख्य योद्धा ने तबाही मचा रखी है और उसे रोकना होगा,” हनुमान ने अपने सेनापति से कहा।

सेनापति सिर झुकाकर संदेश देने जाने के लिए मुड़ा, तभी हनुमान को एक और महत्वपूर्ण जानकारी याद आई। “वाली को याद दिला देना कि रानी तारा का शिविर भी मध्य में ही है, जिधर वह दैत्याकार शत्रु जा रहा है।”

“गणपति,” हनुमान ने थके-हारे हाथी को पुकारा। “हम दो मोर्चों पर कमज़ोर पड़ रहे हैं। मैं तेज़ी से सुग्रीव तक पहुंच सकता हूं, और मैं वहीं जाऊंगा। कृपया आप यहां जामवंत के पास अतिरिक्त सेना मंगवाएं।”

यह कहकर हनुमान अंधेरे में दनदनाते हुए पूर्व की ओर से आ रहे भयंकर कोलाहल की ओर चल दिए, जहां उनके मित्र सुग्रीव को उनकी आवश्यकता थी।

*

रूमा ने एक सैनिक से गदा ली और तारा के समीप चौकस खड़ी हो गई। पहले की लड़ाइयों के उलट आज की रात चीखने-चिल्लाने की आवाजें पास, और पास आती जा रही थीं। विश्वामित्र उस विशाल चट्टान के शिखर पर जा चढ़े थे, जिस पर टेक लगाकर तारा विश्राम कर रही थी। केवल दक्षिण ही अपेक्षाकृत शांत लगता था।

उन्होंने गणपति के बताए अनुसार सारे फ़्लक को वर्गों से जोड़कर देखा। जहां वे थे, वहां से पूरी युद्धभूमि को इस तरह से देखना बहुत आसान था। बाईं तरफ़ वर्गों की एक श्रृंखला को शत्रु ने कोलाहलपूर्ण ढंग से केवल उनका ध्यान भटकाने के लिए उलझा रखा था। तभी, शत्रु की एक बेतरतीब, गुपचुप पर दृढ़ श्रृंखला सामने से आगे बढ़ने लगी। और एक बड़े बल ने दाईं ओर से दबाव बनाया हुआ था। इसके बाद क्या होगा, यह इस पर निर्भर करता था कि वहां कितनी संख्या में वे भयानक जीव मौजूद थे, और कितनी जल्दी वे तैनात हो सकेंगे।

उन्हें आशा थी कि लड़ाई बीच में लड़ी जाएगी, पर उन स्थितियों में जो उनके लिए अनुकूल होंगी। मगर आज की रात स्थितियां उस तरह से स्पष्ट नहीं थीं। युद्ध का कोलाहल और चीत्कार के स्वर मानो हर ओर से आ रहे थे। चारों शिविरों की परिधि के बीच बड़ी तादाद में शत्रु-जीव मौजूद थे, और वे सामने से सैनिकों को हटाते जा रहे थे।

आज जाल बिछाना संभव नहीं था। न केवल यह, बल्कि एक असली संकट और था कि आज की रात वे भयानक जीव उन दो संवेदनशील मोर्चों को भी नुक्सान पहुंचा सकते थे।

विश्वामित्र अंधेरे में दैत्य के सिर को इधर-उधर हिलते देख रहे थे। किञ्चिंधा के कुछ सैनिक उसे घेरने का प्रयास कर रहे थे, पर उन्हें कोई विशेष सफलता नहीं मिल पा रही थी।

उन्होंने नीचे बैठी गर्भवती तारा को देखा, और उस रक्षक को भी जो उसके पास खड़ी थी। फिर उन्होंने दूर अंधेरे में देखा जहां वशिष्ठ ने अपने शिष्यों के साथ शिविर लगाए थे। लगता था वह दैत्य उसे आसानी से नष्ट कर देगा।

प्रार्थना और देवी सरस्वती की सत्ता में परम विश्वास के साथ, विश्वामित्र ने अपने पास वाले सेनापति को बुलाकर कहा कि वशिष्ठ के शिविर के पास अधिक से अधिक सैनिक भेज दे। कुछ भी हो, वशिष्ठ की औषधियां नष्ट न हों। संसार में सब कुछ उस छोटे से सफेद-बालों वाले किञ्चिंधावासी वृद्ध और उसकी पत्तियों के भरोसे था।

*

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

निस्संदेह, कुछ ही मिनटों में, विश्वामित्र ने उस ओर चीत्कारों को और गहराते सुना। सौभाग्य से, अतिरिक्त सैन्य दल बहुत जल्द लाभप्रद स्थान पर पहुंच गया था। वे उन्हें ऊंचे टीले पर पंक्तिवद्ध होते और रोषपूर्ण ढंग से नीचे पत्थरों की बौद्धार करते देख सकते थे। उनमें से कुछ ढीली चट्टानों को भी धकेल रहे थे और उन्हें उन जीवों पर लुढ़का रहे थे।

विश्वामित्र का यह दांव काम कर गया।

प्रसन्न होकर वे मुड़े, तो देखा वह सींगधारी महाकाय दैत्य तारा और रूमा के ठीक सामने खड़ा है।

31

वाली का प्रतिशोध



विश्वामित्र तेजी से चट्टान से उतरे और साहस के साथ उस दैत्य और उन बहनों के बीच खड़े हो गए। अंधेरे में वह दैत्य कीचड़ में सनी विशाल कंटीली चट्टान सा दिख रहा था। उसकी बदबू सभी जीवों की एकजुट बदबू से भी बदतर थी।

तारा ने रक्षात्मक ढंग से अपने पेट को हाथों से ढक लिया और चट्टान से चिपक गई। रूमा ने एक हाथ से कसकर उसे पकड़ा, और दूसरे से गदा उठाकर कंधे पर रखने का प्रयास किया।

दैत्य उन्हें ठीक से देखने के लिए थोड़ा सा झुका। पहली बार वे उसका चेहरा देख पाई थीं। अंधेरे में भी वे उस पर छाए विनोद भाव को देख रही थीं। वह हंसने लगा, ज़ोरों से, जब तक कि उसके मुंह से लार बहकर उसकी लाल मूँछों से होती हुई धरती पर नहीं बिखरने लगी।

उसके सिर के सींग हिले। इतने पास से विश्वामित्र बता सकते कि ये कोई भेड़-बकरी के सींग नहीं हैं, जैसा कि वे सोच रहे थे, बल्कि विशाल उत्तरी हाथियों के दांत थे जिन्हें एक साथ किसी दीनहीन जीव की चमड़ी से सी दिया था।

उस दैत्य ने अपना पैर उठाया और उस ओर बढ़ाया जहां विश्वामित्र खड़े थे।

जब एक भयानक आवाज़ के साथ उसका पैर नीचे पड़ा, तो तारा की घुटी सी चीख़ निकल गई।

परंतु विश्वामित्र तेजी से हट गए थे।

वह दैत्य थोड़ा मुड़ा, और उसने फिर कोशिश की।

विश्वामित्र फिर भाग गए। तारा और रूमा अपनी सांस रोके हुए थीं। विश्वामित्र धीरे-धीरे उस दैत्य को उनसे दूर ले जाने का प्रयास कर रहे थे।

पर दैत्य जल्द ही विश्वामित्र की चाल भांप गया। उसे तारा की गंध मिल चुकी थी, और जानता था कि उसका सबसे स्वादिष्ट आहार वह अपने अंदर धारण किए हुए है।

तिरस्कार भरी फुफकार के साथ वह तेजी से मुड़ा और उद्देश्यपूर्ण ढंग से चट्टान की ओर बढ़ चला, उसके दांत अब साफ़ दिख रहे थे। हर क्रदम के साथ वह गुर्राता, और उसके मुंह से और अधिक लार टपक पड़ती। उसने दो दरांतीदार पत्थरों से बनी अपनी गदाएं छोड़ दीं, और ऐसे चलने लगा मानो नशे में हो। उसकी उंगलियां ऐंठ

रहीं थीं मानो अपने आप हरकत कर रही हों।

तारा इस भूख, उन्मत्त भूख, को पहचानती थी और यह भी जान रही थी कि वे खूनी पंजे किसलिए ऐंठ रहे हैं। उसने अपना चेहरा चट्टान की ओर करके अपनी आंखें मूँद लीं।

“मैं हूं यहां, तारा,” रूमा ने कहा, “मैं हूं।”

उसने अपनी गदा उठाई और इंतज़ार करने लगी। वह जानती थी कि अधिक से अधिक वह उसके घुटनों पर हल्का बार कर सकती है। अपने पास ही, वह तारा को बेतहाशा देवी सरस्वती से साहस देने की प्रार्थना करते सुन रही थी।

*

दैत्य के चेहरे पर किसी चीज़ का ज़ोरदार प्रहार हुआ तो वह पीड़ा से कराह उठा। उसने अपने हाथों से अपनी आंखों को ढका और पीछे हट गया, जिससे रूमा को इतनी जगह मिल गई कि वह तारा को वहां से खींच लेती, जहां दोनों फंसी खड़ी थीं।

उनके ऊपर, चट्टान पर विकराल वैष्णवी खड़ी थीं। उनके हाथ में एक घुमावदार छड़ी थी। वे एकदम शांत खड़ी थीं, उनके शरीर का तनाव उस घुमावदार छड़ी के तनाव में प्रतिबिंबित हो रहा था। छड़ी का दूसरा छोर उन संलग्न वस्तुओं के बजन से झुका हुआ था और जो रात के अंधेरे में खतरनाक ढंग से चमचमा रही थीं।

“दयनीय, घोर दयनीय,” वे गुस्से से बड़बड़ाईं। उन्हें पता था कि दैत्य किस चीज़ के लिए लार टपका रहा है। किसी और कारण से वे अपने अस्त्र को नहीं निकालतीं। उनकी छड़ी के मारक छोर पर जड़ा बर्फीले पहाड़ से निकले स्फटिक का टुकड़ा कोई साधारण वस्तु नहीं था, वह अपने शिकार की त्वचा में, उसके दिमाग़ में भी घुस सकता था।

दैत्य चिल्लाया और एक हाथ से अपना चेहरा पकड़कर उछलकर चट्टान पर चढ़ आया।

वैष्णवी पीछे हटीं, और फिर बार किया, इस बार उसके घुटनों पर। वह चीखा और दोहरा हो गया, पर अब छड़ी उसके मांस में धंस गई थी, और वैष्णवी उसे वापस खींचकर उस पर और बार नहीं कर सकती थीं। छड़ी को दूर फेंककर वह उनकी ओर लपका।

वैष्णवी ने अपना अस्त्र छोड़ दिया और दूर हट गई। संभवतः वह स्फटिक उसके रक्त में रिस रहा था और उसकी दृष्टि को दूषित कर रहा था। अगर भाग्य ने साथ दिया, तो वह दिशाहीन हो जाएगा और उसका निशाना अच्छा नहीं रहेगा।

वैष्णवी की चपलता से कुद्द छोड़ होकर दैत्य ने एक विशाल चट्टान उठा ली, पर अचानक इधर-उधर झूमते हुए वह थम गया। लेकिन अभी उसने अपनी चेतना नहीं खोई थी, और उसके हाथ और वह चट्टान मानो वैष्णवी पर केंद्रित हो गए थे, जिधर वह घूमती, वे घूम जाते।

अचानक, उसकी पीठ पर पथरों की बौद्धार होने लगी। दाएं-बाएं लहराते हुए वह पलटा।

आंखों में ऐसा क्रोध लिए वाली उसकी ओर दौड़ रहा था जिसे दैत्य भी पहचान

गया था। दैत्य का सिर बाईं ओर धूमा जहां विश्वामित्र और रूमा तारा को ले गए थे। वह जैसे समझ गया था कि वाली के लिए वह क्या मायने रखता है।

एक क्रूर, व्यंग्यपूर्ण अट्टहास के साथ उस दैत्य ने तारा की तरफ थूका, हालांकि वह इतनी दूर थी कि वह उस तक पहुंच नहीं सकता था। फिर, वाली उसके पास पहुंचता, इससे पहले ही वह तेज़ी से मुड़ा और तीव्र गति से भागने लगा।

*

वाली ने कुछ दूर उसका पीछा किया, फिर अपनी गदा फेंककर मारी। पर वह दैत्य इतना भ्रमित था कि सीधा नहीं भाग पा रहा था, और गदा पूरी तरह से उसे चूक गई। कुछ ही क्षणों में, बस उसके सींगों का ऊपरी हिस्सा ही दिख रहा था।

उसके जाने के कुछ ही पल बाद, बाकी के जीव भी पीछे हट गए।

उस रात के लिए युद्ध समाप्त हो गया था।

तारा वाली से लिपट गई और कृतज्ञतास्वरूप देवी का नाम जपने लगी।

वाली ने उसके सिर को थपथपाया और सिर हिलाया। पर वह जानता था कि अब वह कभी अपने जीवन में सुकून से नहीं रह पाएगा।

*

उस रात परिवार में एकमात्र जो चोट लगी, वह एक बार फिर दुर्भाग्यशाली सुग्रीव को ही लगी। भोर में जब उसे होश आया, तो हनुमान उसके ऊपर खड़े अपनी हथेलियों से कुछ पत्तों को निचोड़कर उनके रस को नारियल के खोपरे में उड़ेल रहे थे। वशिष्ठ ताली बजाते हुए कुछ प्रसन्नतापूर्वक गाने लगे, “सुप्रभात! सुप्रभात!”

सुग्रीव हँस पड़ा, साथ ही और सब भी जो वशिष्ठ की देखभाल में अपनी चोटों से उबर रहे थे। इतनी तबाही के बीच भी, उनके साथ किसी ऐसे का होना अच्छा ही था जो सबके मनों पर द्वाई उदासी से बेपरवाह दिखने में सक्षम था।

“क्या हुआ था?” सुग्रीव ने अंततः पूछा।

“तुमने अपनी खोपड़ी से नेतृत्व किया था, मित्र,” हनुमान ने उत्तर दिया, और फिर थोड़ा रुके क्योंकि इस टिप्पणी के अनचाहे दोटूकपन पर सब हँस पड़े थे। “मेरा मतलब, तुम पहले शत्रु को देखते ही लपक पड़े, और औरों को आकर स्वयं को घेरते हुए तुमने देखा ही नहीं।”

“हां! वो परद्वाई! मैं जानता था वह उन्हीं में से है, और तब मैंने...” पिछली रात की अस्पष्ट सी घटनाएं याद करते हुए सुग्रीव ने कहना शुरू किया।

“आप इतनी तेज़ी से गए कि आपके सैनापति और सैनिक आप तक पहुंच भी नहीं पाएं।” रूमा बोली।

“रूमा!” सुग्रीव ने अब अत्यंत प्रसन्नता से कहा और उसके हाथ को थाम लिया। अचानक वह सचेत हुआ, और देखने की कोशिश करने लगा कि और कौन वहां है। “तारा? वाली? दूसरे लोग?”

“हम सब यहीं हैं, सुग्रीव,” हनुमान ने कहा। “यह कठिन था, पर देवी की कृपा से हम सब यहीं हैं।”

“हनुमान समय रहते आप तक पहुंच गए। आपके सैनापति किसी तरह आपको

रण से वापस ले आए, पर आज हम सबके यहां होने का एकमात्र कारण हनुमान की अन्तःप्रेरणा थी जिसने उनसे कहा कि सहायता की सबसे अधिक ज़रूरत आपको है,” रूमा ने बताया।

“यदि कोई बात हमारे लिए कल्याणकारी प्रतीत होती है, तो वह देवी स्वयं कह रही होती हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम उसे सुनना सीखें,” हनुमान मुस्कुराए। ऐसा उनकी माँ कहा करती थीं, बहुत पहले, इस सबसे दूर किसी और दुनिया में।

“तारा पर भी भयानक हमला हुआ था,” रूमा कहती रही। “एक कुरूप दैत्य शिविर में घुस आया था। पर राजकुमारी वैष्णवी समय से आ पहुंचीं, और तभी वाली भी वापस आ गए, क्योंकि हनुमान ने उन्हें चेता दिया था।”

हनुमान अपने लिए रूमा का प्रशंसाभाव कभी नहीं समझ पाए थे। वह उन्हें हमेशा उनसे बड़ा समझती आई थी। वह बहुत कुछ उनकी माँ जैसी थी—कभी कुछ नहीं, हमेशा विवेकपूर्ण।

“मेरा भाई? वह ठीक तो है?” सुग्रीव ने पूछा।

“वह चिंतित है। वह भयंकर क्रोध में है। वह सुबह से उस दैत्य के सुराग में तीनों बाहरी मोर्चों की खाक छान रहा है,” हनुमान ने बताया।

“काश इसकी बजाय वो मुझे देखने आता,” सुग्रीव बोले।

*

उस दोपहर विश्वामित्र, वशिष्ठ और गणपति ने उस परिधि के अंदर कई प्रबंध किए। हनुमान ने सुनिश्चित किया कि सभी सेनापतियों ने रात के लिए तैयार योजना को समझ लिया है, और कि संचार संकेत उन्हें स्पष्ट हो गए थे। विभिन्न शिविरों के सेनापतियों के बीच सूचनाओं के शीघ्र आदान-प्रदान से ही पिछली रात की तबाही बच पाई थी। सुग्रीव के धायल होते ही यदि मोर्चा संभालने हनुमान न पहुंच जाते तो उसका मोर्चा आसानी से ढह गया होता। और वाली के वापस आए बिना वैष्णवी, तारा और तारा का अजन्मा बच्चा उस भयंकर दैत्य से बच नहीं पाते।

सूर्यस्त से ठीक पहले, वाली तारा के पास गया। वह उन प्रबंधों को नहीं देख पाया था, जो जीवों को लुभाकर धाटी में ऐसी जगह लाने के लिए किए गए थे जहां उन्हें आसानी से हराया जा सकता था। विश्वामित्र ने उसे शांतिपूर्वक इसका कारण समझाया। दो बार लौटा दिए जाने के बाद, संभव था कि आज की रात शत्रु अपनी पूरी सामर्थ्य के उन पर धावा बोले। संभव था कि चारों शिविरों पर एक साथ आक्रमण हो। सही समय पर किञ्चिंधा के सैनिक पीछे हटने लगेंगे ताकि अधिकाधिक शत्रुओं को धाटी में ला सकें। एक बार अंदर आने पर, तब तक युद्ध होगा जितना उन्हें हराने के लिए आवश्यक होगा। भोर होने पर, देवी की अनुकंपा से, जो जीवित बचे होंगे वे उनकी कृपा पर होंगे, और उपचार के लिए उन्हें वशिष्ठ को सौंपा दिया जाएगा।

“हां। हां,” अन्यमनस्क भाव से वाली ने कहा। “उपचार।”

ऐसा लग रहा था जैसे उसे अब प्रतिशोध के सिवाय और कुछ नहीं सूझ रहा था। विश्वामित्र यह भांप गए। उन्होंने चुपचाप हनुमान और गणपति से बात की, जिन्होंने फिर वाली के सेनापति से बात की। संभवतः आज की रात राजा नेतृत्व के

लिए उपलब्ध नहीं होंगे। वह आज केवल उस दैत्य को खोजेगा और उसे ध्वस्त करेगा। यह स्पष्ट था।

*

सांझ होते ही आवाजें आने लगीं, और पहले तो यह प्रतिध्वनि सी लगी क्योंकि वे हर ओर से आ रहे थे। क्षितिज पर उड़न-यंत्र मंडराने लगे, और इस बार वे हाथी दांत के टुकड़ों से जड़े लगते थे। हनुमान और वैष्णवी ने विपरीत दिशाओं से झटपट परिधि का चक्कर लगाया और अपने मोर्चों पर आ डटे। सूर्यास्त के बाद भी आसमान बहुत देर तक लाल बना रहा। और वह लालिमा हर जगह, लगभग सभी दिशाओं में छाई हुई थी।

शोर और पैरों की थाप क्रीब आती गई। लग रहा था जैसे पृथ्वी का हर तरह का जीव वहां मौजूद हो।

उन जीवों ने आगे बढ़ना बंद कर दिया, और फिर एक पंक्ति में आते हुए वे एक विशाल वृत्त में फैल गए, लगभग इतने विशाल वृत्त में जितनी विश्वामित्र ने पहले खोजी परिधि बनाई थी। वे अंदर से किसी को भी बच निकलने नहीं देना चाहते थे।

वाली पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया, यह देखने के लिए कि आखिर सींगधारी दैत्य कहां है। उसने अपने बहुत से सैनिकों को अपने और उन टोहियों के बीच दौड़ने के लिए नियुक्त किया था, ताकि दैत्य के दिखते ही वे उसे इसकी सूचना दे सकें।

हनुमान ने हाथ जोड़कर चुपचाप प्रार्थना की। इतने महीनों में पहली बार, उन्होंने अपने लिए एक कामना की। उन्होंने अपने माता-पिता के बारे में सोचा। उन्होंने प्रार्थना की कि वे सुरक्षित हों। उन्होंने प्रार्थना की कि आज रात युद्ध समाप्त हो जाए, और वे उन्हें ढूँढ़ने के लिए फिर से घर जा सकें।

हवा ने शिविर की पत्तियों को हटाया, तो वैष्णवी ने उन्हें देखा और वे अत्यंत भावुक हो गईं। “आप कौन हैं, हनुमान?” उसने स्वयं से पूछा। तभी हवा अचानक प्रचंड हो उठी और प्रतीक्षारत रणभूमि के रक्तिम सन्नाटे को चीर गई।

*

तीव्र गर्जना के साथ जीव शिविरों की ओर दौड़ पड़े। और इसी के साथ, दर्जनों चक्रविनी खाते और बेकाबू से विस्फोटक प्रक्षेपात्र आकाश में छूटने लगे। पर उनकी वीभत्स उपस्थिति ही किञ्चिंधा के सैनिकों को उकसाने के लिए पर्याप्त थी।

उन्होंने भी जीवों को डराने-धमकाने के लिए अपने दांत दिखाए, जैसा पिछले दो दिन से वे उन जीवों को करते देख रहे थे, और फिर अपनी गदाएं धरती पर पटकीं। उनसे भिड़ने का आदेश पाने के लिए उन्होंने दृढ़संकल्प से अपने सेनापतियों को देखा।

सेनापति चारों संचार मोर्चों से संदेश मिलने की प्रतीक्षा में रुके रहे। सही समय का निर्णय विश्वामित्र को लेना था।

आग और चमड़े के गोलों की शक्ल में लुढ़कते उड़न-यंत्र अब उनके बेहद निकट गिरने लगे थे।

तभी सैनिकों ने बड़ी अजीब सी बात होते देखी। वे जीव उड़न-प्रक्षेपकों को

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

पकड़ कर स्वयं को हवा में उड़ाने का प्रयास करने लगे थे। उनमें से ज्यादातर शिथिल से गिर गए। पर कुछ गुलाटियां मारते हुए उठ खड़े हुए, और नई ऊर्जा से भरी हुंकार भरते, दहाड़ते वै किञ्चिंधावालों की अग्रिम पंक्ति से भिड़ गए।

विश्वामित्र जिसे देखना चाहते थे, उन्होंने उसे देख लिया, और युद्ध आरंभ करने का संकेत दे दिया। कुछ हुंकार के साथ, किञ्चिंधा के सैनिकों ने अंतिम लड़ाई के लिए हर दिशा से हमला बोल दिया।

फिर, विश्वामित्र ने हनुमान को वह दिखाया जिसे उन्होंने देखा था। वह भी विशालकाय था, पर उससे अलग दिखता था जिसने पिछली रात उन पर हमला किया था। वह एक विशाल और भौंडी पालकीनुमा, पशु-चर्म से लिपटी मंजूषा सी, किसी चीज़ पर सवार था, जो दो कुंदों पर लटकी थी।

हनुमान ने देखा कि रथ पर मौजूद प्राणी का एक नहीं, बल्कि दस सिर प्रतीत होते हैं।

Novels English

32

दशानन



वह हुजूम किष्किंधा मोर्चे की सीमा से कुछ सौ क्रदम दूर रुक गया। दोनों ओर चल रहे जीव भी थम गए। उन्हें किसी बात का इंतज़ार था।

किष्किंधा सेनापति ने भी अपने सैनिकों से रुकने और पीछे हटने को कहा। उसने जो देखा था, उससे वह सहम गया था, और अन्य लोग भी।

उन जीवों में से एक आगे बढ़ा और उसने एक पत्थर उठाया। वह पलटा और उसे दैत्य की ओर इंगित किया, और फिर सेनापति को इंगित किया, फिर तिरस्कारपूर्वक धरती पर पटक दिया।

विश्वामित्र ने इस दृश्य को देखा और हँसते हुए हनुमान से कहा, “यानी जब वे चाहें, तो संवाद कर सकते हैं।”

“इसका क्या अर्थ हुआ,” हनुमान ने पूछा।

“वाली को वह मिल गया जो वह चाहता था। वे उसे एकल युद्ध की चुनौती देना चाहते हैं। तो यही सही।” विश्वामित्र ने वाली को बुलाने हेतु एक धावक को भेजा।

“इस प्राणी के दस सिर क्यों हैं, क्रष्णिवर?” हनुमान ने पूछा। “क्या ये उस रोग के लक्षण हैं, जिससे ये पीड़ित हैं।”

“क्या नहीं है?” निराश भाव से विश्वामित्र बोले।

*

वाली अपने निजी अंगरक्षक के साथ दौड़ता हुआ आया, और शत्रु तथा अपने मोर्चे के बीच तन कर खड़ा हो गया। क्रोध से उसकी छाती फूल रही थी। उसने दस सिर वाले दैत्य को देखा और फिर ग़लत दैत्य को चिह्नित करने के लिए अपने सेनापति पर गुर्गाया। सेनापति ने कातर भाव से विश्वामित्र की ओर इशारा किया।

गहरी सांसें भरते हुए, वाली आगे बढ़ा और सेनापति की ओर सिर हिलाया। वह युद्ध के लिए प्रतीक्षारत दैत्य की विचित्रता से किंचित भी परेशान नहीं लग रहा था।

सेनापति ने एक पत्थर उठाया और उनके सामने उसे धरती पर फेंक दिया, यह मानते हुए कि इसका अर्थ होगा कि उसने चुनौती स्वीकार कर ली है।

अब वह दैत्य उठ खड़ा हुआ। वह लंबा था, और उसके सिर मनहूस ढंग से उसके कंधों पर झूल रहे थे। वह गरजा और क्रोध से लंबे-लंबे डग भरता वाली की ओर बढ़ा।

उसे गुस्से से तकते हुए वाली निश्चल खड़ा रहा। उसका मन अब भी दूसरे दैत्य पर अटका था, जिसने उसकी रानी के इतना पास फटकने की हिमाक्त की थी; और जिसने थूकने की हिम्मत की थी; वह उसका मुंह तोड़ देगा।

वह दैत्य वाली के पास आया और रुक गया। अब वे एक-दूसरे के चेहरे देख सकते थे। दैत्य ने अपने बाएं हाथ की मुट्ठी भींचकर वाली के सिर की ओर घुमाई, और घुरघुराया। फिर उसने हाथ उठाया और बेजान सिरों के पास अपने दाएं कंधे पर थाप दी।

वाली तिरस्कारपूर्वक हँस पड़ा। हाथीदांत और जीव-मुँडों के आभूषण पहनने वाला यह उम्मीद कैसे कर सकता है कि शत्रु उसे गंभीरता से लेगा।

फिर उस जीव ने ऐसी हरकत की जो वाली को सच में कुछ कर देती। उसने ज़मीन पर थूका।

बहुत ऊँचाई से गिरते पत्थर की तरह, क्रोध की अग्नि वाली के सिर में गहरी बैठती चली गई। कुछ पल पहले महसूस की आनंदपूर्ण उपेक्षा अब नहीं रही थी। रोष से भरी हुंकार के साथ, वह दस सिर वाले दैत्य पर कूद पड़ा।

दोनों के आकार में भिन्नता के कारण उस दैत्य ने वाली की पूरी क्षमता को कम आंका था, और उसने निर्लज्ज तरीके से बस अपनी छाती आगे की दी थी।

वाली के पैर पूरी शक्ति से पड़े, और हतप्रभ दैत्य पीछे गिर गया, उसकी खोपड़ियों का झुंड उसके कंधों पर लज्जापूर्ण ढंग से उलझकर पीछे की ओर गिर पड़ा। जीवों पर एक निस्तब्ध सन्नाटा पसरता चला गया।

वाली उस दैत्य के ऊपर झुका। वह उसकी आंखों में धक्के और भय का भाव देख सकता था। यह वैसा नहीं था जिसने कभी हार देखी हो। वाली ने उसका मुंह, और उन मोटे, गंदे होंठों को देखा, और उसे अपने मुंह में थूक का गोला बनता महसूस हुआ। लेकिन, उसके हाथों में फिर हरकत हुई। उसने दोनों को जोड़कर मुट्ठी बनाई और उस जीव के मुंह पर ज़ोरदार वार किया।

दैत्य पीड़ा से कराह उठा और दूर लुढ़क गया। उसके शिराभूषण अब दयनीय रूप से उसके कंधे पर झूलते हुए पीठ पर पड़े थे। वाली उसके पीछे कूदा और उसे ज़ोरदार ठोकर मारी।

किसी तरह खड़े होते हुए उस दैत्य ने अपने सैनिकों को इशारा किया। तुरंत ही उनमें से एक ने दांतेदार कटार के आकार में छंटा एक विशाल पत्थर उसकी ओर फेंक दिया।

दर्द और क्रोध से लाल मुंह लिए दैत्य ने अपना हथियार उठाया और प्रचंडता से वाली पर वार किया।

वाली बस थोड़ा सा हट गया। पल भर उसने दैत्य को अपनी हैरानी को आत्मसात करने दिया। फिर वह पुनः उछला और उसके सिर को अपने टांगों के शिकंजे में जकड़ लिया। दैत्य बेतहाशा संघर्ष कर रहा था।

वाली उसे दबोचे हुए, अपने प्रभुत्व का आनंद लेते हुए बस ऐसे ही बैठा रहा। उसने अपने सैनिकों को प्रशंसापूर्ण दृष्टि से देखते देखा, और देखा कि हनुमान और

सुग्रीव भी आ गए थे। फिर उसने उन जीवों के चेहरों पर दृष्टि डाली, जो अपने सबसे शक्तिशाली योद्धा को इस तरह अपमानित होते देखने के साक्षी थे।

एक पल को लगा मानो केवल यह युद्ध ही नहीं अपितु किञ्चिंधा का भविष्य भी जीत लिया गया हो।

किञ्चिंधा के सैनिकों ने आनंद से जयघोष किया तो वाली के नाम की प्रतिध्वनि से पूरा युद्धक्षेत्र गूंज उठा।

*

युद्ध शुरू होने के बाद से पहली बार हनुमान ने शांति महसूस की। उन प्राणियों का तरीका भले ही असाधारण रूप से हिंसापूर्ण हो, मगर अब प्रतीत हो रहा था कि स्वयं से श्रेष्ठ सेना से भिड़ने की वास्तविकता समझने की उनकी भी कोई प्रणाली थी। शायद यह रक्तपात ख़त्म हो सकता है, इस सारी परेशानी के बिना शायद कोई इलाज मिल आए, बर्बरता और किञ्चिंधावालों की शैली के बीच शायद कोई समझौता हो जाए...

वाली अब अपनी पूँछ से उस जीव को धूल-मिट्टी में घसीटने लगा। स्पष्टतया वह अतुलनीय था। बस कुछ ही समय की बात थी कि वह दैत्य दया की भीख मांग रहा होगा, जिस किसी भी रूप में उसकी प्रजाति ऐसा करती होगी।

मगर उन जीवों की सेना में अपने नायक की धुनाई का समाचार तीव्रता से फैल गया, और कहीं दूर से, किसी और मोर्चे से वह सींगधारी दैत्य जो पिछली रात वाली से बच निकला था, दौड़ता हुआ आता दिखाई दिया। हनुमान ने उसकी आवाज सुनी, उसकी दिशा का अनुमान लगाया, और उसे रोकने के लिए तेज़ी से आगे बढ़ गए।

हनुमान सीधे उस दैत्य के रास्ते में कूद पड़े। वह आगे को गिर गया और धीरे-धीरे संभला। उसने मुड़कर अपने निकट भुजाएं ताने खड़े हनुमान को देखा। वह आगे बढ़ा मानो हनुमान से भिड़ने वाला हो, लेकिन फिर हँसते हुए मुड़ा और अपना भौंडा और उपेक्षापूर्ण गीत गाते हुए वाली की तरफ दौड़ने लगा।

हनुमान समझ गए कि वह क्या करना चाह रहा है। वह दशानन के साथ चल रहे युद्ध से वाली को भटकाना चाहता था।

इस बीच, वाली घायल शत्रु योद्धा को अपने पैरों से दबाए जा रहा था। अपने बाएं हाथ से उसने दैत्य के खोपड़ियों के हार को उठाया और मज़ाक उड़ाने के अंदाज में उसने उसके सिर को पकड़कर खींच लिया। उस क्षण, और केवल उस क्षण, लग रहा था कि वाली अपने हारते हुए शत्रु से जो चाहेगा, वह निकाल लेगा। उनके हँके-बँके अनुयायी वाली के समक्ष कापंते हुए खड़े थे।

पर तभी वाली ने शोर सुना। उसने आंख उठाकर देखा कि वह सींगधारी दैत्य हनुमान से बचकर उसकी ओर दौड़ा चला आ रहा है।

वाली के मुख पर आभार और उन्मत्तता से भरी मुस्कान तैर गई। उसका प्रतिशोध मस्त होने वाला था।

हनुमान आगे कूदे और एक बार फिर उस सींगधारी दैत्य को नीचे गिरा दिया। उन्होंने तीव्र गति से उसका हाथ पकड़ा, और उत्कृष्टता से घुमाते हुए उसे वाली की

लड़ाई से बहुत दूर पीछे उछाल दिया।

पर बहुत देर हो चुकी थी। “हनुमान!” वाली चिल्लाया। “वह मेरा शिकार है।”

हनुमान वाली के पैरों में फंसे दस खोपड़ियों वाले दैत्य को हताशा से ऊपर की ओर ताकते देख सकते थे। उसे बस वाली से पल भर की राहत चाहिए थी। विजय को हाथ से फिसलने देने के लिए बस पल भर ही चाहिए था।

हनुमान ने वाली को प्रतीक्षा करने का संकेत किया कि वे दूसरे दैत्य को पकड़कर उसके पास ला रहे हैं।

परंतु वाली तो पहले ही गुस्से से लाल था। वह धराशायी शत्रु की देह को छोड़कर अपने लक्ष्य की ओर लपक पड़ा। हनुमान उस सींगधारी दैत्य को हँसते हुए देख रहे थे कि वह वाली को विजय की कागार से दूर करने में सफल हो गया था।

पहले दस सिरधारी रहा योद्धा मुश्किल से अपने पैरों पर खड़ा हुआ और अपनी सेना की ओर भाग खड़ा हुआ। उसने अपने एक सैनिक से कुछ लिया, और फिर उसे ज़ोर से एक पत्थर को टकराया। चिंगारी निकली, और उनका एक उड़न-यंत्र फैलने और ऊपर उठने लगा। उसने एक हाथ से उसे पकड़ा, और दूसरे से निराशा में उसने अपना चेहरा ढक लिया।

जब अग्नि पूरी तरह से प्रज्वलित हुई तो हनुमान लगभग उसके पास ही थे। अचानक, चाप बनाते हुए वह यंत्र खोपड़ीधारी दैत्य के पिटे हुए शरीर को उसके मोर्चे से बहुत दूर ले गया।

उसी समय हनुमान समझ गए थे कि वाली ने कितनी बड़ी ग़लती कर दी है, जिसका फल उसे और किञ्चिंधा को भुगतना पड़ेगा।

*

युद्ध फिर से विकराल हो गया। वे सभी जो वाली और उस दस-सिर वाले दैत्य के द्वंद्वयुद्ध को देखने के लिए रुक गए थे, उसे भूलकर फिर से युद्धोन्माद में वापस लौट गए। जैसा कि विश्वामित्र का अनुमान था, युद्धक्षेत्र में वाली पूर्णतया अप्रत्याशित साबित हुआ था। वह सींगधारी दैत्य उसे चकमा देकर अपने पीछे ले गया था।

परंतु अब वाली का उन्माद बेमानी था। विश्वामित्र ने अपनी योजना में इसकी गणना कर ली थी। निर्देश के अनुसार, हनुमान इस हँगामे से निकलकर मध्य क्षेत्र में लौट गए थे, जहां से वे देख सकते थे कि गणपति, जामवंत और वैष्णवी शत्रु सेना को घाटी में लाते हुए धीरे-धीरे पीछे हट रहे हैं।

हनुमान ने शांतिपूर्वक वशिष्ठ और उनके शिष्यों द्वारा स्थापित आंतरिक परिधि का निरीक्षण किया, और सुनिश्चित किया कि व्यवस्था में लगे सैनिक सतर्क और तैयार रहें। मगर यह देखकर वे मुस्कुराएं बिना न रह सके कि प्रसन्नमना वशिष्ठ अपने आसपास बड़े पैमाने पर हो रहे थे विनाश से अब भी पूरी तरह अनजान थे।

सब कुछ धीरे-धीरे हो रहा था, पर ठीक वैसे ही जैसे सोचा गया था। वे गणपति की, और फिर वैष्णवी की और उसके बाद पहाड़ी से नीचे उतरती छायाओं की भाँति जामवंत की सेना को देख सकते थे। और अनन्यस्त होते हुए भी किञ्चिंधा के पैदल सैनिक अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभा रहे थे। अपने क्रोध और अपने हताहत साथियों का बदला लेने की इच्छा के बावजूद अधिकांश वही कर रहे थे जो

इस अस्वाभाविक युद्ध के सिर पर आ पड़ने से पहले वे स्वाभाविक रूप से करते थे। वे अब उन जीवों के साथ खेल रहे थे, उन्हें चिढ़ा रहे थे, अपनी चुस्ती से उनके घूंसों से बचते हुए उन्हें अंदर खींचे ला रहे थे। बस सुग्रीव का कोई अता-पता नहीं था।

*

हनुमान ने विश्वामित्र को पहाड़ी पर वशिष्ठ की ओर जाते देखा। वे यह पूछने के लिए शीघ्रता से उनके पास गए कि क्या उन्होंने सुग्रीव को देखा है। मगर विश्वामित्र उससे ज्यादा जानते प्रतीत हुए, जितना उन्होंने देखा था।

“अब जो होगा सो होगा,” वे बोले, उनकी स्थिर दृष्टि वादी के सामने वाली पहाड़ियों पर अपना स्थान ग्रहण करते वशिष्ठ और उनके शिष्यों पर जमी थी।

“पर सुग्रीव का क्या? मुझे उसकी सहायता को जाना चाहिए, है न?”

“सुग्रीव वाली की सहायता के लिए हर जगह पीछे लगा रहता है। और वाली स्वयं को महावीर दिखाने के चक्कर में इस रणभूमि के सबसे तुच्छ मांस के लोथड़े के पीछे लगा है। हे बुद्धिमान और साहसी केसरीनंदन, क्या तुम्हें यहां वास्तव में कुछ भी सार्थक दिख रहा है?”

हनुमान ने विश्वामित्र के स्वर में ऐसा ठहराव और ठंडापन महसूस किया, जो पहले कभी नहीं सुना था। और, कृषि सही कह रहे थे। वे क्या करना चाहते थे? सुग्रीव उनका मित्र और भाई था; पर सुग्रीव उस बाध्यता के कारण चला गया जिसने उन दोनों भाइयों के जीवन को जकड़ रखा था। हनुमान ने हल्के से सांस छोड़ी, और अपने मित्र की चिंता छोड़ दी। वे भरोसा करेंगे कि देवी उसका ध्यान रखेंगी। उन्हें यहीं, विश्वामित्र के पास ही रहना होगा। एक भी ग़लती हुई तो ये जाल नाकाम हो जाएगा, या उससे भी बुरा यह कि यह नरसंहार में बदल सकता है।

33

आदिकालीन समाधान



हनुमान ने अपने सामने फैली वादी के पार पहाड़ी पर वीर गणपति को चढ़ाते हुए देखा। इसका अर्थ था कि उनके योद्धा घाटी से निकल गए थे या कम से कम उसके किनारे तक पहुंच गए थे। वहां उनकी उपस्थिति आवश्यक थी। उनके वहां होते हुए जीव पलायन नहीं कर सकते थे।

तभी जामवंत दूसरी चोटी पर दिखे, और उनके सेनानायक ने चकमक पथरों को मारकर संकेत किया कि वे भी पूर्णतः तैयार थे।

अंत में वैष्णवी भी ऊपर आई। भिड़ंत की आवाजें अब पूरी तरह से उस परिधि के अंदर सिमट गई थीं जो तय की गयी थीं।

विश्वामित्र ने धीरे से वशिष्ठ के कंधे को छुआ।

“गुरुवर, अब!” उन्होंने कहा।

“फी फी एक!” वशिष्ठ ने अपने शिष्यों से कहा।

संपूर्ण घाटी को रोशन करते हुए एक तीव्र हरी रोशनी आकाश की ओर उठी। किञ्चिंधा के योद्धा पहले से ही अपने अपेक्षित स्थानों पर मौजूद थे, मुख्यतः बाहरी सीमाओं पर।

“फी फी दो!” वशिष्ठ ने पुकारा और ताली बजाई।

एक और रोशनी उठी और तीव्र चमक के साथ फट पड़ी, जीवों को कम से कम कुछ क्षणों के लिए चाँधिया देने के लिए। योजना के अनुसार, किञ्चिंधा के योद्धा स्वयं को मुक्तकर शीघ्रता से बाहर भागने लगे, ऐसा करते हुए वे अपने साथियों की सहायता के लिए रास्ते के शिकंजे और फंदे खोलते गए।

रोशनी के मंद होने से पहले ही जीवों को यह अहसास होने लगा था कि वे पहाड़ियों से घिरे एक अत्यंत बड़े क्षेत्र में। उनके पीछे कुछ ही दूर एक गहरी और काली नदी गरजती बह रही थी। यह अवश्य ही एक जाल था।

वे चीत्कार करने लगे, और गुराकिर एक-दूसरे को आदेश देने और निकलने का प्रयास करने लगे, लेकिन वशिष्ठ पहले ही फी फी तीन की पुकार लगा चुके थे।

पहाड़ियों की चोटियों से एक गुलाबी लौ की परत उठी और विनाश की दीवार के समान नीचे उतरने लगी। तभी नदी के किनारे-किनारे अग्नि की एक और दीवार उठने लगी।

जीव चिल्लाएँ और फिर विलाप करने लगे।

*

“काश देवी वायु को लेकर इसी प्रकार सहयोग करें, तो अभी सब ठीक रहेगा,” विश्वामित्र ने कहा। अपेक्षानुसार, अग्नि उन्हीं रेखाओं के साथ-साथ फैली थी जिस तरह वशिष्ठ ने तैयारी की थी, और जीवों को लीलने के लिए आगे तक नहीं गई थी। उनके शिष्यों ने योजना के अनुसार ही ज्वलनशील और अग्निरोधक पदार्थों को उचित मात्रा में मिलाया और फैलाया था।

कुछ घंटे बाद रोना-कराहना थम गया। असहाय भाव से अपनी कड़ी परीक्षा को स्वीकार करते हुए जीव अपनी चीथड़ा खालों और बालों को हटाने लगे थे।

“क्या फी फी चार का समय है?” विश्वामित्र ने वशिष्ठ से पूछा।

“नहीं, फी फी नहीं,” वशिष्ठ ने कहा, जैसे कि विश्वामित्र को यह मालूम होना चाहिए था।

उन्होंने अपने शिष्यों की ओर इशारा किया और वे हाथों में सूखी पत्तियों के ढेर और किसी प्रकार की कुछ शाखाओं को लिए नीचे उतरने लगे। उन्होंने इन वस्तुओं को आग में डाल दिया, जिससे एक तीक्ष्ण, कसैली गंध उठने लगी जिससे सब खांसने लगे।

“मुझे इसका इतना कटु होना याद नहीं है,” विश्वामित्र ने कहा।

हनुमान को यह कृष्णराज के पीछे रह जाने वाली रहस्यमय और शक्तिशाली गंध के समान लगी। जब वशिष्ठ की योजना सामने आने लगी, तो हनुमान रुके और फिर से कामना करने लगे कि वाली और सुग्रीव कुशल हों। लेकिन उस युद्ध में उनका स्थान नहीं था। उन्हें यहीं रहना था। अगर जीव छूट निकले, या कुछ और अनहोनी हो जाए, तो उस स्थिति में उन्हें यहीं होना चाहिए था। इसी के लिए वे महीनों से संघर्ष कर रहे थे, उसी समय से जब सुग्रीव के घाव से रक्त की पहली बूंद गिरी थी, उन हड्डियों से जिन्हें लेकर विश्वामित्र ने पूरा किञ्चिंधा पार किया था, प्रशिक्षण, युद्ध, हत-नष्ट हुए जीवन...

वे खांसे नहीं। मगर उनकी आंखें भर आईं।

*

सुबह तक जीव शक्तिहीन हो गए थे। वे पसीने और लार में लथपथ पृथ्वी पर नग्न पड़े थे। आगें अभी भी जल रही थीं, परंतु लपटें हल्की हो गई थीं। अब उनका पसीना बहना रुक चुका था, और बहुतों की उल्टियां भी बंद हो गई थीं। कुछ की जिहवाएं बाहर लटकी हुई थीं। कुछ अन्य लाचारी से पास में तेज़ी से बहती नदी को निहार रहे थे, जिसमें उनकी प्यास बुझाने के लिए भरपूर जल था, परंतु बीच में अग्नि की दीवार थी जो थमने का नाम नहीं ले रही थी।

हनुमान ने देखा कि उनमें से कुछ ने, बहुत कम ने, लगभग कोमलता से एक-दूसरे को बाहों में थाम रखा था।

सूरज निकला, और हमेशा की तरह, उन जीवों की बची-खुची हिम्मत भी साथ छोड़ने लगी।

हनुमान उनकी ओर बढ़े, उनके पीछे विश्वामित्र और कुछ सैनिक थे।

सैनिकों ने कुछ जड़ी-बूटियां छिड़कीं और अग्नि-दीवार को कुछ हाथ बुझा दिया। हनुमान अंदर गए। यह एकदम भिन्न अनुभव था, वे सैकड़ों जीवों से घिरे थे, मगर कोई उन्हें क्षति नहीं पहुंचाना चाहता था।

गंध अभी भी भीषण थी, परंतु अब यह केवल जीवों की नहीं थी। अब यह वायु में थी, जो जलाकर आसमान में भेज दी गई थी।

हनुमान सबके चेहरे देखते हुए शांति से धम रहे थे। कोई नहीं हिला। न ही किसी ने कुछ किया। यह देखकर उन्हें अचानक किञ्चिंधा के वनों की याद हो आई। जहां किसी को किसी अन्य प्राणी से डरने की आवश्यकता नहीं थी।

तभी उन्होंने अपने पीछे कोई आवाज़ सुनी और वे देखने के लिए मुड़े। वैष्णवी भी आ गई थीं। हनुमान हिचकिचाए। उनकी मुट्ठियां कस गईं और अचानक वे सर्क के गए। क्या वे यहां सुरक्षित थीं? क्या वास्तव में वे अब संकट से बाहर थे जैसा उन्हें लगने लगा था कि वे हो गए हैं?

अभी भी एक जीव नहीं हिला था। उन्होंने देखा वे उन जीवों के बीच इस तरह चल रही थीं जैसे अपने लोगों के बीच चल रही हों। उस समय वे जीव देवी की सृष्टि के किसी अन्य जीव के समान ही प्रतीत हो रहे थे। वे जीवित थे और अन्य भी। इसके अतिरिक्त किसी और चीज़ की आवश्यकता नहीं थी।

वैष्णवी ने भी महसूस किया कि अब सब सुरक्षित है, और उन्होंने अपने रक्षकों को इशारा किया। वे सावधानीपूर्वक आए और उन्हें जल से भरा नारियल थमा दिया। उन्होंने कुछ जल जीवों के हाथों में डालने का प्रयास किया। वे समझ न सके। लेकिन जब वह पृथ्वी पर गिरा, तो वे झुककर उसे चाटने लगे।

उन्होंने ऐसे शर्करों का निर्माण किया था जो पक्षियों के समान उड़ते थे और अग्नि उगलते थे। वे अपने हाथों से हाथियों को मार डालते थे। इन्हीं हाथों से वे सैकड़ों किञ्चिंधावासियों के प्राण ले चुके थे।

मगर ये हाथ यह नहीं सीख सके थे कि होंठों तक थोड़ा सा पानी कैसे ले जाते हैं।

हनुमान ने वैष्णवी के मुख पर आई दया को देखा, और शीघ्र ही उन जीवों के अज्ञान पर करुणा से भर उठे।

वे वैष्णवी के पास गए और उनके निकट एक घुटने पर बैठ गए। उन्होंने अपना दायां हाथ उठाया और उसे साधने के लिए बाएं हाथ को नीचे लगाया। वैष्णवी ने कुछ जल उनके हाथ में डाला, और उन्होंने सावधानी से एक बूंद भी गिराए बिना उसे पिया, वे एक क्षण के लिए भी नहीं भले थे कि वे किन दुर्दैत घटनाओं से पार निकले हैं। ये सब कुछ, शायद ऐसे कुछ के लिए ही, हाथ में मौजूद जल की कुछ बूंदों का महत्व जानने के लिए, यह सीखने के लिए कि जल को अपने मुंह तक कैसे ले जाया जा सकता है, और अपने प्रियजनों को भी ऐसा करते देखना।

कुछ जीव इतने शक्तिहीन थे कि वे बैठ भी नहीं सकते थे। उनके साथियों ने जल लिया और फूहड़पन से इसे अपने मुखों पर छिटकाने लगे थे। उनकी भुजाओं में वही शक्तिशाली यांत्रिक बल था जो हाथियों को मारते समय हुआ करता था। लेकिन अब वे उनका एक नया प्रयोग सीख रहे थे।

उनमें से एक जीव ने पानी लिया और पहले अपने साथी को दिया।

हनुमान मुस्कुरा दिए।

फिर वैष्णवी चली गई और हनुमान भी। पहाड़ी की ढलान के साथ सैनिकों की एक पंक्ति जीवों के लिए केले लिए बैठी थी। प्रत्येक किष्किंधावासी के चेहरे पर इस आदिम जीव के लिए एकमात्र भाव दया का ही था, जो उस धर्म से पूरी तरह से दूर थे जो किष्किंधा के लिए अतिघनिष्ठ था।

*

मध्याह्न के समय, सुग्रीव शिविर में वापस लौटा। वह अकेला था।

सुग्रीव को देख कर रूमा राहत की सांस लेते हुए उठी, लेकिन तभी उसे अहसास हुआ कि सुग्रीव के अकेले लौटने का तारा के लिए क्या अर्थ है। और तारा के अजन्मे शिशु के लिए।

तीनों ने एक दूसरे का आंसुओं से भरा आलिंगन किया।

“लेकिन वे वापस क्यों नहीं आए?” तारा ने आंसुओं को पीते हुए पूछा। “हमारे पुत्र के लिए भी नहीं?”

“उन्होंने सौंगंध ली है कि वे तब तक वापस नहीं आएंगे जब तक कि अपने अपमान का बदला नहीं ले लेते,” सुग्रीव ने धीमे एवं दुखी स्वर में सूचित किया।

“उन्होंने अभी तक बदला क्यों नहीं लिया?” रूमा ने पूछा।

“सींगधारी दैत्य ने दौड़ना रोका ही नहीं। और वाली ने भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। मैं महान पर्वतों की तलहटी तक उनके पीछे गया, जिसके पार महा प्रस्थान स्थल है। वहां दैत्य एक गुफा में गुम हो गया। तब वाली एक क्षण के लिए रुके, मुझे आलिंगन कर आपके पास वापस जाने को कहा।”

तारा ने रोना बंद किया और टकटकी लगाकर उत्तर की ओर देखने लगी। “वो वापस आएंगे। मुझे पता है।”

रूमा मुस्कुराई और उसका आलिंगन कर लिया।

“उन्होंने मुझसे कहा है कि मैं आपका भली प्रकार ध्यान रखूँ और शिशु का... अगर उन्हें... देर लगे तो।”

उस दोपहर विश्वामित्र, गणपति, जामवंत, और वैष्णवी के संरक्षण में, वाली की अनुपस्थिति में किष्किंधा नरेश के रूप में सुग्रीव का अभिषेक किया गया। उनका जगत एक संकटपूर्ण संक्रमण काल में था। सुग्रीव ने आग्रह किया कि वह केवल नाममात्र का प्रमुख रहेगा और वह भी केवल वाली के पुत्र का जन्म होने तक। परंतु विश्वामित्र का आग्रह था कि सुग्रीव को इससे कहीं अधिक करने के लिए तत्पर रहना होगा।

अंततः, जीवों को हाल में ही अधीन किया गया था। जब तक कि वे अच्छी तरह से यह नहीं समझ जाते कि उन्हें फिर से परम धर्म का उल्लंघन नहीं करना है, तब तक उनके लिए यह याद रखना अच्छा होगा कि किष्किंधा सामर्थ्यवान है और बल प्रयोग में सक्षम है। इसके लिए उन्हें पता होना चाहिए कि किष्किंधा पर एक शक्तिशाली नरेश का शासन है, और वाली ने अपने भाई द्वारा अपनाने के लिए यही आभासिंडल छोड़ा था।

सुग्रीव ने एक निगाह रूमा पर डाली, और फिर आसपास मौजूद सब लोगों को

देखा। वे उसे इस निगाह से देख रहे थे जैसे पहले कभी नहीं देखा था। उसे सभी की अपेक्षाओं पर खरा उतरना था। यह सहज कार्य नहीं होगा। तभी उसकी दृष्टि हनुमान पर पड़ी, चैन की सांस लेते हुए वह आगे बढ़ा और उन्हें गले लगा लिया।

“महाराज सुग्रीव,” हनुमान ने कहा, “आपके योग्य हाथों में किञ्चिंधा को देखकर मेरे पिता को गर्व होगा।”

अपने प्रति हनुमान के अनुराग से अभिभूत, सुग्रीव मुस्कुराया। फिर अचानक वह हंसने लगा। “मेरा पहला आदेश....,” वह चिल्लाया और रुक गया। और फिर उसने सबका ध्यान आकर्षित करते हुए कहा। “मैं सुग्रीव, किञ्चिंधा नरेश, अपने प्रिय मित्र और किञ्चिंधा के हमारे श्रेष्ठतम पुत्र, हमारे हनुमान, के निर्वासिन को समाप्त, नहीं, विसंगत, मूर्खतापूर्ण और खोखले, तथाकथित निर्वासिन को समाप्त करने की यथोचित घोषणा करता हूं।”

“एक भाई कहता है जबकि दूसरा भाई युद्ध करता है,” रूमा ने कहा और हंस पड़ी। तारा भी हंसी, अब वह आश्वस्त सी थी जैसे सब ठीक हो जाएगा।

“मैं, जामवंत, सबसे पहले आपका अभिवादन करता हूं, श्रेष्ठ सुग्रीव। आपका सिंहासन अच्छे कर्मों द्वारा निर्मित है और मुझे ज्ञात है सर्वोत्तम व्यक्तियों द्वारा संरक्षित है।” वे हनुमान की ओर मुड़े जैसे कि उनका आलिंगन करेंगे, परंतु इसके बजाय उन्होंने अपने पंजों को जोड़कर उन्हें सम्मानपूर्वक प्रणाम किया।

हनुमान ने अभिनंदन स्वीकार किया और नमन किया। उन्होंने विश्वामित्र और वशिष्ठ की ओर देखा और एक क्षणिक, तिरछी निगाह वैष्णवी पर डाली।

“सुग्रीव, मेरा मतलब, महाराज सुग्रीव,” हनुमान ने कहा। “सुशासन करें और हमारे लोगों में पुनः आशा जगाएं। हमें इस निराशाजनक काल को जो हमने देखा है, अपने हृदयों में घर नहीं करने देना चाहिए। मैं जानता हूं कि आप विवेकपूर्ण और न्यायपूर्ण रहेंगे, और इन अशांत जीवों को बसाने के इस कठिन काल में देवी आपका मार्गदर्शन करेंगी।”

“तुम भी मेरा दिशानिर्देश करना, हनुमान,” सुग्रीव ने नर्मी से कहा।

“आपका दिशानिर्देश कर पाने से पहले मुझे बहुत कुछ सीखना होगा, प्रिय मित्र,” हनुमान ने कहा। “अगर हमारे ऋषि आज्ञा दें तो मेरी इच्छा है कि मैं देवी सरस्वती के प्राचीन ज्ञान का अध्ययन करूं और उसे जानूं। अगर देवी ने चाहा तो मेरे माता-पिता जहां कहीं भी हों मैं उनसे पुनः मिलना चाहूंगा। अतः अभी तो मेरे बिना ही हमारे सूर्य से उदीप घर वापस जाओ, और जब भी संभव हो तो मेरे और हमारे उन खेलों के बारे में सोचना जो हम नदी किनारे खेला करते थे।”

“हनुमान? तुम हमारे साथ नहीं चलोगे?” सुग्रीव ने अविश्वास और दुख से भरे स्वर में पूछा।

“सुग्रीव, मेरे पुत्र। किञ्चिंधा नरेश,” विश्वामित्र ने मृदुल भाव से कहा। “तुम्हारा मित्र तुमसे कई वर्ष छोटा है। वह बालक है, अभी ही एक पुरुष के समान खड़े होने योग्य हुआ है। और यह अभी ही इतना कुछ देख और कर चुका है जो इसकी उम्र एवं मासमियत के किसी अन्य व्यक्ति ने कभी नहीं किया होगा। लेकिन अगर इसके हृदय में ज्ञान की अभिलाषा है तो इस बार हमें अवश्य ही इसका द्वितीय संस्कार करवाना होगा। हमें सुनिश्चित करना होगा कि यह सर्वश्रेष्ठ गुरुकुल में ही जाए। और हमें इसके माता-पिता को भी सूचित करना होगा।”

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

“जब देवी निर्णय करेंगी कि तुम्हें मेरी आवश्यकता है,” हनुमान मुस्कुराए, “तो वे अवश्य ही मुझे तुम्हारे पास पुनः भेजेंगी, सुग्रीव।”

सुग्रीव और हनुमान गले मिले, और भाइयों की तरह रोए। कुछ ही दिन में उनके रास्ते अलग हो जाने वाले थे।

Novels English & Hindi

34

कामधेनु



पांच दिनों में जो भी कुछ करना चाहिए था, वह कर दिया गया। युद्ध में पकड़े गए जीव अब कुछ दिन पहले के क्रूर हत्यारों के बजाय सहयोगपूर्ण रोगी के समान व्यवहार कर रहे थे। उनके कुछ अ-योद्धा साथी जो लड़ाई से अलग रहे थे, वे हर रात घिसटते हुए जिज्ञासावश औषधियुक्त अग्नि के पास आ जाते थे, और वे अन्य जीवों के साथ आ गए थे। वे शांतिपूर्ण शरणार्थी जो देवी गणपति के साथ आए थे, वे नव-अधीनस्थ जीवों के साथ घुलने-मिलने लगे थे, और उन्हें यह आश्वासन दे रहे थे कि किष्किंधावासी केवल उनकी सहायता करना चाहते थे।

हर रात वशिष्ठ विशेष प्रकार की सुगंधियों से युक्त आग जलाते थे। दूसरी रात जीवों ने लार टपकाना बंद कर दिया। तीसरी रात वे फिर से सोने लगे, कदाचित बिना किसी दुस्वप्न के।

प्रत्येक सुबह, वशिष्ठ का एक युवा और पतला-दुबला शिष्य जिसे किसी ने पहले नहीं देखा था, नदी में तैरकर आता, ऋषियों को प्रणाम करके जीवों को विभिन्न व्यायाम सिखाता। हनुमान ने ध्यान दिया कि नदीय सर्पों का एक छोटा सा दल भी देखने के लिए जल के किनारे आ जाता था। उन्हें अहसास हुआ कि ये व्यायाम उन्हें करनेवालों के शरीरों को सर्पों के समान वेगवान, सुकुमार और प्रकृति के साथ सामंजस्ययुक्त बना रहे थे।

हनुमान ने भी व्यायाम करना शुरू कर दिया। तीसरे दिन उनका शरीर अपनी इच्छानुसार चलने लगा। सूर्योदय के साथ ही वे व्यायामों के अनेक चरण करने लगे, और—प्रत्येक चरण के साथ—जैसे वे सूर्य के निकटतर पहुंचते जा रहे थे।

जब उन्होंने ऐसे इक्कीस चरण पूरे कर लिए, तब उन्हें नीचे नदी तट से फुसफुसाहट सुनाई देने लगी। ऋषि और उनके शिष्य प्रशंसा से उन्हें देख रहे थे। उन्होंने इसे जारी रखने का इशारा किया और जब हनुमान ने ऐसा किया तो वे भी उनका अनुकरण करने लगे।

विश्वामित्र ने वैष्णवी से वही कहा जिसकी उन्हें आशा थी कि वे कहेंगे, “केवल सूर्य ही इस लड़के को ऐसा कुछ सिखा सकते हैं जो यह पहले से नहीं जानता।”

“तो हम इन्हें सूर्य के पास ही ले चलेंगे,” वे मुस्कुराईं।

व्यायाम के उपरांत जब किष्किंधावासी और जीव पृथ्वी पर मौन और शांत

पड़े थे, तो ऐसा लग ही नहीं रहा था जैसे अब कोई भी या कुछ भी भिन्न रह गया था।

*

युद्ध के बाद की छठी सुबह, विश्वामित्र ने युद्ध में हुई क्षतियों के लिए क्षमायाचना में भूमि की स्तुति की। शेष योद्धाओं ने भूमि को भलीभांति स्वच्छ किया, और पौधे लगाए एवं उन्हें जल दिया।

फिर उन्होंने नदी के किनारे-किनारे दक्षिण की ओर चलना प्रारंभ किया। विश्वामित्र ने कहा कि उन्हें एक स्थान पता है, जो बहुत दूर नहीं है, जहां जीवों को अपना निवासस्थान बनाने और शांति से जीवनयापन करने के लिए छोड़ा जा सकता है। इसके पश्चात वे और वशिष्ठ हनुमान को लेकर पूर्व के एक गुरुकुल जाएंगे जहां वे स्वयं सूर्य से ज्ञान प्राप्त करेंगे।

हनुमान ने एक बार पीछे दृष्टि डाली और पौधों को देखा जहां कभी छिन्न-भिन्न शरीर पड़े थे। लगभग ऐसा लग रहा था जैसे संघर्ष एक भ्रम मात्र था। उन्होंने दूर तक फैले विस्तृत क्षितिज को देखा। दूसरे सिरे पर आकाश के किनारे उदीयमान सूर्य के रक्ताभ से गुलाबी हो गए थे।

वे उन जीवों के बारे में सोचने लगे जो भागने में सफल हो गए थे, विशेषकर उस दशानन के। वाली से पिटने के बावजूद वह दशानन हार मानता नहीं लग रहा था। वाली ने ग़लती की थी, यद्यपि इसके समस्त परिणाम अभी किसी को ज्ञात नहीं होंगे। वाली ने यह महंगा बदला चुना था, अपने बच्चे के जन्म पर न रहना तो केवल शुरुआत होगी।

विश्व अब शुद्ध नहीं रह गया है, हनुमान ने सोचा। शायद कभी शुद्ध था ही नहीं। व्यक्ति केवल एक ही काम कर सकता है वह यह कि समस्याएं जैसे-जैसे आएं, उनका समाधान करता जाए। एक अच्छी बात यह हो सकती थी कि भले ही वाली का पुत्र लंबे समय तक अपने पिता से न मिल पाए, तब भी वह शांतिकाल में जीएगा जैसे कभी वे रहते थे। बल एवं न्याय का विवेकपूर्ण मेल ही परम धर्म को पुनः संभव बना सकता था।

“इन विचारों को सूर्य के लिए सुरक्षित रखो,” वैष्णवी ने कहा और हंस पड़ीं।

हनुमान को पता ही नहीं लगा था कि वे उनको देख रही हैं।

“वे तुम्हें गुरुकुल में लेकर बहुत प्रसन्न होंगे,” उन्होंने कहा, “वे हर समय इसी तरह रहते हैं, सोचना, सोचना, जैसे कोई बहुत ऊँचा पर्वत मगर उसमें कोई वास्तविक गति न हो।”

“क्या मैं वैसा हूं, वैष्णवी? मुझमें कोई गति नहीं है?” हनुमान ने गंभीरता से पूछा।

वैष्णवी ने स्नेह से अपना हाथ उनके हाथ पर रख दिया। “इस पृथ्वी पर तुम्हारे समान कोई नहीं है, हनुमान।”

*

कुछ ही दिन में वे अपने गंतव्य के निकट पहुंच गए थे। अपने आसपास की भूमि पर

उन्हें जीवन के संकेत मिलने लगे थे। आकाश में पक्षी थे और वे चहचहा रहे थे। यहां पेड़ बहुत थे और वे फूलों-फलों से लदे थे। सर्वत्र एक व्यवस्था व्याप्त थी, मानो प्रत्येक वस्तु को विकास और उत्पादन के लिए फुसला लिया गया हो, और किसी चीज को नुक्सान नहीं पहुंचा हो।

विश्वामित्र ने प्रयाण को रोका और स्वयं वशिष्ठ के साथ कुछ व्यवस्था करने आगे चले गए। “इनका मनोबल बनाए रखना, हनुमान,” उन्होंने कहा। “बस कुछ और क्षणों में इन्हें नया संरक्षक मिल जाएगा।”

हनुमान सोचने लगे कि किष्किंधा का कौन सा कुटुंब इतना साहसी होगा जो एक समय प्राणधातक रहे इन जीवों को रखने को तत्पर होगा। यह सच था कि वे अब उन भयंकर जीवों की परछाई समान भी नहीं लग रहे थे जो वे जीवन भर रहे थे। पिछले कुछ दिनों में, उन्हें वापस लौटने के कई अवसर मिले थे। वे आसानी से अपने बंदीकर्ताओं पर आक्रमण कर सकते थे या भाग सकते थे, परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। वे स्वयं को प्राप्त जीवनदान, और उस जीवनशैली से संतुष्ट थे जिसमें दयालुता के लिए स्थान है। अब दिखने लगा था कि कुछ शरणार्थी जल्द ही मां बनने वाली हैं। हनुमान ने सोचा कि ऐसा होना असंभव ही है कि किष्किंधा की देखरेख में जन्म लेने वाले इन नए बच्चों को अपने माता-पिता द्वारा खाए जाने का भय रहे।

वशिष्ठ का एक शिष्य दौड़ता हुआ आया और उसने हनुमान से कहा कि अब वे आ जाएं और अपने अतिथियों को भी साथ ले आएं।

“क्या यह भी कोई गुरुकुल है, वैष्णवी?” हनुमान ने एक छोटी सी पहाड़ी पर चढ़ते हुए पूछा जो उन्हें उनके गंतव्य की ओर ले जा रही थी।

“ऐसा बहुत कुछ है जो मैं नहीं जानती, हनुमान,” उन्होंने कहा और हंस पड़ीं।

“स्वागत है, मित्रो,” साफ़ मैदान के बीचोबीच स्थित, सुंदरता से सजे मिट्टी के टीले के शिखर से एक आवाज़ आई। हनुमान ने सिर उठाया तो देखा कि दो बड़ी-बड़ी, काली, उदार आंखें उन्हें देख रही थीं। उसका चेहरा हिरण के समान था परंतु वह सफेद थी। हनुमान जान गए थे कि वो एक मां है। जिस प्रकार उसने अपना सिर उठा रखा था, और जैसी उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी, शायद एक गज-माता के समान प्रबल, मगर फिर भी भिन्न।

उसके सींग भी थे, जो पीले व लाल रंग की धारियों से रंगे थे। ऐसी ही मेल खाती धारियां उसके चारों पैरों पर भी थीं। रंगीन फूलों के हार ने उसकी गर्दन को सुशोभित कर रखा था।

“माता का मध्येनु,” विश्वामित्र ने कहा, “यह नवयुवक हनुमान हैं। इनकी वीरता के कारण ही यह दिन संभव हो सका है।”

हनुमान ने सम्मानपूर्वक अभिवादन किया।

“और ये वैष्णवी हैं, उत्तरी धाटी की राजकुमारी एवं इनके पिता...”

“सूर्य हैं, मैं जानती हूं,” विनम्रता से सिर झुकाते हुए कामधेनु ने कहा, और उनके चौटी के समान गुथे हार से गुलाब की पत्तियां बिखर गईं। “स्वागत है, बच्चों।”

हनुमान चकरा गए। उन्होंने वन में ये सींग, ये आंखें, ये पदचिह्न देखे थे। परंतु वे तो सबसे संकोची प्राणी थीं। यहां ये निर्भीक लग रही थीं, और वे किष्किंधा में अब तक देखे गए सर्वाधिक हिंसक जीवों को शरण देने को तैयार थीं।

“लगता है हनुमान इन जीवों को अंदर लाने को लेकर आशंकित हो रहे हैं,”

कामधेनु ने कहा।

विश्वामित्र धीरे से हंसे। “सब ठीक है, हनुमान। सब ठीक रहेगा। आ जाओ।”

हनुमान ने सेनानायकों की ओर हाथ हिलाया और उन्होंने सबको उठने और चलने का इशारा किया। वे कामधेनु के पीछे-पीछे बादी में पहुंचे तो उनके सामने ऐसा परिदृश्य था जैसा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

नदी के दोनों किनारों पर, भूमि स्वच्छ हरे चतुर्भुजों में बंटी थी। हर तरफ घास थी—कुछ लंबी तो कुछ छोटी। वहां मिट्टी के बने कुछ चौकोर घर थे और सैकड़ों गायें यहां-वहां धूम रही थीं। वशिष्ठ के गुरुकुल के चिह्न लिए किञ्चिंधा के कुछ युवक उनकी पीठ साफ़ करते और उनकी ज़रूरतों का ध्यान रखते हुए उनके बीच धूम रहे थे।

वैष्णवी ने नीचे स्थित मैदान में एक गाय की ओर संकेत किया जो अत्यधिक ध्यान आकर्षित करती प्रतीत हो रही थी। वशिष्ठ का एक शिष्य जीवों के बच्चों और उनकी मांओं के एक छोटे से झुंड को उसकी ओर ले गया। बच्चे रुके, और फिर धीरे से उसके सिर को गले लगाने आगे बढ़े।

“काश मां सरस्वती इस भूमि पर सदैव शासन करती रहें,” हनुमान ने सुखद अविश्वास से कहा।

*

“ऐसा कैसे हुआ?” बाद में दोपहर में जब वे आराम कर रहे थे तो हनुमान ने विश्वामित्र से पूछा।

“इसका उत्तर, हनुमान, उस भोजन में था जो आज हमने किया है,” उन्होंने उत्तर दिया।

“वह बहुत स्वादिष्ट था। क्या यह उस घास का फल था जो ये लोग यहां उगाते हैं?”

“वह भी, और कुछ और भी। कामधेनु के दूध में ही वह ऊर्जा है जो इन जीवों की खून की प्यास को दूर कर सकती है।”

हनुमान ने एक छोटी, गोल, सफेद गोली उठाई, जिसे सब खा रहे थे, और चखी। “यह मीठी है और इसने मुझे ऊर्जा से भर दिया है।”

“बिल्कुल सही,” विश्वामित्र ने कहा, “जीवों को हमसे अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इसीलिए उन्होंने उन सब चीजों को मार डाला जिनमें रक्त था। अब उन्हें पता है कि इससे कम अधार्मिक मार्ग भी है। यह उन्हें पोषित रखता है, और मानसिक रूप से स्वस्थ भी रखता है।”

फिर विश्वामित्र ने वशिष्ठ की ओर इशारा किया। “ये उन्होंने सोचा था।”

हनुमान मुड़े और उन्होंने देखा कि वशिष्ठ उन छह छोटी गोलियों को एक-दसरे के ऊपर टिका रहे थे, फिर उन्होंने संतुलन खोने का बहाना किया और उन्हें गिरा दिया। फिर वे मुस्कुराए और उन्हें आसपास के लोगों में बांट दिया।

हनुमान ने जीवों को धीमे-धीमे इधर-उधर धूमते और ग्रामीणों से बातचीत करते देखा। वे उन्हें हँसते देख रहे थे और सब कुछ व्यवस्थित प्रतीत हो रहा था।

“अब मुझे इनमें कोई हिंसा नहीं दिख रही,” हनुमान ने कहा।

“कामधेनु अपने साथियों को अनुकूल बनाने में सक्षम हैं। तुम देखोगे कि देवी सरस्वती की सृष्टि के प्राचीन एवं नवीन के बीच कुछ समानता मिलेगी।”

“वह क्या?”

“मेरा विश्वास है कि ये जीव कामधेनुओं को अपनी माँ के समान मानने लगेंगे। और वे अपनी माताओं को तो दुख नहीं देंगे, है न?”

“परंतु देते तो थे न?” वैष्णवी ने थोड़ा चिंतित दिखते हुए पूछा।

हनुमान सतर्क हो गए और जल्दी से अपने नीचे स्थित मैदान की जांच करने लगे। कुछ भी अनुपयुक्त नहीं दिखा।

विश्वामित्र मुस्कुराए। “यहां पर मेरी कुछ विरासत काम आएगी। मेरे शिष्य प्रशासन, कूटनीति, एवं धर्मानुसार काम करने में प्रशिक्षित हैं। जब वे यहां आएंगे, तो इन जीवों को तीनों संस्कारों के तौर-तरीके सिखाएंगे, और इन्हें अपने कुछ नए संस्कार शुरू करने के लिए भी प्रोत्साहित कर सकते हैं!”

वैष्णवी खिलखिला उठीं। “जन्म का, पहला पग चलने का, भोजन का संस्कार...”

“अपनी माता का नाम बोलना सीखने का, गुरुकुल जाने का...” हनुमान ने जोड़ा।

“यह इन्हें कुछ समय व्यस्त रखेगा,” इस विचार से प्रभावित होते हुए वैष्णवी ने कहा। “हमारे समान ही वर्ष भर उत्सव या संस्कारा।”

“और सबसे महत्वपूर्ण,” विश्वामित्र ने जोड़ा, “कामधेनुओं की देखभाल और उपासना के इर्द-गिर्द जुड़े संस्कार। अपने जन्म के दिन, वे कामधेनुओं एवं अपनी जन्मदाता माताओं की समान भाव से उपासना करेंगे। वे देखेंगे कि कैसे कामधेनु अपने बच्चों का पालन करती हैं और वे भी ऐसा करना सीखेंगे।”

“माँ सरस्वती के समान इनके पास माँ कामधेनु होंगी!” हनुमान मुस्कुराए। युद्ध की, एवं ठंडे उत्तर की उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को उस हताश माँ द्वारा अपने बालक को विश्वामित्र के चरणों में डाल देने की याद अब किसी भ्रमजाल के समान लग रही थीं।

“पता नहीं उस बच्चे का क्या हुआ होगा जो हमारे साथ आ गया था?” हनुमान ने कहा।

विश्वामित्र हँसे। “शायद वह जान लेगा कि अगर वह संपूर्ण जगत के साथ मित्रवत व्यवहार करेगा तो सारा जगत उसका मित्र होगा।”

“अब किञ्चिंधा में सदैव के लिए लोग आ गए हैं, हनुमान,” वैष्णवी ने कहा।

*

“क्या लड़ना आवश्यक था?” हनुमान ने देर रात्रि में विश्वामित्र से पूछा।

“हनुमान, गुरुकुल जाओ!” कहीं से वैष्णवी नींद में चिल्लाई।

विश्वामित्र चुस्ती से उठे और सीधे बैठ गए। “हां। अगर कुछ मित्रवत भाव से आता है तो उसे आने देना चाहिए। लेकिन जब कोई युद्ध करने आए तो संग्राम ही होने देना चाहिए।”

वे लेट गए। फिर, एक क्षण बाद वे पुनः उठे, “परंतु युद्ध के पश्चात पुनः सुलह

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

करो।”

हनुमान हौले से हँसे और तारों को निहारने लग गए। वे जानते थे कि कहीं उनके माता-पिता भी उन्हें देख रहे होंगे। उन्हें बताने के लिए उनके पास कितनी बातें होगीं।

35

सूर्य के मंत्र



सुबह के सूर्य की उपस्थिति में समुद्र किसी विशाल दैत्य के समान दहाड़ रहा था। हनुमान शांति से जल के किनारे बैठे इसकी ध्वनि को सुन रहे थे। उन्होंने हथेलियों में कुछ रेत भरी और उसे सावधानी से उड़ेल दिया। तभी उन्होंने विश्वामित्र को प्रार्थना करते देखा और उन्होंने भी यही करने का निश्चय किया।

प्रार्थना के बाद उन्होंने अपनी यात्रा फिर आरंभ कर दी। कामधेनुओं के गांव से निकले हुए उन्हें कई दिन हो चुके थे। किञ्चिंधा के कठोर उत्तर-पश्चिम से हरे-भरे एवं गर्म दक्षिण-पूर्वी किनारे तक देवी सरस्वती के प्रति नवीन कृतज्ञता के साथ नए सिरे से सब कुछ देखते हुए वे लंबी यात्रा कर चुके थे। उन्हीं के आशीर्वाद से उनकी सफलता संभव हो सकी थी।

“हम लगभग पहुंच गए हैं, हनुमान,” वैष्णवी ने कहा। “अगर हम मध्याह्न तक पहुंचें, तब मेरे पिता अपने चरम पर होंगे।”

हनुमान ने ऊपर सूर्य की ओर देखा, इस संपूर्ण सृष्टि के जीवन का आधार-स्तंभ। उनके माता-पिता जो प्रार्थनाएं करते थे, उनमें सूर्य को प्रकाशवान् बुद्धिमता वाली देवी सरस्वती का मुख कहा जाता था। लेकिन वैष्णवी तो सूर्य का वर्णन किसी मनुष्य, और अपने पिता के रूप में कर रही थीं। जैसा कि विश्वामित्र ने उस रात से पहले वाली रात को कहा था जब उनका पहली बार जीवों से सामना हुआ था कि बारह छत्तीस हो सकते हैं, तीन चार हो सकते हैं, देवता देवी हो सकते हैं, इस विश्व में इतने सारे विभिन्न कुटुंबों एवं भाषाओं के कारण एक ही वस्तु को भिन्न प्रकार से देखा और कहा जा सकता है। इन सारे छोटे-छोटे मतभेदों को देखना बड़ा प्रिय था, और यह भी कि कैसे वे उनमें अंतर्निहित मूलभूत समानताओं को ढूँढ़ने के लिए चुनौती देती हैं।

“क्या वे वहां से उतरकर आएंगे,” तेजी से ऊपर उठते धधकते सूर्य की ओर संकेत करते हुए हनुमान ने अर्धपरिहास में पूछा।

“वे तो हर जगह हैं, क्या तुम नहीं जानते? और वे संपूर्ण जीवन को अपनी ओर खींचते हैं जैसे कि प्रत्येक रात्रि चंद्रमा जल को अपनी और खींचता है,” वैष्णवी हसीं।

हनुमान ने सोचा कि सूर्य की पुत्री उन्हें अवश्य ही वहां खींच रही थीं। जैसे-जैसे

सूर्य आकाश में उठ रहा था, वैसे-वैसे वे अधिक तेजस्वी होती प्रतीत हो रही थीं।

ठंडे व पर्वतीय उत्तर में कई लंबे महीनों के बाद किष्किंधा के गर्म क्षेत्रों में वापस आना अच्छा लग रहा था। और यहां बहुत कुछ सीखने को भी होगा।

*

समुद्रतट पर वे सूर्य मंदिर की ओर दक्षिण में मुड़े। नर्म, सफेद रेत पर उन्हें सैकड़ों नन्हे-नन्हे कछुए पानी की ओर भागते दिखे। वैष्णवी ने एक को उठा लिया और हनुमान को दे दिया। जब उसके छोटे-छोटे पैरों से उनकी हथेली पर गुदगुदाहट हुई तो हनुमान हँसने लगे। उन्होंने उसे अपने सहोदरों में सम्मिलित होने के लिए स्वेहपूर्वक वापस नीचे रख दिया।

“क्या ये उनके नामों के सूचक हैं?” हनुमान ने उनकी पीठ पर पड़े विशिष्ट निशानों की ओर ध्यान देते हुए पूछा, कुछ निशान चक्र के समान थे, और कुछ अन्य शंख की आकृति लिए हुए थे। उन सभी के अग्र-भाग पर ‘U’ आकार की रेखाएं थीं।

“ये उनके पूर्वजों के नाम हैं,” वैष्णवी ने उत्तर दिया। “इस क्षेत्र के कूर्म कहते हैं कि वे अभी तक ज्ञात महानतम प्राचीन आदि कूर्म के वंशज हैं।”

जब हाथी के आकार का एक विशाल कछुआ पहाड़ी से निकलकर मंद गति से रेंगता हुआ पानी की ओर जाने लगा तो हनुमान ने धीमे, अचरज भरे स्वर में पूछा, “क्या ये वही हैं?”

वैष्णवी हँस पड़ीं। “ये तो उनके एक वंशज हैं। आदि कूर्म तो इतने बड़े हैं कि वे समुद्र में ही रहते हैं। अगर वे भूमि पर चढ़ने की कोशिश करेंगे तो यह डूब जाएगी।”

हनुमान यह सुनकर आक्रान्त से हो गए।

“कहते हैं कि पृथ्वी उनकी पीठ पर सधी हुई है। फिर भी वे इसे पत्ते के समान वहन करते हैं।”

“किष्किंधा के पांच महान प्रदेश हमें प्रदान करने के लिए देवी ने जो पांच पत्ते समुद्र में गिराए थे,” विश्वामित्र ने भव्यता के साथ अंतहीन समुद्र की ओर संकेत करते हुए कहा।

“निश्चय ही,” वैष्णवी ने कहा और मुस्कुरा दीं। “और इसीलिए पृथ्वी पर हमारे कदमों को सदैव हल्का होना चाहिए, बोझिल नहीं। लालच हमारी उपस्थिति को बोझिल कर देता है। यह अच्छा नहीं है।”

इस समय वैष्णवी की त्वचा पीलाभ लालिमा लिए दमक रही थी।

“वैष्णवी, क्या मैं पूछ सकता हूं कि आप अपने जन्मस्थान से इतना दूर क्यों रहती हैं?”

“मुझे ठंडी वायु चाहिए, हनुमान।”

*

जब वे समुद्रतट पर स्थित पर्वत पर पहुंचे तब सूर्य लगभग उनके सिर पर था। यह थोड़ा किष्किंधानगर की पाषाणनगरी और थोड़ा सा नर्क के पर्वत के समान दिख रहा था।

विश्वामित्र जानते थे कि हनुमान के मस्तिष्क में क्या चल रहा था। “देवी यहां

भी अग्नि के रूप में आई थीं, हनुमान,” उन्होंने आश्वस्त करते हुए कहा, “परंतु समुद्र के सम्मुख अब उन्होंने स्वयं को शीतल कर लिया है। यहां कोई विघटन नहीं है। इसका विपरीत ही है। यहां केवल जीवन की अग्नियां हैं।”

“मैं आपको अग्नि दिखाती हूं, हनुमान,” वैष्णवी हँसीं, और हौले से गुराने लगीं। प्रत्येक पौधे, पेड़ों और पक्षियों को अंतरंगता से देखते हुए वे अब काफ़ी निश्चित लग रही थीं। आखिर यह उनका घर था।

हनुमान ने चारों ओर देखा।

अब वैष्णवी ने ज़ोर से गर्जना की। और इस बार ध्वनि कहीं से लौटकर आई।

अकस्मात शेरों का एक झुंड दौड़ता हुआ वन से बाहर निकला और राजसी चाल से उनकी ओर बढ़ने लगा।

“नरसिंहा की संतान, मेरे भाई,” वैष्णवी ने कहा, और प्रत्येक को न्यैह से गले लगाया।

वे पर्वत के साथ हल्की ढलान वाली पगड़ंडी पर चलते हुए गुफामुख पर पहुंचे। वैष्णवी हनुमान को अंदर ले गई और वे दूसरी ओर एक बड़े प्रांगण में निकले। मन ही मन मुस्कुराते हुए विश्वामित्र उनसे कुछ क़दम पीछे रहे।

प्रांगण के बीच में पत्थर कुछ इस तरह रखे हुए थे जो किसी वेदी के समान प्रतीत हो रहा था। उसके चारों ओर पांच निर्माण और भी थे, लेकिन छोटे आकार के, सब थोड़े से भिन्न थे। किञ्चिंधा के कुछ युवा दंपती अपने शरीरों पर तृतीय संस्कार के मांगलिक चिह्नों को धारण किए कुछ वेदियों के बाहर बैठे थे।

“नवदंपती स्वस्थ संतान के लिए प्रार्थना करने यहां आते हैं,” वैष्णवी धीरे से बोलीं। “लेकिन हमारा काम अंदर है, पांच तत्वों के मंदिरों में, और मध्य में मेरे पिता की वेदी है। आएं, जल्दी चलें!”

वे त्वरित गति से मध्य में गए।

सूर्य सिर के ऊपर पहुंच गया था, और अचानक, एक तीव्र, चौंधिया देने वाला प्रकाश मध्य से निकलकर पांचों बाहरी निर्माणों पर फैल गया और वेदियों में अनेक स्वरों ने ज़ोर से मंत्रोच्चार प्रारंभ कर दिया। इसका प्रभाव अद्भुत था। ऐसा लगा जैसे संसार अग्नि पर स्थित हो। हनुमान ने आंखें बंद कर लीं और अचानक उन्हें लगा जैसे उनके माता-पिता वहां उनके साथ थे, और फिर अनेक वे लोग भी जिन्हें वे धुंधला सा जानते थे, और फिर वे लोग जिन्हें वे बिल्कुल नहीं जानते थे। उन्हें वे मंत्रोच्चार पहचाने से लग रहे थे, हालांकि वे ऐसी किसी भाषा में नहीं थे जो उन्होंने सुनी हो। वो भाषा के अंश अधिक लग रहे थे, इतने शक्तिशाली एवं जीवंत जैसे वे ध्वनियां पत्थरों को गढ़ने की क्षमता रखती हों।

हनुमान को लगा जैसे वो विचित्र ढंग से बाहरी पांच वेदियों में से एक की ओर खिंचे जा रहे थे। उन्हें लग रहा था जैसे वो पहले भी यहां आए हैं, यद्यपि यह असंभव था; शायद स्वप्न में आए हों।

जब मंत्रोच्चारण रुका और सुनहरा प्रकाश कम हुआ तो वैष्णवी ने पुकारा, “पिता जी।”

एक लंबे, भद्र व्यक्ति, जिनकी त्वचा लगभग पारदर्शी थी और मुख तेजस्वी था, वेदी से बाहर निकले। वे उदारतापूर्वक मुस्कुराएं। “सुवर्चला, मेरी बेटी,” उन्होंने प्रसन्नता से कहा। “विश्वामित्र! मेरे प्रिय मित्र। और... और तुम, स्वागत है, वायु पत्र।

तुम्हारे माता-पिता भद्र केसरी और अंजना कैसे हैं?”

हनुमान ने नमन करके प्रणाम किया।

“सुवर्चला?” उन्होंने धीरे से वैष्णवी से पूछा।

सूर्य हंसे, “इसने अपने मित्रों की मुश्किल बचाने के लिए आसान नाम रख लिया है। माता-पिता एक युग में जीते हैं और बड़े दूसरे में। लेकिन यह सब श्रेष्ठतम के लिए ही है। जैसा कि तुम देखते हो जब सूर्य अपने चरम दीसि पर होता है, तो वह कोई परछाई या कोई अंतर नहीं छोड़ता है। हम जानते हैं कि सब एक है। वैसे ही वैष्णवी हो या...”

“सुवर्चला,” हनुमान ने नए प्रशंसा भाव से कहा।

*

कुछ दिन बाद, विश्वामित्र और वैष्णवी चले गए। अब हनुमान सूर्य ऋषि से प्राचीन किञ्चिंधा का ज्ञान सीखते। सर्वप्रथम वे सूर्य की प्रातःकालीन आराधना में सहायता करते। उन्होंने रेतीले समुद्रतट से अनेक स्फटिकों को जमा किया। ये गणेश हैं, ये सरस्वती हैं, ये पर्वतों के देवता शिव हैं, ये आकाश में सोए हुए विशालकाय विष्णु हैं, ये वायु हैं, ये अग्नि, ये...

हनुमान प्रसन्न बैठे थे। अपने हाथों की उचित मुद्रा बनाकर, जैसा कि ऋषि ने निर्देश दिया था, उन स्फटिकों पर धीरे से जल अर्पित करते हुए, वे एकाग्रचित्त से अपनी प्रत्येक क्रिया, भाव-भंगिमा, सांसों, और विचारों को नियंत्रित करने के उचित विधि-विधानों को सीख रहे थे।

मगर रात में उन्हें अपने मित्रों की कमी अनुभव होती थी, विशेषकर वैष्णवी की, जिन्होंने कहा था कि उन्हें ठंडे पहाड़ों पर वापस जाना होगा क्योंकि दो गर्म प्राणियों के गर्म क्षेत्र में होने से तत्वों का संतुलन बिगड़ जाएगा। वे समझ नहीं पाए कि वो परिहास कर रही हैं या यह सच था। वास्तव में उनके समान कोई नहीं था; वह एक रहस्य थीं।

प्रातःकाल, हनुमान ने उनके पिता की उपस्थिति में थोड़ा उनको भी देखा, और जान गए कि वे सबके बारे में जो अनुभव कर रहे थे वह भी उनकी शिक्षा का ही भाग है। सूर्य एवं उनकी पुत्री ऐसे ही थे। उनकी उपस्थिति में सब कुछ प्रकाशित और ज्ञान से परिपूर्ण प्रतीत होता था।

गुरु के साथ अपनी प्रातःकालीन आराधना के उपरांत हनुमान प्रतिदिन मूलतत्व के प्रत्येक ऋषि के पास अपना पाठ सीखने जाते थे। स्वाभाविक रूप से, उस पहली सुबह को ही जब सूर्य उनके साथ वायु मंदिर के नीचे गहरी भूमिगत गुफा में गए थे, हनुमान जान गए थे। वायु मंत्रों की ध्वनि से उनके शरीर की हर कोशिका महती ऊर्जा से थरथरा उठी थी। यह उनकी वंशावली थी, कहा जाता है कि स्वयं देवी के राजहंस के पंखों की वायु से उनका जन्म हुआ था। परंतु उनके अंदर स्वामित्व का कोई भाव नहीं उभरा था। सभी मूलतत्वों में जीवन प्रतीत होता था, जीवन स्वयं लगातार उनसे प्रकट होता है। किंतु वायु उन्हें ऐसा माध्यम प्रतीत हुई जिसमें जीवन उनके सामने सदैव उजागर होगा।

चालीस दिन बाद, हनुमान से मिलने आगंतुक आए। वायु मुनि ने उनके आने

की सूचना दी। वे उन्हें भलीभांति जानते प्रतीत हुए।

*

“मां! पिता जी!” हनुमान ने कहा और उन्हें आलिंगन करने दौड़े।

केसरी टकराव के लिए तैयार हुए। उनका पुत्र अब उनके समान लंबा हो गया था। उसकी भुजाओं, उसके वक्ष, उसके एक-एक पौर से बल एवं शक्ति फूट रही थी। उन्होंने उसे उठाने का प्रयास किया, जैसा कि वे किया करते थे, परंतु हँसकर हार मान ली और उसे आशीर्वाद दिया।

फिर अंजना ने अपने पुत्र को गले लगाया, और देर तक धीमे-धीमे प्रेमपूर्वक उसका सिर सहलाती रहीं।

“आओ, इधर आओ, समुद्रतट की ओर,” केसरी ने कहा।

वे वायु गुफा से बाहर निकले और ढलान पर उतर गए। रेत पर कई व्यक्ति बैठे हुए सूर्य ऋषि से बातें कर रहे थे। जब वे नीचे उतरे तो वे उन्हें देखने के लिए घूमे, और हनुमान मुस्कुरा दिए।

“पौत्र, आओ!” केसरी के पिता ने पुकारा।

हनुमान ने उनके चरण स्पर्श किए और उनके गले लगे।

“तीन पीढ़ियां तो लगीं, पर शायद अब हम इसे ठीक से जान गए हैं,” केसरी के पिता ने हँसते हुए कहा।

*

भोजन करते और पुरानी बातों का स्मरण करते हुए, हनुमान हर चीज़ को नई दृष्टि से देखने लगे थे। सूर्य के पाठ ‘सीखना सीखने’ पर अत्यधिक बल देते थे। देवी ने प्रत्येक को व्यवहारिक बातें सीखने की क्षमता प्रदान की है—कैसे खाएं, कैसे सहवास करें, दूसरों के साथ कैसे जिएं, और सुखी रहें। परंतु सूर्य के संरक्षण में, हनुमान ने किञ्चिंधावासियों के हर काम के पीछे स्थित सिद्धांतों को समझना आरंभ किया था। अब वे अपने माता-पिता व पितामह-पितामही को केवल अपने बड़ों के रूप में नहीं देख रहे थे, बल्कि वे जो कुछ भी थे उसके स्त्रोत के रूप में देख रहे थे, और वे समझ सकते थे कि यह स्त्रोत कैसे कार्य करता है।

“बहुत समय पूर्व हम यहां माता से एक बच्चे की कामना करने आए थे,” हनुमान के पितामह ने कहा और फिर केसरी की ओर इशारा किया। “और फिर यह जन्मा।”

“वायु के आशीर्वाद से, हमारे आने के बाद, तुम आए,” केसरी ने स्पष्ट किया।

“और किसी दिन, जब तुम अपनी शिक्षा समाप्त कर तृतीय संस्कार के लिए जाओगे, तब शायद तुम भी यहां वापस आओ,” अंजना मुस्कुराई।

हनुमान जीवन की प्रकृति पर चकित थे। यह भी देवी सरस्वती की ही बुद्धिमता थी। उन्होंने वस्तुतः इसे घावों, चोटों और युद्ध के बेधङ्क कटे-फटे अपाचारों में देखा था। उन्होंने तंत्रिकाओं, रक्त वाहिकाओं, अंगों, धड़कनों, कंपनों, प्रहारों, हिंसा के बीच अपनी गरिमा को बचाए रखने के प्रयासों को देखा था और वे जानते थे कि यह सब देवी सरस्वती की बुद्धिमता थी, जीवन की गतिशील रहने की

क्षमता थी। अब अपने पितरों के बीच वे इसे और अधिक प्रसन्नता से देख रहे थे।

उनके पितामह का जबड़ा विशाल था, उनके पिता का छोटा और अब हनुमान का जबड़ा फिर से बड़ा लेकिन अधिक गोलाकार है।

सब कुछ जुड़ा था। हर कोई आपस में जुड़ा था।

अंजना जैसे समझ गई थीं, उन्होंने हाथ बढ़ाकर प्रेमपूर्वक हनुमान की ठोड़ी को छुआ।

“अपनी यात्रा में हम जिससे भी मिले, वह तुम्हारी प्रशंसा से परिपूर्ण था, पुत्र,” वे बोलीं। “वे कहते हैं कि उनके बच्चे कहते हैं कि वे बड़े होकर हनुमान की तरह बनना चाहते हैं।”

हनुमान अचंभित थे। “लेकिन मैं तो न राजा हूं और न ही कोई ऋषि। मैं तो मात्र एक विद्यार्थी हूं।”

“हम तुम्हारे मित्र जामवंत से मिले थे। वे देखते हैं कि हनुमान जैसे पुत्र के साथ किञ्चिंधा सुरक्षित है। माता-पिता अपने बच्चों से यही तो आशा करते हैं,” केसरी ने जोड़ा।

“जैसे हमने इनसे की थी,” केसरी के पिता ने गर्व से मुस्कारते हुए केसरी को देखा।

“किञ्चिंधा का भविष्य कैसे सुरक्षित नहीं होगा, पिताजी?” हनुमान ने पूछा। “आप सबने यह सुनिश्चित किया था कि हम वस्तुओं का मूल्य जानना सीखें, कि हम धर्म में जिएं और धर्म के लिए जिएं।”

“हम तो केवल अपने तीन संस्कारों को संपन्न करते हैं, पुत्र,” हनुमान की प्रशंसा से कुछ अभिभूत होते हुए केसरी ने कहा। “हम केवल अपने नारियलों की गणना करते हैं, और केवल यही करते हैं।”

36

सुवर्चला



सात वर्ष पश्चात्, हनुमान के माता-पिता वापस आए। विश्वामित्र और वशिष्ठ भी आए। उन्होंने हनुमान की शिक्षा पूर्ण होने पर उन्हें आशीर्वाद दिया। हनुमान अब ज्ञान की तीस विधाओं में पारंगत थे, और वायु मंत्रोच्चार में विशेष निपुणता के लिए ख्याति प्राप्त कर चुके थे। संतान के लिए आशीर्वाद पाने लंबी यात्रा कर सूर्य मंदिर आने वाले नवविवाहित किञ्चिंधावासी सदैव ही अनुरोध करते थे कि उनके सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी हनुमान उपयुक्त मंत्रोच्चार करें ताकि उनके बालक भी हनुमान के समान शीघ्रगामी और ज्ञानवान हों।

दीक्षा साधारण और बिना किसी तामङ्गाम के हुई। हनुमान ने सूर्योदय से पूर्व स्नान किया, सिंहों को प्रणाम किया जो अब उनके भी भाई हो चुके थे, और मुख्य मंदिर की ओर वापस गए। ज्येष्ठजन एक पंक्ति में खड़े थे, हनुमान प्रत्येक के पास गए और उन्हें दंडवत प्रणाम किया: पिता, माता, विश्वामित्र, वशिष्ठ और अंत में उनके अपने गुरु सूर्य।

“हनुमान,” सूर्य ने उनके कंधे पकड़कर उन्हें उठाते हुए कहा। “अपने गुरु के प्रति तुम्हारा समर्पण अद्वितीय था। मैं तुम्हें एक ऐसा उपहार देना चाहता हूं जो कि मेरा विश्वास है जितना मुझे प्रसन्न करेगा उतना ही प्रत्येक संबंधित व्यक्ति को भी प्रसन्न करेगा विशेषकर तुम्हारे माता-पिता को।”

हनुमान ने नमन किया और मौन भाव से अपना आभार प्रकट किया।

सूर्य केसरी की ओर मुड़े और उन्हें प्रणाम किया।

केसरी ने वे शब्द कहे जो वे जानते थे कि सूर्य उनसे सुनना चाहते थे।

“प्रिय सूर्य, आप मेरे पुत्र के गुरु और पिता के समान रहे हैं। अगर हमारे बच्चे भी ऐसा चाहते हों, तो क्या आप हनुमान और सुवर्चला के तृतीय संस्कार द्वारा हमारे वंशों को जोड़ने पर विचार करना चाहेंगे?”

सूर्य मुस्कुराए, “प्रिय केसरी, आपने वही कहा है जो सर्वोत्तम है। अगर दोनों बच्चे भी ऐसा ही सोचते हैं, तो हम सभी प्रसन्न और सम्मानित होंगे।”

हनुमान ने सहमति में सिर हिलाया। उन्होंने कई वर्षों से वैष्णवी को नहीं देखा था। लेकिन वे जानते थे। वे इस प्रकार की व्यक्ति नहीं थीं जो अनुपस्थिति के कारण स्थिति को बदलने देंगी।

कई वर्षों में पहली बार, हनुमान सो न सके थे। वे हैरान थे कि उनका धर्म क्या होगा। युद्ध के बाद से सब कुछ शांतिपूर्ण था। उस अवास्तविक काल के बाद से उन्होंने धर्म के बारे में नहीं सोचा था।

सूर्योदय से कुछ पूर्व हनुमान ने गहरी सांस ली। यह राहत की सांस थी। कम से कम यह ऐसा निर्णय नहीं था जो उन्हें अकेले लेना था।

*

कुछ दिन बाद, वैष्णवी आई।

“आप तो बहुत लंबे हो गए हैं, हनुमान,” उन्होंने मीठी मुस्कान के साथ कहा और अपने पिता की गुफा की ओर चली गई।

हनुमान वायु मंदिर के एक कोने में मौन बैठे थे, उन्होंने अपने नेत्रों को प्रार्थना में बंद कर लिया, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे और क्या करें। जब उन्होंने आंखें खोलीं, तो सांझ हो गई थी, और भाई-बहन प्रार्थना के लिए समुद्रतट पर जा रहे थे।

वे उठे और उनके साथ होने के लिए तीव्रता से बढ़े। एक क्षण को यह संध्या किसी भी संध्या के समान ही थी, और तभी उन्हें याद आ गया। उन्होंने आसपास देखा कि भीड़ में कहीं वैष्णवी दिख जाएं। वे वहां नहीं थीं।

हनुमान ने आकाश की ओर देखा और उसके समुख स्वयं को तुच्छ अनुभव किया। अब वस्तुतः उनके चुनने को कुछ नहीं था। अगर वैष्णवी ने अस्वीकार कर दिया हो, उन्होंने अस्वीकार कर दिया था और उन्हें यह स्वीकार था। अगर उन्होंने पुनः हनुमान से मिले बिना वापस जाने का निर्णय लिया तो उन्हें यह भी स्वीकार करना होगा।

वे समुद्रतट पर अपने प्रिय स्थान की ओर चल दिए, और वहां दो युवा शिष्यों को देखा जो व्यग्रता से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने हनुमान के लिए अपने हाथों से गीली रेत को साफ़ कर दिया था ताकि उस पर केवल उनके पदचिह्न ही दिखें। यह वे सूर्य के लिए किया करते थे और अब हर कोई ज्येष्ठों के प्रति अपना सम्मान और प्रेम दर्शने के लिए यह करने लगा था।

प्रार्थना समाप्त हुई, और तब, उस मौन में, हनुमान जान गए। पैरों का एक जोड़ा पीछे से उनकी ओर आ रहा था जबकि अन्य लोग लौटने लगे थे।

“हनुमंत, आएं,” वैष्णवी ने धीरे से कहा।

*

वैष्णवी हनुमान को एक शांत खाड़ी की ओर ले गई जहां नई पीढ़ी के नन्हे कूर्म पानी में जाने में व्यस्त थे। हर गर्जना के साथ लहरें चांदनी को छितरा देती थीं।

वैष्णवी बैठ गई और अपनी भुजा को उन कूर्मों के मार्ग में रेत में गाड़ दिया। जब वे उन्हें गुदगुदाते तो वे हँस पड़ती थीं।

हनुमान प्रशंसापूर्ण ढंग से टकटकी लगाए उन्हें देख रहे थे। अंत में उन्होंने पूछ ही लिया।

“आप इस प्रस्ताव के बारे में क्या अनुभव कर रही हैं, राजकुमारी?” उन्होंने पूछा।

“क्यों, हनुमान, आप अभी भी सोचते हैं कि मैं सब कुछ जानती हूँ?”
हनुमान मुस्कुराए। “आपमें स्वयं देवी के सोलहों गुण हैं। आपके महान पिता हैं।”

“वह तो आपमें भी हैं। आपके महान पिता और माता भी हैं,” उन्होंने रेत पर थोड़ा सा टिकते हुए कहा।

“मेरा तात्पर्य है कि आप किसी राजा से, या अपनी पसंद के किसी से विवाह कर सकती हैं। मैं तो, मेरा तात्पर्य है, मुझे नहीं पता...”

“महान हनुमान नहीं जानते,” वे हंस पड़ीं। “समस्त किञ्चिंधा में वे महान हनुमान कहलाते हैं और वे कहते हैं, ‘मुझे नहीं पता।’ उन्हें परम धर्म का रक्षक कहा जा रहा है और वे कहते हैं, ‘मुझे नहीं पता।’”

“इस ख्याति के योग्य हम सब हैं।”

हनुमान ने तारों की ओर देखा और उनके प्रति कृतज्ञता अनुभव की।

“आप,” वैष्णवी ने अचानक कहा। “आपको, मैं जानती हूँ। आपको, मैं पसंद करती हूँ। और किसी से भी अधिक। केवल आपको।”

*

तारामंडल ने चक्कर लगाया और धीरे से घूम गया, और लहरें अनंत की ओर अपने धीमे प्रयाण का नाद करती रहीं।

“आप मुझे ऐसी प्रसन्नता प्रदान करती हैं जो कोई और नहीं दे सकता,” हनुमान ने मंद स्वर में कहा। “मगर मैं जानना चाहता हूँ, और हाँ, बहुत सी ऐसी बातें हैं जो आप मुझसे बेहतर जानती हैं, क्योंकि आप मेरे गुरु की गुणवान पुत्री हैं...”

“हाँ। शायद मुझे भी कुछ किरणें मिली हैं,” उन्होंने हल्की सी हँसी के साथ कहा।

“मैंने अनेक सुखी दंपतियों को आते-जाते देखा है, और मैं उनके आनंद को समझता हूँ। मैं नहीं जानता क्यों, लेकिन मैं उस आनंद को महसूस करता हूँ जैसे कि वह मेरा अपना हो। क्या मैं अब भी यह अनुभव करूँगा? और क्या मैं...”

वैष्णवी समझ गई। “मुझे भी ऐसे संदेह हुए हैं, हनुमान, और मैंने अपने पिताजी व अन्य ऋषियों से पूछा भी। संभवतः इसालिए मैं आज तक अकेली रही हूँ, और कभी किसी इच्छा के विचार को अपने संतोष को आंदोलित नहीं करने दिया।”

“आपके पिता ने क्या कहा? अब धर्म नीति क्या है?”

वैष्णवी ने लंबी सांस ली। “उन्होंने वही कहा था जो मैं अब कहूँगी। वे कहते हैं कि धर्म उससे कहीं अधिक है जो हमें ‘करना’ या ‘नहीं करना’ चाहिए। कर्मों की कोई ऐसी सूची नहीं है जिन्हें करने से अंत में हम पुण्य प्राप्त करेंगे। धर्म वैसा ही है जैसा शेष सब कुछ है, बिना विकृति, असत्य और सबसे महत्वपूर्ण बिना हिंसा और विनाश के। इसालिए यह हम सबके ऊपर है कि धर्म को उस वास्तविकता के रूप में पहचानें जिसमें हम जीते हैं, इसके बाद ही उन कर्मों का निर्णय करें जो उस वास्तविकता का सर्वोत्तम आभार हों।”

“एक श्रेष्ठ पुत्र या पुत्री होना ही इस लोक के लिए हमारा सर्वोत्तम अर्पण है?”

“हमारा प्रेम भी।”

हनुमान ने अनुभव किया कि उनका हृदय कुछ असामान्य सी हरकत कर रहा है, जैसे कि उसका अलग जीवन हो। वे शब्द ऐसे लग रहे थे जैसे स्वयं देवी के अधरों से निकले हों। वो मुस्कुरा दिए। ये शब्द तथ्य के रूप में कहे गए थे या संभावना के रूप में, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता था।

“लेकिन,” वैष्णवी कहती रहीं, “हमसे उत्पन्न पुत्र या पुत्री ही क्या इस जगत को हमारे प्रेम का सर्वोत्तम अर्पण है? यही आपकी दुविधा है, है न?”

“हाँ।”

“सच्चा और निर्भीक उत्तर यह है, पवनपुत्र। आप और मैं इस गुरुकुल से निकलने वाले सबसे प्रभावशाली शिष्यों में से हैं। हमारे पास वह योग्यता है जो इस समय, वशिष्ठ के अलावा, शायद किसी और के पास नहीं है।”

“आपका तात्पर्य उन मंत्रोद्धारों से है जो हम नए परिवारों को शुरू करने के लिए देवी का आशीर्वाद पाने के लिए करते हैं?”

“प्राचीन पद्धति इसी तरह चर्चा करती है। क्या आपने कभी सोचा है कि मां के शरीर में वास्तव में क्या हो रहा है? क्या आपने कभी सोचा है बीज मंत्रों का क्या प्रभाव पड़ रहा होगा?”

“मुझे लगता है कि मैं समझता हूं, लेकिन नहीं, मैं नहीं समझता,” हनुमान ने कहा।

“गर्भ में जब जीवन प्रारंभ होता है और अपना आकार लेता है, तो यह देवी सरस्वती की सभी कृतियों के इतिहास को दर्शाता है। प्रत्येक प्राणी के भूूण का आरंभ किसी छोटी मछली के भूूण के समान दिखने से होता है। फिर यह उस प्राणी में देवी का संदेश पहुंचाता है कि इसे सिंह बनना है, इसके हाथ-पैर एवं अन्य अंग विकसित होते हैं।”

“देवी सरस्वती की बुद्धिमता। आपके पिता ने यह बताया था।”

“लेकिन वशिष्ठ ने पाया कि उचित मंत्रों की शक्ति द्वारा प्रत्येक विकासशील जीवन को, भले ही कम मात्रा में, बदला जा सकता है।”

“क्या हम यही कर रहे हैं? देवी की शक्तिशाली भूमिका को अपनाना? ईश्वर बनना?”

वैष्णवी ने आहिस्ता से हनुमान के गाल को छुआ। “आप कैसे जानते हैं कि ईश्वर आपको प्रयोग नहीं कर रहा, हनुमान?”

हनुमान हँस पड़े। वे और उनके गुरु इसी प्रकार के बहुत से संवाद करते थे।

“नहीं,” वैष्णवी ने जारी रखा। “हम उनके उपकरण हैं। मुझे विश्वास है कि मेरे पिता ने भी यह बहुत बार कहा होगा। परंतु, वास्तव में हम वह भी नहीं हैं। कई पीढ़ियों के अध्ययन से हमने पाया है कि प्रत्येक तत्व से जुड़े बीज मंत्र महत्वपूर्ण ढंग से शिशु की प्रकृति को आकार देते हैं। अग्नि मंत्र के शिशु जोशपूर्ण, शक्तिशाली और ऊष्मा से परिपूर्ण होते हैं। वरुण मंत्र के शिशु सौम्य, शांति बनाए रखने वाले होते हैं। वायु मंत्र के तुम्हारे समान माने जाते हैं। वे ऊर्जा से भरे, गतिमान, सहयोगी, और अदृश्य भी, स्वार्थहीन और जीवनदायक होते हैं।”

“आपने इसे अत्यंत स्पष्टता से बताया है, राजकुमारी,” हनुमान मुस्कुराए। “आप अपने पिता के समान शिक्षा देने के लिए यहीं क्यों नहीं रहीं?”

“मैं अग्नि मंत्र शिशु हूं। और ऋषियों का मानना है कि ठंडे उत्तरी पर्वतों में और

अग्नि मंत्र होने चाहिए। कभी-कभी हमारे गुण किष्किंधा के बाहरी किनारों पर भी उपयोगी हो सकते हैं। जैसा आप जानते हैं।”

“बाहरी किष्किंधा के हमारे मित्र!” हनुमान ने उत्साह से कहा। “और कामधेनु! कैसी हैं वे?”

“सात वर्षों में एक भी अपाचार नहीं,” वैष्णवी ने शांति से कहा। “और अब कामधेनुओं के पांच ग्राम हैं, नदी के ऊपर-नीचे।”

“जय माता सरस्वती!” हनुमान ने प्रसन्नता से कहा।

“लेकिन ऋषि फिर भी अग्नि मंत्रों का बहुत अधिक प्रयोग करते हैं। उनमें से कुछ कामधेनुओं के साथ नई भूमि पर सहायता के लिए जाते हैं। हमारे नए मित्रों ने देवी कामधेनु परंपरा को बहुत गंभीरता से लिया है। उन्हें अधिक से अधिक भूमि साफ़ करनी है और अपने और अपनी माताओं के लिए घास उगानी है।”

“मैं कल्पना नहीं कर सकता। यह तो अब किष्किंधानगर जैसा होगा,” हनुमान ने कहा।

“मैं कहूंगी ये शांत तो नहीं रहा है। परंतु देवी की कृपा से अभी भी शांतिपूर्ण है। घास अच्छी उगती है और अब कोई भूख नहीं है।”

हनुमान के विचार वाली की ओर मुड़ गए, मानो शांति के विचार को अपने प्रतिद्वंदी पर भी विचार करना हो। हनुमान ने इसे झटक दिया। “और क्या नए लोग हमारे समान संस्कार भी करते हैं? उनके छोटे बच्चे हैं?” उन्होंने पूछा।

वैष्णवी मुस्कुराई। “यह वैसा ही ही जैसा कि धर्म को होना चाहिए।”

हनुमान ने गहरी सांस भरी। “अब धर्म हमसे क्या कहता है?”

“यह कहता है, ‘कुर्मों का पीछा करो।’” वैष्णवी हंसीं और कुर्मों की एक अन्य पंक्ति के पीछे भागीं।

“कुर्मों का पीछा करो!” हनुमान चिल्लाएँ और उनके पीछे भागे, हंसते हुए भी।

वे रेत के छोटे से टीले के किनारे खड़े थे, और उनके हृदय ज़ोरों से धड़क रहे थे, हनुमान को महसूस हुआ कि उनकी पूँछ धीमे से उनकी पूँछ की ओर बढ़ गई है।

“मगर कुछ ऐसा है जिस पर हमें विचार करना चाहिए, है न?” उन्होंने पूछा, अचानक वे सब चीज़ों के लिए अधिक परिपक्व और बुद्धिमान हो गए थे।

वैष्णवी ने हामी भरी।

“आप कुछ छोड़ने जा रही हैं, केवल अपने लिए नहीं, बल्कि उसके लिए जो धर्म के लिए भी महत्वपूर्ण है।”

“आप भी तो, हनुमंत। आप बुद्धिमान हैं कि इस पर ध्यान दिया। जिस तरह देवी की बुद्धिमता हमारे अंदर कार्य करती है, उसके कारण हम स्त्रियां इन बातों को शीघ्र ही समझ जाती हैं। लेकिन आप भी अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे निर्णय का परिणाम क्या होगा?”

“अगर हमारी स्वयं की संतान होंगी तो हम अन्य शिशुओं के लिए इन मंत्रों का पाठ नहीं कर पाएँगे, ये सही है न?” हनुमान ने अनुमान लगाया।

“मैंने चुन लिया है, किष्किंधानगर के राजकुमार। और अब मैं यहां आपके सामने हूँ।”

हनुमान के मन में धुंधले चेहरे और आवाजें, नारियल के खोपरे और हल्दी के चिह्न, धूप और बारिश वाली सुबहें सब तेज़ी से कौंध रहे थे। उन्हें उन तीर्थयात्रियों

के चेहरे याद आए जो संतान प्राप्ति का आशीर्वाद पाने सूर्य ऋषि के गुरुकुल आते थे। उन्हें वे बालक भी याद आए, जो बाद में अपने माता-पिता के साथ आते थे जिन्हें अपनी मन्त्रत पूरी करनी होती थी। उन्हें उनके नाम, उनकी लंबी पूँछें और निष्कपट शरारतें याद आईं। देवी की, किञ्चिंधा की सेवा में बीता एक पूरा, लंबा जीवन। कितने सारे प्रसन्न मुख।

और फिर भी उनके सामने मौजूद व्यक्ति वे सभी आनंद, सुंदरता और सत्य समेटे हुए थी जिनके बारे में वे सोच सकते थे।

*

प्रकाश की एक सौम्य परत से वैष्णवी का मुख जगमगा सा गया। प्रभात होने को था।

“कुछ कहें, हनुमान,” वैष्णवी ने कहा।

हनुमान ने उनकी आंखों में देखा। उन्होंने थोड़ा सा वही अनुभव हुआ जो सुग्रीव को हुआ होगा जब एक बार, बहुत पहले, वह रूमा के विरह में व्याकुल था। अंततः वे समझ गए। वे वैष्णवी को देखकर मुस्कुराएं।

“क्या,” वैष्णवी ने अब संकोच से हंसते हुए पूछा।

सब कुछ अवास्तविक, अनंत भोर में ठहरा सा लग रहा था। जो भी हुआ उससे कुछ नहीं बदलेगा, यह प्रेम ही रहेगा, चाहे इसमें से प्रेम निकाल दिया जाए, या कुछ और इसमें जोड़ दिया जाए। लग रहा था जैसे वे सभी देवी-देवता ये कह रहे हों जिनके बारे में उन्होंने जाना था। परिपर्णमिदि...

हनुमान अचानक अपनी भुजाओं को छाती पर बांधकर टहलने लगे। उन्होंने कृत्रिम गंभीरता से कहना शुरू किया। “प्रतिदिन जब भी मैं प्रकाश की पहली किरण देखता था, तो पृथ्वी पर जीवन के प्रवीण व्याख्याता, आपके पिता से पूछता,” सूर्य कहां से आता है?”

“वे क्या कहते थे,” हनुमान की मनोरम नाटकीयता पर हल्की सी हंसी के साथ वैष्णवी ने पूछा।

“कभी,” हनुमान रुके, और एक उंगली उठाई, “कभी वे कहते कि यह देवी सरस्वती का नेत्र है। कभी कहते ये देवी की आंख से निकली बूँद है, जो हमें हमारे प्रति देवी की करुणा की याद दिलाने के लिए हमेशा को आकाश में ठहर गई है। कभी कहते कि यह एक फल है जो वे प्रत्येक रात भोजन में खाती हैं।”

वे हसीं, “आप क्या सोचते हैं?”

“इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि हम क्या सोचते हैं। मुझे यही भान हुआ है। सात वर्षों से हर सुबह मैं सोचता था अगर मैं पूर्व में जाऊं तो क्या होगा? क्या मुझे सूर्य का स्नोत मिल जाएगा?”

“हनुमान, यह स्वयं आकाश है। वृक्ष पर लगा कोई फल नहीं है,” वैष्णवी हसीं। हनुमान भी हंसने लगे।

“लेकिन यह फल है। और मैं इसे आपके लिए लेने जा रहा हूँ, वैष्णवी,” उन्होंने कहा, और रेत पर अपनी चाल को असीम आकर्षक कूद में बदल दिया।

वैष्णवी ने रेत से बचने के लिए अपना मुंह घुमा लिया। “हनुमंत!” उन्होंने

झिड़कते हुए कहा।

“मैं राजकुमारी वैष्णवी के लिए सुनहरा आम लेने जा रहा हूं!” हनुमान ने घोषणा की, और मुड़कर उन्होंने आगे कौन निकली चट्टान से ऊपर की ओर छलांग लगा दी।

*

देवी सरस्वती! माता!

प्रिय वैष्णवी!

सुवर्चला!

सूर्य की पुत्री!

हनुमान ने ठंडे शिलामुख का इस प्रकार आलिंगन किया जैसे कि उनका संपूर्ण प्रेम उसमें बसा हो, रस की वह संपूर्ण व्यापक बौद्धार जिसमें देवी ने उन्हें डुबो दिया था। यह संपूर्ण जगत, यह ब्रह्मांड उनका था और वे उस सारी ऊँचाई एवं आनंद के साथ उनसे वे शब्द कहना चाहते थे जो वे अभी इस देह से, इस अनुभव, इस भाव से प्राप्त कर सकते थे, हां, इस संसार के समस्त शब्द, इस जगत के सभी मंत्र, सब कुछ अब उसका था...

कुछ ही क्षणों में हनुमान छोटी पर खड़े थे। उनसे बहुत दूर नीचे लहरें समुद्रतट से टकरा रही थीं। प्रसन्नता से अपने हाथ और पूँछ हिलाती वैष्णवी बहुत छोटी सी लग रही थीं।

उन्होंने भी उनकी ओर हाथ हिलाया, और पूर्वी क्षितिज पर दिखते लाल प्रकाश पर अपनी दृष्टि टिकाकर उन्होंने उगते सूर्य के अग्रभाग को प्रणाम किया और आकाश में एक लंबी और दृढ़ छलांग लगा दी।

उस क्षण, गुरुत्वार्कषण से पूर्णतः मुक्त, वायु के समान शुद्ध जिसने उनके जन्म को अनुग्रहीत किया था, उन्होंने वैष्णवी के प्रति अपने समस्त प्रेम का अनुभव किया और अपने प्रति उनके प्रेम को जाना। केवल इस बार, बस एक क्षण के लिए, वे जानते थे कि उस प्रेम को स्वीकार करना और उसका प्रत्युत्तर देना उनके लिए स्वार्थपूर्ण नहीं होगा। वैष्णवी के चेहरे, उनकी वाणी और तृतीय संस्कार के विचार ने उन्हें आनंद से भर दिया।

उन्हें याद आया एक बार उन्होंने अपनी मां से पूछा था कि किञ्चिंधावासी केवल तीन संस्कार ही क्यों करते हैं, चार क्यों नहीं। उन्होंने सरलता से मिठे और स्पष्ट स्वर में कहा था, “क्यों, क्योंकि इसके पश्चात प्रथम संस्कार पुनः शुरू हो जाता है, प्रिय पुत्र।” इसके बाद, अपने बच्चों के आने के बाद व्यक्ति स्वयं के लिए जीना छोड़ देता है। सब कुछ उन्हीं के बारे में होता है, और फिर उनके बच्चों के बारे में। उड़ान भरते हुए वे हंस दिए, और नीचे उनके उत्तर की प्रतीक्षा कर रही अपनी प्रियतमा के लिए आकाश से उस महान लाल फल को तोड़ने की कल्पना करने लगे। अब उन्हें अपने अवरोहण को नियंत्रित करना था, एकदम सही वृत्ताकार बनाएं, मुड़ें, जल में गिरते हुए मुंह उसकी ओर हो, बाहें फैली, जल के छपघपाने और उसकी प्रसन्न हँसी के बीच वे पहली बार उसका नाम प्रेम से पुकारेंगे...

उस आवाज़ के आने से पहले, होश खोने से पहले, हनुमान ने केवल एक चीज़ देखी थी। अग्नि की विशाल लाल मुट्ठी जैसी कोई वस्तु समुद्र के किनारे से शक्तिशाली

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

दंग से रास्ता चीरते हुए ऊपर उठी, और उसके मध्य में सूर्य था, छोटा सा लाल बिंदु, किसी आम जैसा, जैसे उनके माता-पिता उन्हें देते थे, जैसा आम वे अपनी सुवर्चला को देना चाहते थे। परंतु यह कोई फल तो नहीं था।

तभी, ज्वालामुखी के विस्फोट से उत्पन्न वायु एवं राख के वेग ने उन पर प्रहार किया, और उन्हें अंधकार में डुबो दिया।

Novels English & Hindi

आभार

हनुमान पर उपन्यास लिखने के मेरे फैसले से मेरे पिता बहुत खुश हुए थे।

2013 की शुरुआत से जब मैंने कहानी की रूपरेखा बनाना शुरू किया था, नवंबर 2014 में मेरे पिता का देहांत होने तक हमारी बातचीत का मुख्य विषय किञ्चिंधा ही होता था। उस समय मैं यह बिल्कुल नहीं जान सका था कि उनके आसपास और उनके अंदर क्या चल रहा था, लेकिन समुद्रों और महाद्वीपों के पार फोन पर उनकी आवाज़ में हनुमान के प्रति अगाध श्रद्धा झलकती थी। अपनी लंबी-लंबी बातचीतों में हम अनेक विषयों पर चर्चा करते थे: श्री माधवाचार्य और द्वादश स्तोत्रम्, हम्पी, व्यासराज, पुरंदर दास, डार्विन, शिव एवं राम पिथेकस, स्टैगडॉन गणेश, ऑल्डुवई, ज्वालापुरम्। वे इस उपन्यास को देख नहीं पाए। लेकिन जनवरी 2014 में जब हम आख़री बार मिले थे, तब वे केवल इस किताब को ही सबसे महत्वपूर्ण मानते थे। हमारी साथ में ली गई आख़री तस्वीर, और उचित ही, वह थी जो हमने हैदराबाद के हनुमान मंदिर के अहाते में ली थी जहां वे मुझे हर साल मेरे जन्मदिन पर ले जाते थे।

यह पुस्तक मैं अपने पिता डॉ. जे. वी. रमन राव, और सबसे ज़्यादा अपने पूर्वजों, और इस दुनिया को समर्पित करता हूं जिसे वे जानते थे और जो क्षणिक बहलाव और घोर विध्वंस के इस युग में तेज़ी से धुंधला रही है।

मैं अपनी माँ श्रीमती जमूना के प्रति भी सम्मान व्यक्त करता हूं जिनका जन्म हम्पी में होने, और इस स्थान से जुड़े गहरे पारिवारिक संबंध ने मुझे किञ्चिंधा और विजयनगर के सौंदर्य को देखने का अवसर दिया, और मुझे विश्वास है कि इनके अंश किसी न किसी रूप में यहां के लोगों में जीवित हैं जो आज पूरे विश्व में फैले हुए हैं। मैं और मेरे विद्यार्थी जब हम्पी गए थे तब कमालपुरम की मेरी आंटी श्रीमती निष्पाणी लक्ष्मी और अंकल डॉ. चित्ती बाबू व चिन्ना बाबू ने हमारे प्रति जो प्रेम और आतिथ्य दर्शाया, उसके लिए मैं आभार व्यक्त करता हूं। तुंगभद्रा से घिरे एक छोटे से द्वीप पर बैठकर हमने उनके बच्चों को ‘सौभग्यदा लक्ष्मी बारम्मा’ गाते सुना। मेरे लेखन पर उसका स्थायी प्रभाव रहा।

इस उपन्यास के शुरुआती प्रारूपों में राम वेमुरी, अमित गोखले और कार्ल ब्रॉम्ली के विचार बहुत सहायक रहे। सटीक समीक्षा के लिए शेखर वेटुरी, और अपने विचारों और प्रोत्साहन के लिए डॉ. सदानन्दमूर्ति को मैं विशेष रूप से धन्यवाद देता हूं। सी. श्रीराम लेखक के पाठक, साहित्यिक भाई और मित्र रहे हैं। श्रीनिवास और अनुराधा उडुमुडी ने अपनी मित्रता, ज्ञान, और भारतीय प्रागैतिहास के प्रभात की प्रेरणादायक सङ्क यात्रा के द्वारा एक लंबे शून्य के बाद इस उपन्यास-त्रयी में मेरी दिलचस्पी को फिर से जगाया! ज्वालापुरम के लिए प्रोफेसर रवि कोरिसेटर को मेरा

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>

धन्यवाद।

वेस्टलैंड में, बेहतरीन कार्यकारी संबंधों व मित्रता के लिए मैं गौतम पद्मनाभन, कार्तिक वेंकटेश, केके, सरिता, जयंती और प्रीति कुमार को धन्यवाद देता हूं। दीसि तलवार उन बेहतरीन संपादकों में से हैं जिन्हें पाने की एक लेखक इच्छा कर सकता है, और इस पुस्तक में हमारी साझेदारी को मैं गहरी प्रशंसा के साथ स्वीकार करता हूं।

विशेष धन्यवाद उन नए भारतीय कहानीकारों और इतिहासकारों को जिनकी मित्रता और साथ मेरी यात्रा में अमूल्य रहे हैं: संजीव सान्याल, हिंडोल सेनगुप्ता, और सबसे अधिक वह व्यक्ति जिसने इसे स्वयं अपने शिव के डमरू की ताल से प्रारंभ किया, अमीश त्रिपाठी।

अंत में, हमेशा की तरह, मैं एल एवं वी का, और उस प्राचीन किञ्चिंथा के सूर्य तले स्थान का शुक्रिया अदा करता हूं। यह सदैव उष्ण, सदैव प्रभातपूर्ण है।

Novels English



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

<https://rb.gy/zxhwdo>

<https://t.me/indianmythologybooks>



लेखक अपने पिता के साथ

वम्सी जूलरि यूनिवर्सिटी ऑफ सैनफ्रांसिस्को में मीडिया स्टडीज़ के प्रोफेसर हैं, और हाल ही में बैस्टसैलिंग रही पुस्तक रीयरिंग हिंदुइज्मः नेचर, हिंदूफोबिया एंड द रिटर्न ऑफ इंडियन इंटैलीजेंस (बैस्टलैंड) के लेखक हैं। आपकी पूर्वप्रकाशित पुस्तकों में द मायथोलांजिस्टः ए नॉवेल (पेंगुइन इंडिया) और बॉलीवुड नेशनः इंडिया श्रू इट्स सिनेमा (पेंगुइन इंडिया) हैं।